प्राकृत रचनोदय

डॉ० उदयचन्द्र जैन
विभागाध्यक्ष
जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग
मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर

न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन
(दिल्ली) : : (भारत)

आपकी अपनी प्राकृत

हम सभी चिंतन करें कि हम क्या बोलते हैं कैसा व्यवहार करते हैं और किस मार्ग पर चलते है? तब सहज समाधान प्राप्त होगा कि हम अपनों के बीच जो अपनत्व लेकर व्यवहार आदि करते हैं वह आपसे जुड़ा हुआ है, आपके लिए ही है। जो आपको एवं दूसरे के स्वाभाविक वचन हैं वे हैं प्रकृति के सोपान। जिन्हें जन साधन स्वभावगत भाषा का नाम दिया जाता है।

प्रकृति एवं जन साधारण के वचन प्राकृत हैं। जो बोलचाल के साथ सह-अस्तित्व के सूत्रों में बांधते हैं। प्रकृति तो अपनी आपकी ही है। आपकी अपनी प्राकृत है जो लोक व्यवहार है जिस भाषा को हम बोलते हैं वे पूर्व में 'आर्ष' थे। आर्षवचन थे। 'आर्ष' अर्थात् ऋषिवचन। जो सहज सौन्दर्य के साथ प्रकृतिजनों के आधार बन गए।

प्रकृति तो प्राक्+कृत है प्राकृत है। वैदिक छान्दस् है और है सूत्रों के सूक्त। जो हमारे आदर्श हैं। जिन्हें हम पूजते हैं श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं। वे आर्ष पुरुष प्रथम जनहित के लिए जन-जन के मध्य गए, उनहें उनके ही स्वाभाविक वचन व्यवहार से समझाया, वे ही वचन, आर्षवचन आर्धमागधी, शौरसेनी आगम के सूत्र बन गए, वे बने तीन पिटारे त्रिपिटक।

अर्धमागधी शौरसेनी आगम के सूत्र महावीर वचन के नाम से विख्यात हुए। बुद्धवचन पालिभाषा की पहचान बनें वे बुद्धवचन त्रिपिटक कहे गए।

महावीर और बुद्ध जैसे आर्ष पुरुषों के वचन ढाई हजार वर्ष के पश्चात् भी उन्हीं की तरह अमर हैं। वे अमरत्व प्रदान कर रहे हैं। उनके अमृत का पान आचार्यों ने किया। साधु-साध्वियों ने किया। आज बीसवीं के पश्चात् इक्कीसवीं के प्रवेश में भी वे वचन जन-चेतना दे रहे हैं। मैं उनके चरणों में नत जो प्राकृत रचनोदय आपके सामन रख रहा हूँ, उससे सभी लाभान्वित होंगे।

मैं उपकृत हूँ, आचार्यों के आशीष से। उनकी प्रेरणा ने अक तक दस महाकाव्य

(प्राकृत) में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्रदान किया। कुन्दकुन्द शब्दकोष, प्राकृत हिन्दी शब्द कोष दो भाग और ज्ञानसागर बृहद संस्कृत हिन्दी शब्द कोष तीन भाग प्रकाश में आए। भाई सुभाष, न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन, दिल्ली से अत्यंत कठिन कार्य को अपने हाथों में लेकर पाठकों तक पहुँचाया। मैं आभारी हूँ, उनका, उनके परिवार का। मैं आभारी हूँ, डॉ० माया जैन (धर्म पत्नी) पिऊ एवं प्राची जैन (पुत्रियों) का। प्रो० कमलचंद्र सोगानी, प्रेमसुमन, डॉ० हुकमचंद्र जैन, प्रो० भागचंद्र नागपुर आदि का।

हमारी प्रेरक शक्ति बने आचार्य विद्यानंद जी।

डॉ० उदयचन्द्र जैन
पिऊ कुंज
अरविंदनगर, जैन स्थानक के पास
ग्लास फैक्टरी चौराहा,
उदयपुर (राज०)

अनुक्रमणिका

भूमिका

पाइय-भासा-विण्णाण

पाइयभासा सरूव-विगासो

भासाए विगासो

भासा भावाहिविंजणस्स साहणं अत्थि। वयण-ववहारो एव भासा अत्थि। भासा सहमईए असमहईए य परिचाइगा। उच्चरिअ झुणि-संकेयाए सहजोएणं जो भावाणं वियाराणं च पुण्ण-अहिवित्ती सा भासा।

वियार-विणिमयस्स झुणिसंकेयो भासा अत्थि। भासाए दुविहसंकेया-(१) झुणि-संकेयो(२) जादिच्छिग-संकेयो।

भासाइ सद्द-अत्थ पहाणत्तं होइ। तम्हा वक्ता सोयाणं दिट्ठिकोणं महत्तं पदाऊण भासाए पक्खा तिण्णि भासिआ (१) जणगयो, (२) सामाइयाय, (३) सामण्णो सव्ववावयो य।

भासा झुणि-अत्थ-संसग्गेण विणिम्मेइ। भासाविण्ण-जणेहिं णिम्मेइहासिय तच्चाणं णिद्दिट्ठा

(१) **दिव्वुप्पत्ति-सिद्धंतो**-देववाणी देवभासा।

(२) **संकेय-सिद्धंतो**-

(३) **रणण-सिद्धंतो**-आहाएण जा झुणी झणयसा-टणण-टण उप्पज्जए सो रणण-सिद्धंतो।

(४) **आवेय-सिद्धंतो**-सोग-हरिस-विम्हय-खोह-कोह-घिणाइ-मणो भावाणं सहयोप्पत्तीए जा झुणी पुह पुह

प्राकृत-भाषा विज्ञान

प्राकृत भाषा का स्वरूप एवं विकास

भाषा का विकास

भाषा भावाभिव्यञ्जन का साधन है। वचन व्यवहार ही भाषा है। भाषा सहमति और असहमति की परिचायिका है। उच्चरित ध्वनि संकेतों के सयोग से जो भावों और विचारों की पूर्ण अभिव्यक्ति है वह भाषा है।

विचार विनिमय के ध्वनि संकेत भाषा है। भाषा दुविध संकेत हैं-(१) ध्वनि संकेत और (२) यादृच्छिक संकेत।

भाषा में शब्द और अर्थ की प्रधानता होती है। इसलिए वक्ता और श्रोता के दृष्टिकोण को महत्त्व प्रदान करके भाषा के पक्ष तीन कहे गए-(१) जनगत, (२) सामाजिक और सामान्य-सर्वव्यापक।

भाषा ध्वनि और अर्थ के संयोग से बनती है। भाषा विज्ञ जनों के द्वारा निम्न ऐतिहासिक तथ्यों को निर्दिष्ट किया।

(१) **दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त**-देववाणी देव भाषा।

(२) **संकेत-सिद्धान्त**-

(३) **रणन-सिद्धान्त**-आघात से जो ध्वनि, झनन, टनन टन उत्पन्न होती है, रणन सिद्धान्त है।

(४) **आवेग-सिद्धान्त**-शोक, हर्ष, विस्मय, क्षोभ, क्रोध, घृणा आदि के मनो-भावों की सहज उत्पत्ति से जो पुह-पुह

उप्पज्जए सो आवेय-सिद्धंतो।

(५) समज्झुणी सिद्धंतो।
(६) अणुकरण-सिद्धंतो।
(७) ईंगिय-सिद्धंतो।
(८) समणवय-सिद्धंतो।

भासाए उप्पत्ती समाजाओ हवइ ताए विगासो वि समायम्मि हवइ। तम्हा भासा समायस्स, समायस्स, समायस्स समाएणं च विणिम्मिय। भासा-प्पवाह-अविच्छिण्णं ताए धारा वि अविच्छिण्णं। भासाए गइसीलए समाए अणाइ कालम्मि विज्जए

भासा सव्व-विवावगो। जण-जणस्स संबंधो ववहारो य भासाए विणा णत्थि। वक्कपदीए उत्तो-

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।

अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते॥

जइया जणा तइया भासा। सिक्खा-सक्कइ-ववसाय-वायावरण पज्जावरणाईणं ठिई जणाणं ववहारेण एव विणिम्मेइ। वाणी-भासा-अहिभासाए ठिई वि जणाओ समायम्मि, समायाओ विउल-जण-समुदायम्मि वत्ताए भेएणं भासाए विविह-रूवाणि भवंति। तं जहा--

(१) **परिणिट्ठियभासा**-जस्स पजोगा सिक्खाए सासणस्स तह साहिच्चस्स हवइ।

(२) **विभासा**-विविह-बोली इमाओ भोगोलिय-ठाणीय-कारणेहिं वियसंति।

ध्वनि उत्पन्न होती हैं वह आवेग-सिद्धान्त है।

(५) श्रमध्वनि सिद्धान्त।
(६) अनुकरण सिद्धान्त।
(७) इंगित-सिद्धान्त।
(८) समन्वय-सिद्धान्त।

भाषा की उत्पत्ति समाज से होती है। उसका विकास भी समाज में होता है। इसलिए भाषा समाज की, समाज के लिए और समाज के द्वारा विनिर्मित है। भाषा का प्रवाह अविच्छिन्न है, उसकी धारा भी अविच्छिन्न है। भाषा की गतिशीलता समाज में अनादि काल से विद्यमान हैं।

भाषा सर्वव्यापक है। जन-जन का सम्बन्ध और व्यवहार भाषा के बिना नहीं है। वाक्य प्रदीप में कहा है--

"न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके, यः शब्दानुगमावृते।

अनुविद्धमिव ज्ञानं, सर्वं शब्देन भासते॥

जितने लोग, उतनी भाषाएं। शिक्षा, संस्कृति, व्यवसाय, वातावरण एवं पर्यावरण आदि की स्थिति लोगों के व्यवहार से ही बनती है। वाणी, भाषा, और अधिभाषा की स्थिति जब से समाज में, समाज से विपुल/विशाल जन समुदाय में वक्ता में भेद से भाषा के अनेक रूप हो जाते हैं। जैसेकि--

(१) **परिनिष्ठित-भाषा**-जिसका प्रयोग, शिक्षा, शासन और साहित्य के लिए होता है।

(२) **विभाषा**-विविध बोलियां-भौगोलिक एवं स्थानीय कारणों से विकसित होती हैं।

(३) **अवभासा**-लोय-मज्जाया-विहीण-भासा।

(४) **विसिट्ठ-भासा**-ववसायस्स ववहारजण्ण-भासा।

(५) **मणोरंजण-पहाण-भासा।**

(६) **कित्तिम-भासा।**

(७) **मिस्सिअ-भासा।**

परोप्पर-संपक्क-सुहलऐण कारणेण भासा जस्सिं रूवेणं पहावेइ सो वि भासाए सहायगो अत्थि। सा वि तं जहा:-

(१) **पाइइयो**-जह जह सीमाए वित्थारो हवइ तह तह भासा एवखेत्ताआ अण्णाणं खेत्ताणं पहावेइ।

(२) **सामाइयो**-परोप्पर-आदाण-पयाणाउ वि एगभासा-भासी-णिय-भासं परिचत्तेऊण जस्सिं पएसे सा वसइ तस्स पएसस्स सामाइग-परिवेसस्स भासाए परिभासेइ। जह मरहट्ठभासी बहु कण्णड-पएसस्स सामाइग-परिवेसे णिवसंती कण्णड-भासं वि परिभासेइ। ताए एव सा परिवारजणेहिं ववहारेइ।

(३) **धम्मिग-वाथावरणं**-धम्मिग-पयार-पसार-संपक्कभासाए मज्झिमेणं वि हवइ। महावीरस्स या बुद्धस्स पाइयो, संकराइरियस्स धम्मपयारस्स भासा सक्कयो आसी। सुदूर दाहिणाओ पच्छिमम्मि हिन्दी अज्ज एगमेत्तभासा अत्थि जा विभिण्ण धम्मिगपयारस्स भासा अत्थि।

(४) **साहिच्चियगो**-भासा साहिच्च-सिजणेण वि गोरवसाली हवइ।

(३) **अपभाषा**-लोक मर्यादा विहीन भाषा।

(४) **विशिष्ठ-भाषा**-व्यवसाय की व्यवहार जन्य भाषा।

(५) **मनोरञ्जन प्रधान भाषा।**

(६) **कृत्रिमभाषा**

(७) **मिश्रित भाषा**

परस्पर सम्पर्क ही सुलभता के कारण से भासा जिस रूप से प्रभावित होती है वह भी भाषा में सहायक है। वह भी जैसे :-

(१) **प्राकृतिक**-जैसे-जैसे सीमा का विस्तार होता है, वैसे-वैसे भाषा एक क्षेत्र से अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करती जाती है।

(२) **सामाजिक**-परस्पर के आदान-प्रदान से भी एक भाषा-भाषी अपनी भाषा को छोड़कर जिस प्रदेश में वह रहने लगता है वह प्रदेश सामाजिक परिवेश की भाषा को बोलने लगता है। जैसे महाराष्ट्र भाषी बहू कन्नड़ प्रदेश के सामाजिक परिवेश में रहती हुई। कन्नड भासा को बोलने लगती है उसमें ही वह परिजनों के साथ व्यवहार करने लगती है।

(३) **धार्मिक वातावरण**-धार्मिक प्रचार एवं प्रसार सम्पर्क भाषा के माध्यम से भी होता है। महावीर या बुद्ध की प्राकृत, शंकराचार्य की धर्म प्रचार की भाषा संस्कृत थी। सुदूर दक्षिण से पश्चिम में हिन्दी आज एकमात्र एक भाषा है, जो विभिन्न धार्मिक प्रचार की भाषा है।

(४) **साहित्यिक**-भाषा साहित्य सृजन से भी गौरवशाली होती है।

(५) **रायणइइगो**-हिंदिं रट्ठिय-भासा केंद्द-सासणस्स उग्घोसइ। तेण घोसणेण अज्ज सा हिन्दी अम्हाणं रट्ठ-भासा अत्थि।

इमं वदिरित्तो सेणिग-सिक्खिग-अत्थिग-विण्णाणिग-कारणाणि वि अत्थि।

माणव-जम्मेण सह भासाए वित्थारो विगासो वि अवस्समेव भूओ। भासाए बहुपरिवारा अत्थि, तेसुं परिवारेसु भारोवीय परिवाराहि पाइय-भासाए संबंधो अत्थि। भासाए (१) ईराणी, (२) दरद्दे, (३) अज्जपरिवारो इमेसुं तिपरिवारेसु अज्जपरिवारेण, पाइय-भासा संबंधो अत्थि।

भरहिज्ज-अज्ज-भासा-परिवारस्स तिभागा अत्थि-

(१) **पुरा-भरहिज्ज-अज्ज-भासा परिवारो।** (१६०० ई० पू०-६०० ई० पू०)

(२) **मज्झ-कालीण-अज्जभासा-कालो** (६०० ई० पू० १००० ई०)।

(३) **वत्तमाण-अज्ज-भासाकालो** (ई० १००० वत्तमाण-पेरतं)

भासा-परिवट्ठण-भासोप्पत्ती विगासो य पुराकालाहि एव हवइ। सद्द-झुणि-वक्क-अत्थ-कारणेण परिवट्टणं हवइ। जम्हा पाइय-भासाए वि विविह परिवट्टणं संजादं।

पुरा अज्जभासा-पुव्वे जओ भासाणं साहिच्चा ण विरचिया। तओ जा वि भासा जणा साहारणेसुं पचलिया तेस्सिं महत्तो वि अत्थि। किण्णु पाईण-अज्ज- भासाए सरूवरिगवेयस्स रियासुं सुरक्खियो। वेया अज्जाणं पमुह-गंथा अत्थि। जेसिं पाईणत्तणे कस्स वि किंचि संदेहो णत्थि जणभासाए

(५) **राजनैतिक**-हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा केन्द्र शासन के घोषित की गई। उस घोषणा से आज वह हिन्दी हम लोगों की राष्ट्र भाषा है।

इसके अतिरिक्त सैनिक, शैक्षिक, आर्थिक और वैज्ञानिक कारण भी हैं।

मानव जन्म के साथ भाषा का विस्तार एवं विकास अवश्य ही हुआ। भाषा के बहुत से परिवार है उन परिवारों में भारोपीय परिवार प्राकृत भाषा का सम्बन्ध है। भासा के (१) ईरानी, (२) दरद और, (३) आर्य परिवार, इन तीनों परिवारों में आर्य परिवार से प्राकृत भाषा का सम्बन्ध है।

भारतीय आर्य भाषा परिवार के तीन भाग हैं-

१. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा परिवार (१६०० ई० पू० ६०० ई० पू०)।

२. मध्यकालीन आर्यभाषाकाल (६०० ई० पू० १००० ई०)।

३. वर्तमान आर्य भाषाकाल (ई० १००० से वर्तमान तक)

भाषा-परिवर्तन भाषा की उत्पत्ति और विकास प्राचीन समय से हरि हो रहा है। शब्द, ध्वनि, वाक्य और अर्थ के कारण से परिवर्तन होता है। जिससे प्राकृत भाषा में भी विविध परिवर्तन हो गए।

प्राचीन आर्य भाषा-पूर्व में जब भाषाओं के साहित्य नहीं लिखे गए तब जो भी भाषाएं जन-साधारणों में प्रचलित हुईं उनका महत्व भी है। किन्तु प्राचीन आर्य भाषा का स्वरूप ऋग्वेद् की ऋचाओं में सुरक्षित है। वेद आर्यों के प्रमुख ग्रन्थ हैं जिनकी प्राचीनता में किसी के लिए भी

पच्छा छंदसो पाइयो य भासाओ अइपुरा अत्थि। वेय-गंथेसुं लोगभासाए विसेसत्तं जा वि पत्तेत ता सव्वा भासाए पुरत्तणं सिद्धंति।

वेदिगयुगो अज्जभासाए पुराजुगो अत्थि। वेदिग-भासा एव पुरा अज्जं भासा अत्थि। वेदिगभासाए जा वि विभासिग-पउत्तीओ ता सव्वा लोग भासाए परिचायगा अत्थि। वेदिगभासाए अज्झयएण लोगभासा जणभासा-जणसाहारण-भासा-लोयप-चलियभासा-जणववहार-भासाए विय णाणं हवइ। जणभासाए परिक्किय रूपो छंदस-पच्चा य।

वेदिग भासाए वदिरित्तो वि वदिग सक्कयो जण-भासाए रूवाणि अत्थि। रिगवेदस्स अवेक्खा अथव्वेए जणभासाए बहु-रूवाणि पत्तेंति। जाणि पाइयस्स बहु-विभासाए बीजाणि विज्जंते।

रिगवेयस्स भासा पुरोहियाणं रायाणं भासा अत्थि। किण्णु अथव्वेयस्स भासं ववहारम्म भासा जणभासा तम्हा वुत्ता इमस्सिं लोय-पचलिय-जण-ववहारस्स सद्दाणं सभावेसो जाओ। वेयविण्णजणा वट्टमाण- भासा-विण्णजणा य अंगीकरोंति जं वेयाणं भासा तक्कालम्मि पयलिय-लोग भासाहिं संजुत्ता। भासाविण्ण-जणाणं अहिप्पायो वेदिग-भासा वा पाइय-भासाओ य एगाओ मूलसोयाओ संबंधेइ। जा तस्स समयस्स जणभासा वट्टेहिइ।

किसी तरह का संदेह नहीं। जन भाषा, प्राच्या, छान्दस् या प्राकृत भाषाएं अति प्राचीन हैं। वेद ग्रन्थों में लोक भाषा की विशेषता जो भी प्राप्त होती हैं वे भी भाषा की पुरातनता को सिद्ध करती हैं।

वैदिक युग आर्य भाषा का प्राचीन युग है। वैदिक भाषा ही प्राचीन आर्य भाषा है। वैदिक भाषा में जितनी भी वैभाषिक प्रवृत्तियां हैं वे सभी लोक भाषा की परिचायक हैं। वैदिक भाषा के अध्ययन से लोकभाषा, जनभाषा, जन साधारण की भाषा, लोक प्रचलित भाषा या जन-व्यवहार की भाषा का भी ज्ञान होता है। जन-भाषा का परिष्कृत रूप छान्दस् या प्राच्या है।

वैदिक भाषा के अतिरिक्त भी वैदिक संस्कृत में जन भाषा के रूप हैं। ऋग्वेद् की अपेक्षा अथर्ववेद में जनभाषा के अनेक रूप प्राप्त हैं। जो प्राकृत की प्राचीनता को सिद्ध करने हैं।

छान्दस और वैदिक संस्कृत में कई विभाषाओं के बीज विद्यमान हैं। ऋग्वेद की भाषा पुरोहितो और राजाओं की भाषा है। किन्तु अथर्ववेद की भाषा को व्यवहार की भाषा जनभासा इसलिए कहा गया कि इसमें लोक प्रचलित एवं जन-व्यवहार के शब्दों का समावेश हो गया। वेदविज्ञजन और आधुनिक भाषा विज्ञजन स्वीकार करते हैं कि वेदों की भाषा उस समय में प्रचलित लोक भाषाओं से संयुक्त हैं। भाषाविज्ञ जनो का अभिप्राय है, वैदिक भाषा और प्राकृत भाषाएं एक मूल स्रोत से सम्बन्ध रखती है। जो उस समय ही जनभाषा रही होगी।

पुरा विभासा–

(१) अहिच्चो (उत्तरिज्ज विभासा)

(२) मज्झदेसिज्ज-विभासा।

(३) पच्च-पुव्वी-विभासा।

इमाओ उदिच्च-विसाउ छंदस भासा विगासिआ, जहिं वेदिग-साहिच्चस्स संरयणा जाआ। पच्चा-पुव्वी-विभासाउ पाइयाणं विगासो जाओ। सक्कइग-दिट्ठिणा वेयाणं संरयणा उदिच्च-पएसम्मि पंजाब पएसम्मि जाआ। वेदिगभासाए उदिज्ज-विभासाए अहियपहावो अत्थि। पाइय-भासाणं पुव्वी-पएसेसुं अहिय पहावो जाओ। दुण्णे वि विभासाओ सम-सामइग भवमाणेणं अण्णुण्णं परोप्परे पहाविआ गुणेंति।

वेदिग-पाइय-भासाए अणेग-सरिसा अत्थि।

(१) एगवयणं बहुवयणं च।

(२) सीमिय-लयार-पजोगा।

(३) हिस्सझुणीए दिग्धीकरणं।

(४) नस्स ण

(५) किरियाए एगरूवत्तं चर (प्रा० सं०)

(६) किदंतेसुं एगरूवत्तं राजंत जयंत

(७) पयडीसंधी बहुले उये (यजु० ११/३०/१) रयणी अरो (प्रा०)।

(८) अव्वय-सरिच्छा

हि (ऋ १, ६, ७), हि (प्रा०)

नहि (अथर्व १, २१, ३) नहिं (प्रा०)

नमो (अ० शु०, १) नमो (प्रा०)

कया (साम० १६८) कया (प्रा०)

अण्ण-बहु-विसेसत्तणाओ पाइय-वेदिग-भासाणं संबंधो अत्थि।

प्राचीन विभाषाएं–

१. उदीच्य (उत्तरीय विभाषा)

२. मध्यदेशीय विभाषा।

३. प्राच्य एवं पूर्वी विभाषा।

इनमें से उदीच्य विभाषा से छान्दस् भाषा विकसित हुई, जिसमें वैदिक साहित्य की संरचना हुई। प्राच्या एवं पूर्वी विभाषा से प्राकृतों का विकास हुआ। सांस्कृतिक दृष्टि से वेदों की संरचना उदीच्य प्रदेश/पंजाब प्रदेश में हुई। वैदिक भाषा पर उदीच्य विभाषा का अधिक प्रभाव है। प्राकृत भाषाओं का पूर्वी प्रदेशों में अधिक प्रभाव हुआ। दोनों ही विभायार्थ समकालीन होने से एक दूसरे को परस्पर में प्रभावित करती रही हैं।

वैदिक एवं प्राकृत भाषा में बहुत सी समानताएं हैं।

१. एकवचन और बहुवचन।

२. सीमित लकार प्रयोग।

३. ह्रस्व ध्वनियों का दीर्घीकरण।

४. न का ण

५. क्रियाओं में एक रूप-चर (प्रा०) चर (सं०)

६. कृदन्तों में एक रूपता। राजंत जयंत।

७. प्रकृति सन्धि-बहुले उये (य०११/३०) रयणी अरो (प्रा०)

८. अव्ययों की समानता-

हि (ऋ १, ६, ७,) हि (प्रा०)

नही (अथर्व० १, २१, ३) नहि (प्रा०)

नमो (अ० शु १) नमो (प्रा०)

कया (साम० १६८) कया (प्रा०)

अन्य कई विशेषताओं से प्राकृत और वैदिक भाषाओं का सम्बन्ध है।

वेदिग-भासं पच्छा पाणिणी-महाभाएण सव्व-भासाणं सक्कारत्थं अट्ठज्झायीए रयणा किआ। वेदिग-पक्कियाए सो विहाणं ण करिऊणं वियप्पियपजोगाणं उल्लेहमेत्तं किअं। उवणिसय-महाभरह-रामायण-कव्वेसुं लोयभासाए तत्ताणि अत्थि।

महाभारय-रामायणाई कव्वाणं पच्छा पाइय-पाली-भासा लोए साहिच्चे य पजुत्ता-जाआ जस्स केंदविंदु-आगम-तिविडग-पाइय-सिलालेहाई अत्थि। अओ वेदिग-जुगाओ महावीर-बुद्ध-पेरंतं पाइयभासाए विगासो जाओ। तं पच्छा विविह-कव्वकलाए जम्मो जाओ।

विगासस्स दिट्ठिणा दो भासाओ पाइय-सक्कसा सहोयरा अत्थि। दोण्हं विगासस्सोयो एगो एव पच्छत्त-एलफेड-बुल्लर-महाभागा पी० डी गुणे महाभायो आई विण्णा पाइय-भासाए एग मया।

कत्थ-साहिच्चा भासाए मण्णंते। कत्थ-भासा-सव्वया परिवट्टणसीला पवाहसीला णईवेगसमा व हवइ। साहिच्च-भासा वागरणे णिबद्धा सरोवर-समा अत्थि। कत्थभासा एव विगासक्कमेण अग्गे गच्छिऊण पाइयो साहिच्चस्स विसाल-सामिद्ध-सरूवं पत्तेऊण णियपुरत्तणं सुरक्खिए समत्था भूआ।

पाइय-विउप्पत्ती-

पाइय-पमुह-भासाविण्णाणियाणं एग-वियारधारा अत्थि पाइयो सक्कयाओ

वैदिक भाषा के पश्चात् पाणिनि महाभाग में सभी भाषाओं के संस्कार के लिए अष्टाध्यायी की रचना की। वैदिक प्रक्रिया का उन्होंने कहकर वैकल्पिक प्रयोगों का उल्लेख मात्र किया। उपनिषद्, महाभारत, रामायण और ब्राह्मण काव्यों में लोक भाषा के लेख हैं।

महाभारत, रामायण आदि काव्यों के बाद प्राकृत एवं पाली भाषा लोक और साहित्य में प्रयुक्त हुईं। जिसके केन्द्र-बिन्दु आगम, त्रिपिटक एवं प्राकृत शिलालेख आदि हैं। अत: वैदिक युग से महावीर एवं बुद्ध पर्यन्त प्राकृत भाषा का विकास हुआ। इसके अनन्तर विविध काव्य कला का जन्म हुआ।

विकास की दृष्टि से दोनों ही भाषाएं प्राकृत और संस्कृत सहोदरा हैं। दोनों के विकास का स्रोत एक ही है। पाश्चात्य डॉ० एल्फ्रेड, डॉ० बुल्वर महाभाग और पी० डी० गुणे महाभाग आदि विद्वान् प्राकृत भाषा के एक हैं।

कथ्य और साहित्य ये दो रूप भाषा के माने जाते हैं। कथ्य भाषा सर्वदा परिवर्तनशील, नदीवेग की तरह प्रवाहशील होती है। साहित्य भाषा व्याकरण में निबद्ध सरोवर के समान है। कथ्य-भाषा ही विकासक्रम से आगे चलकर प्राकृत साहित्य के विशाल और समृद्ध स्वरूप को प्राप्त होकर अपनी प्राचीनता को सुरक्षित रखने में समर्थ हुई।

प्राकृत व्युत्पत्ति-

प्राकृत के प्रमुख भाषा वैज्ञानिकों की एक विचारधारा है कि प्राकृत संस्कृत

समभूओ। इमाए पयडी सक्कयो अत्थि।

प्रकृति संस्कृतम् १२/२ वररूचि

प्रकृतेः संस्कृताद् आगतं प्राकृतम्। (वाग्भट्टालंकार २/२)

प्राकृतेति 'सकलजगज्जन्तूनां व्याकरणादिभिरनाहितसंस्कारः सहजो वचन व्यापारः प्रकृतिः तत्र भवं सैव वा प्राकृतम् रूद्रटकाव्यालंकार)।

रूद्रट-महाभागस्स एस वयण-ववहार -समीचीणं एव ण जायए अवि तु सव्वमण्णं अत्थि।

प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतिमुच्येत। (मार्कण्डेय-प्राकृत सर्वस्वम्) प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं नत आगतं वा प्राकृतम् १/१ हेमचन्द्र हेमशब्दानुशासन)

प्रकृतेः संस्कृतात्, साध्यमानात्सि*द्धाश्च यद्भवेत्।

प्राकृतस्यास्य लक्ष्यानुरोधि लक्ष्य प्रचक्ष्यमहे।।

(त्रिविक्रम प्राकृतशब्दानुशासन-श्लोक० ८) प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतम् (प्राकृत चँद्रिका)

प्रकृतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृतो मता। (लक्ष्मीधर-षडभाषाचन्द्रिका)

प्राकृतस्य तु सर्वमेव संस्कृतं योनिः। (प्राकृत संजीवनी-वसंतराज)

पाइयकप्परूयारो रामसरमा मउणं जायए। पाइय-वागरणस्स वइरित्तो कव्व-लंकार-गंथेसुं पाइयस्स पयडी-सक्कयो मण्णियो। दसरूवग-रूद्दड-कप्पूरमंजरी-टीयारो वासुदेवो सिंहदेवगणी-णरसिंहणा-रायण-संकराइ-महाभाया उत्तेव मण्णंते। संखतत्तकोमुईए "मूल प्रकृतिरविकृतिः"

से उत्पन्न हुई। इसकी प्रकृति संस्कृत है।

प्रकृतिः संस्कृतम्। १२/२ वररुचि

प्रकृते संस्कृताद् आगतं प्राकृतम्। (वाग्भट्टलंकार २/२)

'प्राकृतेति' सकल-जगज्जन्तूना व्याकरणादिभिरनाहितसंस्कारः सहजो वचन- व्यापारः प्रकृति तत्र भवं सैव वा प्राकृतम्' (रूद्रट-काव्यालंकार)

रूद्रट महाभाग का यह वचन व्यवहार समीचीन ही नहीं है, अपितु सर्वमान्य भी है।

प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते। (मार्कण्डेय-प्राकृत-सर्वस्वम्) प्रकृति, संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम् १/१ हेमचंद-हेमशब्दानुशासन)

प्रकृतेः संस्कृतात्-साध्यमानात्सिद्धाश्च यद्भवेत्।

प्राकृतस्यास्य लक्ष्यानुरोधि लक्ष्य प्रचक्ष्यमहे।।

(त्रिविक्रम-प्राकृत शब्दानुशासन) प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतम्। (प्राकृतचंद्रिका)

प्रकृतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृतो मता। (लक्ष्मीधर-षड्भाषाचंद्रिका)

प्राकृतस्य तु सर्वमेव संस्कृतं योनिः। (प्राकृत-संजीवनी-वसंतराज)

प्राकृतकल्पतरूकार रामशर्मा मौन हैं। प्राकृत व्याकरण के अतिरिक्त काव्या-लंकार ग्रन्थों में प्राकृत की प्रकृति संस्कृत मानी गई। दशरूपक, रूद्रट, कर्पूर- मंजरी के टीकाकार वासुदेव, सिंहदेवगणि, नरसिंह, नारायण, शंकर, आदि महाभाग उक्त ही मानते हैं। सांख्यतत्त्व कौमुदी में-मूलप्रकृति-

पयडी-मूल-रूवेण अवियार-जण्णा।

रवि कृतिः" प्रकृति मूल रूप से अविकार जन्य है।

"प्रक्रियते यया सा प्रकृति" जेण मूलतत्ताणं सद्दाणं सक्कय मूल-आहारा।

'प्रक्रियते यया सा प्रकृतिः' जिससे मूल तत्त्वों की उत्पत्ति होती है अथवा प्राकृत शब्दों के लिए संस्कृत मूल आधार है।

पयडी सक्कयो, सक्कयाओ आगयो भासा पाइयो। जो ण सम्मो।

प्रकृति संस्कृत है, संस्कृत से आई हुई भाषा प्राकृत है। जो सम्यक् नहीं है।

पाइय-भासाए उप्पत्ती सक्कयायो ण जाआ अवितु सक्कय-सद्दाणं आहारं णेऊणं पाइय-सद्दाणं विणम्मेति। सक्कय-सद्दाणं मूले ठविऊण पाइय-भास-भासं सिक्खेयव्वं।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई, अपितु संस्कृत शब्दों का आधार लेकर प्राकृत शब्दों का निर्माण कर सकते हैं। संस्कृत शब्दों को मूल में रखकर प्राकृत-भाषा को सीखना चाहिए।

पाइय-सक्कय-भासा सहोयरा अत्थि। पाअ+इओ पएण पाइयो। पुव्वकयो पाअ+इओ सद्दस्स अत्थो। जणाणं वागरणाइ-सक्कार-रहिय-सहय-वयण-ववहारो पयडी, तेण जाओ सो एव पाइयो।

प्राकृत और संस्कृत भाषा सहोदरा हैं। प्राक्+कृत् पद से प्राकृत है। प्राक+कृत् शब्द का अर्थ है पूर्वकृत्। लोगों के व्याकरण आदि संस्कार रहित सहज/स्वाभाविक वचन व्यवहार/व्यापार प्रकृति है, उससे उत्पन्न जो है वह प्राकृत है।

एस साहाविग-सुबोह-गम्मो सयल-भासाण मूल उग्गमथली। वागवइ-राएण वुत्तो-

सयलाओ इमं वाया

विसंति एत्तो य णेंति वायाओ। एंति समुद्रं चिय णेंति

सायराओ च्चिय जलाई।।

यह स्वाभाविक सुबोध गम्य और सकल भाषाओं की मूल उद्‌गम स्थली है-वाक्पतिराज ने कहा-

सयलाओ इमं वाया

विसंति एत्तो य णेंति वायाओ। एंति समुद्दं चिय णेंति

सायराओ च्चिय जलाइं।।९३।।

जह जलं समुद्दे पवसइ, समुद्दाओ तमेव वप्फरूवाओ बहिणिस्सइइ तहेव पाइय-भासाए सव्वभासाओ पविसंति पाइय-भासाहिंतो एव अण्ण-भासाओ णिस्सरंति। पाइय-भासाए विगासो पयडी जण्णो, साहाविग-रूवाओ जाओ।

जिस तरह जल समुद्र में प्रवेश करता है, समुद्र से वही वाष्प रूप से बाहर निकलता है उसी तरह प्राकृत भासा में सभी भाषाएं से ही अन्य भाषाएं निकलती हैं। प्राकृत भाषा का विकास प्रकृतिजन्य है; स्वाभाविक रूप से हुआ है।

बुल्लरो पाइयं जणसाहरणस्स भासा मण्णए। पिसल-महाभागो वि जण-भासं पाइयं मण्णए। णेमिचंदो वि एस मण्णए।

अओ जा भासा पयडीइ सहावेणं सयमेव सिद्धंतं पाइयं

पयडीणं सहाविग-साहारण-जणाणं जा भासा सो पाइयो। जण-सामण्ण- जण-पयलिय-जण-साहारण-जण-बोली-पाइयो। जा पाइय-भासा काल-भेएण खेत्त भेएण वा अणेयविहा जाआ। साहिच्चेवि सा अणेय-विहा पत्ता।

पाइयस्स विभागो–

(१) आईजुगो, (२) मज्झजुगो, (३) आहुणियजुगो वा अवभंसकालो।

आईजुगोः- [ई० पू० ६वीं सईओ ईसवी वीअ-सई-पेरंतं] इमस्स जुगस्स पाइयस्स पहुह-पण-भेया अत्थि। जायय-कहा-साहित्ताणं भासा वि अस्स जुगस्स अंतरगए मण्णए। आईजुगस्स/पढम-जुगिज्ज-पाइएसु, (१) आरिस-पाइयो, (२) सिलालेही-पाइयो, (३) धम्मपय-पाइययो, (४) णिया पाइयो, (५) अस्सघोसस्स णाडयाणं पाइयोय।

डॉ० णेमिचंदेण णिया पाइयस्स ठाणे पुरा जेणसुत्ताणं पाइयं मण्णियो।

उत्त-पाइय-भासाणं संक्खित्त-परिचयो--

आरिस-पाइयो–

आइरिय हेमचंदेण ('आर्षम्' १/४) आरिस-पाइयं रिसि-भासियो वुत्तो। महावीरस्स बुद्धस्स य पच्छा आरिस-

बुल्नर प्राकृत को जन-साधारण की भाषा मानते हैं। पिशल महाभाग भी जनता की भाषा को प्राकृत मानते हैं, नेमिचंद भी यही मानते हैं।

अतः जो भाषा प्रकृति से स्वभाव से स्वयं ही सिद्ध/प्रसिद्ध है, उसे प्राकृत कहते हैं। अथवा जो प्रकृति स्वाभाविक साधारण जनों की भासा है वह प्राकृत है। जन-सामान्य जन प्रचलित, जन साधारण की लोक बोली प्राकृत है। जो प्राकृत भाषा काल भेद और क्षेत्र भेद से अनेक प्रकार की हो गई। साहित्य में भी वह अनेक रूपों को प्राप्त हुई।

प्राकृत का विभाग–

(१) आदियुग, (२) मध्ययुग और, (३) आधुनिक युग या अपभ्रंशकाल।

आदियुगः-[ई० पू० ६वीं सदी से ईस्वी के द्वितीय शताब्दी तक] इस युग की प्राकृत के प्रमुख पांच भेद हैं। जातक कथा साहित्य की भाषा भी इसी युग के अन्तर्गत मानी गई है। आदियुग/प्रथमयुगीन प्राकृतों में (१) आर्ष प्राकृत, (२) शिला-लेखी प्राकृत, (३) धम्मपद की प्राकृत, (४) निया प्राकृत और (५) अश्वघोष के नाटकों की प्राकृत। डॉ० नेमिचन्द ने निया प्राकृत के स्थान पर प्राचीन जैन सूत्रों की प्राकृति को माना।

उक्त प्राकृत भाषाओं का संक्षिप्त परिचय–

१. आर्ष प्राकृत–

आचार्य हेमचन्द्र ने (आर्षम् १/४) आर्ष प्राकृत को ऋषि-भाषित कहा है। महावीर और बुद्ध के पश्चात् आर्ष पुरुषों,

पुरिसाणं महापुरिम्माणं रिसि-गणाणं च जा भासा अत्थि सा भासा आरिस-भासा। महावीरस्स बुद्धस्स वयणाणं आरिस-वयणं वि वुच्चए। जं तेहिं जण-भासं आसेऊणं लोय- कल्लाणस्स उवएसा दिण्णा। जेणं परिणामेणं अत्थं तेहिं सिस्सेहिं सुत्त-बद्धा कआ। आइरिएहिं महापुरिसेहिं कव्व- सिजणं काऊण आरिसभासाए विगासम्मि मह-जोगदाणं दिण्णं।

आरिस-वयणं भासा-विण्ण-जणेहिं आरिस-पाइयो पण्णत्ता महावीरस्स बुद्धस्स च वयणं जो जण भासाए अलंकिअं। मूलओ आरिस-पाइय-तिविहा। १. सोरसेणी, २. अद्धमागही तहा, ३. पाली।

१. सौरसेणी पाइयो:–सोरसेणी-पाइयं आरिसो वुत्तो। महावीरस्स वयणं अद्धमागहीए सोरसेणी-पाइयम्मि भासाविण्ण-जणेहिं इमं पाइयं अइपुरा मण्णिआ। सव्वपढमो इमं पाइयं भरयमुणिणा णट्टसत्थे उल्लेहो कओ। पाईण-उस खंडागमाइ-गंथेसु अस्स पाइयस्स पओगो जाओ। असोगस्स आहिलेहेसुं वि अस्स पाइयस्स पओगो पत्तेइ। णाडगेसुं अस्स पाइयस्स बहुलत्तणं। दिगंबराणं सिद्धंत-कम्म-गंथाणं आईणं भासा, सोरसेणी पाइयो।

वाराणसीए पुव्वे अद्धमागही भासाए पयारो अहेसि। पच्छिम-भागम्मि सोरसेणी। पाइयस्स बहुलत्तणं। सा भासा वजमंडलस्स

महापुरुषों और ऋषिगणों की जो भाषा थी, वह भाष आर्ष भाषा है। महावीर और बुद्ध के वचनों को आर्ष वचन भी कहा जाता है क्योंकि उनके द्वारा जन-भाषा को आश्रय लेकर लोक कल्याण का उपदेश दिए गए। जिसके फलस्वरूप अर्थ को उनके शिष्यों के द्वारा सूत्रबद्ध किया गया। आचार्यों महापुरुषों और काव्य-साहित्य में प्रवीण जनों के द्वारा काव्य-सृजन करके आर्ष भाषा के विकास में बड़ा योगदान दिया।

आर्ष वचन को भाषा वैज्ञानिकों ने आर्ष प्राकृत कहा है। महावीर और बुद्ध के वचन जो जनभाषा से अलंकृत थे। मूलत: आर्ष प्राकृत के तीन प्रकार हैं–

१. शौरसेनी, २. अर्धमागधी तथा ३. पाली।

१. शौरसेनी प्राकृत:–शौरसेनी प्राकृत को आर्ष कहा-महावीर के वचन अर्धमागधी और शोरसेनी प्राकृत में हैं। भाषाविज्ञ जनों के द्वारा इस प्राकृत को अतिप्राचीन माना गया। सर्वप्रथम इस प्राकृत को भरतमुनि के द्वारा नाट्यशास्त्र में उल्लेख किया। प्राचीन षट्खण्डागम आदि ग्रन्थों में इस प्राकृत का प्रयोग हुआ। अशोक के अभिलेखों में भी इस प्राकृत का प्रयोग प्राप्त होता है। नाटकों में इस प्राकृत कीबहुलता है। दिगम्बरों के सिद्धान्त और कर्म ग्रन्थों आदि की भाषा शौरसेनी प्राकृत है।

वाराणसी के पूर्व में अर्धमागधी भाषा का प्रचार था। पश्चिम भाग में शौरसेनी प्राकृत की बहुलता थी। वह भाषा ब्रजमण्डल

महुराए सणियडे य सूरसेण भागे पल्लविय पुप्फियंता विसाल मज्झ पएसम्मि पसरिआ। अहिलेहाणं पमाणेहि एस णायए सोरसेणी-पाइयो पच्छिमाओ पुव्वे वित्थिण्णमाणा दाहिणभागम्मि वि अस्स पसारो जाओ।

सूरसेण-खेत्तेण एसा, भासा सोरसेणी जाआ। जआ एसा भासा अहिलेहाणं भासा जाआ तआ एसा गुज्जर-उडिया-भागे वि पसरिआ।

राइणइग-पहावेणं वि सा भासा णिय-खेत्त वित्थारम्मि समत्था जाआ खारवेल-समए सा उडिया भागे तहा मोरियजुगम्मि दाहिण-विसालखेत्तम्मि पसरिआ। सिद्धंतवेत्ताहिं तत्तवेताहिं आइरिएहिं सोरसेणी-पाइयो सुत्तगंथाणं सोहावड्ढणम्मि अग्गण्ण-भुवंता णाडगाणं णट्टकलाए सहभागी जाआ।

पाइय-वागरणयारेहिं सोरसेणी-पाइयस्स णियमाणं सतंतो विहाणं कअं। णट्टसत्थयाराओ पच्छा चंडेणं पाइय-लक्खणे सोरसेणीएं पाइयस्स एगसुत्तं विरइयं। पाइय-पयासस्स रयणायारेणं सोरसेणी-णियमाणं वित्थारो कओ। हेमचंद-तिवि-क्कम-लच्छीहर-कमईसर-मारकंडेयाई-वागरण-सुत्तयारेहिं सोरसेणी-पाइयस्स णियमाणं विहाणं कअं। आहुणिय भासाविण्ण जणेहि तेसिं णियमाणं उल्लेहो कओ जेसिं वागरण गंथेसु समाविट्ठो। डॉ० पिसेल-डॉ० णेमिचन्द-डॉ० घाडगे-डॉ० कत्ते डॉ० उपज्झे-डॉ० एस० डी० लड्डू- डॉ० जगइस-चंदमहाभाएहिं एअस्स पाइयस्स उल्लेहो कओ।

के एवं मथुरा के सन्निकट शूरसेन भाग में वल्लवित एवं पुष्पित होती हुई विशाल मध्यभाग में फैली। अभिलेखों के प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि शौरसेनी प्राकृत पश्चिम से पूर्व में विस्तार को प्राप्त होती हुई दक्षिण भाग में भी इसका प्रसार हुआ।

शूरसेन क्षेत्र के कारण यह भाषा शौरसेनी कहलायी। जब यह भाषा अभिलेखों की भाषा बनी, तब यह गुजरात और उड़ीसा के भाग में भी फैल गई।

राजनैतिक प्रभाव से भी वह भासा अपने क्षेत्र के विस्तार करने में समर्थ हुई। खारवेल के समय में वह उड़ीसा भाग में तथा मौर्य-युग में दक्षिण के विशाल क्षेत्र में विकसित हुई। सिद्धान्त एवं तत्ववेत्ता आचार्यो के द्वारा शौरसेनी प्राकृत सूत्रग्रन्थों की शोभा बढ़ाने में अग्रगण्ण होती हुई नाटकों की नाट्यकला में सहभागी हुई।

प्राकृत व्याकरणकारों के द्वारा शौरसेनी प्राकृत के नियमों का स्वतंत्र विधान किया। नाट्यशास्त्रकार में शौरसेनी प्राकृत का एकसूत्र बनाया। प्राकृत-प्रकाश के रचनाकार के द्वारा शौरसेनी के नियमों का विस्तार किया गया। हेमचन्द्र, त्रिविक्रम, लक्ष्मीधर, क्रमदीश्वर, मार्कण्डेय आदि व्याकरण के सूत्रकारों द्वारा शौरसेनी प्राकृत के नियमों का उल्लेख किया जिनका व्याकरण ग्रन्थों में समावेश है। डॉ० विशेल, डॉ० नेमिचंद, डॉ० घाटगे, डॉ० कत्ते, डॉ० उपाध्ये, डॉ० एस० डी० लड्डू, डॉ० जगदीश चन्द आदि महाविचारकों के द्वारा इस प्राकृत का उल्लेख किया गया।

सोरसेणी-पाइयस्स-विसेसत्तणं-सरलविंजण-परिवट्टणं-

[१] मज्झ-अंतस्स 'तस्स दो-जह- मारुतपुत्र-मारुद-पुत्तो।

[२] कहिं चि आइ-तस्स दो-

जह-ताव-दाव

[३] संजुत्त-तस्स दो ण वा।

जह-महान्त: महंदो णिच्चिंत णिच्चिंद।

[४] थस्स धो वा।

जह-णाह-णाध, अध अह

[५] इहस्स हस्स धो वा।

जह- इह-इध

[६] भुवस्स। भो-भवो वा।

जह:-भुव-भव-भवदि-हवदि भोदि-होदि।

[७] भू-हो वा।

जह-हुंति।

[८] र्यस्स य्यो वा।

जह-सूर्य-सुय्य-सुज्ज

[९] नंतस्स अनुस्सारो संबोहणे

जह-भगवन्-भगवं राजन्-रायं।

[१०] कहिं चि आ।

जह-तवस्विन्-तवस्सिआ सुखिन्-सुहिआ, दु:खिन्-दुहिआ कञ्चुकिन्-कंचुइआ

[११] कस्स गो वा।

शौरसेनी प्राकृत की विशेषताएं सरल व्यञ्जन परिवर्तन

[१] मध्य और अन्त के त का द होता है जैसे :-मारुत-पुत्र-मारुद-पुत्तो

[२] कहीं पर आदि 'त' का द होता है।

जैसे :-ताव-दाव

[३] संयुक्त का 'द' विकल्प से होता है।

जैसे :-महान्त:-महंदो निश्चित, णिच्चिंद

[४] थ का ध विकल्प से होता है

जैसे :-णाह-णाध, अध-अह

[५] इह के ह का 'ध' विकल्प से होता है

जैसे :-इह-इध

[६] भुवन का भो भव विकल्प से होता है

जैसे :-भुव-भव भवदि-हवदि भोदि-होदि।

[७] भू का ह होता है।

जैसे :-हुंति।

[८] 'र्य' का 'य्य' विकल्प से होता है।

जैसे :-सूर्य:-सुय्य-सुज्ज

[९] सम्बोधन में नकारान्त का अनुस्वार होता है

जैसे :-भगवन्-भगवं, राजन्-रायं

[१०] सम्बोधन में कहीं-कहीं पर आ होता है।

जैसे :-तपस्विन्-तवस्सिवआ सुखिन-सुहिआ, दुखिन्-दुहिआ, कञ्चुकिन्-कंचुइआ

[११] 'क' का ग विकल्प से होता है।

जह–एक-एग-एअ-एय

[१२] ख-घ-ध-घ-भस्स हो।

जुह-मुख-मुह, लिख-लिह दुःख-दुह

अघ-अह, मघ→मह

मेघ-मेह पथ-पह

साधु-साहु, सुलभ-सुलह

अध-अह करभ-करह

शुभ-सुह

[१३] णो नस्स।

जह–नम-णम, मदन-मयण

[१४] टस्स डो।

जह–घट-घड, पट-पड

[१५] ठस्स ढो।

जह–मठ-मढ, पठ-पढ

[१६] पस्स वो।

जह–पाप-पाव, कोप-कोव

[१७] सस्स हो कहिं चि

जह–दस-दह, रस-रह

[१८] स, ष-शस्स सो

जह–सागर-सायर, दिवस-दिवस ऋषभ-उसह, विषम-विसम भाषा-भासा, शशि-ससि, शीतल-सीदल आशा-आसा,

[१९] क-ग-च-ज-त-द-प वयस्स्य पायो लुगो।

जह–लोक-लोअ, नगर-णअर, वचन-वयण, राजा-राआ, श्रुत-सुय, सदा-सआ, रिपु-रिउ उपयोग-उवयोग।

संजुत्त-विंजण-परिवट्टणं

[१] संजुत्ते लुत्त विंजणस्स दुगो।

जह–धर्म-धम्म, कर्म-कम्म। मुक्त-मुत्त, भृष्ट-भट्ट।

जैसे :–एक-एग-एअ-एय

[१२] ख, घ, थ, ध और भ का 'ह' होता है।

जैसे :–मुख-मुह

लिख-लिह दुःख-दुह

अघ-अह, अथ-अह

मेघ-मेह, पथ-पह,

साधु-साहु, सुलभ-सुलह,

अध-अह करभ-करह, शुभ-सुह

[१३] 'न' का 'ण' होता है।

जैसे :–नम-णम, मदन-मयण

[१४] 'ट' का 'ड' होता है।

जैसे :–घट-घड, पट-पड

[१५] 'ठ' का 'ढ' होता है।

जैसे–मठ-मढ, पठ-पढ

[१६] 'प' का 'व' होता है।

जैसे :–पाप-पाव, कोप-कोव

[१७] स का ह होता है कहीं पर।

जैसे :–दस-दह का 'स' रस-रह

[१८] स, ष, श, का, 'स' होता है।

जैसे :–सागर-सायर, दिवस-दिवस ऋषभ-उसह, विषम-विसम भाषा-भासा, शशि-ससि, शीतल-सीयल आशा-आसा

[१९] क, ग, च, ज, त, द, प, व और य का प्रायः लोप होता है।

जैसे :– लोक-लोअ नगर-णअर, वचन-वयण, राजा-राया श्रुत-सुय, सद-सआ, रिपु-रिऊ उपयोग-उवओग

संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तनः-

[१] संयुक्त होने पर लुप्त व्यञ्जन द्वित्व हो जाता है।

जैसे :–धर्म-धम्म, कर्म-कम्म, मुक्त-मुत्त, भृष्ट-भट्ट।

[२] वग्गस्स पढमचउत्थस्स वीअ-तइयो

जह-अक्षर-अक्खर अर्घ-अग्घ

[३] तलुगत्ते दित्तो वा।

जह-शक्त-सत्तो-सक्को मुक्त-मुत्तो-मुक्को

[४] क्षस्स क्खो।

जह-अक्ष-अक्ख, दक्ष-दक्ख, दीक्षा-दिक्खा

[५] आइस्स खो।

जह-क्षमा-खमा क्षत्रिय- खत्तिय।

[६] ष्क-स्कस्स खो।

जह-पुष्कर-पोक्खर, शुष्क-सुक्ख स्कंघ, खंधो।

[७] स्थ-स्तस्स खो। स्थाणु-स्तंभस्स

जह-स्थाणू-खाणू, स्तम्भ-खंभो

[८] त्यस्स च्चो।

जह-सत्य-सच्च, नित्य-णिच्च

[९] त्वस्स विच्च।

जह-कृत्वा-किच्चा, श्रुत्वा-सुच्चा

[१०] थ्वस्स च्छो।

जह-पृथ्वी-पिच्छी

[११] द्वस्स ज्जो।

जह-विद्वान्-विज्ज

[१२] ध्यस्स च्छो।

जह-मिथ्या-मिच्छा

[१३] ध्यध्वस्स ज्झो।

जह-मध्य-मज्झ, बुध्वा-बुज्झा

[१४] क्षस्स कहिं चि च्छो।

[२] वर्ग के प्रथम का द्वितीय और चतुर्थ का तृतीय अक्षर हो जाता है-अक्षर-अक्खर अर्घ-अग्घ

[३] त के लोप होने पर द्वित्व विकल्प से होता है:-

जैसे :-शक्त-सत्तो-सक्को मुक्त-मुत्तो, मुक्को

[४] क्ष का क्ख होता है।

जैसे :-अक्ष-अक्ख, दक्ष→दक्ख, दीक्षा, दिक्खा।

[५] आदि को 'क्ष' का 'ख' होता है।

जैसे :-क्षमा-खमा-क्षत्रिय-खत्तिय

[६] ष्क और स्क का ख होता है।

जैसे :-पुष्कर-पोक्खर, शुष्क-सुक्ख स्कंघ-खंधो

[७] स्थ और स्त का ख होता है, स्थाणु और स्तम्भ के।

जैसे :-स्थाणू खाणू स्तम्भ-खंभो।

[८] त्य का च्च होता है।

जैसे :-सत्य-सच्च, नित्य-णिच्च

[९] त्व का भी च्च होता है।

जैसे :-कृत्वा-किच्चा, श्रुत्वा-सुच्चा

[१०] थ्व का च्छ होता है।

जैसे :-पृथ्वी-पिच्छी।

[११] 'द्व' का 'ज्ज' होता है।

जैसे :-विद्वान्-विज्ज

[१२] 'थ्य' का च्छ होता है।

जैसे :-मिथ्या-मिच्छा

[१३] ध्य और ध्व का ज्झ होता है।

जैसे :-मध्य-मज्झ, बुध्वा-बुज्झा

जह—अक्षि-अच्छि, इक्षु-इच्छु, लक्ष्मी-लच्छी, कक्ष-कच्छ, कुक्षि-कुच्छि, ऋक्ष-रिच्छ।

[१५] थ्य-श्च-त्स-प्सस्स च्छो वि।

जह—मिथ्य-मिच्छ, पथ्य-पच्छ पश्च-पच्छ, पश्चिम-पच्छिम उत्साह-उच्छाह, उत्सुक-उच्छुह-उत्सव-उच्छव, उत्सेध-उच्छेह जुगुप्सा-जुगुच्छा, लिप्सा-लिच्छा।

[१६] द्य-य्य-र्यस्स ज्जो।

जह—विद्या-विज्जा, गद्य-गज्ज शय्या-सेज्जा कार्य-कज्ज, सूर्य-सुज्ज।

[१७] र्यस्स वा य्यो

जह—सूर्य-सुय्य, आर्य-अय्य

[१८] ग्ध-ह्यस्स ज्झो।

जैह-दुग्ध-दुज्झ, गुह्य-गुज्झ

[१९] त्तस्स टटो।

जह—वृत्त-वट्टो, मृत्तिका-मट्टिआ पत्तर, पट्टण।

[२०] र्तस्स त्तो।

जह—मूर्त-मुत्त, धूर्त-धुत्त, कीर्ति-कित्ति, कर्ता-कत्ता, भर्ता-भत्ता।

[२१] र्थयस्स त्थो ट्ठो वा।

जह—अर्थ-अत्थ, पदार्थ-पयत्थ समर्थ-समत्थ, अट्ठ-पयट्ठ समट्ठ।

[२२] ष्टस्स ट्ठो।

जह—कष्ट-कट्ठ, इष्ट-इट्ठ, पुष्ट-पुट्ठ, दृष्टि-दिट्ठि।

[१४] क्ष का कहीं-कहीं पर च्छ होता है।

जैसे :—अक्षि-अच्छि, इक्षु-इच्छु, लक्ष्मी-लच्छी, कक्ष-कच्छ, कुक्षि-कुच्छि, ऋक्ष-रिच्छ।

[१५] श्य, श्च, त्स और प्स का भी च्छ होता है।

जैसे :—मिथ्य-मिच्छ, पथ्य-पच्छ, पश्च-पच्छ, पश्चिम-पच्छिम, उत्साह-उच्छाह, उत्सुक-उच्छुह उत्सव-उच्छव, उत्सेध-उच्छेह जुगुप्सा-जुगुच्छा, लिप्सा-लिच्छा।

[१६] द्य, य्य और र्य का ज्ज होता है।

जैसे :—विद्या-विज्जा, गद्य-गज्ज शय्या-सज्जा, कार्य-कज्ज, सूर्य-सुज्ज

[१७] र्य का य्य विकल्प से होता है।

जैसे :—सूर्य-सुय्य, आर्य-अय्य

[१८] ग्ध और ह्य का ज्झ होता है।

जैसे :—दुग्ध-दुज्झ, गुह्य-गुज्झ

[१९] 'त्त' का 'ट्ट' होता है।

जैसे :—वृत्त-वट्ट, मृत्तिका-मट्टिआ पत्तन-पट्टण।

[२०] र्त का त्त होता है।

जैसे :—मूर्त-मुत्त, धूर्त-धुत्त, कीर्ति-कित्ति कर्ता-कत्ता, भर्ता-भत्ता।

[२१] र्थ का त्थ ट्ठ विकल्प से होता है।

जैसे :—अर्थ-अत्थ-अट्ठ, पदार्थ-पयत्थ-पयट्ठ।

[२२] 'ष्ट' का ट्ठ होता है।

[२३] र्द-ग्ध-द्धस्स ड्ढो।

जह—संसर्द-संमड्ढ, कपर्द-कवड्ढ, छर्द-छड्ढ वितर्द-वितड्ढ दग्ध-दड्ढ, वृद्धि-वुड्ढि, ऋद्धि-इड्ढि।

[२४] ज्ञस्स णो।

जह—प्रज्ञा-पण्णा, अज्ञ-अण्ण-ज्ञान-णाण, संज्ञा-सण्णा।

[२५] पञ्चाशत्-पञ्चदश-दत्तस्स णो।

जह—पञ्चाशत्-पण्णासा, पञ्चदश-पण्णरह, दत्त-दिण्ण।

[२६] स्तस्स त्थो।

जह—हस्त-हत्थ, मस्तिक-मत्थिअ, हस्ति-हत्थि, अस्ति-अत्थि।

[२७] ष्पस्पस्स प्फो।

जह—पुष्प-पुप्फ, इन्द्रियस्पर्श-इंदियप्फास।

[२८] ह्वस्स ब्भो वा

जह—जिह्वा-जिब्भा-जीहाविह्वल-विब्भल-बीहल।

[२९] श्म-न्म-ग्मस्स म्मो।

जह—कश्मीर-कम्मार जन्म-जम्म, युग्म-जुम्म।

[३०] र्यस्स रो कहिं चि।

जह—ब्रह्मचर्य-बम्हचेर, तूर्य-तूर सौन्दर्य-सुंदेर, शौण्डीर्य-सोण्डीर धैर्य-धीर, सूर्य-सूर, पर्यन्त-पेरंत

[३१] आश्चर्यस्स र्यस्स र अर-रिअ-रिज्ज-रीआ।

जैसे :—कष्ट-कट्ठ, इष्ट-इट्ठ, पुष्ट-पुट्ठ, दृष्टि-दिट्ठि

[२३] र्द, ग्ध, द्ध का ड्ढो होता है।

जैसे :—संमर्द-संमड्ढ, कपर्द-कवड्ढ, छर्द-छड्ढ, वितर्द-वितड्ढ, दग्ध-दड्ढ, वृद्धि-वुड्ढि, ऋद्धि-इड्ढि।

[२४] 'ज्ञ' का 'ण' होता है।

जैसे :—प्रज्ञा-पण्णा, अज्ञ-अण्ण ज्ञान-णाण, संज्ञा-सण्णा।

[२५] पञ्चाशत्, पञ्चदश, और दत्त के संयुक्त अक्षर का 'ण' होता है।

जैसे :—पञ्चाशत्,-पण्णासा, पञ्चदश-पण्णरह दित्त-दिण्ण।

[२६] 'स्त' का 'त्थ' होता है।

जैसे :—हस्त-हत्थ, मस्तिक, मत्थिअ, हस्ति-हत्थि, अस्ति-अत्थि-

[२७] 'ष्प स्प का 'प्फ' होता है।

जैसे :—पुष्प-पुप्फ, इन्द्रियस्पर्श-इंदियप्फास।

[२८] ह्व का ब्भ विकल्प से होता है।

जैसे :—जिह्वा-जिब्भा-जीहा विह्वल-बिब्भ-वीहल।

[२९] श्म न्म और ग्म का म्म होता है।

जैसे :—कश्मीर-कम्मार, जन्म-जम्म, युग्म-जुम्म।

[३०] 'र्य' का 'र' होता है कहीं पर।

जैसे :—ब्रह्मचर्य-बम्हचेर, तूर्य-तूर, सौन्दर्य-सुंदेर, शौण्डीर्य-सोण्डीर, धैर्य-धीर, सूर्य-सूर, पर्यन्त-पेरंत

[३१] आश्चर्य के र्य का र, अर, रिअ, रिज्ज और रीअ होता है।

जह–आश्चर्य-अच्छेर-अच्छअर, अच्छरिअ, अच्छरिज्ज, अच्छरीअ

[३२] दु:ख दक्षिणस्स हो।

जह–दु:ख-दुह दक्षिण-दाहिण।

[३३] क्ष्म-श्म-ष्म-स्म-ह्मस्स म्हो।

जह–पक्ष्म-पम्ह, कुश्मान-कुम्हाण ग्रीष्म-गिम्ह, विस्मय-विम्हअ ब्रह्मा-बम्हा।

[३४] क्ष्म-श्न-ष्ण-स्न-ह्न-ह्ण क्ष्णस्स ण्हो।

जह–सूक्ष्म-सुण्ह, प्रश्न-पण्ह, विष्णु-विण्हु, स्नान-ण्हाण, बह्नि-बण्हि, पूर्वाह्ण-पुव्वण्ह तीक्ष्ण-तिण्ह।

[३५] सव्वत्थ ल-व-रस्स लुगो।

जह–शुक्ल-सुक्क, उल्का-उक्का वर्ग-वग्ग, चक्र-चक्क, शब्द-सद्द।

[३६]क-ग-ट-ड-त-द-प-श-ष-सस्स लुगे दित्तो।

जह–भुक्त-भुत्त, दुग्ध-दुद्ध, षट्पद-छप्पअ उत्पल-उप्पल, पुद्गल-पुग्गल सुप्त-सुत्त, दुश्चरित्र-दुच्चरित्त-शिष्य-सिस्स निस्संको-णीसंको

[३७] मज्झ अंत-सेस-विंजणस्स दित्तो।

जह–मूर्त-मुत्त, उत्पाद-उप्पाद।

[३८] संजुत्ताभावे दित्तो कहिंचि।

जह–तेल-तेल्ल, एक-एक्क प्रेम-पेम्म, यौवन-जोव्वण, सुख-सोक्ख, ऋजु-उज्जु अजीव-अज्जीव।

जैसे :–आश्चर्य-अच्छेर-अच्छअर, अच्छरिअ, अच्छरिज्ज, अच्छरिअ

[३२] दु:ख और दक्षिण के संयुक्त अक्षर का 'ह' होता है।

जैसे :–दु:ख-दुह दक्षिण-दाहिण

[३३] क्ष्म, श्म, ष्म, स्म और ह्म का 'म्ह' होता है।

जैसे :–पक्ष्म-पम्ह, कुश्मान-कुम्हाण, ग्रीष्म-गिम्ह, बिस्मय-बिम्हअ, ब्रह्मा-बम्हा।

[३४] क्ष्म, श्न, ष्ण, स्न ह्न, ह्ण और क्ष्ण का ण्ह होता है।

जैसे :–सूक्ष्म-सुण्ह, प्रश्न-पण्ह, विष्णु-विण्हु, स्नान-णहाण, बह्नि-बण्हि, पूर्वाह्ण-पुण्वण्ह तीक्ष्ण-तिण्ह।

[३५] संयुक्त ल्य, र , का लोप सभी जगह होता है।

जैसे :–शुक्ल, सुक्क उल्का-उक्का-चक्र-चक्क, वर्ग-वग्ग, शब्द-सद्द

[३६] क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष और स के लोप होने पर द्वित्व होता है।

जैसे :–भुक्त-भुत्त, दुग्ध-दुद्ध, षट्पद-छप्पअ, उप्पल-उप्पल, पुद्गल-पुग्गल, सुप्त-सुत्त, दुश्चरित्र-दुच्चरित, शिष्य-सिस्स, निस्संक-णीसंक।

[३७] मध्य और अन्त शेष व्यञ्जन का द्वित्व होता है।

जैसे :–मूर्त-मुत्त, उत्पाद-उप्पाद

[३८] संयुक्त के अभाव होने पर कहीं-कहीं द्वित्व होता है।

जैसे :–तेल-तेल्ल, एक-एक्क, प्रेम-पेम्म, यौवन-जोव्वण, सुख-सोक्ख, ऋजु-उज्जु अजीव-अज्जीव।

सर-परिवट्टणं :-

[१] विसग्गस्स ओ।

जह—पुरतः-पुरदो, पुनः-पुणो

[२] अस्स उ कहिंचि

जह—ध्वनि-झुणी, विष्वक्-वीसुं

[३] अस्स ए।

जह—शय्या-सेज्जा, कन्दुक-गेंदुग अत्थ-एत्थ, सौन्दर्य-सुंदेर बल्ली-बेल्ली, उक्कर-उक्केर अन्तः पुर-अंदेउर, ब्रह्म-चर्य-बम्हचेर महर्षि-महेसि, आश्चर्य-अच्छेर।

[४] अस्स ओ।

जह—पद्म-पोम्म, नमस्कार-णमोक्कार परस्पर-परोप्पर, अर्पयति-ओप्पेदि स्वपिति-सोवदि।

[५] आए अ वा।

जह—यथा-जह—जधा, तथा-तध-तधा, अथवा-अधव, अधवा, वा-व, उक्खात-उक्खय-उक्खाद, चामर-चमरा-चामर, कुमार-कुमर-कुमार, स्थापित-ठविद-ठाविद।

[६] सदाइणो इ वा

जह—सदा-सया-सइ, आचार्य-आइरिय-आयरिय निशाचर-णिसिअर-णिसाअर।

[७] कहिं चि 'ई'।

जह—स्त्यान-ठीण-थीण खल्वाट-खल्लीढ।

[८] उ च।

जह—सास्ना-सुण्हा, स्तावक, थुवअ आर्द्र-उल्ल।

स्वर-परिवर्तन :-

[१] विसर्ग का 'ओ' होता है।

जैसे :—पुरतः-पुरदो, पुनः-पुणो

[२] 'अ' का 'उ' होता है कहीं-कहीं पर।

जैसे :—ध्वनि-झुणी, विष्वक्-वीसुं

[३] 'अ' का ए होता है।

जैसे :—शय्या-सेज्जा, कन्दुक-गेंदुग अत्थ-एत्थ, सौन्दर्य-सुंदेर, बल्ली-बेल्ली, उक्कर-उक्केर, अन्तःपुर-अंदेउर, ब्रह्म-चर्य-बम्हचेर, महर्षि-महेसि, आश्चर्य-अच्छेर।

[४] अ का ओ होता है।

जैसे :—पद्म-पोम्म, नमस्कार-णमोक्कार परस्पर-परोप्पर, अर्पयति-ओप्पेदि स्वपिति-सोवदि।

[५] आ का 'अ' होता है विकल्प से।

जैसे :—यथा-जध, जधा, तथा-तध-तधा अथवा-अधव-अधवा, वा-व उक्खात-उक्खय-उक्खाद, चामर-चमर-चामर, कुमार-कुमर-कुमार, स्थापित- ठविद-ठाविद।

[६] सदा आदि के 'आ' का 'इ' विकल्प से होता है।

जैसे :—सदा-सया-सइ, आचार्य-आइरिय-आयरिय, निशाचर-णिसिअर-णिसाअर।

[७] कहीं-कहीं पर 'ई' होता है।

जैसे :—स्त्यान-ठीण-थीण खल्वाट-खल्लीढ।

[८] आ का उ भी होता है।

जैसे :—सास्ना-सुण्हा, स्तावक-थुवअ आर्द्र-उल्ल।

[९] आसारस्स ऊ वा।

जह—आसार-ऊसार-आसार।

[१०] आए ए।

जह—ग्राह्य-गेज्झ-गेण्ह, द्वार-देर, नारकी-णेरइ, मात्र-मेत्त।

[११] संजुत्त-दिग्घसरस्स हिस्सो।

जह—आम्र-अम्ब, ताम्र-तम्ब विरहाग्नि-विरहग्गि, मुनीन्द्र-मुणिंद तीर्थ-तित्थ, चूर्ण-चुण्ण, सामान्य-सामण्ण, महाराष्ट्र-मरहट्ठ।

[१२] इस्स अ।

जह—पथि-पह, पृथिवी-पुहवी, प्रतिश्रुत्-पडसुद, मूषिक-मूसग, हरिद्रा-हलद्दा, विभीतक-वहेडअ।

[१३] द्विस्स इस्स उओ वा।

जह—द्वि-दु दो

[१४] ईइस्स ए वि

जह—विक्रिया-वेउव्वि, तिष्ठ-चेट्ठ द्वि-वे, विभीतक-वहेडअ।

[१५] ईए इ।

जह—हरीतकी-हरडइ

[१६] ईए आ।

जह—कश्मीर-कम्हार।

[१७] ईए इ।

जह—पानीय-पाणिअ, अलीक-अलिअ, जीवति-जिअदि, करीष-करिय, शिरीष-सिरिस, द्वितीय-विदिय तृतीय-तइय, तदिय, गंभीर-गाहिर, उपनीत-उवणिअ,

[९] आसार के 'आदि' का ऊ विकल्प से होता है।

जैसे :—आसार-ऊसार, आसार।

[१०] 'आ' का ए भी कहीं-कहीं पर होता है।

जैसे :—ग्राह्य-गेज्झ-गेण्ह, द्वार-देर नारकी-णेरई, मात्र-मेत्त।

[११] सयुक्त दीर्घ स्वर का ह्रस्व होता है।

जैसे :—आम्र-अम्ब, ताम्र-तम्ब, विरहाग्नि-विरहग्गि, मुनीन्द्र-मुणिद, तीर्थ-तित्थ, चूर्ण-चुण्ण, सामान्य-सामण्ण, महाराष्ट्र-मरहट्ठ।

[१२] 'इ' का अ भी होता है।

जैसे .—पथि-पह, पृथिवी-पुहवी, प्रतिश्रुत-पडसुद, मूषिक-मूसग, हरिद्रा हलद्दा, विभीतक-वहेडअ।

[१३] 'द्वि' के इ का उ, ओ होता है विकल्प से।

जैसे :—द्वि-दु दो।

[१४] ई 'इ' का ए भी कही-कहीं पर होता है।

जैसे :—विक्रिया-वेउव्वि, तिष्ठ-चेट्ठ द्वि-वे, विभीतक-वेहडअ।

[१५] 'ई' का इ होता है

जैसे :—हरीतकी-हरडइ।

[१६] 'ई' का 'आ' होता है।

जैसे :—कश्मीर-कम्हार।

[१७] 'ई' का इ होता है।

जैसे :—पानीय-पाणिअ, अलीक-अलिअ, जीवति-जिअदि, करीष-करिस, शिरीष-सिरिस, द्वितीय-विदिय, तृतीय-तइय-तदिय, गंभीर-गहिर, उपनीत-उवणिअ,

आनीत-आणिअ, प्रदीपित-पलिविद, प्रसीद-पसिद गृहीत- गाहिद, इदानीम्-इदाणिं-दाणिं।

[१८] जीर्णस्स उ।

जह—जीर्ण-जुण्ण।

[१९] हीन-विहीनस्स ईए ऊ वा।

जह—हीन-हूण-हीण, विहीन-विहूण-विहीण।

[२०] पीयूषाईणो ईए ए वा।

जह—पीयूष-पेऊस-पीऊस, आपीड-आमेल-आवीड, विभीतक-वहेडअ, की दृशाः-केरिसो-कीरिसो ईदृशः-एरिसो-ईरिसा।

[२१] उस्स अ।

जह—मुकुल-मउल, मुकुर-मउल, मुकुट-मउड, अगरु-अगरु-अगरु, गुर्वी-गरुई, युधिष्ठिर,-जहिट्ठिल, सौकुमार्य-सोअमल्ल, गुडूची-गलोइ।

[२२] उस्स इ वि।

जह—भ्रुकुटी-भिउडी, पुरुष-पुरिस

[२३] संजुत्ते उस्स ओ वा।

जह—पुद्गल-पोग्गल-पुग्गल, पुष्कर-पोक्खर-पुक्खर, मुद्गर- मोग्गर-मुग्गर, पुस्तक-पोत्थअ-पुत्थअ।

[२४] ऊए उ।

जह—भ्रू-भु। हनूमत-हणुमंत कण्डूय-कण्डुय, वातूल-वाउल, मधूक- महुअ, मूसल-मुसल।

आनीत-आणिअ, प्रदीपित-पलि विद, प्रसीद-पसिद गृहीत-गहिद, इदानीम्-इदाणिं, दाणिं।

[१८] जीर्ण के 'इ' का उ हो जाता है।

जैसे :—जीर्ण-जुण्ण।

[१९] हीन और विहीन के 'ई' का 'ऊ' विकल से होता है।

जैसे :—हीन-हूण-होण, विहीन-विहूण-विहीण।

[२०] पीयूष आदि के 'ई' का ए विकल्प से होता है।

जैसे :—पीयूष-पेऊस-पीऊस, आपीड-आमेल-आवीड, विभीतक वहेडअ, कीदृशः केरिसो, कीरिसो ईदृश-एरिसो-ईरिसो।

[२१] 'उ' का अ हो जाता है।

जैसे :—मुकुल-मउल, मुकुर- मउल, मुकुट-मउड, अगुरू-अगरू गुर्वी-गुरूई, युधिष्ठिर-जहिट्ठिल, सौकुमार्य, सोअमल्ल, गुडूची-गलोइ।

[२२] उ का इ भी होता है कहीं-कहीं पर।

जैसे :—भ्रुकुटी-भिउडी, पुरुष-पुरिस

[२३] संयुक्त होने पर 'उ' का ओ विकल्प से हो जाता है।

जैसे :—पुद्गल-पोग्गल-पुग्गल, पुष्कर-पोक्खर, पुक्खर, मुद्गर-मोग्गर-मुग्गर, पुस्तक-पोत्अअ-पुत्थअ।

[२४] ऊ का 'उ' हो जाता है।

जैसे :—भ्रू-भु, हनूमत्-हणुमंत कण्डूय-कण्डुय, वातूल-वाउल, मधूक-महुअ, मूसल-मुसल।

[२५] नूपुरस्स ऊए ए।

जह—नूपुर-णेउर।

[२६] ऊए ओ।

जह—कूष्माण्डी-कोहण्डी, मूल्य-मोल्ल, तूणीर-तोणीर, कूर्पर-कोप्पर, स्थूल-थोर, ताम्बूल-तंबोल, गुडूची-गलोइ, स्थूणा-थोणा।

[२७] ऋस्स अ।

जह—घृत-घय, मृत-मय, तृण-तण मृग-मय, अमृत-अमय, वृषभ, वसह कृत-कय।

[२८] ऋस्स इ।

जह—कृपा-किवा, हृदय, हियय, मृष्ट-मिट्ठ, धृष्टठ धिट्ठ, ऋद्धि-इद्धि, इड्ढि, ऋषि-इसि, कृषि-किसि, कृमि-किमि, कृषक-किसग, नृप-णिव, पृच्छ-पिच्छ, गृद्ध-गिद्ध, गृह-गिह, ऋण-रिण, भृंग-भिग, घृणा-घिणा, शृगाल-सियाल।

[२९] ऋस्स उ।

जह—ऋषभ-उसह, प्राभृत-पाहुड मृणाल-मुणाल, वृत्तान्त-वुत्तंत, पृथिवी-पुढवी, वृद्धि-वुड्ढि, मृदंग-मुइंग, ऋतु-उऊ प्रभृति-पहुदि, पृथक-पुह, पितृ-पिउ मातृ-मादु-माउ भ्रातृ-भाउ, परामृष्ट-परामुट्ठ।

[३०] ऋस्स ए।

जह—गृह-गेह, ग्राह्य-गेज्झ

[३१] ऋस्स रि।

जह—ऋतु रिउ, ऋषभ-रिसह, ऋण-रिण, ऋद्धि-रिद्धि।

[३२] ऐइ ए अइ

[२५] नूपुर के 'ऊ' का ए हो जाता है।

जैसे :—नूपुर-णेउर।

[२६] 'ऊ' का ओ हो जाता है।

जैसे :—कूष्माण्डी-कोहण्डी, मूल्य-मोल्ल, तूणीर-तोणीर, कूर्पर-कोप्पर, स्थूल-थोर, ताम्बूल-तंबोल, गुडूची-गलोइ, स्थूणा-थोणा।

[२७] ऋ का अ हो जाता है।

जैसे :—घृत-घय, मृत-मअ, तृण-तण, मृग-मय, अमृत-अमय, वृषभ-वसह, कृत-कयं।

[२८] ऋ का इ हो जाता है।

जैसे :—कृपा-किवा, हृदय-हियय, मृष्ट-मिट्ठ, धृष्ट-धिष्ठ, ऋद्धि-इद्धि-इड्ढि, ऋषि-इसि, कृषि-किसि, कृमि-किमि, कृषक-किसग, नृप-णिव, पृच्छ-पिच्छ, गृद्ध-गिद्ध, गृह-गिह, ऋण-रिण, भृंग-भिंग, शृंग-सिंग, घृणा-घिणा, शृगाल-सियाल।

[२९] ऋ का उ होता है।

जैसे :—ऋषभ-उसह, प्राभृत-पाहुड, मृणाल-मुणाल, वृत्तान्त-वुत्तंत पृथिवी-पुढवी, वृद्धि-वुड्ढि, मृदंग-मुइंग, ऋतु-उऊ, प्रभृति-पृहुदि, पृथक्-पुह पितृ-पिदु-पिउ, मातृ-मादु-माउ, भ्रातृ-भाउ।

[३०] ऋ का ए हो जाता है।

जैसे :—गृह-गेह, ग्राह्य-गेज्झ

[३१] ऋ का रि हो जात हैं।

जैसे :—ऋतु-रिउ, ऋषभ-रिसह, ऋण-रिण, ऋद्धि-रिद्धि।

[३२] 'ऐ' का 'ए' और अइ हो जाता है।

जह–कैलास-केलास-कइलास, वैर-वेर-वइर, सैला-सेला-सइला वैभव-वेभव-वइभव, वैतरणी-वेतरणी, वइतरणी, त्रैलोक्य-तेलोक्य-तइलोक्क।

[३३] ऐइ ई।

जह–धैर्य-धीर।

[३४] औइ ओ अउ।

जह–कौमुदी-कोमुदी-कउमदी कौतूहल-कोउहल-कऊहल गौरी-गोरी-गउरी, कौशल-कोसल, कउसल औषधि-ओसहि-अउसहि, कौरव-कोरव-कउरव सौरभ-सोरह-सउरह।

[३५] गौरवस्स औओ आ य।

जह–गौरव-गारव-गोरव-गउरव।

[३६] अवस्स ओ।

जह–अवधि-ओहि, अवकाश-ओगास।

[३७] त्रयस्य ते।

जह–त्रय-ते।

[३८] चतुस्स चो।

जह–चतु-चो-चोद्दह।

[३८] दसस्स रह।

जह–एकादश-ग्यारह, द्वादश–बारह तेरह अठारह।

सण्णासद्दविहाणं

[१] पढमा एगवयणे अस्स ओ।

जह–जिणो-जिण+ओ

[२] लुगे सरे।

जह–जिण+ओ-जिणो।

जैसे :–कैलास-केलास-कइलास, वैर-वेर-वइर, सैला-सेला-सइला, वैभव-वेभव-वइभव-वैतरणी-वेतरणी, वइतरणी, त्रैलोक्य-तेलोक्क, तइलुक्क।

[३३] 'ऐ' का ई कहीं-कहीं पर होता है।

जैसे :–धैर्य-धीर।

[३४] 'औ' का ओ और अउ होता है।

जैसे :–कौमुदी-कोमुदी-कउमदी कौतूहल, कोउहल, कऊहल, गौरी, गोरी-गउरी, कौशल-कोसल-कउसल औषधि-ओसहि, अउसहि कौरव-कोरव-कउरव सौरभ-सोरह-सउरह।

[३५] गौरव के औ का आ और ओ अउ भी होता है।

जैसे :–गौरव, गारव-गोरव-गउरव।

[३६] अव का ओ होता है।

जैसे :–अवधि-ओहि, अवकाश-ओगास।

[३७] त्रय का ते हो जाता है।

जैसे :–त्रय-ते।

[३८] चतु को चो हो जाता है।

जैसे :–चतुश्चो-चोद्दह।

[३८] दश का रह हो जाता है।

जैसे :–एकादश-ग्यारह, द्वादश-बारह, तेरह, अठारह।

संज्ञा शब्द विधान:-

[१] प्रथमा एकवचन में अकारान्त शब्द 'ओ' हो जाता है।

जैसे :–जिणो, जिण+ओ।

[२] स्वर के होने पर शब्द के स्वर का लोप हो जाता है।

[३] बहुवयणे आ।

जह—जिण+आ=जिणा

[४] बीए एगवयणे अणुस्सारो।

जह—जिण+-=जिणं।

[५] अणुस्सार-णो-णा-स्स-म्हि-म्मि-पच्चए हिस्सो।

जह—जिणं, हरिं, **गामणिं**, भाणुं, **खलपुं** (पुंलिंग)।

मालं, बुद्धिं, लच्छिं, धेणुं, बहुं (स्त्री) वंण, दहिं, महुं (नपुंसकलिंग)।

[६] तइयाए पुंसि अस्स एण एणं एगवयणे।

जह—जिण-एण, एणं, जिणेण जिणेणं।

[७] इस्स णा पुं-णउंसगे।

जह—हरिणा, गामणिणा, भाणुणा, खलपुणा (पुं०) दहिणा, महुणा (नपुं०)

[८] अस्स बहुवयणे एहि एहिं।

जह—जिणेहि, जिणेहिं।

[९] इईउऊए हि हिं दिग्घो।

जह—हरीहि हरीहिं, गामणीहि, गामणीहिं भाणूहि, भाणूहिं, खलपूहि, खलपूहिं (पुं०) दहीहि, दहीहिं, महूहि, **महूहिं** मइहि, मईहिं, लच्छीहि लच्छीहि (स्त्री)।

जैसे :—जिण+ओ=जिणो।

[३] बहुवचन में 'आ' हो जाता है।

जैसे :—जिण+आ=जिणा।

[४] द्वितीया एकवचन में अनुस्वार (-) हो जाता है।

जैसे :—जिण+-जिणं।

[५] अनुस्वार (-) णो, णा, स्स, म्हि, म्मि प्रत्यय होने पर दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

जैसे :—जिणं, हरिं, **गामणिं**, भाणुं, **खलपुं** (पुंलिंग) **मालं**, **बुद्धिं**, **लच्छि**, धेणुं, **बहुं** (स्त्री) वणं, दहिं, महुं (नपुसंकलिंग)।

[६] अकारान्त पुं० शब्दों के तृतीया एकवचन में एण और एणं प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—जिण+एण एणं जिणाण जिणेणं।

[७] इकारान्त पुंलिंग एवं नपुंसक लिंग शब्दों के तृतीया एकवचन में 'णा' प्रत्यय होता है।

जैसे :—हरिणा, गामणिणा, भाणुणा खलपुणा (पुं०) दहिणा, महुणा (नपुं०)।

[८] अकारान्त पुंलिंग तृतीया बहु-वचन में एहि और एहि प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—जिणेहि, जिणेहि।

[९] इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के तृतीया बहुवचन में हि, हिं प्रत्यय होते हैं और दीर्घ हो जाता है।

जैसे :—हरीहि, हरीहिं, गामणीहि, गामणीहिं भाणूहि, भाणूहिं, खलपूहि, खलपूहिं (पुं०) दहीहि, दहीहिं, महूहि, महूहिं (नपुं०) मईहि, मईहिं, लच्छीहि लच्छीहिं।

[१०] चउ-छट्ठीए एगवयणे स्स पुं० णउंसे।

जह—जिणस्स, हरिस्स, गामणिस्स, भाणुस्स खलपुस्स (पुं०)।

वणस्स, दहिस्स, महुस्स (नपुं०)

[११] बहुवयणे ण णं दिग्घो।

जह—जिणाण; जिणाणं, हरीण, हरीणं गामणीण, गामणीण, भाणूण भाणूणं खलपूण खलपूणं (पुं०) वणाण, वणाणं, दहीण, दहीणं महूण, महूणं (नपुं०) मालाण, मालाणं, मईण, मईणं, लच्छीण, लच्छीणं, धेणूण धेणूणं, बहूण बहूणं।

[१२] पंचमीए दो दु वा दिग्घो लुगो य

जह—जिणादो, जिणादु जिणाओ, जिणाउ, जिणा (पुं०) मालादो मालादु मालाओ, मालाउ (स्त्री०) वणादो, वणादु, वणाओ, वणाउ (नुपं०)।

[१३] हिंदो सुंतो वि।

जह—जिणाहिंदो जिणेहिंदो (पुं०) जिणाहिंदो जिणासुंतो, मालाहिंदो मालासुंतो, वणाहिंदो वणासुंतो।

[१४] म्मि म्हि ए एगवयणे पुं० णउंसे।

जह—जिणम्मि, जिणम्हि, जिणे (पुं०) वणम्मि वणम्हि, वणे (नपुं०)।

[१०] चतुर्थी/षष्ठी अकारान्तादि पुंलिंग और नपुंसक लिंग के एकवचन में 'स्स' होता है।

जैसे :—जिणस्स, हरिस्स, गामणिस्स, भाणुस्स, खलुपुस्स (पुं०) वणस्स, दहिस्स, महुस्स (नपुं०)।

[११] चतुर्थी/षष्ठी बहुवचन में 'ण' एवं 'णं' प्रत्यय होते हैं और इनके होने पर दीर्घ होता है।

जैसे :— जिणाण, जिणाणं, हरीण, हरीणं, गामणीण, गामणीणं भाणूण, भाणूणं, खलपूण खलपूणं (पुं०) वणाण, वणाणं, दहीण दहीणं महूण महूणं (नपुं०) मालाण, मालाणं, मईण मईणं, लच्छीण लच्छीणं, धेणूण धेणूणं, बहूण बहूणं। (स्त्री०)

[१२] पञ्चमी एकवचन और बहुवचन में दो और दु प्रत्यय विकल्प से होते हैं। और इन प्रत्ययों के होने पर दीर्घ हो जाता है और लोप भी।

जैसे :—जिणादो, जिणादु, जिणाओ, जिणाउ, जिणा (पुं०) मालादो, मालादु, मालाओ, मालाउ, (स्त्री०) वणादो, वणादु, वणाओ, वणाउ (नपुं०)।

[१३] हिंदो और सुंतो प्रत्यय भी पञ्चमी बहुवचन में होते हैं।

जैसे :—जिणहिंदो-जिणेहिंदो, जिणासुंतो मालाहिंदो मालासुंतो वणाहिंदो, वणासुंतो।

[१४] पुंलिंग और नपुंसकलिंग के एकवचन में म्मि और म्हि और ए प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—जिणम्मि, जिणम्हि, जिणे (पुं०) वणम्मि, वणम्हि, वणे (नपुं०)

हरिम्मि, हरिम्हि, गामणिम्मि गामणिम्हि (पुं०) भाणुम्मि, भाणुम्हि दहिम्मि दहिम्हि (नपुं०)।

हरिम्मि, हरिम्हि, गामणिम्मि गामणिम्हि दहिम्मि, दहिम्मि, महुम्हि (नपुं०)।

[१५] बहुवयणे एसु एसुं पुंसि-णउंसे अत्ते।

[१५] अकारान्त पुंलिंग नपुंसकलिंग शब्दों के बहुवचन में एसु एसुं प्रत्यय होते हैं।

जह–जिणेसु, जिणेसुं, वणेसु, वणेसुं।

जैसे :–जिणेसु, जिणेसुं, (पुं०) वणेसु वणेसुं (नपुं०)।

[१६] इईउऊए सु सं।

[१६] इकारान्त, इकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के बहुवचन में सु सुं प्रत्यय होते हैं।

जह–हरीसु हरीसुं, गामणीसु गामणीसुं भाणूसु, भाणूसुं, खलपूसु खलपूसुं (पुं०) दहीसु दहीसुं, महूसु महूसुं (न०) मालासु मालासुं, मईसु मईसुं लच्छीसु लच्छीसु, धेणूसु धेणूसुं, बहूसु बहूसुं (इत्थी)।

जैसे :–हरीसु, हरीसुं गामणीसु गामणीसुं, भाणूसु भाणूसुं खलपूलु खलपूसु (पुं०)

दहीसु, दहीसुं, महूसु महूसुं (नपुं०) मालासु, मालासुं, मईसु मईसुं, लच्छीसु, लच्छीसुं, धेणूसु धेणूसुं (स्त्री०)।

[१७] संबोहणे एगवयणे दिग्घो वा।

[१७] सम्बोधन के एकवचन में विकल्प से दीर्घ हो जाता है।

जह–जिण-जिणा-जिणो हरि-हरि-गामणी-गामणि भाणु-भाणू, खलपू-खलपू माला-माल, मइ-मई, लच्छी-लच्छि धेणु-धेणू, बहू-बहु (इत्थी)।

जैसे :–जिण-जिणा जिणो हरि-हरी, गामणी, गामणि भाणु-भाणू, खलपू-खलपु (पुं०) माला-माल, मइ-मई, लच्छी-लच्छि, धेणु-धेणू, बहू-बहु (स्त्री)।

[१८] बहुवयणे दिग्घो य।

[१८] बहुवचन में दीर्घ ओर प्रथमा की तरह रूप बनते हैं।

जह–जिणा, हरी, गामणी, भाणू खलपू (पुं०) माला, मालाओ, मालाउ मई+मईओ मईउ लच्छी-लच्छीओ लच्छीउ धेणू-धेणूओ, धेणूउ बहू-बहूओ, बहूउ (इत्थी)।

जैसे :–जिणा, हरी, गामणी, भाणू खलपू (पुं०) माला-मालाओ-मालाउ, मई-मईओ मईउ, लच्छी-लच्छीओ-लच्छीउ धेणू- धेणूओ-धेणूउ, बहू-बहुओ, बहूउ (स्त्री)।

[१९] णउंसगे ण।

[१९] नपुंसकलिङ्ग में सम्बोधन नहीं होता है।

[२०] इत्थीए पढमाबीअ-बहुवयणे ओ उ।

[२०] स्त्रीलिङ्ग शब्दों के प्रथमा एवं द्वितीया बहुवचन में 'ओ' 'उ' प्रत्यय होते हैं।

जह—मालाओ मालाउ, मईओ मईउ लच्छीओ लच्छीउ, धेणूओ धेणूउ, बहूओ बहूउ (इत्थी)।

[२१] ईत्ते आ पढआएगवयणे बहुवयणे।

जह—लच्छीआ।

[२२] तइय सत्तमी-पेरंतं एगवयणे इ ए उ

जह—मालाइ, मालाए, मालाउ, मईइ मईए, मईउ लच्छीइ, लच्छीए, लच्छीउ धेणूइ, धेणूए, धेणूउ, बहूइ, बहूए, बहूउ।

[२३] णउंसगे पढमाबीअ-एगवयणे अणुस्सारो।

जह—वणं, दहिं, महुं।

[२४] बहुवयणे, इ, इं, णि-णिं दिग्घो।

जह—वणाइ, वणाइं, वणाणि, वणाणिं दहीइ, दहीइं, दहीणि, दहीणिं, महूइ, महूइं, महूणि, महूणिं।

सव्वणाम विहाणं

[१] सण्णासद्दविहाण-वय-पायो।

जह—सव्वो (पुं०) सव्वं (न०) सव्वा। (इत्थी)।

[२] पुंसि बहुवयणे ए पढमाए।

जह—सव्वे, जे, के, ते।

[३] छट्ठीए एसिं।

जैसे :—मालाओ मालाउ मईओ मईउ, लच्छीओ लच्छीउ धेणूओ धेणूउ, बहूओ बहूउ (स्त्री०)।

[२१] प्रथमा के एकवचन और बहुवचवन में ईकारान्त शब्दों को 'आ' प्रत्यय भी होता है।

जैसे :—लच्छीआ।

[२२] तृतीया से लेकर, सप्तमी पर्यन्त एकवचन में 'इ' ए, उ प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—मालाइ, मालाए, मालाउ मईइ, मईए, मईउ, लच्छीइ, लच्छीए, लच्छीउ, धेणूइ, धेणूए, धेणूउ बहूइ, बहूए, बहूउ।

[२३] नपुंसकलिङ्ग शब्दों के प्रथमा एवं द्वितीया एकवचन में अनुस्वार (ं) हो जाता है।

जैसे :—वर्ण, दहिं, महुं।

[२४] नपुसंकलिङ्ग शब्दों के प्रथमा एवं द्वितीया बहुवचन में इ, इं, णि णिं प्रत्यय होते है और इनके होने पर दीर्घ हो जाता है।

जैसे :—वणाइ, वणाइ, वणाणि, वणाणिं दही, दहीइ, दहीणि, दहीणि, महूइ, महूइं, महूणि, महूणिं।

सर्वनाम-विधान:-

[१] संज्ञा शब्द की तरह प्रायः सर्वनाम शब्दों का विधान है।

जैसे :—सव्वो (पुं०) सव्वं (नपुं०) सव्वा (स्त्री०)।

[२] सर्वनाम शब्दों के पुंलिंग बहुवचन में 'ए' प्रत्यय होता है।

जैसे :—सव्वे, जे, के ते।

[३] सर्वनाम शब्दों के षष्ठी बहुवचन में एसिं प्रत्यय होता है।

जह–सव्वेसिं, जेसिं, तेसिं, केसिं

जैसे :–सव्वेसिं, जेसिं, तेसिं, केसिं।

[४] आस क-तस्सिं वा।

[४] क और त में आस प्रत्यय विकल्प से होता है।

जह–कास, तास पक्खे के-सिं, तेसिं

जैसे :–कास, तास पक्ष में केसिं तेसिं।

[५] एगवयणे वा।

[५] एकवचन में भी विकल्प से 'आस' प्रत्थ होता है।

जह–कास, तास पक्खे-कस्स, तस्स।

जैसे :– कास तास पक्ष में कस्स, तस्स।

[६] ईए स्सा से वा।

[६] ईकारान्त शब्दों के षष्ठी एकवचन में स्सा, से प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

जह–किस्सा कीसे, पक्खे-काए ताए तिस्सा तीसे।

जैसे :–किस्सा, कीसे, पक्ष में काए ताए तिस्सा, तीसे।

[७] सत्तमीए स्सिं-म्मि-म्हि-हिं-त्था वा।

[७] सप्तमी एकवचन में विकल्प से स्सिं, म्मि, म्हि, हिं और त्थ प्रत्यय होते हैं।

जह–सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वम्हि, सव्वहिं सव्वत्थ। जस्सिं, जम्मि, जम्हि, जहिं, जत्थ तस्सिं तम्मि, तम्हि, तहिं तत्थ। सव्वे, जे, के ते।

जैसे :–सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वम्हि, सव्वहिं सव्वत्थ। जस्सिं, जम्मि, जम्हि, जहिं, जत्थ। तस्सिं, तम्मि, तम्हि, तहिं तत्थ। सव्वे, जे, के ते।

[८] काले आहे इआ वा क-ज-तम्मि।

[८] कालवाची शब्दों में आहे और इआ क, ज, त में विकल्प से होते हैं।

जह–काहे, कइआ, ताहे, तइया जाहे, जइआ पक्खे-जहिं, तहिं जस्सिं, तस्सिं जुस्सिं।

जैसे :–काहे, कइआ, ताहे, तइआ जाहे, जइआ। पक्ष में:-जहिं तहिं, कहि जस्सिं तस्सिं, जस्सिं।

[९] पंचमीए म्हा वा।

[९] पञ्चमी एकवचन में 'म्हा' प्रत्यय विकल्प से होता है।

जह–जम्हा, तम्हा, कम्हा। पक्खे:- जादो जादु कादो, कादु तादो तादु।

जैसे :–जम्हा, तम्हा, कम्हा पक्ष में-जादो जादु, कादो, कादु, तादो तादु।

[१०] इम-एअ-क-ज-तम्मि तइयाए इणा वा।

[१०] इम, इअ, क, ज, त के तृतीया एकवचन में इणा विकल्प से होता है।

जह–इमिणा एदिणा, किणा, जिणा, तिणा। पक्खे-इमेण–एएण, केण, जेण, तेण।

जैसे :–इमिणा, एदिणा, किणा, जिणा, तिणा। पक्ष में इमेण, एएण, केण, जेण, तेण।

[११] इमस्स चउछट्ठीय अस्स वा।

[११] इम का चतुर्थी और षष्ठी एकवचन में 'अस्स' विकल्प से होता है।

जह–अस्स पक्खे-इमस्स।

जैसे :–अस्स पक्ष में-इमस्स।

[१२] सत्तमीए अस्सिं वा।

[१२] इम शब्द के सप्तमी एकवचन में 'अस्सिं' रूप विकल्प से होता है।

जह–अस्सिं पक्खे-इमत्थ इह।

जैसे :–अस्सिं पक्ष में इह।

[१३] इमं इणं बीए ईमस्स वा।

[१३] इम के द्वितीया एकवचन में इमं, इणं विकल्प से होते हैं।

जह–इमं, इणं।

जैसे :–इमं इणं।

[१४] णउंसगे इदं इमं इणमो इणं।

[१४] नपुंसकलिंग में इदं, इमं, इणमो और इणं रूप बनते हैं।

जह–इदं, इमं, इणमो, इणं। (बीए एकावयणे)।

जैसे :–इदं इमं इणमो इणं (प्रथमा द्वितीया एकवचन)

[१५] इमे एअ-तस्स चउछठट्ठीए से सिं।

[१५] इम-एअ-त के चतुर्थी/षष्ठी एकवचन एवं बहुवचन में से और सिं प्रत्यय होते हैं।

जह–से सिं (चउत्थी/छट्ठी)।

जैसे :–से सिं (चतुर्थी/षष्ठी)

[१६] एअस्स एस इणं इणमो वा पढमाएगवयणे।

[१६] एअ के प्रथमा एकवचन में एस, इणं इणमो विकल्प से होता है।

जह–एस, इणं इणमो पक्खे-एसो।

जैसे :–एस, इणं इणमो। पक्ष में एसो।

[१७] तस्स सो वा।

[१७] त का स होता है विकल्प से।

जह–स, सो।

जैसे :–स, सो।

[१८] तुम्हस्स पढमाएगवयणे तुमं तुम तं।

[१८] तुम्ह के प्रथमाएकवचन में तुमं तुम तं आदेश होते हैं।

[१९] बहुवयणे तुज्झ तुम्ह तुम्हे तुज्झे।

[१९] प्रथमा बहुवचन में तुज्झ, तुम्ह, तुम्हे और तुज्झे आदेश होते हैं।

[२०] बीए एगवयणे तं तुं तुमं तुमे।

[२०] द्वितीया एकवचन में तं, तु, तुमं और तुमे आदेश होते हैं।

[२१] बहुवयणे तुज्झ तुज्झे तुम्ह तुम्हे।

[२१] द्वितीया बहुवचन में तुज्झ तुज्झे तुम्ह तुम्हे आदेश होते हैं।

[२२] तइयाए गवयणे दे ते तए तुमए।

[२३] बहुवयणे तुम्हेहिं तुज्झेहिं तुम्हेहि तुज्झेहिं।

[२४] चउ-छट्ठीएगवयणे तव, तुह, तुम्ह तुज्झ।

[२५] बहुवयणे तुम्हाण तुम्हाणं तुज्झाण तुज्झाण।

[२६] पंचमी एगवयणे तुम्ह तुज्झ तहिंतो तहिंदो।

[२७] बहुवयणे सुंतो च।

[२८] सत्तमीएगवयणे तुमे तए तम्हि तम्मि।

तुम्हम्हि तुज्झम्हि।

[२९] बहुवयणे तुसु तुमेसु तुम्हेसु तुझेसु तुम्हेसुं तुज्झेसुं।

[३०] अम्हस्स पढमाएगवयणे हं अहं अहयं।

[३१] बहुवयणे अम्ह अम्हे अम्हो वयं भे।

[३२] बीए एगवयणे णे णं अहं मं अम्ह।

[३३] बहुवयणे अम्ह अम्हे णे।

[३४] तइयाएगवयणे मए मइ मे।

[३५] तइयाबहुवयणे अम्हेहि अम्हेहि अम्हाहि अम्हाहि अम्हाहिं, अम्ह अम्हे णे।

[२२] तृतीया एकवचन में दे, ते तए, तुमए आदेश होते हैं।

[२३] तृतीया बहुवचन में तुम्हे हिं तुज्झेहिं तुम्हेहि तुज्झेहि आदेश होते हैं।

[२४] चतुर्थी/षष्ठी एकवचन में तव, तुह, तुम्ह तुज्झ आदेश होते हैं।

[२५] चतुर्थी/षष्ठी बहुवचन में तुम्हाण तुम्हाणं तुज्झाण, तुज्झाणं आदेश होते हैं।

[२६] पञ्चमी एकवचन में तुम्ह तुज्झ, तहिंतो तहिंदो आदेश होते हैं।

[२७] पञ्चमी बहुवचन में तुम्ह, तुज्झ तहिंतो तहिंदो तेसुंतो आदेश होते हैं।

[२८] सप्तमी एकवचन में तुमे तए तम्हि तम्मि तुम्हम्हि, तुम्झम्हि होते हैं।

[२९] सप्तमी बहुवचन में तुसु, तुमेसु, तुम्हेसु तुज्झेसु, तुम्हेसुं तुज्झेसुं आदेश होते हैं।

[३०] अम्ह के प्रथमा एकवचन में हं, अहं अहयं आदेश होते हैं।

[३१] बहुवचन में अम्ह, अम्हे, अम्हो वयं और भे आदेश होते हैं।

[३२] द्वितीया एकवचन में णे, णं अहं मं अम्ह आदेश होते हैं।

[३३] बहुवचन में अम्ह, अम्हे और णे प्रत्यय होते हैं।

[३४] तृतीया एकवचन में मए, मइ में आदेश होते हैं।

[३५] तृतीया बहुवचन में अम्हेहि अम्हेहिं अम्हाहि अम्हाहिं अम्ह अम्हे णे आदेश होते हैं।

[३६] चउछट्ठीएगवयणे मह मम-मज्झमज्झं अम्ह-अम्हं मे।

[३६] चतुर्थी/षष्ठी एकवचन में मह, मम, मज्झ, मज्झं, अम्ह अम्हं मे आदेश होते हैं।

[३७] बहुवयणे अम्हाण अम्हाणं मज्झाण ज्झाणं ममाण मसाणं णे णो।

[३७] बहुवचन में अम्हाण, बम्हाणं मज्झाण मज्झाणं ममाण ममाण णे णो आदेश होते हैं।

[३८] पंचमी एगवयणे ममादो मआदु मज्झादोमज्झादु महादो महादु ममत्तो ममाओ ममाउ।

[३८] पञ्चमी एकवचन में ममादो, ममादु, मज्झादो। मज्झादु, महादो महादु ममत्तो ममाओ ममाउ आदेश होते हैं।

[३९] बहुवयणे ममहिंतो मज्झहिंतो ममसुंतो मज्झसुंतो ममादो ममादु महादो महादु मज्झादो मज्झादु मज्झओ मज्झकाउ ममत्तो।

[३९] बहुवचन में ममहिंतो, मज्झहिंतो, ममसुंतो, मज्झसुंतो, ममादो, ममादु, महादो, महादु, मज्झादो, मज्झादु, मज्झाओ मज्झाउ ममत्तो आदेश होते हैं।

[४०] सत्तमीएगवयणे मए मे।

[४०] सप्तमी एकवचन में मए और मे आदेश होते हैं।

[४१] बहुवयणे ममेसु महेसु मज्झेसु अम्हेसु ममासु महासु मज्झासु ममसु मज्झसु महसु।

[४१] बहुवचन में ममेसु, महेसु, मज्झेसु, अम्हेसु, ममासु, महासु, मज्झासु, ममसु, मज्झसु, महसु आदेश होते हैं।

संखासद्दविहाणं:–

संख्या शब्दविधान:-

[१] त्रयस्स ते ती।

जह–तेवीस तीहिं।

[१] त्रय का ते और ती आदेश होते हैं।

जैसे :–तेबीस, तीहिं।

[२] द्विणो दो वे।

[२] द्वि का दो वे आदेश होते हैं।

[३] पढमावीअबहुवयणे दुवे दोण्णिं दो वे वेण्णि।

[३] प्रथमा एवं द्वितीया बहुवचन में दुवे, दोण्णि, दो, वे, वेण्णि आदेश होते हैं।

[४] त्रयस्स तिण्णि।

[४] त्रय का तिण्णि आदेश हो जाता है।

[५] चउछीबहुवयणे ण्ह ण्हं।

जह–दोण्ह दोण्हं, चउण्ह चउण्हं

[५] चतुर्थी/षष्ठी बहुवचन में ण्ह ण्हं प्रत्यय होते हैं।

जैसे :–दोण्ह, दोण्हं, चउण्ह, चउण्हं।

किरियाविहाण:

क्रियाविधान:-

[१] वट्टमाणपढमपुरिसएगवयणे दि दे इ ए।

[१] वर्तमान काल के प्रथम पुरुष एकवचन में दि, दे, इ ए प्रत्यय होते हैं।

जह—भणदि, भणदे भणइ, भणए।

[२] बहुवयणे न्ति न्ते।

जह—भणंति, भणंते।

[३] मज्झम्मि सि से एगवयणे।

जह—भणसि, भणसे।

[४] बहुवयणे ह।

जह—भणह।

[५] उत्तमे एगवयणे मि।

जह—भणमि।

[६] बहुवयणे मो-मु-मा।

जह—भणमो, भणमु, भणम।

[७] तिइन्ति, सि ह मो मु-म-पच्चए किरियाए अस्स ए वा।

जह—भणेदि, भणेइ, भणेंति, भणेसि भणेह, भणेमो, भणेमु, भणेम।

[८] मि-मो-मु-मम्मि अस्स आ इ।

जह—भणामि, भणामो, भणामु, भणाम। भणिमि, भणिमो, भणिमु, भणिम।

[९] अत्थि वट्टमाणे है अत्थे।

	एगवयणं	बहुवयणं
प्र० पु०	अत्थि	अत्थि
म० पु०	अत्थि	अत्थि
उ० पु०	अत्थि	अत्थि

[१०] मिणा सह अत्थिणो म्हि।

अहं म्हि।

जैसे :—भणदि, भणदे, भणइ, भणए।

[२] बहुवचन में न्ति न्ते प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—भणंति, भणंते।

[३] मध्यम पुरुष के एकवचन में सि, से प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—भणसि भणसे।

[४] बहुवचन में ह प्रत्यय होता है।

जैसे :—भणह।

[५] उत्तम पुरुष के एकवचन में 'मि' प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—भणमि।

[६] बहुवचवन में 'मो', मु, और म प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—भणमो, भणमु, भणम।

[७] ति न्ति, सि, ह, मो मु म प्रत्यय होने पर क्रिया के 'अ' का 'ए' विकल्प से हो जाता है।

जैसे :—भणेदि भणेइ, भणेंति, भणेसि भणेह, भणेमो, भणेमु, भणेम।

[८] मि, मो, मु और म होने पर क्रिया के 'अ' का 'आ' इ हो जाता है।

जैसे :—भणमि, भणामो, भणामु, भणाम। भाणिमि, भणिमो, भणिमु, भणिम।

[९] वर्तमान में अत्थि है अर्थ में हो जाता है।

	एकवचन	बहुवचन
	अत्थि	अत्थि
प्रथम पुरुष..	....	
मध्यम पुरुष	....	....
उत्तम पुरुष...	....	

[१०] 'मि' सहित अस्ति का 'म्हि' हो जाता है। अहं म्हि-मैं हूँ।

[११] मो मु मेण म्हि-म्हो-म्ह। अम्हे म्हि-अम्हे म्हो, अम्हे म्ह।

[११] मो, मु म सहित 'अत्थि' का क्रमशः म्हि, म्हो और म्ह आदेश हो जाता है।

जैसे :—अम्हे हि-हम दोनों/हम सब हैं। अम्हे म्हो-हम दोनों/हम सब हैं। अम्हे म्ह-हम दोनों/हम सब हैं।

[१२] पेरणत्थे अ-ए-आव आवे।

[१२] प्रेरणार्थक में अ, ए, आव, आवे प्रत्यय होते हैं।

जह—भाणदि, भाणेदि, भणावदि, भणावेदि।

जैसे :—भाणदि, भाणेदि, भणावदि, भणावेदि।

[१३] कत्त-भाव-कम्मवच्चे ईअ-इज्जा।

[१३] कर्तृवाच्य, भाववाच्य और कर्मवाच्य में ईअ और इज्ज प्रत्यय होते हैं।

जह—भणीअदि, भणिज्जदि हसीअदि, हसिज्जदि सामण्णवक्को-अहं भणामि कम्मवच्च-मए भणीअमि, भणिज्जमि।

अहं बालं भणामि।

मए बालो भणीअदि, भणिज्जदि भावच्च-सो हसदि तेण हसीअदि, हसिज्जदि। पढमंतकत्ता तइयाए हवइ बीअंतकम्म- पढमंते हवइ तहा सामण्ण-किरियाए ईला इज्ज पच्चया भवंति।

जैसे :—भणीअदि, भणिज्जदि हसीअदि हसिज्जदि सामान्य वाक्यः-अहं भणामि कर्मवाच्य-मए भणीअमि, भणिज्जमि अहं बालं भणामि मए बालो भणीअमि, भणिज्जामि भाववाच्य-सो हसदि।

तेण हसीअदि, हसिज्जदि/प्रथमान्त तृतीया में हो जाती है। द्वितीयान्त कर्म प्रथमान्त हो जाता है तथा सामान्य क्रिया में ईअ, इज्ज प्रत्यय हो जाते हैं।

[१४] कहिं चि दि सि पच्चयपुव्वे दिग्घो वा।

[१४] कहीं-कहीं पर दिसि प्रत्यय से पूर्व दीर्घ विकल्प से हो जाता है।

जह—आणादि आणासि।

जैसे :—आणादि, आणासि।

[१५] भवि स्स हिं।

[१५] भविष्यत्काल में 'स्स' और 'हि' प्रत्यय होते हैं।

[१६] स्स-हिस्स पच्छा वट्टमाणस्स पच्चयाई।

[१६] 'स्स' और 'हि' के पश्चात् वर्तमान काल के प्रत्ययादि का विधान हो जाता है।

विहाणं। जह:—

एगवयणं।

जैसे :—एकवचन बहुवचन।

प० पु०भणिहिदि, भणेहिदि भणिहिइ, भणिहिसि, भणेहिसि, भणिस्सति, भणेससि

भणिहिसे, भणेहिसे, भणिस्ससे, भणेस्ससे
बहुवयणं भणिहिंति, भणेहिंति ; भणिस्संति,
भणेस्संति भणिहिंते, भणेहिंते भणिस्संते,
भणेस्संते भणिहिह, भणेहिह भणिस्सह,
भणेस्सह।
उ० पु० भणिहिम, भणेहिमि भणिहिमो,
भणेहिमो भणिहामि, भणेहामि।
भणिहामो, भणेहामो भणिस्समि, भणेस्समि
भणिहामु, भणेहामु भणिस्सामि, भणेस्सामि
भणिस्सामो, भणेस्सामो भणिस्सा भणेस्सा
भणिस्सामो, भणेस्सामो भणिस्सं भणेस्सं
भणिस्समु-भणेस्समु भणिस्सम, भणेस्सम
भणिस्साम, भणेस्साम।

[१७] भवि-उत्तम एगवयणे स्सा स्सं वि।

जह-भणिस्सा भणेस्सा भणिस्सं भणेस्सं।

[१७] भविष्यत् काल के उत्तम पुरुष एकवचन में 'स्सा', और 'स्सं' प्रत्यय भी होते हैं। भणिस्सा, भणेस्सा, भणिस्सं, भणेस्सं।

[१८] बोच्छस्स बोच्छं।

[१८] भविष्यत् काल के उत्तम पुरुष के एकवचन में बोच्छ का 'बोच्छं' रूप हो जाता है।

[१९] विहि-अण्णाए दु न्तु-सु-ह मु-मा।

जह-भणदु/भणेदु, भणंतु/भणेंतु भणसु/भणेसु, भणह/भणेह भणमु/भणेमु भणम/भणेम/भणिमु/भणिम।

[१९] विधि/आज्ञार्थक में क्रमशः दु, न्तु, सु, ह, मु और म प्रत्यय होते हैं।

जैसे :-भणदु/भणेदु भणंतु/भणेंतु, भणसु/भणेसु, भणह/भणेह, भणमु/भणेमु, भणम/भणेम, भणिमु/भणिम।

[२०] विहि-अण्णाए पच्चयलुगो मज्झम्मि एगवयणे। जह-भण।

[२०] विधि/आज्ञा के मध्यम पुरुष एकवचन में प्रत्यय लोप भी होता है।

जैसे :-भण।

[२१] वट्टमाण-भवि-विहि-अण्णाए ज्ज-ज्जा।

जह-भणिज्ज, भणेज्जा।

[२१] वर्तमान, भविष्यत्काल और विधि आज्ञार्थक में ज्ज और ज्जा प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

जैसे :-भणिज्ज, भणेज्जा।

[२२] भूयट्ठे मूलकिरियाकत्ताणुसारो।

[२२] भूतार्थ में मूलक्रिया कर्ता के अनुसार होती है।

जह–पण्णत्तो (पु०) पण्णत्तं (नउ०) इत्थ।

किदंत-विहाणं:-

[१] वट्टमाणेन्त-माण।

जह–भणंतो, भणमाणो (पुं०) भणंत, भणमाणं (नपुं०) भणंता, भणंती, भणमाणा, भणमाणी (इत्थी)।

[२] संबंधे दूण दूणं।

जह–भणिदूण, भणिदूणं भणेदूण, भणेदूणं।

[३] त्तु-त्तुं-त्ता-च्च-च्चा- इअ- ईअ-आय-द्दु वि।

भणित्तु, भणेत्तु, भणित्तुं, भणेत्तुं भणित्त, भणेत्ता, पडुच्च, किच्चा, भणिअ, भणीअ, आदाय, कट्टु।

[४] विज्झट्ठे दव्वं।

जह–भणिदव्वो, भणेदव्वो (पुं०)
भणिदव्वं, भणेदव्वं (नंपु०)।
भणिदव्वा, भणेदव्वा (इत्थी)।
भणियव्वं, भणेयव्वं।

[५] हंतट्ठे-दुं उं।

जह–भणिदुं, भणेदुं भणिउं, भणेउं।

तद्धिय-विहाणं:-

[१] सामित्त बोहे मंत-मण-वंत-मा-आलु-आल-इर-इल्ल-उल्ल-इंता।

जह–मंत- सिरिमंतो धीमंतो।

मण-धणमणो, वंत-धणवंतो लज्ज-वंतो, मा-हुणुमा पडुमा, आलु-णेहालु,

जैसे :–पण्णत्तो (पुं०) पण्णत्तं (नपुं०) पण्णत्ता (स्त्री)।

कृदन्त-विधान:-

[१] वर्तमान कृदन्त में 'न्त' और 'माण' प्रत्य होते हैं।

जैसे :–भणंतो, भणमाणो (पुं०) भणंत, भणमाणं (नपुं०) भणंता, भणंती, भणमाणा, भणमाणी (स्त्री)।

[२] सम्बन्धकृदन्त में 'दूण' दूणं प्रत्यय होते हैं।

जैसे :–भणिदूण, भणिदूणं भणेदूण, भणेदूणं।

[३] सम्बन्ध कृदन्त में त्तु, त्तं, त्ता, च्च, च्चा इअ, ईअ, आय और द्दु प्रत्यय भी होते हैं।

जैसे :–भणित्तु भणेत्तु, भणित्तुं भणेत्तुं भणित्ता, भणीअ, आदाय, कट्टु।

[४] विधिअर्थ कृदन्त में 'दव्व' प्रत्यय होता है।

जैसे :–भणिदव्वो, भणिदव्वो (पुं०) भणिदव्वं, भणेदव्वं (पुं०) भणिदव्वा, भणेदव्वं (नपुं०) भणिदव्वा, भणेदव्वा (स्त्री०) भणियव्वं, भणेयव्वं।

[५] हेत्वर्थकृदन्त में 'दुं' 'उं' प्रत्ययं होते हैं।

जैसे :– भणिदुं, भणेदु भणिउ, भणेउं।

तद्धित विधान:-

[१] स्वामित्व बोध में मंत, मण, वंत, मा, आलु, आल, इर, इल्ल, उल्ल और इंत प्रत्यय होते हैं।

जैसे :–मंत-धणवंतो, लज्जवंतो मा-हणुमा, पडुमा, आलु-णेहालु, दयालु, आल-सद्दालो, रूवालो, इर-गहिरो,

दयालु, आल-सद्दालो, रूवालो, इर-गहिरो इल्ल-महिल्लो, सोहिल्लो, उल्ल-दप्पुल्लो इंत-माणइंतो, मायइंतो।

[२] परिणामे त्तिअं त्तिलं इहं।

जह—एत्तिअं तित्तिअ तेत्तिअं जेत्तिअं जित्तिअं, केत्तिअं कित्तिअं इत्तिअं। एत्तिलं, एद्दहं, केत्तिलं केद्दहं, जेत्तिलं, जेद्दहं।

[३] सव्वंगे इगो।

जह—सव्वंगिओ।

[४] हिं त्थ-ह त्रस्स।

जह—जहिं, जत्थ, जह तहिं, तत्थ, तह, तहिं, तत्थ, तह कहिं, कत्थ, कह।

[५] इमट्ठे केर।

जह—तुम्हेकर, अम्हेकर।

[६] राअ-परे अक्क-इक्का च।

जह—राअक्कं राइक्कं राअकेर परक्कं परिक्कं, परकेर।

[७] भावत्ते त्त-त्तण-इमा।

जह—पुत्तत्तो, पुत्तत्तणं, पुत्तिमा।

[८] त्रपच्चंतस्स दो त्तो।

जह—सव्वदो, सव्वत्तो (सर्वत्र) कदो, तत्तो, जदो, जत्तो, एअदो एअत्तो अण्णदो अण्णत्तो, इदो इत्तो।

[९] भवट्ठे इल्ल-उल्ला।

जह—पुरिल्लं, भमिल्लिआ, मज्झिल्ल अप्पुल्लं।

इल्ल-महिल्लो, उल्लु-दप्पुल्लो इंत-माणइंतो, मायइंतो।

[२] परिणाम अर्थ में त्तिअं त्तिलं, इहं आदेश होते हैं।

जैसे :—एत्तिअं, तित्तिअं तेत्तिअं जेत्तिअं जित्तिअं, केत्तिअं कित्तिअं इत्तिअं एत्तिलं, एद्दह केत्तिलं केद्दहं, जेत्तिलं, जेद्दहं।

[३] सर्वाङ्ग में 'इग' प्रत्यय होता है।

जैसे :—सव्वंगिओ।

[४] त्रय प्रत्ययांत के हिं, त्थ ह आदेश होते हैं।

जैसे :—जहिं, जत्थ, जह, तहिं, तत्थ, तह कहिं, कत्थ, कह।

[५] इम-यह अर्थ में 'केर' आदेश होता है।

जैसे :—तुम्हकेर, अम्हकेर (युष्मदीय, अस्मदीय)।

[६] राअ और पर शब्द में अक्क, इक्क और केर प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—राअक्कं, राइक्कं, राअकेर परक्कं, परिक्कं, परकेर।

[७] भाव के योग में त्त, त्तण, और इमा प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—पुत्तत्तो, पुत्तत्तणं, पुत्तिमा

[८] त्र प्रत्ययान्तके दो और त्तो आदेश होते हैं।

जैसे :—सव्वदो, सव्वत्तो (सर्वत्र) कदो कत्तो, जदो जत्तो, एअदो एअत्तो अण्णदो अण्णत्तो, इदो इत्तो।

[९] भव (हुआ) अर्थ में 'इल्ल' और उल्ल प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—पुरिल्लं भमिल्लिआ, मज्झिल्ल, अप्पुल्ल।

[१०] सट्ठे अ चि।

जह—बहुअं, बहुल्ल, मज्झिल्ल।

[११] णव-एक्के ल्लं वा।

जह—णवल्ल, एक्कल्ल पक्खे:- णविल्ल एक्किल्ल।

[१२] दीहस्स रो वा।

जह—दीहरं पक्खे-दीहं।

[१३] सीलत्थे इरो।

जह—हसिरो, लज्जिरो, णमिरो।

[१४] संबंधे तुं-अ-तुआण-ऊण।

जह—भणितुं, भणिअ, घेत्तुमाण, भणिऊण।

अव्वयविहाणं-

[१] सुईयारत्थे आम।

जह—आम बहुसत्थाणि।

[२] वक्कारंभे तं।

जह—तं वंदे अरिहंतं।

[३] एवत्थे णइ चेअ, चिअ च्चिअ च्च।

जह—सो बालो णइ महत्थो। तस्स गुणो मि उत्तं चेअ अत्थि। सा बाला चंदो चिअ/च्चि अ/च्च। सो च्च धम्मे रओ।

[४] णिव्वेदे हद्धि।

जह—हद्धि समणो जायंतो वि विसए आसत्ती।

[५] इवत्थे मिव-पिव-विव-व्विव-विअव्व समा।

[१०] स्वार्थ में 'अ' इल्ल और उल्ल प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—बहुअं, बहुल्ल, मज्झिल्ल।

[११] नव और एक्क में विकल्प से 'ल्ल' प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—णवल्ल, एक्कल्ल।

पक्ष में-णविल्ल, एक्किल्ल।

[१२] दीह में विकल्प से 'र' प्रत्यय होता है।

जैसे :—दीहरं पक्ष में-दीहं।

[१३] शील अर्थ में 'इर' प्रत्यय होता है।

जैसे :—हसिरो, लल्लिरो, णमिरो।

[१४] सम्बन्ध अर्थ में तुं, अ, तुआअ और ऊण प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—भणितुं, भणिअ, घेत्तुआण, भणिऊण।

अव्यय-विधान:-

[१] स्वीकार अर्थ में 'आम' प्रत्यय होता है।

जैसे :—आम बहुसत्थाणि।

[२] वाक्य के प्रारम्भ होने पर 'तं' का प्रयोग होता है।

जैसे :—तं वंदे अरिहंतं।

[३] एव अर्थ में णइ, चेअ, चिअ, च्चिअ च्च प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—सो बालो णइ महत्थो। तस्स गुणो मि उत्तं चेआ अत्थि सा बाला चंदो चिअ/च्चिअ/च्च। सो च्च धम्मे रओ।

[४] निर्वेद अर्थ में 'हद्धि' होता है।

जैसे :—हद्धि! समणो जायंतो वि विसए आसत्ती।

[५] इव अर्थ में मिव, पिव, विव, व्विव विअ, व्व, सम आदेश होते हैं।

जह–चंदो मिव, णीरो पिव, जीवो विव धीरो व्विअ, महुरव्व अप्पा सम।

[६] किलत्थे किर-इर-हिरा।

जह–कल्लं किर गच्छामि। जीवणं इइ तवं करिस्सामि। वाहित्ता हिर देवी।

[७] पच्छाताव-सूयणा-दुह-संभासण-अवराह-आणंद-खेद-विम्हय-विसाय-भयम्मि अब्भो। जहः–अम्ह पावं कअं अब्भो सूयणा-अब्भो सूयणा-अब्भो दुक्कडयरो।

दुहे-अब्भो दलइ हिणअं।

संभासणे-अब्भो किमिणं।

अवराहे-अब्भो हरंति हिअअं।

आणंदे-अब्भो विज्जासायरागमणं।

आयरे-अब्भो पूयाए मे धण्णजीवणं। खेए-अब्भो ण जाणामि अप्पं। विम्हए-किं पि रहस्सं जाणंति मे माया। विसाए-अब्भो पुत्तमरणे किं करिस्सामि।

भए-अब्भो सिंहाओ विभेइ।

[८] पिच्छा-प्दाण-हुं साहसी सब्भावं।

दाण-हुं गेण्ह अप्पणो विअ।

णिवारण-हुं पावं समोसरउ।

[९] केवले णवर णवरं णवरि।

जह–णवर अप्पा एव णाणं

[१०] संभासण-रतिकलहे रे अरे।

जह–रे रे अप्पा णाणसरिच्छा अरे बहुवल्ल उवहास मा कुण।

[११] णिच्छय-विम्हय-वितक्के हु खु खलु।

जैसे :–चंदो मिव, णीणो पिव, जीवो विअ, धीरोव्विअ, महुरव्व, अप्पा सम।

[६] किल अर्थ/पर्यन्त अर्थ में किर, इर, हिर प्रत्यय होते हैं।

जैसे :–कल्लं किर गच्छामि जीवणं इइ तवं करिस्सामि। वाहित्ता हिर देवी।

[७] पश्चाताप, सूचना, दुःख, संभाषण, अपराध, आनन्द, खेद, विस्मय, विषाद और भय अर्थ में 'अब्भो' आदेश होता है।

जैसे :–अम्ह पावं कअं अब्भो।

अब्भो दुक्कडयरो।

अब्भो दलइ हिअअं। अब्भो किमिणं

अब्भो हरंति हिअअं।

आणन्द-अब्भो विज्जा सायरागमणं।

अब्भो पूयाए मे धणजीवणं।

अब्भो ण जाणमि अप्पं।

किं पि रहस्सं जाणंति मे माया।

अब्भो पुत्तमरणे किं करिस्सामि।

अब्भो सिंहाओ विभेइ।

[८] पृच्छा, दान और निवारण अर्थ में 'हूं' आदेश होता है।

जैसे :–पृच्छा-हुं साहसी सब्भावं।

दानः-हुं पावं समोसरउ।

[९] केवल अर्थ में णवर णवरं णवरि आदेश होते हैं।

जैसे णवर अप्पा एव णाणं।

[१०] संभाषण और रतिकलह में रे और अरे आदेश होते हैं।

जैसे :–रे रे अप्पा णाणसरिच्छा। अरे बहुवल्लह उवहासं मा कुण।

[११] निश्चय, विस्मय और वितर्क में हु, खु और खलु प्रत्यय होते हैं।

जह–चारित्त खलु धम्मो।
को दिढसहावो हु।
ण हु एरिस णत्थि।

[१२] विवरीए णवि।

जह–णवि चंदो।

[१३] णिसेहत्थे ण णो भण-णाइं मा।

जह–ण वि परिणमदि।

णो जाणेमि अप्पसहावं। अणायारंभहु-सेवा। णाइं करेमि पावं समयं गोयम। मा पमायए।

[१४] लक्खणे जेण तेण।

जह–जेण णाणं तेण अप्पा।

[१५] वक्क समेलणं च अ य उतह तहा दु तु हु व वा।

जह–परं च तं णेयं। रागं व दोसं वा मत्तस्स हु चित्तहत्थिस्स। जस्स य कदेण जीवा। तम्हा दु तं णेयं। णाणं तु सव्वगदं।

[१६] सयमट्ठे अप्पणा। विअसंति कमलवणा अप्पणा सुज्जे।

अद्धमागही-पाइयो

अद्धमागही पाइयो आरिस भासा। इमाए भासाए विसाल-सामिद्ध-साहिच्चो अत्थि। आचारंगाइ-एगारहअंगागमा उवंगागमा छेयसुत्त-मूलसुत्त-चूलिया-पइक्कगा य इमाइ अद्धमागही-भासाइ अत्थि। सक्कयणाडगेसुं एसा भासा पउत्ता।

महावीरस्स धम्मुवएसाणं भासा

जैसे :–चारित्तं खलु धम्मो।
को दिढसहावोहु।
ण हु एरिस णत्थि।

[१२] विपरीए अर्थ में 'णवि' आदेश होता है।

जैसे :–णवि, चंदो।

[१३] निषेध अर्थ में ण, णो, अण, णांइ और मा आदेश होते हैं।

जैसे :–ण वि परिणमदि।
णो जाणेमि अप्पसहावं।
अणायारभहुसेवा। णाइं करेमि पावं समयं गोयम। मा पमायए।

[१४] लक्षण अर्थ में जेण तेण आदेश होते हैं।

जैसे :–जेण णाणं तेण अप्पा।

[१५] वाक्य मिलाने के अर्थ में च, अ, य, तह तहा, दु, तु, हु व वा प्रत्यय होते हैं।

जैसे :–परं च तं णेयं। रागं व दोसं वा।
मत्तस्स हु चित्तहत्थिस्स।
जस्स य कदेण जीवा।
तम्हा दु तं णेयं। णाणं तु सव्वगदं।

[१६] स्वयं अर्थ में अप्पणा होता है।
विअसंति-कमलवणा अप्पणासुज्जे।

अर्धमागधी प्राकृत:-

अर्धमागधी प्राकृत आर्षभाषा है। इस भाषा का विशाल-समृद्ध साहित्य है। आचारांग आदि ग्यारह अङ्गागम, उपाङ्ग आगम, छेदसूत्र, मूलसूत्र, चूकिला ओर प्रकीर्णक इसी अर्द्धमागधी भाषा में हैं। संस्कृत नाटकों में यह भाषा प्रयुक्त हुई।

महावीर के धर्मोपदेशों की भाषा

अद्धमागही भासा अत्थि। महावीरस्स अत्थभासिय-वयणाणं गोयमगणहरेहि सुत्तरूवे कहियं तहा आइरिएहिं तेसिं वयणाणं सम्मरूवे गहिऊण णाणाविह-जणसामण्ण हियट्ठं णाणस्स सुत्ताणं लिविबद्धा कआ। महावीरस्स णिव्वाण पच्छा छट्ठसईए देवद्धिगणी खमासमण-महाभाएणं सव्वपढमंएरिसं, कज्जं कअं।

अद्धमागही का-

"भगवं च णं अद्धमाहीए भासाए धम्ममाइक्खइं" समवायंगे पण्णत्तो।

ओववाइग सुत्तम्मि य पण्णत्तो अद्ध-मागहाए भासाए भासइ। सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसि सव्वेसिं आरियमणा-रियाणं अप्पणो स-भासाए परिणामेण परिणमइ।

कव्वलंकारम्मि वि पण्णत्तो-

'आसिसवयणो सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी"

णिसीहचुण्णियारेणं पण्णत्तो

'मगहद्धविसयभासाणिबद्धं अद्धमा-गह"

अद्धमागही-भासा अद्धमगहस्स भासा अत्थि। अओ सा भासा भासा अत्थि। अओ सा भासा अद्धमागही भासा अत्थि। मगहस्स अद्धभासम्मि जा भासा पचलिया ववहरिया च सा भासा अद्धमागही भासा अत्थि। जिणदासगणिमहाभाएणं अभयदेवेणं च अद्धभागहदेसस्स पचलिय-भासं अद्ध-हदेसस्स पचलिय-भासं अद्धमागहीभासा पण्णत्तो। वइयागरणयारसिरिमक्कण्डेय-महाभाएणं वुत्तो

अर्धमागधी भाषा है। महावीर के अर्थ भाषित वचनों का गौतम गणधरों के द्वारा सूत्र रूप में कहे गए तथा आचार्यों के द्वारा उन वचनों को अच्छी तरह ग्रहणकर अनेक प्रकार से जन सामान्य के कल्याण के लिए ज्ञान के सूत्रों को लिपिबद्ध किया। महावीर निर्वाण के पश्चात् छठी शताब्दी में देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण महाभाग के द्वारा सर्व प्रथम ऐसा कार्य किया गया।

अर्धमागधी क्या है?

समवायांग में कहा-भगवन् ने जो कुछ भी धर्म का उपदेश दिया वह अर्द्धमागधी भासा में है। औपपातिक सूत्र में कहा-अर्द्धमागधी भाषा में जो कहा है वही यथार्थ में वह अर्धमागध भाषा है।

उन सभी आर्य और अनार्यों की अपनी-अपनी भाषा के परिणाम से परिणमन होता है।

कव्यालंकार में कहा है-

देवों की अर्धमागधी वाणी स्वभाव से प्रसिद्ध है।

निशीथचूर्णिकार ने कहा-

अर्धमगध की भाषा में निबद्ध अर्धमागधी है।

अर्धमागधी भाषा अर्धमगध की भाषा है। इसलिए वह भाषा अर्धमागधी भाषा है। मगध के अर्द्धभाग में जो भाषा प्रचलित थी और बोली जाती थी वह भाषा अर्द्धमागधी भाषा है। जिनदास गणि और अभयदेव ने अर्धमागध देश की प्रचलित भासा को अर्ध-आगधी भासा कहा। वैयाकरण श्री मार्कण्डेयमहाभाग ने कहा कि

"सोरसेणीए समीवे भवमाणे मागहिं एव अद्धमागही-भासा भणियो एव अद्धमागही-भासा भणियो। भगवइसुत्तम्मि पणारणा सुत्तम्मि कव्वालंकारम्मि य अद्धमागही भासाए उल्लेहो कओ वागभट्टमहाभाएण कव्वाणुसासणम्मि अद्धमागही-भासाए वि उल्लेहो कओ।

ठाणंगसुत्तम्मि इमाइ भासाइ इसि-भासिया वुत्तो।

सक्कता पागता एव दुहा भणतीओ आहिया। सरमंडलंमि गिज्जंते पसत्था इसिभासिता।।

अणुजोगदुवारम्मि पण्णत्तो–

सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसि भासिआ। पाइय-वायगरणम्मि हेमचंदेण 'आरिसं'

कव्वादरिसटीगाए वि 'आरिसं' पण्णत्तं डॉ० जगदीसचंदेण-सोरसेणीसमीव-कारणाओ मागहि एव अद्धमागही भासा पण्णत्तो। डॉ० जेकोबी, डॉ० वेचरदासेण इमाए भासाए पुरामरहट्ठी भणिओ। डॉ० कत्ते इमाए भासाए विसए लिहिओ–

अद्धमागही ताए भासाए णामा अत्थि जस्सिं पाईणतम-जिणसुत्ताणं रयणा जह सक्कय-देववाणी तह अद्धमागही आरिस-भास। देवभासा अत्थि।[१] हानरते गियर-सणईणा इमं भासां आरिसं वुत्तो।

डॉ० णेमिचंदेण अद्धमागहिं इसिभा-जिआ मण्णंतो सोरसेणी मागही-संजोएणं अद्धमागही भासा उप्पज्जेहिइ।

शौसनसेनी के समीप होने पर मागधी को ही अर्धमागधी भासा कहा। भगवती सूत्र, प्रज्ञापना और काव्यालंकार सूत्र में अर्धमागधी भाषा का उल्लेख किया। वाग्भट्ट महाभाग ने काव्यानुशासन में भी अर्धमागधी भाषा का उल्लेख किया।

ठाणांगसूत्र में इस भाषा के लिए ऋषि भाषिता कहा।

संस्कृत और प्राकृत दोनों ही देव भाषाएं हैं जिन्हें ऋषिभासिता कहते हैं।

अनुयोगद्धार में कहा है–

सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसि भासिआ। प्राकृत व्याकरण में हेमचंद ने

'आर्षम्' कहा।

काव्यादर्श टीका में भी 'आर्ष' कहा है। डॉ० जगदीश चंद्र ने शौरसेनी के समीप के कारण से मागधी को ही अर्धमागधी कहा। डॉ० जैकोबी, पं० वेचरदास ने इस भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री माना। डॉ० कत्रे ने इस भाषा के विषय में लिखा–

अर्धमागधी उस भाषा का नाम है-जिसमें प्राचीनतम् जैन सूत्रों की रचना है। जैसे संस्कृत देववाणी है उसी तरह अर्धमागधी आर्ष भाषा है देवताओं की भाषा है। हानर्ते गियर्सन आदि ने इस भाषा को आर्ष कहा।

डॉ० नेमिचन्द ने अर्धमागधी को मानते हुए शौरसेनी और मागधी के संयोग से अर्धमागधी भाषा उत्पन्न हुई होगी।

अद्धमागही उप्पत्ती ठाणं-

अद्धमागही सुलुप्पत्तीठाणं पच्छिमगह-सूरसेणस्स च मज्झवट्टी पएस-अउज्झ अत्थि। अरह-तित्थयराणं दिव्व-उवएसहणं भासा अद्धमागाही मण्णिओ आइतित्थयररिसहदेवो पढमतित्थयरो से अउज्झाए अहिवई आसी। तेण सव्वपढम-णिय पुत्तीए बम्हीए अक्खर-बोहं कराविअं। अस्स पएसस्स इमाए भासाए च बहुवित्थारो जाया। सव्व-भासा-विण्ण-जणा इमाए भासाए विसए इमे एव वयंति एसा भासा पुरा जायंता वि पएसस्स दिट्ठिणा कासी-कउसल-भागम्मि पसरिआ।

भगवं महावीरसमए सा अहिया वित्थिण्णं जाया महावीरस्स जम्मठाणं विहार-पएसस्स वइसालीगणरज्जो आसी। जस्सिं विहरंतो उवएसस्स भासा कओ तस्स उवएसस्स भासा जा आसी तं भासं आरिसं वुत्तो। जा पच्छिम-मगहाओ उत्तरे वइसाली-गणरज्जाओ दाहिणे रायगिहे तहा मगहा दाहिण-भागे पसरिआ। एसा भासा विसालपएस्स भासा आसी। वइइगभासासमा इव इमाए भासाए पुरा मण्णेज्जइ।

अद्धमागही भासाए-भासागय-विसेसत्तणं –

अद्धमागही-झुणी-परिवट्टणं:-

१. सरलविंजण-परिवट्टणं।
२. संजुत्त-विंजण परिवट्टणं।
३. सर-परिवट्टणं।
४. सण्णाविहाणं।

अर्धमागधी की उत्पत्ति स्थान:-

अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध और शूरसेन का मध्यवर्ती प्रदेश अयोध्या है। अर्हद् तीर्थङ्करों के दिव्य उपदेशों की अर्धमागधी मानी गई। आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभदेव प्रथम तीर्थङ्कर हैं, वे अयोध्या के अधिपति थे। उन्होंने सर्वप्रथम अपनी पुत्री ब्राह्मी के लिए अक्षर बोध कराया। इस प्रदेश में भी इस भाषा का बहुत विस्तार हुआ। सभी भाषाविज्ञ जन इस भाषा के विषय में यही कहते हैं कि यह भाषा प्राचीन होते हुए भी प्रदेश की दृष्टि से काशी और कौशल भाग में फैली हुई थी।

भगवान् महावीर के समय में वह अधिक विस्तार को प्रापत हुई। महावीर का जन्मस्थान विहार प्रदेश का वैशाली गणराज्य था, जिसमें विचरण करते हुए जो धर्म उपदेश दिया, उस उपदेश की भाषा जो थी, उस भाषा को 'आर्ष' कहा। जो पश्चिम में मगध से, उत्तर में वैशाली गणराज्य से, दक्षिण में राजगृह तथा मगध के दक्षिण भाग में फैली थी। यह भाषा विशाल प्रदेश की भाषा थी। वैदिक भाषा की तरह इस भाषा के लिए प्राचीन माना जा सकता है।

अर्धमागधी भाषा की भाषागत विशेषताएं-

अर्धमागधी के ध्वनि परिवर्तन:-

१. सरल-व्यञ्जन परिवर्तन।
२. संयुक्त-व्यञ्जन परिवर्तन।
३. स्वर-परिवर्तन।
४. संज्ञा विधान।

५. सव्वणामविहाणं।

६. किरियाविहाणं।

७. कियंतविहाणं।

८. तद्धिय।

९. अव्वय।

सरल-विंजण-परिवट्टणं:-

१. कस्स गो

जह–एगे समण-माहणा- आगास-आकाश, सावग-श्रावक।

२. त वि।

जहु-अहित-अधिक, आराहत-आराधक।

३. गस्स गो।

आगम-आगम, सागर-सागर भगवं, आगमण।

४. क-ग-च-ज-त-दं-व-प-य लुगो।

५. जह–लोअ-लोक, सोअ-शोक

६. पावअ-पाप

७. आआर-आचार, पयार-प्रचार

८. बीज-बीज, मणुय-मणुज

९. तओ-तओ, पवेसिआ-प्रवेशिता

१०. मयण-महन, उयग-उदक

११. पापय-पादय, कइ-कपि

ख-घ-थ-ध-भस्स ह।

१२. जह–दुह-दु:ख, सुह-सुख मेह-मेघ, जहा-यथा, तहा-तथा, अह साहु-साधु, बोहि-बोधि लोह-लोभ, दूलह-दुर्लभ, सुहर-शुभ।

१३. पस्स वो।

जह–कविल-कपिल, पाव-पाप।

१४. तस्स ड।

५. सर्वनाम विधान।

६. क्रियाविधान।

७. कृदन्त विधान।

८. तद्धित।

९. अव्यय।

सरल-व्यञ्जन परिवर्तन

१. क का ग हो जाता है।

जैसे :–एगे समणमाहणा। आगास-आकाश, सावग श्रावक।

२. क का त भी हो जाता है

जैसे :–अहित-अधिक, आराहत-आराधक।

३. 'ग' का ग हो जाता है।

आगम-आगम, सागर-सागर भगवं, आ गमणं। ४. क, ग, च, ज, त, द, प, व, और य का लोप प्राय: हो जाता है।

जैसे : ५. सोअ-शोक, लोअ-लोक पावअर पावक।

७. आआर-आचार, पयार-प्रचार।

८. बीअ-बीअ, मणुय-मणुअ।

९. तओ-तत:, पवेसिआ-प्रवेशिता।

१०. मयण-मदन, उयग-उदक।

११. पादप, कइ-कपि

१२. ख, घ, थ, ध, और भ का 'ह' हो जाता है।

जैसे :–दुह-दु:ख, सुह-सुख, मेह-मेघ, जहा-यथा, तहा-तथा, अह, साहु-साधु, बोहि-बोधि, लोह-लोभ, दूलह-दुर्लभ, सुह-चुभ।

१३. प का व हो जाता है।

जैसे :– कविल-कपिल-पाव-पाप

१४. त का ड हो जाता है।

जह–कड-कृत, पडि-प्रति

१५. च तस्स च वि।

जह–वति-वच, कयाची,

१६. यस्स ज।

जह–संजम-संयम, जहा-यथा।

१७. म णो वा।

जह–'नमो-णमो-नमो नायपुत्त

१८. सशषस्से सो

जह–सेस-शेष, समय दोस, रोस कोस।

१९. जस्स ज वि।

जह–जाति-जाति, सुजण।

२०. दस्स त वि।

जह–जता-यदा. निसात-विषाद

संजुत्त-विंजण-परिवट्टणं:-

१. कतस्स त्त-क्क

जह–सत्त-सक्क, मुत्त-मुक्क, रत्त रक्ख।

२ ष्टस्स ट्ठ।

जह–कट्ठ-कष्ठ, दुट्ठ-दुष्ट।

३. कहिं चि क्क।

जह–दक्क-दष्ट।

४. त्वस्स त्तत्तण-क्क।

जह–मिउत्त-मिउक्क-मृदुत्व। मिउत्तण, बालत्तण, मणुत्तण

५. आइ-क्षस्स खछ-झा।

जह–खमा छमा-क्षमा छीर-क्षीर, खीण, छीण, झीण क्षीणं

जैसे :–कडत्कृत, पडि-प्रति

१५. त का च भी हो जाता है।

वति-वच, कयाची।

१६. य का ज हो जाता है।

जैसे :–संजम-संयम, जहा-यथा

१७. न का ण विकल्प से होता है।

नमो-णमो-नमो नायपुत्त।

१८. स, श ओर का 'स' हो जाता है।

जैसे :–सेस-शेष, समय, दोस, रोस, कोस।

१९. ज का 'ज' भी हो जाता है।

जैसे :–जाति-जाति, सुजण।

२०. द का त भ कहीं-कहीं पर होता है।

जैसे :–जता-यदा, निसात-निषाद।

संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन:-

१. क्त का त्त और क्क हो जाता है।

जैसे :–सत्तसक्क, मुत्त मुक्क, रत्त, रक्ख एक।

२. ष्ट का ट्ठ हो जाता है।

जैसे :–कट्ठ-कष्ट, दुट्ठ-दुष्ट।

३. कहीं-कहीं पर 'ष्ट' का 'क्क' भी जाता है।

जैसे :–दक्क-दष्ट।

४. त्व का त्त त्तणं और क्क हो जाता है।

जैसे :–मिउत्त-मिउक्क-मृदुत्व मिउत्तण, बालत्तण, मणुत्तण।

५. आदि के 'क्ष' का ख, छ और झ हो जाता है।

जैसे :–खमा-छमा-क्षमा। छीर-क्षीर, खीण, छीण, झीण-क्षीण।

६. मज्झ अंतक्षस्स क्ख।

जह—कक्खा-कक्षा, भिक्खा-भिक्षा लक्खण-लक्षण, पक्खर पक्ष

७. ष्कस्स क्ख।

जह—पोक्खर-पुष्कर, णिक्ख-निष्क।

८. स्कस्स क्क।

जह—णमुक्कार-नमस्कार

९. ष्कस्स क्क कहिं चि।

जैसे :—दुक्कर-दुष्कर

१०. स्थस्स ख।

जह—खाणु-स्थाणु

११. स्तस्स ख-थ।

खंभ-थंभ-स्तम्भ

१२. ल्कस्स क्क।

जह—सुक्क-शुल्क।

१३ त्वस्स च्च

जह—चच्चर-चत्वर, भोच्चा, णच्चा।

१४. त्यस्स च्च।

जह—सच्च-सत्य, पच्चय-प्रत्यय

१५. थ्वस्स च्छ।

जह—पिच्छी पृथ्वी।

१६. द्ध-द्यस्स ज्ज।

जह—विज्ज-विद्ध, विज्जा-विद्या।

१७. ध्व-ध्यस्स ज्झ।

जह—अज्झ-अध्व, मज्झ-मध्य।

१८. क्ष-थ्य-श्च-त्स-प्स-र्थ्यस्स च्छ।

जह—अच्छ-अक्ष, पच्छ-कक्ष।
मिच्छा-मिथ्या, पच्छ-पथ्य।

६. मध्य और अन्त 'क्ष' का 'क्ख' हो जाता है।

जैसे :—कक्खा-कक्षा, भिक्खा-भिक्षा, लक्खण-लक्षण, पक्ख-पक्ष।

७. ष्क का क्ख हो जाता है।

जैसे :—पोक्खर-पुष्कर, णिक्ख-निष्क।

८. 'स्क' का करक्क हो जाता है।

जैसे :—णमुक्कार-नमस्कार।

९. कहीं-कहीं पर 'ष्क' का क्क हो जाता है।

जैसे :—दुक्कर-दुष्कर।

१०. स्थ का ख हो जाता है।

जैसे :—खाणु-स्थाणु

११. स्त का ख और थ हो जाता है।

जैसे :—खंभ, थंभ-स्तम्भ।

१२. ल्क का क्क हो जाता है।

जैसे :—सुक्क-शुल्क।

१३. त्व का च्च हो जाता है।

जैसे :—चच्चर-चत्वर, भोच्चा, णच्चा।

१४. त्य का च्च हो जाता है।

जैसे :—सच्च-सत्य, पच्चय-प्रत्यय।

१५. थ्व का च्छ हो जाता है।

जैसे :—पिच्छी-पृथ्वी।

१६. द्ध और द्य का ज्ज हो जाता है।

जैसे :—विज्ज-विद्ध, विज्जा-विद्या।

१७. ध्व और ध्य का ज्झ हो जाता है।

जैसे :—अज्झ-अध्व, मज्झ-मध्य।

१८. क्ष, थ्य, श्च, त्स, प्स, र्थ्य का च्छ हो जाता है।

जैसे :—अच्छ-अक्ष, कच्छ-कक्ष मिच्छा-मिथ्या,पच्छ-पथ्य। पच्छा-पश्चात्,

पच्छार-पश्चात्, पच्छिम-पश्चिम्। उच्छाह-उत्साह, मच्छर-मत्सर। लिच्छ-लिप्स, जुगुच्छा-जुगुप्सा। अच्छरा-अप्सरा सामच्छ-सामर्थ्य।

१९. क्षस्स क्ख वि।

जह—भिक्खा-भिक्षा, सिक्खा-शिक्षा।

२०. र्थ्यस्स त्थ वि।

जह—सामत्थ-सामर्थ्य

२१. स्तस्स वि।

जह—समस्थ-समस्त।

२२. य्य-र्य-द्यस्स ज्ज।

जह—सेज्जा-शय्या, कज्ज-कार्य विज्जा-विद्या।

२३. न्य-ण्यस्स ण्ण।

जह—अण्ण-अन्य, कण्णा-कन्या पुण्ण-पुण्य।

२४. कहिं चि न्यस्स ञ्ज।

जह—अहिमञ्जु-अभिमन्यु।

२५. त्त-र्तस्स ट्ट।

जह—वट्ट, पउट्ट-प्रवृत्त णट्ट-नर्त।

२६. र्तस्स त्त वि।

जह—अत्त-आर्त, धुत्त-धूर्त पवत्त-प्रवर्त।

२७. स्थस्स ट्ठ।

जह—उवट्ठित-उपस्थित अट्ठि-अस्थि।

२८. ष्टस्स ट्ठ।

जह—सिट्ठि-सृष्टि, दिट्ठि-दृष्टि

पश्छिम-पश्चिम। उच्छाह-उत्साह, मच्छर-मत्सर। लिच्छ-लिप्स, जुगुच्छा-जुगुप्सा। अच्छरा-अप्सरा। सामच्छ-सामर्थ्य।

१९. क्ष का क्ख भी हो जाता है।

जैसे :—भिक्खा-भिक्षा, सिक्खार शिक्षा।

२०. र्थ्य का त्थ भी हो जाता है।

जैसे :—सामत्थ-सामर्थ्य।

२१. स्त का भी त्थ हो जाता है।

जैसे :—समत्थ-समस्त।

२२. य्य, र्य और द्य का ज्ज हो जाता है।

जैसे :—सेज्जा-शय्या, कज्ज-कार्य, विज्जा-विद्या।

२३. न्य और ण्य का ण्ण हो जाता है।

जैसे :—अण्ण-अण्य, कण्णा-कन्या पुण्ण-पुण्य।

२४. कहीं-कहीं पर 'न्य' का ञ्ज हो जाता है।

जैसे :—अहिमञ्जु-अभिमन्यु।

२५. त्त और र्त का ट्ट हो जाता है।

जैसे :—वट्ट-वृत्त, पउट्ट-प्रवृत्त, अट्ट-आर्त, णट्ट-नर्त।

२६. र्त का त्त भी हो जाता है।

जैसे :—अत्त-आर्त, धुत्त-धूर्त, पवत्त-प्रवर्त।

२७. स्थ का ट्ठ हो जाता है।

जैसे :—उवट्ठित-उपस्थित अट्ठि-अस्थि।

२८. ष्ट का ट्ठ हो जाता हैं।

जैसे :—सिट्ठि-सृष्टि, दिट्ठि-दृष्टि

२९. र्द-ग्ध-द्धस्स ड्ढ।

जह—संमड्ढ-संमर्द, कवड्ढ-कपर्द दड्ढ-दग्ध, वुड्ढि-वृद्धि, इड्ढि-ऋद्धि।

२९. 'र्द' ग्ध, द्ध का ड्ढ हो जाता है।

जैसे :—संमड्ढ-संमर्द, कवड्ढ-कपर्द। दड्ढ-दग्ध, वुड्ढि-वृद्धि, इड्ढि-ऋद्धि।

३०. ज्ञ-म्नस्स ण्ण।

जह—पण्णा-प्रज्ञा, विण्ण-विज्ञ णिण्ण-निम्न।

३०. ज्ञ और म्न का ण्ण हो जाता है।

जैसे :—पण्णा-प्रज्ञा, विण्ण-विज्ञ। णिण्ण-निम्न ।

३१. आज्ञाए ज्ञस्स ण

जह—आणा-आज्ञा।

३१. ज्ञ का ण आज्ञा के हो जाता है।

जैसे:—आणा-आज्ञा।

३२. त्मस्स प्प-त्त-या वा।

जह—अप्प-अत्त-आया-आत्म।

३२. त्म का प्प, त्त और य विकल्प से हो जाता है।

जैसे :—अप्प-अत्त-आया-आत्म।

३३. स्तस्स त्थ।

जह—हत्थ-हस्त, पसत्थ-प्रशस्त।

३३. स्त का त्थ हो जाता है।

जैसे :—हत्थ-हस्त, पसत्थ-प्रशस्त।

३४. स्प-ष्पस्स प्फ।

जह—पडिप्फंदण-परिस्पंदन, पुप्फ-पुष्प।

३४. स्प, ष्प का प्फ हो जाता है।

जैसे :—पडिप्फंडण-परिस्पंदन। पुप्फ-पुष्प।

३५. ह्वस्स ब्भ ह।

जह—जिब्भा-जीहा-जिह्वा।

३५. ह्व का ब्भ ह, हो जाता है।

जैसे :—जिब्भा-जीहा-जिह्वा।

३६. श्म-ष्म-स्म-ह्मस्स म्ह।

जह—कम्हार-कश्मीर, कुम्हाण-कुश्मान। विम्हय-विस्मय, बम्हा-ब्रह्मा बम्हण-ब्राह्मण, गिम्ह-ग्रीष्म, उम्ह-ऊष्म।

३६. श्म, स्म, ष्म और ह्म का म्ह हो जाता है।

जैसे :—कम्हार-कश्मीर, कुम्हाण-कुश्मान। विम्हय-विस्मय, बम्हा-ब्रह्मा. बम्हण-ब्राह्मण, गिम्ह-ग्रीष्म उम्ह-ऊष्म।

३७. श्न-ष्ण-स्न-ह्न-ह्ण-क्ष्णस्स ण्ह।

जैसे-पण्ह-प्रश्न, विण्हु-विष्णु, कण्ह-कृष्ण, जिण्हु-जिष्णु

जोण्हा-ज्योत्स्ना, वह्नि-वह्नि।

पुव्वण्ह-पूर्वाह्न, अवरण्ह-अपराह्न। तिण्ह-तीक्ष्ण।

३७. श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण का ण्ह हो जाता है।

जैसे :—पण्ह-प्रश्न विण्हु-विष्णु, कण्ह-कृष्ण, जिण्ट्टु-जिष्णु।

जोण्हो-ज्योत्स्ना, वह्नी-वह्नि। पुव्वण्ह-पूर्वाह्न, अवरण्ह-अपराण्हा। तिण्ह-तीक्ष्ण।

३८. ल-ब-रस्स लुगे, दित्तो।

३८. ल, ब, र का लोप होने पर द्वित्व हो जाता है।

जह-उक्का-उल्का, वक्कल-वल्कल, सद्द-शब्द, लुद्धअ-लुब्धक अक्क-अर्क, वग्ग-वर्ग।

३९. संजुत्त-विंजणलुगे सेसस्स दित्तो।

जह-सव्व-सर्व, कज्ज-कार्य रज्ज-राज्य, मिच्चु-मृत्यु

४०. दित्त-विहाणं-

पढमस्स बीओ-दक्ख-दक्ष।

चउत्थस्स तइओ-वग्घ-व्याघ्र।

४१. समासम्मि दित्तो वा।

जह-नइ गाम-नइग्गाम

कम्मखय-कम्मक्खय, अदंसण-अद्दंसण, पडिकूल-पक्किूल।

सर-परिवट्टणं-

१. समासम्मि लहु-दिग्घो वा च।

जह-हत्थिकुंभ-हत्थीकुंभ णईसोय-णइसोय।

२. परोप्परे संधी वा।

जह-महाइसी-महेसि, वास इसी-वासे सी समया आयार-समयाआर, भाणु-उदय भाणूदय।

३. इ-उस्स संधि णो।

वंदामि आइरियं, समणी उववास भाणु ईस, बहू आयार।

४. ए ओ पच्छा संधी ण।

जह-जिणे आलय, जिणो इंद, अहो आणंद।

५. विंजणलुगे अवसिट्ठसरस्स संधी ण।

जैसे :-उक्का-उल्का, वक्कल-वल्कल। सद्द-शब्द, लुद्धअ-लुब्धक, अक्क-अर्क, वग्ग-वर्ग।

३९. संयुक्त व्यञ्जन के लोप होने पर शेष द्वित्व हो जाता है।

जैसे :-सव्व-सर्व, कज्ज-कार्य, रज्ज-राज्य, मिच्चु-मृत्यु।

४०. दित्तविहाणं-(द्वित्व विधान)

पढमस्सबीओ-दक्ख-दक्ष।

चउत्थस्स तइयो-वग्घर व्याघ्र

४१. समासांत पदों में द्वित्व विकल्प से होता है।

जैसे :-नइगाम-नइग्गाम कम्म-खय-कम्मक्खय अद्दंसण, पडिकूल-पडिक्कूल।

स्वर-परिवर्तन:-

१. समासांत पदों में लघु का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व हो जाता है।

जैसे :-हत्थिकुंभ-हत्थीकुंभ णईसोय-णइसोय।

२ परस्पर में सन्धि विकल्प से होती है।

जैसे :-महा इसी-महेसि, वास इसी-वासेसी समया-आयार, समयाआर भाणु-उदय-भादूदय।

३. इ और उ होने पर सन्धि नहीं होती है। वंदामि आइरियं, समणी उववास। भाणु ईस, बहू आयार।

४. ए और ओ के पश्चात् स्वर होने पर सन्धि नहीं होती है।

जैसे :-जिणे आलय जिणो इंद, अहो आणंद।

५. व्यञ्जन के लोप होने पर अवशिष्ट स्वर की संधि नहीं होती है।

जह—समण-उडि, संजमअर राउउत्त

जैसे :—समण-उडि, संजमअर, रायउत्त।

६. कहिं चि अत्थि।

६. कहीं-कहीं सन्धि हो जाती है।

जह—रायउत्त-राउत्त, राउल कुम्मारो, सूरिसो-सू+उरिसो।

जैसे :—रायउत्त-राउत्त, राउल सूरिसो-सू+उरिसो।

७. ति सि मि आइसरे संधी ण।

७. ति, सि, मि आदि स्वर के होने पर सन्धि नहीं होती है।

जह—भणाति-इह, भणसि इह गच्छसि-उवासए

जैसे :—भणति इह, भणासि-इह गच्छसि-उवासए।

८. सरस्स सरेलुगो।

८. स्वर के आगे स्वर होने पर लोप हो जाता है।

जह—महिंद, जिणिंद, सुरिंद भाणुदय, जिणुदय।

जैसे :—महिंद, जिणिंद, सुरिंद भाणुदय, जिणुदय।

९. मणस्सारो।

९. म को अनुस्वार हो जाता है।

जह—जलं, वरं, संबंध, अंबु।

जैसे :—जलं, वरं, संबंध अंबु

१०. अणुस्सारागमो वि।

१०. अनुस्वार का आगम भी हो जाता है।

जह—वंकं-वक्र, तंसं-त्र्यस्र पुंछ-पुच्छ, गुंछ-गुच्छ दंसण-दर्शन, णमंस्सामि-नमस्सामि।

जैसे :—वंकं-वक्र, तंसं-त्र्यस्र, पुंछ-पुच्छ, गुंछ-गुच्छ दंसण-दर्शन, णमंसामि-नमस्सामि।

११. अणुस्सवारस्स लुगो कहिं चि।

११. कहीं-कहीं पर अनुस्वार का लोप हो जाता है।

जह—वीस-विंशत्, तीस-त्रिंशत्, सक्कय-संस्कृत, सक्कार-संस्कार।

जैसे :—बीस-विंशत्, तीस-त्रिंशत्, सक्कय-संस्कृत, सक्कार-संस्कार।

१२. मंसाइम्मि अणुस्सारो वा।

१२. मांस आदि में अनुस्वार विकल्प हो जाता है।

जह—मास-मंस, मासल-मंसल, कास-कंस, कह-कहं, एव-एवं नूण-नूणं, इमाणि-इमाणिं सीहो-सिंहो।

मास-मस, मासल-मंसल, कास-कंस। कह-कहं, एव-एवं, नूण-नूणं, इमाणि-इमाणिं, सीहो-सिंहो।

१३. वग्गस्स अंत-अक्खराणं अणुस्सारो वा।

१३. वर्ग के अंत अक्षर का अनुस्वार विकल्प से हो जाता है।

जह—पंक-पङ्क, संख-सङ्ख अंगडा-अङ्गण, लंछण-लञ्छण चंद-चन्द, अंतर-अन्तर कंठ-कण्ठ।

जैसे :—पंक-पङ्क, संख-सङ्ख, अंगण-अङ्गण, लंछण-लञ्छण, चंद-चन्द, अंतर-अन्तर, कंठ-कण्ठ।

१४. य-र-ल-व-श-ष-स-लुगे दिग्घो।

जह—पास-पश्य, वीसाम-विश्राम, आस-अश्व, वीसास-विश्वास, दूसासण-दुश्शासन, सीस-शिष्य, मणूस-मनुस्य वास-वर्ष, सास-सस्य।

१५. कहिंचि आइसरस्स दिग्घो वा।

जह—समिद्धि-सामिद्धि, पसिद्धित्पा-सिद्धि, पायड-पयड, सरिच्छ-सारिच्छ, पसुत्त-पासुत्त।

१६. आइम्मि इ आगमो।

जह—सिविणे सिमिणे-स्वप्न विंजण-व्यञ्जन, किवा-कृपा किवण-कृपण, रिसह-ऋषभ।

१७. मज्झम्मि वि।

जह—मज्झिम-मज्झम, उत्तिम-उत्तम विसिण-सिमिण-स्वप्न।

१८. ऋस्स अ-इ उ रि वि।

जह—मअ-मृगा, घय-घृत, तण-तृण किवा-कृपा, हियय-हृदय, दिट्ठ-दृष्ट, सिट्ठि-ऋष्टि, मिट्ठ-मृष्ट, अमिय-अमृत सिंगार-शृंगार, सिआल-शृंगाल निव-नृप, किस-कृश उसह-ऋषभ, पाउत-प्रावृत, पाहुड-प्राभृत, पाउस-प्रावृष मातु-मातृ, पितु-पितृ वुड्ड-वृद्ध, वुट्ठि-वृष्टि रिसह-ऋषभ, रिद्धि-ऋद्धि, रिसि-ऋषि,

१९. ऐइ ए-अइ।

जह—केलास-कइलास-कैलास, वेर-वइर-वैर, वेसाली, वइसाली-वैशाली।

१४. य, र, ल, व, श, ष, स के लोप होने पर दीर्घ हो जाता है।

जैसे :—पास-पश्य, वीसाम-विश्राम, आस-अश्व, वीसास-विश्वास, दूसासण-दुश्शासन, सीस-शिष्य मणूस-मनुष्य, वास-वर्ष, सास-सस्य।

१५. कहीं-कहीं पर आदिस्वर का दीर्घ विकल्प से हो जाता है।

जैसे :—समिद्ध, पसिद्धि-पासिद्ध, पायड-पयड, सरिच्छ-सारिच्छ, पसुत्त-पासुत्त।

१६. आदि में 'इ' का आगम हो जाता है।

जैसे :—सिविणे-सिमिण-स्वप्न विंजण-व्यञ्जन, किवा-कृपा, किवण-कृपण, रिसह-ऋषभ।

१७. मध्य में भी 'इ' का आगम हो जाता है।

जैसे :—मज्झिम-मज्झम, उत्तिम-उत्तम, सिविण-सिमिण-स्वप्न

१८. ऋ का अ, इ, उ और रि भी हो जाता है।

जैसे :—मअ-मृग, घय-घृत, तण-तृण, किवा-कृपा, हृदय-हियय, दिट्ठ-दृष्ट, सिट्ठि-सृष्टि, मिट्ठ-मृष्ट, अमिय-अमृत सिंगार-शृंगार, सिआ-शृंगाला, निव-नृप, किस-कृश। उसह-ऋषभ, पाउत-प्रावृत, पाहुड-प्राभृत, पाउस-प्रावृष, मातु-मातृ, पितु-पितृ, वुड्ढ-वृद्ध, वुट्ठि-वृष्टि रिसह-ऋषभ, रिद्धि-ऋद्धि, रिसि-ऋषि

१९. ऐ का ए और अइ हो जाता है।

जैसे :—केलास-कइलास-कैलास, वेर-वइर,-वैर, वेसाली-वइसाली-वैशाली।

२०. औइ ओ-अउ।

जह–कोऊहल-कउहल, गोरी-गउरी-गौरी, मोन-मउन-मौन।

२१. अवस्स ओ वा।

जह–लोण-लवण, ओगास-अवगास ओसाण-अवसाण।

२२. अण्णत्थ वि।

जह–चोत्थी-चउत्थी, चोद्दह-चउदह मोह-मऊह, मोर-मयूर, चोग्गुण-चउगुण।

२३. सेसं सोरसेणीसमा।

सद्द-विहाणं:-

१. अओ पढमाएगवयणे ए व।

जह–जिणे, महावीरे पक्खे-जिणो, सिस्सो, गोयमो।

२. चउत्थीए आते आए वा।

जह–जिणातो, जिणातु पक्खे:-जिणस्स

३. पंचमीए आतो आतु वा।

जह–जिणातो, जिणातु पक्खे:-जिणाओ, जिणाउ जिणाहिंतो, जिणा।

४. सत्तमीए अंसि स्सिं म्मि ए।

जह–जिणंसि, जिणस्सिं, जिणम्मि, जिणे।

५. कहिं चि तइयाएगवयणे सा णा वा।

जह–मणसा, वयसा, कायसा, जोयसा।

२०. औ का ओ और अउ हो जाता है।

जैसे :–कोऊहल-कउहल-कौतूहल गोरी-गउरी-गौरी, मोल-मउन-मौन।

२१. अव का ओ विकल्प से हो जाता है।

जैसे :–लोण-लवण, ओगास-अवगास, ओसाण-आवसाण।

२२. अन्यत्र भी 'ओ' हो जाता है।

जैसे :–चोत्थी-चउत्थी, चोद्दह-चउदह, मोह-मऊह, मोर-मयूर, चोग्गुण-चउगुण,

२३. शेष शोरसेनी के समान हैं।

शब्द-विधान:-

१. अकारान्त शब्दों के प्रथम एकवचन में 'ए' प्रत्यय विकल्प से हो जाता है।

जैसे :–जिणे, महावीरे। पक्षे–जिणो, सिस्सो गोयमो।

२. चतुर्थी में 'आते और आए प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

जैसे :–जिणाते जिणाए। पक्ष में-जिणस्स।

३. पञ्चमी एकवचन में 'आतो आतु प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

जैसे :–जिणातो, जिणातु पक्ष में-जिणाओ, जिणाउ, जिणाहिंतो, जिणा।

४. सप्तमी एकवचन में अंसि, स्सिं म्मि और ए प्रत्यय होते हैं। जिणंसि, जिणस्सिं, जिणम्मि, जिणे।

५. किन्हीं शब्दों के तृतीया एकवचन में 'सा' और णा प्रत्यय विकल्प से हो जाते है।

जैसे :–मणसा, वयसा, कायसा, जोयसा, कम्मुणा, बम्हुणा, धम्मुणा। पक्ष

कम्मुणा-बम्हुणा, धम्मुणा पक्खे-मणेण, वएण, काएण जोएण कम्मेण, बम्हेण, धम्मेण।

६. भगवयस्स भगवया भगवता।

७. पढमाए भगवं।

८. पढम-बीअम्मि बहुवयणे भगवंतो।

९. छट्ठीएगवणे भगवतो।

१०. सेसं सोरसेणीसमा।

जह—हरिणो, हरिणा

सव्वणाम-सद्द-रूवाणि-

सोरसेणीवअ- सव्वणाम रूवाणि।

किरिया रूवाणि-

१. वट्टमाण एगवयणे ति सि मि। भणति, (नंपु०) भणसि (म० पु०) भणमि (उ० पु०)।

२. मज्झम्मि से वि। भणसे

३. बहुवयणे अंति अंते ह मो।
जह—भणंति, भणंते (प० पु०) भणह (म० पु०) भणमो (उ० पु०)

४. ति-आइ-पच्चए ए वि।
जह—भणति, भणेसि, भणेमि। भणेंति, भणेह, भणेम।

५. मि मो मु मम्मि आ इ।

में-मणेण, वएण, वाएण, जोएण, कम्मेण, बम्हेण, धम्मेण।

६. भगवत् शब्द के तृतीया एकवचन में भगवया, भगवता।

७. प्रथमा एकवचन में 'भगवं' रूप बनता है।

८. प्रथमा एवं द्वितीया बहुवचन में 'भगवतो रूप बनता है।

९. षष्ठी एकवचन में 'भगवतो' रूप बनता है।

१०. शेष शौरसेनी की तरह विशेषताएं हैं।

जैसे :—हरिणो, हरिणा।

सर्वनाम शब्द रूप:-

शौरसेनी की तरह सर्वनाम रूप हैं।

क्रियारूप:-

१. वर्तमान काल के एकवचन में ति, सि, और मि प्रत्यय होते हैं। भणति (प्र० पु०) भणसि (म० पु०), भणमि (उ० पु०)।

२. मध्यम पुरुष एकवचन में 'से' भी हो जाता है।

जैसे :—भणसे।

३. बहुवचन में अंति, अंते, ह और मो प्रत्यय हो जाते हैं।

भणंति, भणंते भणह (म० पु०), भणमो (उ० पु०)।

४. ति आदि प्रत्यय होने पर 'ए' भी हो जाता है। भणति, भणेसि, भणेमि। भणेंति, भणेह, भणेम।

५. मि, मो, मु और म होने पर आ और इ भी हो जाता है।

भणामि-भणिमि, भणिमु-भणामु। भणिम-भणाम।

६. भवि स्स हि।

भणिस्सति, भणिहिति वट्टमाण-भविविहिणो वित्थारस्स सोरसेणी भासाए विसेसत्तणं पासेह।

७. भूए सव्वत्थ इंसु अंसु।

जह—भणिंसु, भणंसु भणेंसु।

८. अणिमिअभूए मूले किरियाए जावए। पण्णत्तो, जतो, भणितो।

९. कम्मणि-पेरणात्थगाणं सोरसेणीए णियमाणं पासेह।

१०. कियंताईणं वि सोरसेणीए मुणेह

पालि—

पाली-अत्थो पंत्ती, परिही सीमा य। एसा पाली भासा आरिसो।

भिक्खु-जगदीस-कासवेण पालियायं पाली पण्णत्तो। सो तं पालिया सद्दं बुद्ध-उवएसस्स अत्थे पजुत्तो मण्णए। भिक्खं सिद्धत्थेण पाढसद्दं एव पाली वुच्चिओ। भट्टाइरिएणं पंत्तिं पाली वुत्तो। सक्कए वि एस सद्दो उवजुत्तो अत्थि। अहिहाणप्प-दीविगाए वुत्तो-''तन्ति बुद्धवचनं पन्नित पालि'' वेलेसरेण पालिं पाटलि- पाडलिणो च संखित्तरूवो मण्णो। अस्स अहिप्पायो एस पालि-भासा पाडलिपुत्तस्स भासा आसी।

इणं पल्लि वि वुत्तो। पल्लीए पाली-सद्दस्स जाआ एस अत्थो वि णायए।

जैसे :—भणामि भणिमि, भणामो, भणिमो, भणिमु, भणामु, भणिम-भणाम।

६. भविष्यत् काल में स्स और हि आदेश होते हैं। भणिस्सति, भणिहिति वर्तमान, भविष्यत्, विधि/आज्ञा के विस्तार के लिए शौरसेनी भाषा की विशेषताओं को देखें।

७. भूतकाल में सर्वत्र 'इंसु अंसु' प्रत्यय होते हैं।

जैसे :—भणिसुं, भणंसु भणेंसु।

८. अनियमित भूत में मूल क्रिया का ही प्रयोग होता है। पण्णत्तो, जतो, भणितो।

९. कर्मणि और प्रेरणार्थक के लिए शौरसेनी के नियमों को देखें।

१०. कृदंत आदि को भी शौरसेनी से समझें।

पालि—

पालि का अर्थ है, पंक्ति, परिधि या सीमा। यह पालि भाषा आर्ष है।

भिक्षु जगदीश काश्यप ने 'पालियाय' को पालि कहा। वे इस पालियाय शब्द को बुद्ध उपदेश के अर्थ में प्रयुक्त मानते हैं। भिक्षु सिद्धार्थ ने पाठ शब्द को ही पालि कहा। भट्टाचार्य ने पंक्ति को पालि कहा। संस्कृत में भी यह शब्द उपयुक्त है। अभिधानप्पदीपिका में कहा है-''तन्ति बुद्धवचनं पन्ति पालि'' वेलेसर ने पालि को पाटलि या पाडलि का संक्षिप्त रूप माना। इसका यह अभिप्राय है कि पालि भाषा पाटलिपुत्र की भाषा थी।

इसको पल्लि भी कहा। पल्लि से पाली शब्द की उत्पत्ति हुई यह अर्थ भी ज्ञात होता है।

पालिभासा बुद्धवचनस्स लिविवद्ध-सारो। जा भासा पवित्तगंथाणं भासा जाआ। अस्स अत्थवित्थारो जाआ। पालि-भासा पाइयस्स एव णामो अत्थि। पालिभासाए वइइकसक्कएणं बहु-सरिच्छा। मूलओ एस सच्चो पालि-जणभासा अत्थि।

पालि भाषा बुद्धवचन का लिपिबद्ध-सार है। जो भाषा पवित्र ग्रन्थों की भाषा बनी। इस भाषा का अर्थ विस्तार हुआ। पालिभाषा प्राकृत का ही नाम है। पालि भाषा का वैदिक संस्कृत के साथ अधिक साम्य है। मूलतः यह सत्य है कि पालि जन भाषा है।

पालिखेत्तोः-पाली मूलओ मगहस्स भासा आसी। असोगस्स अहिलेहेहिं णायए पालीए भासाए विगासो सणिअं सणिअं देसस्स विभिण्णभासेसुं जाओ। पालीए उप्पत्ती-ठाणं विंधयल-पच्छिम-भागो वि इमाए भासाए ठाणं।

पालि का क्षेत्रः-पालि मूलता मगध की भाषा थी। अशोक के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि पालि भाषा का विकास धीरे-धीरे देश के विभिन्न भागों में हुआ। पालि का उत्पत्ति स्थान विन्ध्याचल का दक्षिण प्रदेश था। उत्तर-पश्चिम भाग भी इस भाषा का स्थान है।

पालि-ईसा पुव्व-तइय-सईए बारहसइं पेरंतं एसा भासा पचलिआ। पुरासाहिच्चस्स अवलोएण पालि-साहिच्चस्स सामिद्धीए परिण्णाणं होइ। पालि साहिच्चो तिपिडगरूवे विक्खाओ। विणयपिडग सुत्तपिडग-अहिधम्म-पिडगा च इमे तिण्णि पिडगा धम्मस्स या बुद्धवयणस्स रयणमंजूसा। जस्सिं साहिच्चे धम्माणुसासणं रट्ठाणुसासणं, समाइगाणुसासणं समणाणुसासणं जह पाणिमेत्त-इट्ठा

पालि ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी से बारहवीं शती पर्यन्त यह भाषा प्रचलित रही। प्राचीन साहित्य के अवलोकन से पालि साहित्य की समृद्धि का परिज्ञान होता है। पालि साहित्य त्रिपिटक के रूप में विख्यात है। (१) विनयपिटक, (२) सुत्रपिटक और (३) अभिधम्मपिटक ये तीन पिटक धर्म की या बुद्धवचन की रत्न-मंजूषाएं हैं। जिस साहित्य में धर्मानुशासन, राष्टानुशासन, सामाजिक अनुशासन, श्रमणानुशासन जैसे प्राणिमात्र के लिए हितकारी हैं।

पज्ज-कव्वाणि, गज्जकव्वाणि गज्जकव्वाणि गज्ज-पज्ज-मीसिय-कव्वाणि विविह-जायग-कहाओ आई। पालि-साहिच्चं तिसंगीईणं मज्झमेण सुरक्खिअं। असोगस्स धम्म पयाराओ तहा मोरियरायणो एसा अइसमिद्धा भासा जाआ।

पद्य काव्य, गद्यकाव्य, गद्य-पद्य मिश्रित काव्य, अनेक प्रकार की जातक कथाएं आदि हैं। पालि साहित्य को तीन संगीतियों के माध्यम से सुरक्षित किया गया। अशोक के धर्म प्रचार के कारण से तथा मौर्य राजाओं के कारण यह अति समृद्ध भाषा बनी।

१. पालिभासाए एगवयणं बहुवयणं च।

२. चउत्थी-छट्ठी एवामेव।

३. तइया-पंचमी-रूवेसुं वि समाणत्तणं।

४. किरियाए दुविहा-अप्पणेपय-परसमइयया य।

५ सत्तगणा-भवाइ-रूधाइ-दिवाइ-साइ-कया-तणाइ-चुराई च।

६. सत्तगणेसुं आसीसलिंगो ण।

७. भूयत्थे लुङ्लगारस्स पजोगो।

८. पेरणत्थगे अय-आयय-पच्चया।

९. पालिभासाए सराणि सर-परिवट्टणाणि च एगसमा अत्थि पाइयभासाए। या-ऐ-ए, अइ/औ-ओ, अइ-ऋअ, इ, तु-मग, मित, उसभ।

१०. विंजणे परिवट्टणं बहुपुह-पुह अत्थि।

क-ग, एग, सागल- शाकल ख, घ, ध-ह-लहु, गेह, साहु। द का र-एकारस; वारस। न का ल या र-एल-एव, कलकर। पुञ्ज-पुण्य, कञ्ञा-कन्या, सव्वञ्ञु-सर्वज्ञ, अञ्ज-अज्ञ। सप्पो-स्वप्न, दस्सन-दर्शन। न का न, नम, नीर। स, ष, श-स आसीस, आशीष। सिलालेहि-पाइयो-सव्वे पुरा आरिस-पाइयो अत्थि। तं पच्छा सिलालेहि-पाइयस्स ठाणं अत्थि। सिलालेट्ठ-पाइयस्स पुरातण-रूवाणि असोगस्स सिलालेहेसुं दुविहा। बम्ही- खरूट्ठी य।

१. पालि भाषा में एकवचन और बहुवचन है।

२. चतुर्थी और षष्ठी एक ही है।

३. तृतीया और पञ्चमी के रूपों में समानता है।

४. क्रिया के दो रूप हैं-१. आत्मनेपद और परस्मैपद।

५. सात गण-१. भ्वादि, २. रूधादि, ३. दिवादि, ४. स्वादि, ५. क्रयादि, ६. तनादि और ७. चुरादि।

६. सातगणों में आशीलिङ नहीं है।

७. भूतार्थ के लिए लुङ् लकार का प्रयोग है।

८. प्रेरणार्थक में अय और आयय प्रत्यय हैं।

९. पालि और प्राकृत भाषा के स्वर परिवर्तन एक समान हैं। यथा-ऐ-ए, अइ, औ, ओ, अ उ।

ऋ-अ, इ, उ-मग, मित, उसभ।

१०. व्यञ्जन में परिवर्तन बहुत से पृथक्-पृथक् हैं।

क-ग-एग, सागल-शाकल। ख, घ, ध, ह लहु, मेह, साधु। द र-एकारस, बारस। व का ल या-र-एल-एव, कलकर। न्य-ण्य-ज्ञ-ञ्ञ। पुञ्ज-पुण्य, कञ्जा-कन्या, सव्वञ्जु-सर्वज्ञ, अञ्ज-अज्ञ। सप्पो-स्वप्न, दस्सन-दर्शन। न का न-नम, नीर। स ष, श-स-आसीस-आशीष शिलालेखी प्राकृत-सबसे प्राचीन आर्ष प्राकृत है। इसके अनन्तर शिलालेखी प्राकृत का स्थान है। शिलालेखी प्राकृत के पुरातन रूप अशोक के शिलालेखों में पाए जाते हैं। अशोक के शिलालेख दो

खरूट्ठी लिविम्मि साहबाजगढीए माण-सेहरस्स अहिलेहा पत्तेंति। सेस-अहिलेहाणं लिवी बम्ही-लिवी अत्थि/असोगस्स सिलालेहाणं संखा तीसा अत्थि।

सिलालेहाणं विभायणं–

१. सिलालेहधम्मादेसो-सहबाजगढी-माणसेहराए पत्ता अहिलेहा खरोट्ठी-बम्ही-लिविम्मि। गिरणारस्स कालसी-सिलालेहा-धोली-सिलालेहा-जउगढ-सिलालेहा- सोवार-सिलोहा च बम्ही लिविम्मि वट्टंते।

२. धम्मोवएसस्स लहु-सिलालेहा-रूवणाहे (जबलपुर मंडले) सहसरामे (मुगल-सराय-गया मज्झे) बइराडे (जयउररज्जे), बम्हगिरि-सिद्धउर जटिंग-रामेसरम्मि (मइसूररज्जे) मक्की- कोवबाले (हइदराबादरज्जे) येरागुडीए (कुण्णूल-मंडले) पत्ता य।

३. **थम्भलेहा**-दिल्ली-तोप्पाए, इलाहाबादस्स कोसंबी, रहिया रामपुराए वट्टंते।

४. **लहु थंभ-लेहा**-सारणाहे। (वाराणसीए) संचीए मज्झपएसस्स विदिसामंडले) इलाहाबाद-कोसबीए (उत्तरपएसे) च वट्टंते।

५. **थंभ**-समप्पणं-णेवाल-पएसे रम्मिणदेई, निगलिवम्मि पत्तेंति।

६. **गुलालेहा**-बराबरम्मि तहा गयाए णा गारजुणी-गुहासुं पत्तेंति।

अहिलेहाणं कारणाओ धम्मुवएसस्स णाणं तु अवस्समेव हवइ किण्णु इमे अहिलेहा समग्ग-भरहस्स पडिणिहित्तं

प्रकार के हैं–(१) ब्राह्मी और (२) खरोष्ठी। खरोष्ठी लिपि में शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा के अभिलेख प्राप्त होते हैं। शेष अभिलेखों की लिपि ब्राह्मी लिपि है। अशोक के शिलालेखों की संख्या तीस है।

शिलालेखों का विभाजन–

१. शिलालेख धर्मादेश-सहबाजगढी और मानसेहरा में प्राप्त अभिलेख खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपि में हैं। गिरनार के कालसी शिलालेख, धोली-शिलालेख, जौगढ शिलालेख और सोपार शिलालेख ब्राह्मी लिपि में हैं।

२. धर्मोपदेश के लघु शिलालेख-रूपनाथ (जंबलपुर जिला) सहसराम (मुगलसराय, गया के मध्य) वैराड (जयपुरराज्य), ब्रह्मगिरि, सिद्धपुर, जटिंग-रमेश्वर (मैसूरराज्य) मस्की, कोपबाल (हैदराबाद राज्य) और येरागुडी (कुर्नूल-मंडल) में प्राप्त हुए।

३. **स्तम्भलेख**-दिल्ली-तोप्ता, इलाहाबाद कौशाम्बी, रधिया, मथिया, रामपुरा में हैं।

४. **लघु स्तम्भलेख**-सारनाथ (वाराणसी) सांची (मध्य प्रदेश के विदिश्शा जिला) इलाहाबाद-कौशाम्बो (उत्तर प्रदेश) में हैं।

५. **स्तम्भ**-समर्पण-नेपाल प्रदेश में रम्मिनदेइ, निगलिव में प्राप्त होते हैं।

६. **गुफालेख**-बराबर में तथा गया में नागार्जुनी गुफाओं में मिलते हैं। अभिलेखों के कारणों मे धर्मोपदेश का ज्ञान तो अवश्य हाता है, ये अभिलेख समग्र भारत का प्रतिनिधित्व, करते हैं। पश्चिम,

कुणंति। पच्छिम-उत्तर-पच्छिम- पुव्व-दाहिणस्स इमे गारवमय-चिण्हाणि अत्थि।

हाथी-गुम्फाए, खारवेलस्स अंधप-एसस्स रायाणं बहुअहिलेहा।

भरहं अइरित्तो सिरिलंकाए ईस-वीपुव्व-बीअसईए चउत्थ-पंचम-ईसवी-सईए मज्झे वपसेंति।

सिलाए अइरित्तो अहिलेहा तम्बपत्ते रजयपत्ते, सुवण्णपट्टे मुद्दाए पडिमाए कंसपत्ते, कलसे मिट्टिपत्ते आईए य रजय-तम्बाईणं सिक्केसुं वि अहिलेहा पत्तेंति।

सिलालेही पाइयस्स विसेसत्तं-

मूलओ सिलालेहीसुं सव्व-पाइयाणं समावेसो अत्थि। कइवया विसेसत्तं अत्थ दिज्जंते।

१. ऐ-ए-अइ-केलास-कइलास।

२. औ-ओ-अउ-ओस ही, अउसही

३. ऋ ए रि, र अ उ रिसह-म्रुग, मग।

४. माणसेहरे-क्रिट-कृत म्रिग, म्रुग बुद्ध-बुद्ध-वृद्ध।

५. क-ग-एग-एक क-क-असोक, एक।

६. ख-घ-थ-घ-भए ह। मुह, मेह, अह, साहु, सहा।

७. ख-घाइणं ख, थ, लेख, मेघ, मथ, साधु, सभा।

८. क्षस्स, ख, छ।

९. **विंजणाणं समीयरणं-**

कलण-कल्याण, कटव-कर्त्तव्य

१०. स-ष-शस्स श-मनुष-मनुष्य, अनुशाशन-अनुशासन

उत्तर-पश्चिम, पूर्व और दक्षिण के ये गौरवमय प्रतीक हैं। हाथी गुम्फा, खारवेल और आन्ध्र प्रदेश के राजाओं के कई अभिलेख हैं।

भारत के अतिरिक्त श्रीलंका में ईसवी पूर्व द्वितीय शती और चौथी पंचमी ईसवी शती के मध्य में पाए जाते हैं।

शिला के अतिरिक्त ये अभिलेख ताम्रपत्र, रजतपत्र, सुवर्णपट्ट, मुद्रा, प्रतिमा, कांस्यपात्र, कलश और मिट्टि के पात्र आदि पर हैं। रजत और ताम्र आदि के सिक्कों पर भी अभिलेख प्राप्त होते हैं।

शिलालेखी प्राकृत की विशेषताएं-

मूलतः शिलालेखों में सभी प्राकृतों का समावेश है। कतिपय विशेषताएं यहां दी जा रही हैं।

१. ऐ-ए-अइ-केलास-कइलास।

२. औ-ओ-अउ-ओसही-अउसही।

३. ऋ का रि, र, अ और उ रिसह-म्रुग, मग।

४. मारसेहरा में-क्रिट-कृत म्रि, म्रुग, ब्रुद्ध-बुद्ध-वृद्ध।

५. क-ग एग-एक क-क-असोक-एक।

६. ख, घ, थ, ध, भ का ह-मुह, मेह, अह, साहु, सहा।

७. ख, घ आदि का ख, घ की रह जाता है। लेख, मेघ, साधु, सभा।

८. क्ष का क्ष, छ मोक्ष, मोख-मोक्ष

९. **व्यञ्जनों का समीकरण-**

कलण-कल्याण, कटव-कर्त्तव्य।

१०. स, ष और श का श, मनुश-मनुष्य, अनुशासन-अनुशासन।

११. नस्स न। महानस, नम

१२. न्यस ञ्ञ। अञ्ञ-अन्य, कञ्ञा-कन्या,

१३. ण्यस्स ण। पुण-पुण्य।

१४. ज्ञस्स ञ्ञ। अज्ञ-अज्ञ

१५. हस्स लुगो-इअ-इह ब्रमण-ब्रह्मण, इच्चादी बहु विसेसत्तं अत्थि।

णिया-पाइयो-एस पाइयो खरोट्ठीए णियड-संबधंरक्खेइ। एस पच्छिमुत्तर-पएसस्स भासा अत्थि। भासा-विण्णणि यद्दिट्ठिणा इमाए दरदी-भासाहिं विसेस सम्बंधो दीसेइ। चीणी-तुक्किट्ठाण बहुलेहा नियापाइए। योरीवीय-विण्णजण-वोयर-रेप्सन-सेणर-महोदएणं च गवेसणप्पगलेहेसुं नियापाइयस्स उल्लेहो कओ। णियापाइए दिग्घसरा ऋझुणी सघोस-उण्ह झुणीणं अत्थित्तं अत्थि। किण्णु पाइएसुं णो।

१. एस्स इ। इमि-इमे, छित्त-क्षेत्र।

२.अघोसविंजणाणं सघोसो-यधा-यथा, पढम-प्रथम।

३. कहिंचि अघोसो सघोसाणं। विराक-विराग, योक-योग समाकत-समागत, तण्ट-दण्ड।

४. महप्पाणस्स अप्पाणो। बूम-भूमि, तनना-घनानाम्।

५. ऋस्स अ इ उ रि। मुतु-मृतः, सव्वतो-सवृतः। व्रि-वृद्ध, किड-कृत

अण्ण-बहु-विंजण-सर-परिवट्टण-संबंधी-वसेसत्तं अत्थि। पयरयणा पढम-

११. न का न-महानस, नम।

१२. न्य का ञ्ञ। अञ्ञ-अन्य, कञ्ञा-कन्या

१३. ण्य का ण-पुण-पुण्य

१४. ज्ञ का ञ्ञ-अञ्ज-अज्ञ

१५. ह का लोप-इअ-इह, ब्रमण-ब्रह्मण, इत्यादि बहुत सी विशेषताएं हैं।

निया प्राकृत-यह प्राकृत खरोष्ठी से निकट का सम्बन्ध रखती है। यह पश्चिमोत्तर प्रदेश की भाषा है। भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से इसका दरदी भाषाओं से विशेष सम्बन्ध दिखाई पड़ता है। चीनी तुर्किस्तान के कई लेख निया प्राकृत में हैं। योरोपीय, विद्वान्, वोयर, रेप्सन, और सेनर महोदय ने गवेषणात्मक लेखों में निया प्राकृत का उल्लेख किया। निया प्राकृत में दीर्घ स्वर, ऋ ध्वनि और सघोष ऊष्म ध्वनियों का अस्तित्व है। किन्तु अन्य प्राकृतों में नहीं।

१. ए का इ-इमि-इमे, छित्त-क्षेत्र,

२. अघोस व्यञ्जनों का सघोष-यधा-यथा, पढम-प्रथम

३. कहीं-कहीं पर अघोष होता है सघोष का। विरक-विराग, योक-योग, समाकत-समागत, तण्ट-दण्ड।

४. महाप्राण का अल्पप्राण-बूम-भूमि, तनना-घनानाम्।

५. ऋ का अ, इ, उ, रि-मुतु-मृतः, सव्वतो-संवृतः व्रिढ-वृद्ध, किड-कृत।

अन्य बहुत सी व्यञ्जन-स्वर परिवर्तन सम्बन्धी विशेषताएं हैं। पद रचनी में प्रथमा एवं द्वितीया में प्रत्यय लोप भी है। कहीं-कहीं

वीए पच्चययलुगो वि। कहिं चि दुवयणस्स पयोगो सक्कयसमा।

धम्मपयस्स पाइयो-जइ पि बुद्धवयणस्स सुगीया पालि-भासाए अत्थि। एग-अण्ण पुरा-धम्मपयो अत्थि। जस्स भासागय-विसेसत्ताओ पाइयं-विण्ण-जणेहिं खरोट्ठी-लिविम्मि णिबद्धो अस्स गंथस्स कइवया विसेसत्तं झाणं दाऊण असोगस्स सिलालेहाणं समा पुरा भणिणओ।

अस्स धम्मपयस्स भासं पच्छिमुत्तर-पएसस्स भासा मण्णिआ।-

यस एतदिश यन गेहि परवइतस व।
स वि एतिन यनेन निवनसेव सत्तिए

अस्सघोस्स णाडयाणं पाइयो

अस्सघोसस्स णाडऐसुं सोरसेणी-मागहि-अद्धमागही-भासाए पओगा अत्थि। अस्सघोसस्स णाडगाणं पाइयो अण्ण सक्कय णाडगाणं पाइएणं पुरा तहा विविह-भासा-गुणाओ अइ-महत्तपुण्ण-भासा अत्थि। णवरि एस पाइयाणं महत्तं ठावेइ अवि दु भरहिज्ज-भासा-विगासे णिययोग-याणं णिद्धरेइ। मागही-पाइयस्स पजोगो आइवासी-भिल्ल-सवराई भासेंति सोरसेणी-भासाए इत्थीपत्ता, तह विऊसगो पउज्जंति। तवस्सी-जोगी-साहगा अद्धमागहिं भासेंति। अओ एस तु फुड एव अस्सघोसस्स णाडगा पुरा अत्थि। तम्हा तेसिं णाडगाणं भासाणं णिय-महत्त- पुण्ण-ठाणं अत्थि।

मज्झजुगीण-पाइया-

पाइय-भासाणं एस जुगो सव्वविहाहिं

पर द्विवचन का प्रयोग संस्कृत के समान है।

धम्मपद की प्राकृत-यद्यपि बुद्धवचन की सुगीता पालि भाषा में है। एक अन्य प्राचीन धम्मपद हैं जिसकी भाषागत विशेषताओं के कारण प्राकृत विज्ञजनों के द्वारा खरोष्ठी लिपि में निबद्ध इस ग्रन्थ के लिए कतिपय विशेषताओं को ध्यान में रखकर अशोक के शिलालेखों की तरह प्राचीन माना।

इस धम्मपद की भाषा को पश्चिमोत्तर प्रदेश की भाषा माना।

यस एतदिश यम गेहि पव्रवइतस व।
स वि एतिज यनेन निवनसेव सत्तिए।।

अश्वघोष के नाटकों की प्राकृत-

अश्वघोष के नाटकों में शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी भाषा के प्रयोग हैं। अश्वघोष के नाटकों की प्राकृत से प्राचीन तथा विविध भाषा गुणों के कारण अति महत्वपूर्ण भाषा है। न केवल यह प्राकृतों के महत्त्व को स्थापित करती है अपितु भारतीय भाषा विकास में अपना योगदान निर्धारित करती है। मागधी प्राकृत का प्रयोग आदिवासी भील, शबर आदि बोलते हैं। शौरसेनी भाषा का प्रयोग स्त्रीपात्र और विदूषक करते हैं। तपस्वी, योगी, साधक अर्धमागधी को बोलते हैं। अतः यह तो स्पष्ट ही है कि अश्वघोष के नाटक प्राचीन है। इसलिए उन नाटकों की भाषाओं का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

मध्ययुगीन प्राकृतें-

प्राकृत भाषा का यह युग समस्त विधाओं से समृद्ध था। इस युग में प्रबन्ध

सामिद्धो अत्थि। अस्सिं जुगम्मि पबंध -कव्वां बहुलत्तणं। महकव्व- खण्डकव्व- चरित्त- कहा-थुइ-अलंकार- सिद्धंत- णीई-णाड-गाणं आईणं अस्सिं, जुगे पुप्फिय-फल्लियस्स सोहग्गो पत्तो। एगओ समणाणं अपुव्व- पडिभाए कज्जं कअं अण्णओ कव्वविण्ण जणेहिं कव्वस्स णाणाविहाए कव्व-सिजणं किच्चा भासा-विगासे जोगदाणं दिण्णं जं तेणं कारणेणं मज्झ-जुगं पाइय-भासाए सुवण्ण-जुगो भासणे कस्स वि संकोचो ण जायए।

अस्स जुगस्स आरंभो ई० २००-६०० ई० पेरंतं मण्णिओ। साहिच्चग-पाइयस्स सेयो अस्सिं जुगे पचलिअ-महरट्ठ-पाइयं पत्तो। भरहमुणिणा जस्सिं पाण-संचारं कओ। वेयाकरणेहिं बहुविह-पजोगाओ सुत्तबद्धं कअं। उवलद्ध-साहिच्चाहारेणं अस्स जुगस्स पाइयं एवं विभज्जेइ-

१. धम्मगंथाणं पाइयो-
२. णाडणाणं पाइयो-
३. कव्वाणं पाइयो-
४. वेयाकरणाणं पाइयो-
५. अहिलेहाणं पाइयो-
६. लोग-पचलियपाइयो-
७. गुणाढस्स बहदकहाए पाइयो-

१. धम्मगंथाणं पाइयो-

अस्सिं वग्गे बोद्ध-जेण-आगम-सिद्धंत-गंथाणं भासा आगच्छइ। बुद्धवयणं पालीए अत्थि। जिणवयणं सोरसेणी-अद्धमागही-पाइए। आगम-तिविडगाणं-पाइय-भासाणं अणंतरे बहुसिद्धंत-गंथा वि

काव्यों की बहुलता थी। इस युग में महाकाव्य, खण्डकाव्य, चरित्र, कथा, स्तुति, अलंकार, सिद्धान्त, नीति, नाटक आदि को पुष्पित और फलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक ओर श्रमणों की अपूर्व प्रतिभा ने कार्य किया दूसरी ओर काव्य विज्ञ जनों के काव्य की नानाविधाओं में काव्य सृजन को करके भाषा विकास में जो योग दिया उस कारण से मध्य युग को प्राकृत भाषा का स्वर्णयुग कहने में किसी तरह का संकोच नहीं होता है।

इस युग का प्रारम्भ ई० २०० ६०० ई० तक का माना गया।

साहित्यिक प्राकृत का श्रय इस युग में प्रचलित महाराष्ट्री प्राकृत का प्राप्त हुआ। भरत मुनि ने जिसमें प्राण संचार किया। वैयाकरणों के द्वारा बहुविध प्रयोगों के कारण सूत्रबद्ध किया। उपलब्ध साहित्य के आधार पर इस युग की प्राकृत को इस तरह विभाजित किया जा सकता है--

१. धार्मिक ग्रन्थों की प्राकृत-
२. नाटकों की प्राकृत-
३. काव्यों की प्राकृत-
४. वैयाकरणों की प्राकृत-
५. अभिलेखों की प्राकृत-
६. लोक-प्रचलित प्राकृत-
७. गुणाढ्य की बृहदकथा की प्राकृत-

१. धर्मग्रन्थें की प्राकृत-इस वर्ग में बौद्ध-जैन आगम और सिद्धान्त ग्रन्थों की भाषा आती है। बुद्धवचन पालि में हैं। जिन वचन शौरसेनी और अर्धमागधी प्राकृत में हैं। आगम और त्रिपिटकों की प्राकृत भाषाओं के अनन्तर बहुत से सिद्धान्त

विरइया। जा पाइए अत्थि। जेसिं महत्त-पुण्णठाणं अत्थि।

२. णाडगाणं पाइयो–

अस्सघोसस्स णाडगाणं, भास कालिदास-सुद्दकाई-णाडमाणं पाइयो अस्सिं वग्गे आगच्छंति। उवलद्ध-णाडगेसुं पायो महरट्ठि-मागही-सोरसेणी-अद्धमागही-पाइयाणं समावेसो अत्थि। ढक्की-ढक्की-, पइसाची-सकारी आइ-उवबोलीणं समावेसा वि अत्थि।

३. कव्वाणं पाइयो-

महाकव्व-खंडकव्व-चरित्त-कहा-थुईणं आईणं पाइया अस्सिं वग्गे आगच्छंति। मूलओ पाइय-कव्वाणं भासा मरहट्ठी पाइयो अत्थि। किण्णु एसु कव्वेसुं सोरसेणी-मागही-पइसाची-अवभंस-पाइयाणं वि पओगो जाओ।

४. वेयाकरणाणं पाइयो–

सव्वपढम–भरहमुणिणा णच्चसत्थे विविहपाइयाणं उल्लेहो कओ। चण्डेण पाइयलक्खणे पाइयस्स णियमाणं सुत्तरूवे उल्लिहिओ। तं पच्छा वररूइणा णवपरि-च्छेएसुं पाइयस्स सर-परिवट्टणं, सरल विंजण-परिवट्टणं संजुत्तविंजण- परिवट्टणं सण्णा-सव्वणाम-किरिया-कियंताणं मज्झमेणं वित्थरेण जिण सुत्ताणि चंडेणं संकेअ-मेत्तो कओ ताणिं सुत्ताणिं अणुसासियं किच्चा विविहपाइय-णियमाणं सामिद्धो कओ। वररुइ-किअ-पाइए समयम्मि समयम्मि कच्चायण-भामह-वसंतराय-सयाणंद-रामपाणिवायेण जा टीगाओ विलिहिआ तेसिं पाइयस्स विगासे महत्त- पुण्णट्ठाणं अत्थि। पाइय-पगासं पच्छा हेमचंदस्स

ग्रन्थ भी लिखे गये। जो प्राकृत में हैं। जिसका महत्वपूर्ण स्थान है।

२. नाटकों को प्राकृत–

अश्वघोष के नाटकों, भास, कालि-दास, शूद्रक आदि के नाटकों की प्राकृत इस वर्ग में आती हैं। उपलब्ध नाटकों में प्रायः महाराष्ट्री, मागधी, शौरसेनी, अर्ध-मागधी प्राकृतों का समावेश है। ढक्की-ढक्की पैशाची, शकारी आदि उपबोलियों का समावेश भी है।

३. काव्यों की प्राकृत–

महाकाव्य, खण्डकाव्य, चरित्र, कथा, स्तुति आदि की प्राकृतें इस वर्ग में आती हैं। मूलतः प्राकृत काव्यों की भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है। फिर भी इन काव्यों में शौरसेनी, मागधी, पैशाची, अपभ्रंश प्राकृतों का भी प्रयोग हुआ है।

४. वैयाकरणों की प्राकृत–

सर्वप्रथम भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में विविध प्राकृतों का उल्लेख किया। चण्ड ने प्राकृत लक्षण में प्राकृत के नियमों का सूत्ररूप में उल्लेख किया। इसके अनन्तर वररूचि ने नौ परिच्छेदों में प्राकृत के स्वर परिवर्तन, सरल-व्यंजन-परिवर्तन, संयुक्त-व्यञ्जन परिवर्तन, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्तों के माध्यम से विस्तार के साथ जिन सूत्रों को चन्द्र के द्वारा संकेत मात्र किया उन सूत्रों को अनुशासित करके विविध प्राकृत नियमों को समृद्ध किया। वररूचि कृत प्राकृत पर समय-समय पर कत्यायन, भामह, वसंतराज, सदानंद और रामपाणिवाद के द्वारा जो टीकाएं लिखी गई उनका प्राकृत के विकाश में महत्वपूर्ण

पाइय-वागरणस्स ठाणं अत्थि। जेण १२वीं सईए सोरसेणी-मागही-चूलिया- पइसाची-अवभंसस्स उल्लेहो वि। अण्ण- बहुपाइय-विण्ण-जणेहिं वि पाइयस्स विविहपउत्तीणं उल्लेहो कओ। कव्वलंकारे-सु वि पाइयस्स पउत्तीओ अत्थि।

स्थान है। प्राकृत के हेमचंद के प्राकृत व्याकरण का स्थान है। जिन्होंने १२वीं शती में शौरसेनी, मागधी, चूलिका, पैशाची और अपभ्रंश का उल्लेख किया। अन्य प्राकृत विद्वजनों के द्वारा भी प्राकृत की विविध प्रवृत्तियों का उल्लेख किया। काव्या-लंकारों में भी प्राकृत की प्रवृत्तियां हैं।

५. अहिलेहाणं पाइयो–

सिलालेह-पत्तलेह लेहाणं सुदिग्घ-परंपरा अस्सिं लोए अत्थि। असोगस्स समयाओ अहुणा कालम्मि अहिलेहाणं परंपरा विज्जए। पाइए बम्ही-खरो-ट्ठीलिविम्मि य विविहलेहा अत्थि। पाइयम्मि लिहिअ-अहिलेहा सव्वत्थ पत्तेंति। तम्हा एसिं अहिलेहाणं महत्तपुण्णठाणं।

५. अभिलेखों की प्राकृत–

शिलालेख, पत्रलेख, ताम्र, सुवर्णलेख, मुद्रालेख आदि लेखों की सुदीर्घ परम्परा इस संकार में हैं। अशोक के समय से इस समय तक अभिलेखों की परम्परा है। प्राकृत में ब्राह्मी, और खरोष्ठी लिपि मे विविध लेख हैं। प्राकृत में लिखित अभिलेख सर्वत्र प्राप्त होते हैं। इसलिए इन अभिलेखों का महत्वपूर्ण स्थान है।

६. लोअ-पचलिअ-पाइओ–

पुरा-भासा-समूहं लोअ-पचलिअ-जण-भासासु दीसिन्जइ। महावीर-बुद्धेणं जाए भासाए आहारं णिय-उवएसाणं परूवणा कआ तेसिं उवएसाणं भासा पाइय-भासा जण-सामण्ण-जणेसु पचलिअ-लोगभासा एव आसि। जासिं सुदिग्घ-परम्परा। जिस्सा ठाणं वि जणसामण्णे आहारिय।

६. लोक प्रचलित प्राकृत–

प्राचीन भाषा समूह को लोक प्रचलित जन-भाषाओं में देखा जा सकता है। महावीर और बुद्ध के द्वारा जिस भाषा के लिए आधार बनाकर अपने उपदेशों की प्ररूपणा की उन उपदेशों की भाषा, प्राकृत भाषा जन-सामान्य जनों में प्रचलित लोक भाषा ही थी। जिसकी सुदीर्घ परम्परा है। जिसका स्थान भी जन-सामान्य पर आधारित है।

७. गुणाढ्य वहदकहाए पाइयो–

वहदकहाए जो पाइयो अत्थि तस्स पाइयस्स महत्तपुण्णठाणं अत्थि।

उत्तविवेयणेणं मज्झणुगीणपाइयाणं संखित्त-परिचओ होइ। पालि-अद्ध-मागही-सोरसेणी-भासं अइरित्ता भासाओ महरट्ठी-पाइयो मागही-पइसाची-चूलिआ- पैसाची-

७. गुणाढ्य की वृहद्कथा की प्राकृत–

वृहद्कथा में जो प्राकृत है, उस प्राकृत का महत्वपूर्ण स्थान है।

उक्त विवेचन से मध्ययुगीन प्राकृतों का संक्षिप्त परिचय होता है। पालि, अर्ध-मागधी, और शौरसेनी भाषा के अतिरिक्त

अवभंसा बहुविह-भासा अत्थि। अवभंसस्स बहुउवबोलीओ वि।

भाषा महाराष्ट्री, मागधी, पैशाची, चूलिका, पैशाची और अपभ्रंश आदि अनेक भाषाएं हैं। अपभ्रंश की अनेक उपबोलियां भी हैं।

मरहट्ठी पाइयो--

जहेट्ठे पाइय-वागरणस्स सव्वे णियमा मरहट्ठी पाइए चण्डस्स पाइय-लक्खणे, वररूइणो, पाइय-पगासे, हेमचंदस्स पाइय-वागरणे तिविक्कमस्स पाइयसद्दाणुसासणे अण्ण-पाइय-वागरणेसु सव्वे णियमा मरहट्ठी-पाइयम्मि। तेहिं अंते अण्ण पाइयस्स विसेसत्तणस्स णियमा दिण्णा।

(क) महाराष्ट्री प्राकृत--

यथार्थ में प्राकृत व्याकरण के सभी नियमों महाराष्ट्री प्राकृत में हैं। चन्द्र के प्राकृत लक्षण, वररुचि के प्राकृत प्रकाश, हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण त्रिविक्रम के प्राकृत शब्दानुशासन एवं अन्य प्राकृत व्याकरणों में सभी नियम महाराष्ट्री प्राकृत में हैं। उनके द्वारा अन्त में अन्य प्राकृत की विशेषताओं के नियम दिए।

महरट्ठी-पाइयो साहिच्चिग-पाइयो। इणं पाइयं सामण्ण-पाइयो वि भासाए। मरहट्ठी-पाइयस्स विगासो पएसगय-पहावाओ जाओ। दण्डिणा मरहट्ठीपाइयं सव्वुक्किट्टठपाइयो मण्णिओ। जइपि भरहमुणिणा णच्चसत्थे पाइयाणं णिद्दिठो कओ। किण्णु मरहट्ठीपाइयस्स णामोल्लेहो ण कओ। वेयागरणेहिं जा वि णियमा विणिम्मआ तेसुं णियमेसु मरहट्ठीपाइयस्स उल्लेहो ण। सेसं मरहट्ठीवओ इमेणं सुत्तेणं वररूइणा मरहट्ठीपाइयस्स अत्थित्तस्स उग्घोसणा कआ।

महाराष्ट्री प्राकृत साहित्यिक प्राकृत है। इस प्राकृत को सामान्य प्राकृत भी कहते हैं। महाराष्ट्री प्राकृत का विकाश प्रदेशगत प्रभाव से हुआ। दण्डी ने महाराष्ट्री प्राकृत को सर्वोत्कृष्ट प्राकृत माना। यद्यपि भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में प्राकृतों का निर्देश किया किन्तु नामोल्लेख महाराष्ट्री प्राकृत का नहीं किया। वैयाकरणों के द्वारा जो भी नियम बनाए गए, उन नियमों में महाराष्ट्री प्राकृत का उल्लेख नहीं है। शेषं महाराष्ट्रीवत् (१२/३२) इस सूत्र से वररुचि ने महाराष्ट्री प्राकृत के अस्तित्व की उद्घोषणा की।

अस्सघोसस्स णाडगेसुं इमस्स पाइयस्स विसतेत्तणं णत्थि कालिदासस्स णाडगे-सुंअण्णसव्व-सक्कणाडगेसुं च इमस्स पाइयस्स पजोगो बहुविह-रूवेसुं भूओ। राया-मंती-रायपुरोहिएहिं आईहिं महरट्ठी-पायस्स तहा अण्ण-पट्टराणी- महाराणी-राणी-सही-इत्थी-बालगाईहिं पत्तुइय-पाइयस्स पजोगो कराविज्जा।

अश्वघोष के नाटकों में इस प्राकृत की विशेषताएं तथा अन्य सभी संस्कृत नाटकों में इस प्राकृत का प्रयोग अनेक रूपों में हुआ। राजा, मन्त्री, राजपुरोहित आदि के द्वारा महाराष्ट्री प्राकृत का तथा अन्य पटरानी, महारानी, रानी-सखि, स्त्री बालकों आदि के द्वारा पात्रोचित प्राकृत का प्रयोग कराया गया।

विसेसरूवे एस पाइयो कव्वाणं भासा विणिम्मेऊण अम्हाणं संमुहे आगया। जस्सिं कव्वस्स रचणा जाआ तहा सा भासा साहिच्च-सरूवं पत्तेऊण विसालरूवं पत्ता।

अस्स पाइयस्स समयो वि कव्वाणं भासं पेक्खिऊण ईसाए तइय-चउत्थ-सई विण्णजणा मण्णंते। इमं भासं मरहट्ठ-खेत्तस्स भासा वि विण्ण जणा मण्णंते।

मागही-पाइयो–

सा भासा मागहदेसे या अण्णदेसे पजुत्ता जाआ, इणं कहणं तक्क सगओ णहि भविहिइ। किण्णु इमाए भासाए मगहदेसस्स विसालगणरज्जस्स भासा मण्णे कस्स वि संकोचस्स आवस्सगत्तं णत्थि।

मागही-पाइयस्स महगगणरज्जे-रायभासाए ठाणं वि पत्तं। विभिण्ण-पंतेसु वि इमस्स पाइयस्स पयार-पसारो वि जाओ इमाए भासाए पाली-सोरसेणी-अद्धमागही-भासाणं च विविहरूवा वि विज्जंते।

सक्कय-पाइय-सिलालेहेसुं सक्कय-णाडगेसुं च इमस्स पाइयस्स पजोओ सव्वत्थ जाओ। सव्वेहिं वेयागरणेहिं इमस्स पाइयस्स णियमाणं उल्लेहो कओ। पत्त-पमाणेहिं इमस्स पाइयस्स दुविहा भासिज्जंति। जहेव-

१. अहिलेहाण मागही।

२. णाडगाणं मागही।

मागही-भासप्पगो परिचयो-

१. मागहीए पुंसि ए पढमाए।

विशेष रूप में यह प्राकृत काव्यों की भाषा बनकर हमारे सम्मुख आई। जिसको काव्य रचना हुई तथा वह भाषा साहित्य के स्वरूप को प्राप्तकर विशाल रूप को प्राप्त हुई।

इस प्राकृत का समय भी काव्यों की भाषा को देखकर ईसा की तीसरी चौथी शताब्दी विज्ञ जन मानते हैं। इस भाषा को महाराष्ट्र क्षेत्र की भाषा भी विज्ञजन मानते हैं।

मागधी-प्राकृत–

वह भाषा मगध देश या अन्यदेश में प्रयुकत होती थी यह कहना तर्क संगत नहीं होगा। किन्तु इस भाषा के लिए मगध देश के विशाल गणराज्य की भाषा मानने में किसी तरह के संकोच की आवश्यकता नहीं।

मागधी प्राकृत के लिए मगध गणराज्य में राज्यभाषा का स्थान भी प्राप्त था। विभिन्न प्रान्तों में इस प्राकृत प्रचार-प्रसार भी हुआ। इस भाषा में पाली, शौरसेनी और अर्धमागधी भाषा के विविध रूप भी विद्यमान हैं।

संस्कृत और प्राकृत के शिलालेखों और संस्कृत नाटकों में इस प्राकृत का प्रयोग सर्वत्र हुआ है। सभी वैयाकरणों ने इस प्राकृत के नियमों का उल्लेख किया। प्राप्त प्रमाणों से इस प्राकृत के दो भेद कहे जा सकते हैं। यथा–

(१) अभिलेखों की मागधी।

(२) नाटकों की मागधी।

मागधी का भाषात्मक परिचय-

१. मागधी के पुंल्लिग में ए प्रथमा में होता है–

जहा-देवे।

२. र-सस्स ल-शा।

जह-शलोज-(सरोज) शालश (शारस्त्र)

३. स-षस्स सो संजुत्ते।

जह-हस्ती (हस्ति), कस्टं (कष्टं)

४. ट्ट-ष्ठस्स स्ट।

जह-भस्ट (भट्ट) कोष्ट (कोष्ठ)

५. स्थ-र्थस्स स्त।

जह-संस्तिद (संस्थित) अस्त (अर्थ)

६. ज-द्य-यस्स य।

जह-यण-जन, अय्य-अद्य, यम।

७. न्य-ण्य-ज्ञ-ञ्जस्स ञ्ञ।

जह-अञ्ञ-अन्य, पुञ्ञ-पुण्य, अञ्ञ-अज्ञ, अञ्जली, अञ्जली

८. च्छस्स श्च।

जह-गश्च-गच्छ, पिश्च-पिच्छ

९. क्षस्स स्क-क्खा।

पक्ख-पक्ष, दक्ख-दक्ष पेस्क-प्रेक्ष, आचस्क-आचक्ष इच्चाइ-विसेसत्तं अत्थि।

पइसाची पाइयो-

एस पाइयो पुराभवंतो वि अस्स पाईणसाहिच्चे उल्लेहो णत्थि। वेयागरणेहिं अस्स उल्लेहो कओ णिय-णिय-वागरणेसुं। गुणड्ढस्स विहदकहासुं पइसाची-पाइयस्स उल्लेहो मेत्तो ण जाओ अवि तु विण्णजणेहिं विहदकहं पइसाची-पाइयस्स कहा गंथो मण्णिओ। जस्स रचणा वि ईसा पुव्वस्स

जैसे :-देवे।

२. र का ल और स का श होता है।

जैसे :-शलोअ-(सरोज) शालश (शास्त्र)

३. स और श का स संयुक्त में हो जाता है।

जैसे :-हस्ती (हस्तिः), कस्टं (कष्टं)

४. ट्ट और ष्ठ का स्ट हो जाता है।

जैसे :-भस्ट (भट्ट), कोस्ट (कोष्ठ)

५. स्थ और र्थ का स्त हो जाता है।

जैसे :-संस्तिद (संस्थित) अस्त (अर्थ)

६. ज, द्य और य का य हो जाता है।

जैसे :-यण-जन, अय्य-अद्य, यम।

७. न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज का ञ्ञ हो जाता है।

जैसे :-अञ्ञ-अन्य, पुञ्ञ-पुण्य, अञ्ञली-अञ्जली,

८. च्छ का श्च होता हे।

जैसे :-गश्च-गच्छ, पिश्च-पिच्छ

९. क्ष का स्क, क्ख- पक्ख-पक्ष, दक्ख-दक्ष। पेस्क-प्रेक्ष, आचस्क-आचक्ष इत्यादि विशेषताएं हैं।

पैशाची प्राकृत-

यह प्राकृत प्राचीन होते हुए भी इसका प्राचीन साहित्य में उल्लेख नहीं है। वैयाकरणों ने अपने-अपने व्याकरण में उल्लेख किया है। गुणाढ्य की बृहद्कथा में पैशाची प्राकृत का उल्लेख मात्र ही नहीं हुआ, अपितु विज्ञ-जनों के द्वारा बृहद्कथा को पैशाची प्राकृत का कहा

मण्णिआ। जो अणुबलद्धो पेसाचीपाइयो पुरा तु अत्थि एव। अस्स गणणा सोरसेणी-अद्धमागही-पालि-अहिलेहेहिं सह किइज्जए। कुवलमालाए वि अस्स पाइयस्स पजोगो जायो।

ग्रन्थ माना। जिसकी रचना ईसा पूर्व की मानी गई। जो अनुपलब्ध है। पैशाची प्राकृत प्राचीन तो है ही। इसका गणना शौरसेनी, अर्धमागधी पालि और अभिलेखी प्राकृतों के साथ की जाती है। कुवलयमाला में इस प्राकृत का प्रयोग हुआ।

पइसाची-पाइयस्स पयडी सोरसेणी अत्थि। हेमचंदेण (शेषं शौरसेनीवत्, ।।४।३२३।।) एस फुडो उल्लेहो कओ। अण्ण-वेयागरणेहिं एसेव णिद्धारिआ। कव्व-णाडगेसुं वि अस्स पाइयस्स बहुविसेसत्ताणं दीसिज्जइ।

पैशाची प्राकृत की प्रकृति शौरसेनी है। हेमचन्द्र ने (शेष शौरसेनीवत् ४/३२३) यह स्पष्ट उल्लेख किया। अन्य वैयाकरणों के द्वारा भी यही निर्धारित किए गए। काव्य और नाटकों में इस प्राकृत की अनेक विशेषताओं को देखा जा सकता है।

पेसाचीपाइयो कस्स पएसस्स भासा अत्थि, एस तु अस्स खेत्तेण एव णाइज्जइ। मारकंडेएण पइसाचीभासं कइकय-सोरसेण-पंचाला इमेसुं तिभेएसुं विभत्ता।

पैशाची प्राकृत किस प्रदेश की भाषा है यह तो इसके क्षेत्र से भी ज्ञात हो सकेगा। मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पाञ्चाल इन तीन-तीन भागों में विभक्त किया।

रक्खस-भूय-पिसाय-णिम्म-पत्त-कारणाओ अस्स पाइयस्स पेसाची वुत्तो सि एरिसो ण्णाणं इवइ। एस तु णिच्छिओ अत्थि पिसाय-णामस्स को वि भमणशील-समुयादो अहेसि जो अत्थ-तत्थ सव्वत्थ पुव्व-पच्छिम-उत्तर-दाहिण-भाणेसुं वि भमिआ। अज्ज वि पंजाब-सिंध- बिलो-चिट्ठाण-कम्हीर-भासासुं अस्स पहावो अत्थि।

राक्षस, भूत, पिशाच और निम्न पात्रों के कारण से इस प्राकृत को पैशाची कहा हो ऐसा ज्ञान होता है। यह तो निश्चित है कि पिशाच नाम की कोई भ्रमणशील समुदाय था जो यत्र-तत्र-सर्वत्र पूर्व पश्चिम उत्तर-दक्षिण भागों में घूमा। आज भी पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान और कश्मीर की भाषाओं पर इसका प्रभाव है।

पइसाचीपाइयस्स विसेसत्तणं

१. वग्गस्स तइयस्स पढमो चउत्थस्स बीओ। जह--नकर-नगर मेख-मेघ, राचा-राज्ञा।

२. ज्ञस्स ञ्ज। जह--पञ्ञा-प्रज्ञा

पैशाची प्राकृत की विशेषताएं--

१. वर्ग के तृतीय का प्रथम और चतुर्थ का द्वितीय अक्षर होता है। यथा-नकर-नगर मेख-मेघ, राचा-राजा।

२. ज्ञ का ञ्ञ होता है। जैसे पञ्ञा-प्रज्ञा।

३. राझस्स ज्ञस्स चिञ।

जह–राचिञ-राज्ञ

४. न्य-ण्यस्स ञ्ञ।

जह–अञ्ज-अन्य, पुञ्ञ-पुण्य।

५. णस्स न।

जह–गुन-गन-गुण-गण

६. दस्स त। मतन-मदन

७. लस्स ल।

जह–नल-नल

८. श-सस्स स।

जह–विसेस-विशेष।

९. र्यस्स च्च-कच्च-कार्य।

१०. क-ग-च-ज-त-द-प-य-वस्स लुगो ण। एक, सागर, वय, अज, मति, यदि, पाप, यम, पावन सच्चाई।

एस संखित्त-परिचयो विविह पाइयाणं अत्थि। एसुं पाइएसुं अवभंसो वि। जो भरहिज्ज-भासाणं वेसिट्ठं णिद्धरणे अइ उवजोगी।

अवभंस-पाइयो-

पाइयस्स साहिच्चस्स विगासक्कमे अवभंस्स वि णिय-विसिट्ठट्ठाणं अत्थि। जओ पाइओ साहिच्चस्स उण्णय-सिहरम्मि समारूढो अहोसि तओ अवभंसो जणव-वहारस्स भासाए ठाणं वि गिहिअं। पाइयस्स परिणिट्ठिओ रूवो जओ पचलिओ तओ एगअण्णरूवस्स विगासो जाओ। जस्सिं विगासे एग णवधारा भासाए पवाहिआ। भासाविण्णजणेहिं तं भासं अवब्भंस-अवहट्ठ-अवहत्थाइ-णामाइं दिण्णं।

३. राज्ञ के ज्ञ को चिञ् होता है। जैसे :–अञ्ज-अन्य, पुञ्ञ-पुण्य।

४. न्य, ण्य का ञ्ञ होता है। जैसे :–अञ्ञ अन्य, पुञ्ञ पुन्य।

५. ण का न होता है। जैसे :–गुन-गन-गुण-गण।

६. द का त होता है। मतन-मदन।

७. ल का ल-नल-नल

८. श और ष का स-विसेस-विशेष।

९. र्य का च्च-कच्च-कार्य

१०. क, ग, च, ज, त, द, प, य, व का लोप नहीं होता है। एक सागर, वच, अज, मति, यदि, पाप, यम, पावन आदि।

एस संक्षिप्त परिचय प्राकृतों का है। इन प्राकृतों में अपभ्रंश भी है। जो भारतीय भाषाओं के वैशिष्ट्य को निर्धारित करने में अत्यन्त उपयोगी है।

अपभ्रंश प्राकृत-

प्राकृत साहित्य के विकासजन में अपभ्रंश का भी अपना विशेष स्थान है। जब प्राकृत साहित्य के उन्नत शिखर पर आसीन/प्रतिष्ठित भी तब अपभ्रंश जन-व्यवहार की भाषा का स्थान भी ग्रहण कर चुकी थी। प्राकृत परिनिष्ठित रूप जब प्रचलित था तब तक अन्य रूप का विकास हुआ, जिसके विकास होने पर भाषा की एक नवीन धारा का संचार हुआ। भाषा विज्ञ जनों ने उस भाषा को अवभंस, अवहट्ठ और अवहत्थ आदि नाम दिया।

भरहमुणिणा णव्वसाहिच्चे अवभंसं उगारवहुलं पण्णत्तं। पातंजलि-महाभस्से अस्स पओगो जायए। सणिअं सणिअं सा भासा साहिच्चस्स सरूवं पत्तेइ। पढम-सईए तु अस्स पओगो साहिच्चे होहिज्जइ। अवभंसस्स पुण्णसाहिच्च-सरूवो चउत्थ-सईए अम्हाणं समीवे आगच्छइ।

भरतमुनि ने नाटयसाहित्य में अपभ्रंश को उकार बहुल कहा। पातञ्जलि के महाभाष्य में प्रयोग मिलता है। धीरे-धीरे यह भाषा के स्वरूप को प्राप्त होती है। प्रथम शताब्दी में तो इसका प्रयोग साहित्य में होने लगता है। अपभ्रंश का पूर्ण साहित्य स्वरूप चतुर्थ शताब्दी में हमारे समीप आ जाता है।

अस्स ठाणं वि वित्थिण्णं। अस्स खेत्तो उत्तर-दाहिण-पएसं पेरंतं अहोसि

इसका स्थान भी विस्तृत है। इसका क्षेत्र उत्तर-दक्षिण प्रदेश तक भी था।

अवभंसस्स अणेगाणि भेयाणि अत्थि। णायर-वाचड-लाटी-वइछब्भी-उवणायर-मालवी- कइकेयी-पंचाली-टक्क-मालवी-कइकेयी-गउडी-कउन्तेली-ओडी-पच्छत्थ-पंडा सिंहली-कालिंगी-पच्च-गुज्जरी-कंजी-करणाडगी -आभारी-मज्झदेसी बइतालिगीआई य। खेत्ताओ एव अवभंस्स बहुविहा अत्थि।

अपभ्रंश के अनेक भेद है। नागर, ब्राचड, लाटी, वैदर्भी, उपनागर, बर्बर, अवंती, पंचाली, टाक्क, मालवी, कैकेयी, गौडी, कौन्तेली, औरडी, पाश्चात्या, पाण्डया, सिंहली, कालिंगी, प्राच्य, गुर्जरी, काञ्जी, कार्णाटी, आभारी मध्य देशी और वैतालिकी आदि हैं। क्षेत्र के कारण ही अपभ्रंश के अनेक भेद हैं।

अवभंस्स सामण्ण पउत्तीओ-

१. सराणं सरा। तण, तिण।

२. दिग्घ सरस्स हिस्सीकरणं।

३. पढमा-वीआ-चउत्थी-छट्ठीए विभत्ति-लोवो पायो।

४. कारकाणं सम्मो।

५. तइया-पंचमी-सत्तमी-एगसमा।

६. बीअ-चउत्थी-छट्ठी-एगसमा।

७. छट्ठीए बोहणत्थ केर, केरअ पच्चया।

८. चउत्थीए बोहणत्थ, तण-तणउ केहिं तेहिं ईसिं तणेण।

९. लिंगभेयो पायो णत्थि।

अपभ्रंश के सामान्य प्रवृत्तियाँ-

१. स्वरों का स्वर-तण, तिण।

२. दीर्घ स्वर का ह्रस्वीकरण।

३. प्रथमा, द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठी में प्रायः विभक्ति लोप।

४. कारकों की समानता।

५. तृतीया, पञ्चमी, और सप्तमी एकसम।

६. द्वितीया चतुर्थी और षष्ठी में एक सम।

७. षष्ठी की पहचान के लिए केर, केरा और केरअ।

८. चतुर्थी के बोध के लिए तण, तणउ केहि, तेहिं, ईसिं, तणेण प्रत्यय।

९. लिङ्ग भेद प्रायः नहीं रह गया।

१०. किरियासुं अप्पत्तणं।

११. कियंताणं बहुलत्तणं।

१२. सव्वणाम रूवेसुं अप्पत्तं।

१३. पाइयस्स सव्वणियमा अत्थि।

झुणी-परिवट्टणं-

१. पाइयस्स समा दिग्घ-हिस्ससरा।

२. अ, इ, उ एँहिस्स सरा।

३. औ ए ए ऐ ओं अउ।

जह—वेर वेंर वइर।

४. औए ओ ओं अउ।

जह—कोरव, कउरव।

५. पदंते सुं-हुं-हिं-हस्स-हिस्स-उच्चरणं। तरहुं, तरउं, तरहिं, तरहं।

६. मस्स वो वा।

जह—जिवं/जिम, तिवँ/तेम

७. रेहस्स लुगो वा।।

जह—मज्झु पिउ मज्झु प्रिय।

८. कहिं चि आईइ।

जह—व्रासु-व्यास।

९. दस्स इ वा।

विवइ, आवइ, संपइ-

१०. कथाईणं थस्स एम-इम-इह-इध। केम, किम, केह, किध। तेम, तिम, तेह, तिह। जेम, जिम, जेह, जिध।

११. यादृगाईणंहकस्स एह। जेह, केह, तेह, जइस-कइस, तइस।

१२. यत्र-तत्र कशयंत्र स्स एत्थु।

१०. क्रियाओं में अल्पता।

११. कृदन्तों की बहुलता।

१२. सर्वनाम रूपों में अल्पता।

१३. प्राकृत के सभी नियम है।

ध्वनि परिवर्तन—

१. प्राकृत की तरह दीर्घ और ह्रस्व स्वर।

२. अ, इ, उ, एँ ओ ह्रस्व स्वर।

३. ऐ का ए एँ अइ आदेश हो जाता है।

जैसे :—वेर-वैंर-वइर।

४. औ का ओ, ओ और अउ हो जाता है।

जैसे :—कोरव-कउरव।

५. पद के अंत में उं, हुं, हिं और हं का ह्रस्व उच्चारण होता है। तरउं, तरहुं, तरहिं तरहं।

६. म का व विकल्प से होता है।

जैसे :—जिवँ/जिम, तिवँ/तेम।

७. रेफ का लोप विकल्प से होता है। यथा मज्झु पिउ/मज्झु प्रिय।

८. कहीं-कहीं पर आदि में रेफ का लोप विकल्प से होता है। व्रासु-व्यास।

९. द् का इ विकल्प से होता है। विपइ-विपद्, आवइ-आपद्, संपइ-संपद्,

१०. कथ आदि के थ का एम, इम, इह और इध होता है। केम, किम, केह, किध। तेम, तिम, तेह, तिध। जेम, जिम, जेह, जिध।

११. यादृक् आदि के दृक् का एह आदेश होता है। जेह, केह, तेह, जइस, कइस, तइस।

१२. यत्र तत्र, कुत्र और तत्र का एत्थु हो जाता है।

१३. जाव-तावस्स वस्स म-उं-महिं। जाम, ताम, जाउं, ताउं, जामहिं, तामहिं।

१४. इम-ज-त-कस्स। एत्तुल। जेत्तुल, तेत्तुल, एत्तुल, केत्तुल।

१५. ए-ओस्स हिस्सउच्चेइ।

देवहो, देवें

१६. म्हस्स म्भ।

जह—बम्भ-बम्ह

सण्णा-

१. अवभंसे पढमएगवयणे उ-ओ-दिग्घ-लोको।

जह—देवु, देवो, देवा, देव।

२. बहुवयणे लुगदिग्घो।

जह—देव, देवा

३. बीए, एगवयणे उ-दिग्घ, लुका-अणुस्सारो। देवु, देवा, देव, देवं।

४. बहुवयणे लुग-दिग्घ-ए।

देव, देवा, देवे।

५. तइयाएगवयणे ए-एण।

देवे, देवे, देवए, देवएं, देवेण, देवेंण

६. बहुवयणे हि हिँ हिं। देवहिं,

७. ए-दिग्घे।

देवेहि, देवेहिं, देवेहिँ, देवाहि, देवाहिँ, देवाहिं।

८. चउत्थी-छट्ठएगवयणेलोव-दिग्ध-सु-स्सु-स्स-हो। देव, देवा, देवस्सु, देवस्स, देवसु, देवहो।

९. बहुवयणे हं, ण-णं लोव-दिग्घो।

देवहं, देवाहं, देवण, देवाणं, देव, देवा।

१३. जाव, और ताव के व का म, और महिं आदेश होता है। जाम, ताम, जाउं, ताउं, जामहिं, तामहिं।

१४. ज, त, क और इम के अन्त्य व्यञ्जन का एत्तुल आदेश हो जाता है।

१५. ए और ओ का ह्रस्व उच्चारण होता है। देवहाँ, देवैं।

१६. म्ह का म्भ हो जाता है। यथा-वम्भ-बम्ह।

संज्ञा—

१. अपभ्रंश के प्रथमा एकवचन में उ, ओ, दीर्घ और प्रत्यय लोप भी होता है। देवु, देवो देवा, देव।

२. बहुवचन में लोप और दीर्घ होता है। देव, देवा।

३. द्वितीया एकवचन में उ, दीर्घ, लोप ओर अनुस्वार होता है। देवु, देवा, देव, देवं।

४. बहुवचन में लोप, दीर्घ और ए हाता है। देव, देवा, देवे।

५. तृतीया एकवचन में ए और एण प्रत्यय होते हैं। देवे, देवैं, देवए, देवएँ, देवंण, देवेण

६. बहुवचन में हि, हिँ, हिं प्रत्यय होते हैं। देवहि, देवहिँ, देवहिं

७. ए और दीर्घ होने पर-देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं देवाहि, देवाहिँ, देवाहिं।

८. चतुर्थी/षष्ठी एकवचन में लोप, दीर्घ, सु, स्सु, हस, हो प्रत्यय होते हैं। देव, देवा, देवस्सु, देवस्स, देवसु, देवहो।

९. बहुवचन में हं, ण, णं, लोप और दीर्घ भी होता है। देवहं, देवाहं, देवण, देवाणं, देव, देवा।

१०. पंचमीएगवयणे हु-हे-ओ- उ। देवहु, देवहे, देवओ, देवउ देवाहु, देवाहे, देवाओ, देवाउ।

११. बहुवयणे हुं-हुँ-ओ-उ।

देवहुं, देवहुँ, देवओ, देवउ देवाहुं, देवाहुँ, देवाओ, देवाउ।

१२. सत्तमीएगवयणे ए-इ-म्मि।

देवे, देवि, देवम्मि।

१३. बहुवयणे हिं हिँ सु-सुं।

देवहिं, देवेसु, देवासु, देवांसु, देवांसु, देवेसिं।

१४. संबोहणएगवयणे पढमव्व।

देव, देवु, देवो, देवा!

१५. बहुवयणे लोप-दिग्घ-हो।

देव, देवा, देवहो, देवाहो

१६. पढमा-बीअ-चउ-छट्ठीए लोव-दिग्घो।

हरि, हरी, भाणु, भाणू इ-उ पुंसि

१७. पढमा-बीअ-बहुवयणे-चउन्छट्ठी पंचमी-एगवयणे णो वि। हरिणो, भाणुणो।

१८. तइयाएगवयणे ण-ए-णा।

हरिण, हरीण, हरीणं, हरिएँ, हरीए हरिणा।

१९. बहुवयणे हि हिँ हिं।

हरीहि, हरीहिँ, हरीहि

२०. सत्तमी एगवयणे हि बहुवयणे हिं।

हरिहि, हरिहिं।

२१. पंचमीएगबयणे हे बहुवयणे हुं। हरिहे, हरिहुं।

१०. पंचमी एकवचन में हु, हे, ओ और उ प्रत्यय होते हैं। देवहुं, देवहे, देवओ, देवउ देवाहु, देवाहे, देवाओ, देवाउ।

११. बहुवचन में हुं, हुँ, ओ और उ प्रत्यय होते हैं। देवहुं, देवहुँ, देवओ, देवउ देवाहुं, देवाहुँ, देवताओ, देवाउ।

१२. सप्तमी एकवचन में ए, इ और म्मि प्रत्यय होते हैं। देवे, देवि, देवम्मि।

१३. बहुवचन में हिं, हिँ, सु और सुं प्रत्यय होते हैं। देवहिं, देवाहिं, देवाहिँ देवहिँ देवसु, देवेसु, देवासु, देवंसु, देवासु, देवेसिं।

१४. सम्बोधन एकवचन में प्रथमाकी तरह रूप होते हैं। देव, देवु, देवो, देवा।

१५. बहुवचन में लोप, दीर्घ और हो प्रत्यय होता है। देव, देवा, देवहो, देवाहो।

१६. प्रथमा, द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठी एकवचन एवं बहुवचन में लोप और दीर्घ होता है। हरी-हरी, भाणु, भाणू।

१७. प्रथमा और द्वितीया बहुवचन, चतुर्थी, षष्ठी, पंचमी एकवचन इकारांत, उकारांत में णो प्रत्यय भी हो जाता है। हरिणो, भाणुणो।

१८. तृतीया एकवचन में ण, ए औरणा प्रत्यय होता है। हरीण, हरीण, हरिए, हरिएँ हरिणा।

१९. बहुवचन में हि, हिँ और हिं प्रत्यय होते हैं। हरीहि, हरीहिँ, हरीहिं

२०. सप्तमी एकवचन में हि और बहुवचन में हिं प्रत्यय होता है। हरि, भाणुहि, हरि।

२१. पञ्चमी एक वचन में हे और बहुवचन में हुं प्रत्यय होता है। हरिहे, हरिहुं स्त्रीलिंग में।

२२. तइयाए सत्तमीपेरंतं ए एगवयणे इत्थीए। मालाए-मालए।

.. २३. चउ-छट्ठि-पंचमीएगवयणे हे। मालहे।

२४. पंचमीछट्ठीए बहुवयणे हु। मालहु।

२५. णउंसगे पढम-बीअ बहुवयणे इ इं-इँ-णि-णिं णिँ। वणाइ, वणाइं, वणाइँ, वणाणि, वणाणिं, वणाणिँ

२२. तृतीया से सप्तमी एकवचन तक ए प्रत्यय होता है। मालाए-मालए।

२३. चतुर्थी, षष्ठी और पंचमी एकवचन में हे प्रत्यय होता है। मालहे।

२४. पञ्चमी और षष्ठी बहुवचन में हु प्रत्यय होता है। मालहु।

२५. नपुंसकलिंग शब्दों के प्रथमा एवं द्वितीया बहुवचन में इ, इं, इँ, णि, णिं, णिँ प्रत्यय होते हैं। वणाइ, वणाइं, वणाइँ, वणणि, वणाणिं, विणाणिँ।

सव्वणामसद्द-

१. सव्वाइणो पंचमी एगवयणे हां हाँ।

सव्वहां, सव्वहाँ, जहां जहाँ

२. कस्स सा इहे।

किहे

३. सत्तमीए हिं।

सव्वहिं, तहिं, कहिं, तहिं।

४. क-ज-तस्स छट्ठीए-आसु वा।

कासु, जासु, तासु/पक्खे-जस्सु, कस्सु, तस्सु

५. इत्थीए अहे वा।

जहे, कहे, तहे।

६. इमस्स इमु णउंसगे।

७. थी-पुं-णउंसगे पढमाए एअस्स एह- एहो-एहु। एह, एहो, एहु।

८. एतस्स पढम-बीअ-बहुवयणे एइ।

९. अदस्स आय।

सर्वनाम शब्द-

१. सर्वआदि के पञ्चमी एकवचन में हां, हाँ प्रत्यय होते हैं। सव्वहा, सव्वहाँ, जहां, जहाँ।

२.क का विकल्प से इहे आदेश हो जाता है। किहे

३. सप्तमी एकवचन में हिं प्रत्यय होता है। सव्वहिं, जहिं, कहिं, तहिं।

४. क, ज और त के षष्ठी एकवचन में विकल्प से आसु प्रत्यय होता हैं कासु जासु, तास। पक्ष में जस्सु, कस्सु, तस्सु ।

५. स्त्रीलिंग में अहे विकल्प से हो जाता है। जहे, कहे, तहे।

६. इम का इमु हो जाता है नपुंसकलिंग में।

७. स्त्रीलिंग, पुंलिंग एवं नपुंसक लिंग के प्रथमा एकवचन में एह, एहो और एहु आदेश होते हैं।

८. एत के प्रथमा एवं द्वितीया बहुवचन मं एइ आदेश हो जाता है।

९. अद का ओइ हो जाता है। ओइ

१०. इम का आय आदेश हो जाता है।

११. सर्व का साह विकल्प से होता है।

१०. इमस्स आय।

११. सव्वस्स साह वा।

१२. कस्स काइं कवण वा।

१२. क का काइं और कवण आदेश विकल्प से हो जाता है।

तुम्ह

१३. तुम्ह पढमाए एगवयणे तुहुं।

१३. तुम्ह के प्रथमा एकवचन में तुहुं प्रत्यय होता है।

१४. पढम-बीअ-बहुवयणे तुम्हे तुम्हइं।

१४. प्रथमा और द्वितीया बहुवचन में तुम्हे और तुम्हइं आदेश होते हैं।

१५. बीअ-तइय-सत्तमीएगवयणे पइं तइं।

१५. द्वितीया, तृतीया और सप्तमी एकवचन में पइं, तइं आदेश होते हैं।

१६. चउ-पंचमी-छट्ठीएगवयणे तउ तुज्झ तुध्रं।

१६. चतुर्थी, षष्ठी और पञ्चमी एकवचन में तउ, तुज्झ और तुध्र आदेश होते हैं।

१७. तइयाबहुवयणे तुम्हेहिं।

१७. तृतीया, बहुवचन में तुम्हेहिं आदेश होता है।

१८. चउ-छट्ठी-पंचमीए तुम्हहं।

१८. चतुर्थी, षष्ठी और पञ्चमी बहुवचन में तुम्हहं ओदश हो जाता है।

१९. सत्तमीए तुम्हासु।

१९. सप्तमी बहुवचन में तुम्हासु आदेश हो जाता है।

अम्ह-

२०. अम्ह पढम-एगवयणे हउं।

२०. अम्ह सर्वनाम शब्द के प्रथमा एकवचन में हउं आदेश हो जाता है।

२१. पढम-बीअ-बहुवयणे अम्हइं।

२१. प्रथमा एवं द्वितीया बहुवचन में अम्हइं आदेश हो जाता है।

२२. बीअ-तइय-सत्तमीग-वयणे मइं।

२२. द्वितीया, तृतीया और सप्तमी एकवचन में मइं आदेश हो जाता है।

२३. चउ-छट्ठी-पंचमीए महु मज्झु।

२३. चतुर्थी, षष्ठी और पञ्चमी एकवचन में महु और मज्झु आदेश होते हैं।

२४. तइय-बहुवयणे अम्हेहिं।

२४. तृतीया बहुवचन में अम्हेहिं आदेश होता है।

२५. चउ-छट्ठी-पंचमीए अम्हहं।

२५. चतुर्थी, षष्ठी और पञ्चमी बहुवचन में अम्हहं आदेश होता है।

२६. सप्तमी बहुवचन में अम्हासु आदेश होता है।

२६. सत्तमीए अम्हासु।

किरिया—

१. वट्टमाण-अण्ण-एगवयणे इ ए।भणइ, भणए।

२. मज्झे हि-सि-से। भणहि, भणसि, भणसे।

३. उत्तमे मि।

४. बहुवयण-अण्णे 'हं वा। भणहिं, भणेहिं। पक्खे-भणंति, ,णंते।

५. मज्झे हु। भणहु, भणेहु। पक्खे-भणह, भणेह।

६. उत्तमे हुं। भणहुं, भणेहुं। पक्खे-भणमो, भणिमो भणेमो, भणामो।

विहि-आणा-

७. विहि-आणा-अण्णे एगवयणे उ। भणउ, भणेउ।

८. मज्झे हि सु-हु। भणहि, भणसु, भणहु। भणेहि, भणेसि, भणेहु।

९. उत्तमे मु। भणमु, भणेमु।

१०. अण्ण बहुवयणे हुं वा। भणहुं, भणेहुं। पक्खे-भणंतु।

११. मज्झे हु। भणहु, भणेहु। पक्खे-भणह, भणेह

क्रिया—

१. वर्तमान काल के अन्य पुरुष एकवचन में इ और ए प्रत्यय होते हैं। भणइ, भणए।

२. मध्यम पुरुष एकवचन में हि सि और से प्रत्यय होते हैं। भणहि, भणीज, भणसे।

३. उत्तम पुरुष एक वचन में मि प्रत्यय होता हे। भणमि, भणेमि, भणिमि, भणमि।

४. अन्य पुरुष के बहुवचन में हिं प्रत्यय विकल्प से होता है। भणहिं, भणेहिं। पक्ष में-भणंति, भणंति।

५. मध्यम पुरुष बहुवचन में हु प्रत्यय विकल्प से होता है। भणहु, भणेहु पक्ष में-भणह, भणह।

६. उत्तम पुरुष बहुवचवन में हु प्रत्यय विकल्प से होता है। भणहुं, भणेहुं। पक्ष में-भणमो भणिमो, भणेमो, भणेमो, भणामो।

विधि/आज्ञार्थक:-

७. विधि/आज्ञार्थक अन्य पुरुष एकवचन में उ प्रत्यय होता है। भणउ, भणेउ।

८. मध्यम पुरुष एकवचन में हि, सु और हु प्रत्यय होते हैं। भणहि, भणसु, भणहु भणेहि, भणेसि, भणेहु।

९. उत्तम पुरुष एकवचन में मु प्रत्यय होता है। भणमु, भणेमु।

१०. अन्य पुरुष बहुवचन में हुं प्रत्यय विकल्प से हो जाता है। भणहुं, भणेहुं। पक्षे-भणंतु।

११. मध्यम पुरुष बहुवचन में हु प्रत्यय विकल्प से होता है। भणहु, भणेहु। पक्षे-भणह, भणेह।

१२. उत्तमे मो।
भणमो, भणेमो।

१२. उत्तम पुरुष बहुवचन में मो प्रत्यय हो जाता है। भणमो, भणेमो।

भवि।

भविष्यत् काल

१३. भवि इ-आइ-पच्चय-पुव्वं हि स स्स।
भणिहिइ, भणिसइ, भणिस्सइ।

१३. भविष्यत् काल में इ आदि से पूर्व हि, स, स्स प्रत्यय हो जाते हैं। भणिहिइ, भणिसइ, भणिस्सइ।

१४. भूअकाले अणियमिअपओगा। पण्णत्तो, गओ, भणिओ।

१४. भूतकाल में अनियमित प्रयोग होते हैं। पण्णत्तो, गओ, भणिओ।

१५ सेसं पाइयव्व।।

१५. शेष सभी नियम प्राकृत की तरह हैं।

कियंतोः-

कृदन्तः-

१. बट्टमाणे न्त-माण।
भणंतो, भणमाणु।

१. वर्तमान कृदन्त में न्त, और माण प्रत्यय होते हैं। भणंतो, भणमाणु।

२. संबंधे ऊण-ऊणं इ-इउ-इवि-अवि।
भणेऊण, भणिऊणं, भणि, भणिउ, भणिवि भणवि।

२. सम्बन्ध कृदन्त में ऊण, ऊणं, इ, इउ, इवि और अवि प्रत्यय होते हैं। भणेऊण, भणिऊणं, भणि, भणिउ, भणिवि, भणवि।

३. संबंधे एप्पि-एप्पिणु-एवि-एविणु वि। विहिए अव्व-इएव्वउं एव्वउं एवा। भणिअव्वं, भणिएव्वउं, भणेव्वउं भणेवा।
४. भणेप्पि, भणेप्पिणु, भणेवि, भणेविणु

३. सम्बन्ध कृदन्त में एप्पि, एप्पिणु, एवि, और एविणु प्रत्यय भी होते हैं। भेणप्पि, भणेप्पिणु, भणेवि, भणेविणु।

४. विधि अर्थ में अव्व, इएव्वउं, एव्वउं और एवा प्रत्यय होते हैं। भणिअव्वं, भणिएव्वउं, भणेव्वउं, भणेवा।

५. हेअत्थे एवं अण-अणहं-अणहि उं।
भणेव, भणणवा, भणहं, भणहि, भणिउं।

५. हेत्वर्थ में एवं अण, अणहं, अणहिं और उ प्रत्यय होते हैं।
भणेवा, भणण, भणहं, भणहि, भणिउं।

पाइयस्स झुणी-परिवट्टणं

प्राकृत के ध्वनि परिवर्तन

परिवट्टणेसुं णिम्म-परिवट्टणाणि पमुहा अत्थि-(१) सरपरिवट्टणं (२) विंजणपरिवट्टणं च। विंजणम्स दुविहा, १. सरल-विंजणं, २. संजुत्तविंजण।

परिवर्तनों में निम्न परिवर्तन प्रमुख हैं। (१) स्वर परिवर्तन और व्यञ्जन परिवर्तन। व्यञ्जन के दो प्रकार हैं-(१) सरल व्यञ्जन, (२) संयुक्त व्यञ्जन।

सरल-विंजण-परिवट्टणं

सरल व्यञ्जन परिवर्तन-

१. कस्स गो-एग-एक, पगास

१. क का ग-एग-एक, पगास।

२. ख-घ-थ-ध-भस्स हो।

सुह-सुख, मेह-मेघ, अह-अध साहु-साधु, सहाव-स्वभाव।

३. टस्स डो। घड, पड।

४. ठस्स ढो। मढ-मठ, पढ-पठ

५. नस्स णो। मण, णम, णाण।

६. स-श-षस्स सो। ससि, इसि,

७. यस्स जो। संजम। संयमम,

संजुत्त-परिवट्टणं-

१. उद्ध-अद्ध-रेहस्सलुगे दित्तो।

सुज्ज-सूर्य, पुव्व-पूर्व, कम्म-कर्म अग्ग-अग्र, उग्ग-उग्र।

२. न्य-ज्ञ-ण्यस्स ण्णो। कण्णा, पुण्ण। अण्णाण।

३ श्न-ष्ण-स्न-ह्न-ह्ण-क्ष्णस्स ण्हो। पण्ह, विण्हु, जोण्हा, वण्ही, पुव्वण्ह सण्ह-श्लक्षण।

४. श्म-ष्म-स्म-ह्मस्स म्हो।

कम्हार, गिम्ह, विम्हय, बम्हा।

५. क्षस्स क्ख। कक्ख-कक्ष, पक्ख-पक्ष।

६. स्तस्स त्थो। हत्थ-हस्त।

७. द्य-य्य-र्यस्स ज्जो। विज्जा, सेज्जा कज्जः।

सद्दम्मि ठिअ-झुणीणं आइ-मज्झठा-णम्मि सद्दाणं संजोगाओ विविह परिवट्टणं हवइ। तेसु परिवट्टणेसु आगम-लोव-विपज्जया-हिस्सदिग्घ-मत्ता-समक्खर-समीयरणाइ-झुणी-परिवट्टणस्स ठाणाणि अत्थि। आगम-सर-विंजणाणं आगमणं आगमो अत्थि। आगमस्स दुविहा-

(१) सरागमो,

(२) विंजणागमो य। सर-विंजण आगम तिविहा-

२. ख, ध थ, ध, भ का ह- सुह-सुख, मेह-मेघ, अह-अथ। साहु-साधु, सहाव-स्वभाव।

३. ट का ड-घड, पड

४. ठ का ढ-मढ-मढ, पढ-पठ

५. न का ण-मण, णम, णाण।

६. स, श, ष का स-ससि, इसि

७. य का ज-संजम-संयम

संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन-

१. उर्ध्व और अधो रेफ का लोप होने पर द्वित्व हो जाता है। सुज्ज-सूर्य, पुव्व-पूर्व, कम्म-कर्म, अग्ग-अग्र, उग्ग- उग्र।

२ न्य, ण्य का ण्ण-कण्णा, पुण्ण। अण्णाण-अज्ञान

३. श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण का ण्ह-पण्ह, विण्हु, जोण्हा, वण्ही, पुव्वण्ह, सण्ह-श्लक्ष्ण।

४. श्म, ष्म, स्म, ह्म का म्ह। कम्हार, गिम्ह, विम्हय, बम्हा।

५. क्ष का क्ख-कक्ख-कक्ष, पक्ख-पक्ष

६. स्त का त्थ-हत्थ-हस्त

७. द्य, य्य, र्य का ज्ज-विज्जा, सेज्जा, कज्ज शब्द में स्थित ध्वनियों के आदि, मध्य स्थान में शब्दों के संयोग से नाना प्रकार परिवर्तन होता है। उन परिवर्तनों में आगम, लोप, विपर्यय, ह्रस्व, दीर्घ मात्रा, समाक्षर, समीकरण आदि ध्वनि परिवर्तन के स्थान हैं-आगम-स्वर व्यञ्जनों का आगमन आगम है। आगम के दो भेद हैं-

(१) स्वरागम और

(२) व्यञ्जनागम, स्वर और व्यञ्जन आगम तीन प्रकार का है-

(३) अंतसरागमो च।

(१) आइ-सरागमो-इत्थी-स्त्री पिक्क-पक्व, सिविण-स्वप्न

(२) मज्झसरागमो-लहुवी-लघ्वी भविय-भव्य, दविय-द्रव्य।

(३) अंतसरागमो-

सरिआ-सरित् पडिसुआ-प्रतिश्रुत।

(१) आइ-विंजणागमो- ,

रिद्धि-ऋद्धि, रिसह-ऋषभ।

(२) मज्झ विंजणागमो-

अज्जीव-अजीव, धम्मप्पसार-धर्मप्रसार।

(३) अंत विंजणागमो-

पुरिल्ल-पुर महुरिल्ल-महुर।

विपज्जयो-

१. वाणारसी-वाराणसी, मरहट्ठ-महाराष्ट्र, णडाल-लिलाड।

हिस्समत्ता-

संजुत्ते दिग्घस्स हिस्सो हवइ। सुज्ज-सूर्य, पुव्व-पूर्व, अज्ज-आर्य सज्झाय-स्वाध्याय, तित्थ-तीर्थ।

दिग्घमत्ता-

समासपए हिस्सस्स दिग्घो। हरीपअ-हरिपअ, मिच्छादंसण- मिच्छदंसण।

समीयरणं-झुणीय झुणी-समरूवे पत्तं-चक्क-चक्र, वग्ग-वर्ग समीयरणस्स द्विविहा-

१. पुरोगामी, २. पच्छगामी च।

(१) पुरोगामी-समीयरणं-

पढम झुणी बीअझुणि पत्तेइ तक्क-तक्र, भद्द भद्र।

(१) आदि स्वरागम, (२) मध्य-स्वराणम और (३) अन्त स्वरागम।

(१) आदि-स्वरागम-इत्थी-स्त्री, पिक्क-पक्व, सिविण-स्वप्न।

(२) मध्य स्वरागम-लहुवी-लघ्वी, भविय-भव्य, दविय-द्रव्य

(३) अन्तस्वरागम-सरिआ-सरित, पडिसुआ-प्रतिश्रुत।

१. आदि व्यञ्जनागम-

रिद्धि-ऋद्धि, रिसह-ऋषभ।

२. मध्य-व्यञ्जनागम-

अज्जीव-अजीव, धम्मप्पसार-धर्मप्रसार।

(३) अन्त व्यञ्जनागम

पुरिल्ल-पुर, महुरिल्ल-महुर।

विपर्यय-

वाणीरसी-वाराणसी, मरहट्ठ-महाराष्ट्र-णडाल-लिलाड।

ह्रस्वमात्रा-

संयुक्त होने पर दीर्घ का ह्रस्व हो जाता है। सुज्ज-सूर्य, पुव्व-पूर्व, अज्ज-आर्य, सज्झाय-ध्वाध्याय, तित्थ-तीर्थ।

दीर्घमात्रा

समासपद में ह्रस्व का दीर्घ हो जाता है हरीपअ-हरिपअ, मिच्छादंसण-मिच्छदंसण।

समीकरण-ध्वनि का ध्वनि से समरूप को प्राप्त होना। चक्क-चक्र, वग्ग-वर्ग समीकरण के दो प्रकार है-

(१) पुरोगामी, और (२) पश्चगामी

१. पुरोगामी-समीकरण-इसमें प्रथम ध्वनि दूसरी ध्वनि को प्राप्त होती है। तक्क-तक्र, भद्द-भद्र।

(२) पच्छगामी समीयरणं–

अस्सिं बीजझुणी पढमझुणिं पहावेइ। कम्म-कर्म, जम्म जन्मत्।

परोप्पर-विंजण-समीयरणं-

अस्सिं समीववट्टी विंजण-एग-बीअं पहावेंति। किच्चो-कृत्यः, भिच्च-भृत्य, सच्चो-सत्यः अक्ख-अक्ष, वग्घ-व्याघ्र।

विसमीकरण-

अस्सिं समझुणी णिअ-सरूवं चत्ता अण्णसरूवं पत्तेइ। विसमीकरणस्स दो भेया–१. पुरोगामी, २. पच्छगामी य।

पुरोगामी विसमीकरणं-अस्सिं पुव्व-विंजणं जह तह होइ अण्णस्स परिवेट्टेइ।

मिस्स-मिश्र, अस्स-अश्व, पस्स-पश्य दिस्स-दृश्य, काग-काक, अवस्स-अवश्य, गयण-गगण।

पच्छगामी विसमीकरणं-अस्सिं अण्णविंजणं जह तह होइ पढमविंजणे च विगारो होइ।

हलिद्दा-हरिद्रा, गेंदुअ-केन्दुक, मउल-मुकुल, मउर-मुकुर।

अवस्सुई-सराघाएणं बलाघाएणं य सद्देसुं जं परिवट्टणं होइ सा अवस्सुई। जहा-केरिस-कीदृश अस्स दो भेया-(१) गुणप्पगो, (२) मत्तिगो च

गुणप्पग-अवस्सुई-जओ एगसरो अण्णासररूवं पत्तेइ तओ गुणप्पग-अव-स्सुई होइ। जह–केरिस-कीदृश

२. पश्चगामी समीरकण–

इसमें द्वितीय ध्वनि प्रथम ध्वनि को प्रभावित करती है। कम्म-कर्म, जम्म-जन्मन्।

पारस्परिक व्यञ्जन समीकरण

इसमें समीपवर्ती व्यञ्जन एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। किच्च-कृत्य, भिच्च-भृत्य सच्च-सत्य, अक्ख-अक्ष, वग्घ-व्याघ्र।

विषमीकरण–

इसमें समान ध्वनि अपने स्वरूप को छोड़कर अन्य स्वरूप को प्राप्त कर लेती है। १. पुरोगामी, २. पच्छगामी विषमीकरण के दो भेद हैं–

पुरोगामी विषमीकरण-इसमें पूर्व व्यञ्जन ज्यों का त्यों रहता है, दूसरे का परिवर्तन हो जाता है मिस्स-मिश्र, अस्स-अश्व, पस्स-पश्य दिस्स-दृश, काग-काग, अवस्स-अवश्य, गयण-गगन।

पश्चगामी विषमीकरण–इसमें दूसरा व्यञ्जन ज्यों का त्यो होता है तथा प्रथम व्यञ्जन में विकार हो जाता है। हलिद्दा-हरिद्रा, गेंदुअ-केन्दुक मउल-मुकुल, मउर-मुकुर।

अपश्रुति-स्वराघात और बलाघात से जो शब्दों में परिवर्तन होता है वह अपश्रुति है। केरिस-कीदृश इसके दो भेद हैं-(१) गुणात्मक, (२) मात्रिक।

गुणात्मकअपश्रुति-जब एक स्वर अन्य स्वर रूप को प्राप्त होती है तब गुणात्मक अपश्रुति होती है। केरिस-कीदृश

एरिस-ईदृश, पेऊस-पीयूष, पेढ-पीठ ओगास-अवकाश, पेच्छ-पिच्छ दाहिण-दक्षिण, सामिद्ध-समृद्ध, पायड-प्रकट।

मत्तिय अवस्सुई-अस्सिं गुण-वुड्ढिसण्णा संपसारणं च होइ। सरझुणीणं परिवट्टणाओ हिस्स-दिग्घ- परिवट्टणं वि होइ।

जह-णर-ईस-णरेस, सुरेस, महेस कम्मोदय, पुण्णोदय

सर-लोव-कम्मुदय, सुरिंद, महिंद भाणुदय, कम्मोसहि, जलोह पिआ, माआ, भाया (वुड्ढि) दरिस-दृश, हरिस-हर्ष आयरिअ-आचार्य (संपसारण)

संपसारणं-उच्चझुणीए हीणो अस्सिं पत्तेइज्जइ।

सिविण-स्वप्न, ठव-स्था, णे-णय ओगास-अवकाश, ऊसास-उच्छवास

सराघायो-अक्खरेसुं सरस्स आरोह-अवरोहो च होइ। मूलओ विंजणेसुं सराणं आगमणे जो आघायो होइ सराघायो अत्थि। मज्झिम, उत्तिम, चरिम कइम, पागुरण-प्रावरण, पढुम, सिमिण, पुरिस, पाणिय

सरभत्ति-

उच्चारण-सुकुमाल हेउं विंजणेसुं सराणं आगमणं सरभत्ती अत्थि आइरिअ-आचार्य, गहीर-गम्भीर्य, धीर-धैर्य, सूरिअ-सूर्य, वीरिअ-वीर्य।

घोसीयरणं-अघोसस्स झुणीए घोसो अस्सिं विहिम्मि जायए। एग-एक पगास-प्रकाश, हविद-भवति घड, पढ

अघोसीयरणं-घोसझुणीए अघोसो

एरिस-ईदृश, पेऊस-पीयूष, पेढ-पीठ, ओगास-अवकाश, पेच्छ-पिच्छ, दाहिण-दक्षिण, सामिद्ध-समृद्ध, पायड, प्रकार।

मात्रिक अपश्रुति-इसमें गुण, वृद्धि संज्ञा और सम्प्रसारण होता है। स्वरध्वनि के परिवर्तन से ह्रस्व और दीर्घ परिवर्तन भी होता है। णर-ईस=णरेस, सुरेस, महेस कम्मोदय, पुण्णोदय स्वर-लोप-कम्मुदय, सुरिंद, महिंद भाणुदय, कम्मोसहि, जलोह, पिआ, माआ, भाया (वृद्धि) दरिस-दृश, हरिस-हर्ष आयरिअ-आचार्य (संप्रसारण)

सम्प्रसारण-उच्च ध्वनि का बलहीन इसमें पाया जाता है। सिविण-स्वप्न, ठव-स्था, णे-णय, ओगास-अवकाश, ऊसास-उच्छ्वास।

स्वराघात-अक्षरों में स्वर का आरोह और अवरोह होता है। मूलतः व्यञ्जनों में स्वरों के आगमन से जो आघात होता है वह स्वराघात है। मज्झिम, उत्तिम, चरिम, कइम, पागुरण-प्रावरण, पढम, सिमिण, पुरिस, पाणिय।

स्वरभक्ति-उच्चारण की सुकुमारता हेतु व्यञ्जनों में स्वरों का आगमन स्वर-भक्ति है। आइरिअ-आचार्य, गहीर-गम्भीर्य, धीर-धैर्य, सूरिअ-सूर्य, वीरिअ-वीर्य।

घोषीकरण-अघोष ध्वनि का घोष इस विधि में हो जाता है। एग-एक, पगास-प्रकाश, हवदि-भवति घड, पढ।

अघोषीकरण-घोष ध्वनि अघोष

जायए। पइसाची-सिलालेही-पाइएसुं विसेसरूवेणं इणं पखिदूणं होइ। राचा-राजा, मेख मेघ, गकन-गगन मतन-मदन, मधुर-मथुर, धूली-धूली पालक-बालक, तटाक-तडाग।

महप्पाणीयरणं-अप्पझुणीओ महप्पाणझुणी जायंते। वग्गस्स वीअ-चढत्थझुणी।

पुप्फ-पुष्प, पोक्खर-पुष्कर-फास-स्पर्श, थुइ-स्तुति, खंद-स्कंद।

अप्पपाणीयरणं-महप्पाण-झुणी अप्पप्पाण झुणी जायंते। भगिणि-बहिन

वग्गाणं पढम-तइय-पंचम-अक्खरा अप्पप्पाणा होंति। क, ग, ङ। ट, ड, ण। च, ज, ञ। त, द न। प, ब, म। र।

उण्हीयरणं-उण्ह झुणी हो अत्थि। ख-घ-थ-ध-भस्स हो।

सुह-सुख, मुह, मेह-मेघ, अह-अथ साहु-साधु, सुह-शुभ कहिं चि कस्स हो-सीहर-शीकर, निहस-निकष, फलिह-स्फटिक, चिहुरचिकुर।

तालव्वीकरणं-च-छ-ज-झ-ज-जतालव्वा अत्थि। दंत-त-थ-द-घ-न। वण्णाणं तालव्वी-वण्णाणि होंति।

चिट्ठ-तिष्ठ, चत्त-त्यक्त, चाग-त्याग तेइच्छा-चिकित्सा।

मुद्धण्णीयरणं-दंतवण्णाणं मुद्धण्ण-झुणी होंति।

दंतुझुणी-त-थ-द-ध-न।

मुद्धण्णझुणी-ट-ठ-ड-ढ-ण।

टगर-तगर, टूबर-तूबह, टसर-त्रसर

हो जाती है। पैशाची और शिलालेखी प्राकृतों में विशेष रूप से यह परिवर्तन होता है। राचा-राजा, मेघ-मेघ, गकन-गगन, मतन-मदन, मथुर-मधुर, थूली-धूली, पालक-बालक, तराक-तडाग

महाप्राणीकरण-अल्प ध्वनियों में महाप्राण ध्वनि हो जाती है। वर्ग की द्वितीय चतुर्थ ध्वनि।

पुप्फ-पुष्प, पोक्ख-पुष्कर, फास-स्पर्श, थुइ-स्तुति, खंद-स्कन्द।

अल्पप्राणीकरण-महाप्राण ध्वनियां अल्पप्राण ध्वनियां हो जाती है भगिणि-बहिन

वर्गों के प्रथम, तृतीय, और पञ्चम अक्षर अल्पप्राण हैं। क ग ङ। ट, ड ण च ज ञ। त द न, प व म।

उष्मीकरण-उष्म ध्वनि ह है। ख, घ, क्ष, ध और भ का है- सुह-सुख, मुह, मेह-मेघ, अह-अथ साहु-साधु, सुह-शुभ।

कहीं-कहीं पर क का ह-सीहर-शीकर, निहसर निकष, फलिह-फलिह-स्फटिक चिहुर-चिकुर।

तालव्यीकरण-च, छ, ज, झ, न तालव्य वर्ण हैं। दंत, त्, थ, द, ध, न वर्णों का तालव्यवर्ण हो जाते हैं। चिट्ठ-तिष्ठ, चत्त-त्यक्त, चाग-त्याग, तेइच्छा-चिकित्सा।

मूर्धन्यीकरण-दन्त्य वर्णों की मूर्धन्य ध्वनियां हो जाती हैं। दन्त्य ध्वनि-त, थ, द, ध न।

मूर्धन्य ध्वनि-ट, ठ, ड, ढ, ण। टगर-तगर, टूबर-तूबर, टसर-त्रसर,

पडाया-पताया, पडि-प्रति, पडिमा-प्रतिमा, पाहुड-प्राभृत, पहुडि-प्रभृति, पढम-प्रथम डंभ-दंभ, डंस-दंश।

य व सुई-क-ग-च-ज-त- द-प-व-यस्स जुगेअवसेसो अस्स य सुई होइ। णयर, लोय, झुणी-परिवट्टणस्स उत्त-दिसासुं संधि-णियमा वि अत्थि।

संधी-णियमा-वण्णाणं समवायो वण्ण-पयाणं संमेलणेणं जो वियारो जायए तं कहंते संधी संधीए तिविहा-सर-विजंण-अव्वया।

सर-संधी-पंचविह सरसंधी-दिग्घ-गुण-लोप-हिस्सदिग्घ-संधि-णिसेहा च।

१. **दिग्घ-संधी**-सम-अ-इ हिस्स सराणं दिग्घो। सुरासुर जीवाजीव धम्माधम्मागास मुणीसरो, हरीस, गिरीस साहूवएस, भाणूदय।

२. **गुण-सन्धी**-रमेस, सुरेस महेस, णाणेस, सुज्जोदय, कम्मोदय अ+इ या ई=ए-गह+ईस-महेस अ+उ=ओ-धम्मोवएस।

३. **लोव-सन्धी**-सरस्स सर-लुगो। महिंद, जिणिंद, णरिंद भाणुदय कम्मूदय, धम्मुवएस।

४. हिस्स दिग्घा। समासंते हिस्ससस्स दिग्घो। दिग्घस्स हिस्सो हवइ।

मईणाण-मइणाण, जईतव-जइतव जंबुसामि-जंबूसामि, धारिणि राणिधारिणी-राणी णइ-सोअ-णई सोय, णाणिसहाव-णाणीसहाव

पडाया-पताका, पडि-प्रति, पडिमा-प्रतिमा, पाहुड-प्राभृत, पहुडि-प्रभृति, पउम-प्रथम डंभ-दम्भ, डंस-दंश

य, श्रुति-क, ग, च, ज, त, द, प, व, य का लोप होने पर अवशिष्ट अ की य श्रुति होती है। ध्वनि परिवर्तन की उक्त दिशाओं में सन्धि नियम भी हैं-

सन्धि-नियम-वर्णों का समवाय संधि है। वर्ण और पदों में मेल होने से जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि के तीन भेद हैं-स्वर, व्यञ्जन, अव्यय।

स्वर-सन्धि-स्वर सन्धि पांच प्रकार की है। (१) दीर्घ, (२) गुण, (३) लोप, (४) ह्रस्व-दीर्घ और (५) सन्धि निषेध।

१. **दीर्घ-सन्धि**-समान अ इ ह्रस्व स्वरों का दीर्घ। सुरासुर, जीवाजीव, धम्माधम्मागास मुणीसरो, हरीस, गिरीस साहुवएस, भाणूदय

२. **गुण-सन्धि**-रमेस, सुरेस, महेस, णाणेस, सुज्जोदय, कम्मोदय, अ+इ या ई=ए=मह+ईस=महेस अ+उ=ओ-धम्मोवएस

३. **लोपसन्धि**-स्वर से आगे स्वर का लोप महिंद, जिणिंद, णरिंद भाणुदय, कम्मुदय, धम्मुदय

४. **ह्रस्व दीर्घ सन्धि**-

समासान्त पद में ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व हो जाता है।

मईणाण-महणाण, जईतव-तइतव जंबुसामि-जंबूसामि, धारिणिराणी धारिणी-राणी णइसोय-णईसोय, णणिसहाव- णाणी-सहाव।

५. संधिणिसेह-

धम्म-उवएस, णाणी-एसणा कम्म-उदय, णिसाअर पहाअर, जीव-अजीव, होइ इह।

विंजण-संधी-पाइय-भासाए विंयण संधी णत्थि। विंजणाणं परिवट्टणं एव जायए।

१. विसग्गस्स ओ-पुणो-पुनः

२. ङ-म-ज-ण-नस्स अणुस्सारोअंक-अङ्क, संबंध-सम्बन्ध, अंजली-अञ्जली, लंछण-लाञ्छन।

अव्वय-सन्धि–

अस्स लोवो केण वि-केण अवि कहं अवि-कहं अवि किं वि तं वि **इस्स लोवो** किं ति-किं इति पुरिसो त्ति पुरिसो इति।

विकप्पेण लोवो-एसेत्थ, अम्हेत्थ, जइत्थ-जइएत्थ।

अओ भासा-सत्थस्स एसिं पमुह-सिंद्धताणं संक्षिप्त-परिचयो भासा-विण्णाणस्स पक्खाणं मुल्लंकलणे सहायगा अवस्समेव भविस्संति। पाइय-भासा-झुणी-सद्द-किरिया-रूवाणं णाणं च आई पाइय-सिक्खणे उवजोगी अत्थि। भविस्सइ।

५. सन्धि-निसेध

धम्म-उवएस, णाणी-एसण कम्म-उदय, णिसाअर, पहाअर जीव- अजीव, होइ इह।

विंजण सन्धि-प्राकृत भाषा व्यञ्जन सन्धि नहीं हैं। व्यञ्जन का परिवर्तन ही होता है।

१. विसर्ग का ओ, पुणो-पुनः।

२. ङ, म, ञ, ण, न का अनुस्वार अंक-अङ्क, संबंध-सम्बन्ध, अंजली-अञ्जली, लंछण-लाञ्छन।

अव्वय-सन्धि–

अ का लोप-केण वित्केण अवि कहं वि-कहं अवि, किं वि, तं वि इ का लोप-किं ति-किं इति पुरिसोत्ति-पुरिसो इति।

विकल्प से लोप-एसेत्थ, अम्हेत्थ जइत्थ जइ एत्थ।

अतः भाषा शास्त्र के इन प्राकृत सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय भाषा विज्ञान के पक्षों में मूल्यांकन करने सहायक अवश्य ही होंगे तथा प्राकृत भाषा की ध्वनियां शब्द-क्रिया रूपों का ज्ञान और प्राकृत सीखने में उपयोगी होगा।

+++

एक–वर्ण विचार

मंगल गीत

सुत्तं सरुव-किरियं सउमाल-भावं
वीरं मुणीम-गण -णायग-साहु-वाणिं।
णामेमि बाल-पयडीजण-पाइयं च
दाएज्ज रुव-गुरु-मोदग-बालगाणं।।

प्राकृत - स्वर

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ।

व्यञ्जन प्रयोग

(1) क-वर्गादि - क, ख आदि को स्वर सहित उच्चरित किया जाता है।

(2) शब्द के मध्य या अन्त्य में स्वर रहित व्यञ्जन का प्रयोग किया जाता है।
यथा - धम्म, णिज्जरा, मोक्ख।

(3) वर्ग के अन्त्य व्यञ्जनों (ङ, ञ, ण, न म का यदि मध्य में प्रयोग होता है। तो प्राय: अनुस्वार के रूप में ही प्रयोग किया जाता है। यथा-अंक (अङ्क), अंजली (अञ्जली), दंड (दण्ड), बंध (बन्ध), संवर (सम्वर)।

(4) व्यञ्जनों का उच्चारण बिना स्वर की सहायता के नहीं होता।

वर्ग-कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग ये पांच वर्ग हैं।

वर्ग-उच्चारण स्थान-वर्ण को स्पर्श कहा गया है, क्योंकि इनका उच्चारण जीभ के कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त्य आदि से होता है।

(1) अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

(2) इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य का उच्चारण स्थान तालु है।

(3) ट, ठ, ड, ढ, ण, र का उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

(4) त, थ, द, ध, न, ल, स का उच्चारण स्थान दन्त्य है।

(5) उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

(6) ए, ओ का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है।

(7) अनुस्वार (ं) का उच्चारण स्थान नासिका है।

(1) कण्ठ स्थान को कण्ठस्थ (2) तालु स्थान को तालव्य (3) मूर्द्धा स्थान को मूर्द्धन्य (4) दन्त स्थान को दन्त्य (5) ओष्ठ स्थान को ओष्ठ्य (6) कण्ठ और तालु स्थान को (7)कण्ठ तालव्य और नासिका स्थान को अनुनासिक कहते हैं।

अभ्यास

(1) प्राकृत में स्वर कितने हैं? प्रत्येक के नाम बतलाइए।

(2) व्यञ्जन कितने हैं? उनका वर्ग सहित वर्णन कीजिए।

(3) वर्ण को स्पर्श क्यों कहा गया?

(4) इ, उ, ट, थ, ब, भ, ए, स का उच्चारण स्थान क्या है।?

(5) उच्चारण स्थान कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ और नासिका को क्या कहते हैं।

(6) व्यञ्जनों का उच्चारण किसके साथ होता है।

दो–शब्द विचार

शब्द परिचय-जिस शब्द के अन्त में जो वर्ण लगता है, उसी के साथ वह शब्द उच्चरित होता है। यथा-

'अ'	-	अकारान्त शब्द	-	जिण, अरिहंत, वीर, देव, देविंद, सह,
'आ'	-	आकारान्त शब्द	-	माला, आया, रमा, चंदणा, अंजणा।
'इ'	-	इकारान्त शब्द	-	हरि, करि, कवि, मति, जाति।
'ई'	-	ईकारान्त शब्द	-	केवली, णाणी, इत्थी, णदी।
'उ'	-	उकारान्त शब्द	-	भाणु, गुरु, पहु, धेणु, रेणु, वेणु।
'ऊ'	-	ऊकारान्त शब्द	-	बहू, सासू।

लिङ्ग

(1) पुलिंग - जिण, अरिहंत, समण, करि, भाणु, केवली, जाति।

(2) स्त्रीलिंग - आया, माला, चंदणा, वंदणा, आणा।

(3) नपुंसकलिंग - वण, णाण, उरु, दहि, महु।

वचन - (1) एकवचन और (2) बहुवचन

पुरुष - क्रिया के साथ कर्ता के रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुष कहलाते हैं। इनके तीन भेद हैं।

प्रथम पुरुष - प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष भी कहते हैं, कोई भी संज्ञावाचक शब्द या सर्वनाम जब क्रिया के कर्ता के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। तब उसे अन्य पुरुष कहते हैं। यथा-

जे एगं जाणाति से सव्वं जाणति। (आचारांग - 4/3/129)

पावे कम्मं ङज्जति। (सूत्र - 2/2/171)

मध्यम पुरुष – तू, तुम सब का प्रयोग मध्यम पुरुष कहलाता है। यथा-

तुमं जाणति, तुम्हे जाणेह।

उत्तम पुरुष – मैं, हम, हम दोनों, हम सब का प्रयोग उत्तम पुरुष कहलाता है। यथा-

अहं भासामि। अम्हे भासामो, वयं भासमो, पण्णवेमो, परुवेमो।

(आ. 1/4/138)

तीन–कारक विचार

कारक-

व्याकरण के तीन विभाग है।

(1) वर्ण विभाग

(2) शब्द विभाग

(3) वाक्य विभाग

(1) वर्ण विभाग

इस विभाग में वर्णों के उच्चारण स्थान, प्रयत्न, वर्गीकरण तथा सन्धि नियमों का उल्लेख किया जाता है।

(2) शब्द विभाग

इसके दो भेद हैं।

(1) शब्द व्युत्पत्ति/ निरुक्ति और

(2) शब्द निर्माण।

शब्द व्युत्पत्ति प्रकृति एवं प्रत्यय, क्रिया तथा कृदन्त आदि के योग से की जाती है और शब्द निर्माण में रूपसिद्धि, शब्द प्रयोग आदि को लिया जाता है।

वाक्य-

विभाग को कारक/कारक प्रकरण कहते हैं। कारकों के व्यवहार को विभक्ति कहते है। 'किरियुवजोगी किरियाणरई कारगो' वाक्य में क्रिया के साथ अन्वय/सम्बन्ध कारक है। अर्थात् किसी क्रिया के संपादन में जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का प्रयोग होता है। वह कारक कहलाता है। 'कुव्वेइ त्ति कारणं, किरियाए णिरवइुगं कारगं। जेणं विणा किरिया-णिव्वाहो ण हवइ तं कारगं।' अर्थात्

जो क्रिया का सम्पादन करता है वह कारक है या जो क्रिया का निर्वर्तक है वह कारक है या जिसके बिना क्रिया का निर्वाह नहीं होता वह कारक है।

कारक-व्यवहार/विभक्तियां

क्रिया के सम्पादन के लिए जो सम्बन्ध दिया जाता है वह विभक्ति रूप होता है। सम्बन्ध छः हैं। यथा :- कर्तृ, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। सम्बन्ध भी क्रिया का कारक/प्रयोजन है। अतः संज्ञा, सर्वनाम ओर विशेषण शब्दों में लगने वाले प्रत्यय 'विभक्ति' कहलाते हैं।

(1) पढमा (प्रथमा)	कत्ता (कर्ता) ने	- जिणो, वीरो, समणो।
(2) वीआ (द्वितीया)	कम्म (कर्म) को	- जिणं, वीरं, समणं।
(3) तइया (तृतीया)	करण (करण) ने, से, के द्वारा	- जिणेण, वीरेण, समणेण।
(4) चउत्थी (चतुर्थी)	संपदाण (सम्प्रदान) के लिए	- जिणस्स, वीरस्स, समणस्स।
(5) पंचमी (पञ्चमी)	अपादान से, गिरने या पृथक् होने के अर्थ में	- जिणत्तो।
(6) छठी (षष्ठी)	संबंध (सम्बन्ध) का, की, के	- जिणस्स।
(7) सत्तमी (सप्तमी)	अधिकरण (अधिकरण) में, पर	- जिणम्मि।
(8) संबोहण	(सम्बोधन) हे, भो	- हे जिण, जिणो।

चार–क्रिया विचार

क्रियाएं-

	एकवचन	बहुवचन
(1) परस्मै-पद क्रिया -	भणति	भणंति
(2) आत्मनेपद क्रिया -	भणते	भणेंति

सामान्यत: प्राकृत में परस्मैपद और आत्मनेपद की क्रियाओं में भेद नहीं है।

क्रियासूचक

(1) वर्तमान काल (लट्‌लकार - Present tense)

(2) भूतकाल (लङ्‌लकार - Past imperfect tense)

(3) भविष्यत् काल (लृट्‌लकार - Simple future tense)

(4) आज्ञार्थक (लोट् लकार - Imperative mood)

(5) विधि लिङ्ग (विधि लिङ्ग - Potential mood)

(6) क्रियातिपत्ति (लृङ्‌लकार - Conditional)

मूलत: वर्तमान, भूत, भविष्यत् आज्ञा/विधि एवं क्रियातिपत्ति का प्रयोग प्राकृत में है। विधि/आज्ञा एक है।

(7) भाववाचक (Abstract Noun) और द्रव्य वाचक (Material Noun)

संज्ञा के भेद (Kinds of Noun)

किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, या भाव का नाम संज्ञा है। इसके पांच भेद हैं।

(1) व्यक्तिवाचक (proper Noun) संज्ञा

(2) जातिवाचक (Common Noun) संज्ञा

(3) समुदाय वाचक (Collective Noun) संज्ञा

पांच–कर्ता कारक

कर्ता कारक (प्रथमा) (–, ने)

सव्वणामो (सर्वनाम)

एगवयणं	बहुवयणं
पढमपुरिस, से = वह, (सा स्त्रीलिंग)	ते = वे, वे दोनों, वे सब। (ताओ)
मज्झिमपुरिस – तुमं = तू	तुम्हे = तुम, तुम दोनों, तुम सब।
उत्तमपुरिस – अहं = में	अम्हे = हम, हम दोनों, हम सब।

सण्णा-सद्दो – (संज्ञा शब्द) जिणो गच्छति, समणो चिंतति।

जिणो गच्छइ, समणो चिंतइ।

वाक्य प्रयोग

से जयति / सो जयइ	= वह जीतता है।	से भवति/सो हवइ	वह होता है।
से जीवति / सो जीवइ	= वह जीता है।	से हसति/सो हसइ	वह हसता है।
से आसति / सो आसइ	= वह कहता है।	से पचति/सो पचइ	वह पकाता है।
से णयति / सो णयइ	= वह ले आता है।	से चयति/सो चयइ	वह छोड़ता है।
से णमति / सो णमइ	= वह नमन करता है।	से धावति/सो धावइ	वह दौड़ता है।

प्राकृत में अनुवाद लिखिए।

वह स्मरण करता है। वह जानता है। वह इच्छा करता है। वह रक्षा करता है। वह

चलता है। वह बोध करता है। वह चढ़ता है। वह रहता है। वह प्रशंसा करता है। वह पालन करता है। वह गिरता है। वह भजता है।

क्रिया प्रयोग-

सर (स्मृ = स्मरण करना), बोह (बुध् = जानना), इच्छ (इष् = इच्छा करना), रक्ख (रक्ष् = रक्षा करना), चल (चल् = चलना), रोह (रुह = चढ़ना), वस (वस् = रहना), संस (शंस = प्रशंसा करना), भज (भज् = भजना), पड (पत् = गिरना), सर (सृ = जाना), चय (त्यज् = छोड़ना) करस (कृष् = खींचना), वद (वद् = बोलना) मुंच (मुच् = छोड़ना, लह (लभ् = प्राप्त होना)।

निम्न प्रत्यय युक्त क्रियाओं का अर्थ लिखिए।

सरति, जीवति, णमति, चयति, इच्छति, पडति, वसति, रोहति, भवति, खादति, चलति, जीवति, दहति (दह् = जलाना), दवति (द्रु = बहना), णयति, खणति (खन् = खोदना), संसति, वजति (व्रज = चलना), डहइ, चिंतई, भणइ।

नियम – उक्त प्रयोग संस्कृत में भी प्रायः होते हैं। द्रवति, व्रजति, कर्षति, रक्षति, शंसति, स्मरति आदि में अन्तर है प्रत्ययों में कोई अन्तर नहीं।

निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी अनुवाद लिखिए।

से जाणति, से विज्जति, से पुच्छति (पुच्छ – पृच्छ् = पूछना) सो/से जाणइ सो/से विज्जइ सो/से प्रच्छइ, सो/से वाएति, (वाय = वाचना) सो/से जायति (जाय = जांचना) सो/से सोयति, (सोय = शोक करना), जूरति (जूर = सूख जाना), से तिप्पति (तिप्प = आंसू बहाना), पिड्डति (पिड्ड = पीड़ा देना), परितप्पति (परि + तप्प = परितप्त होना)।

इन्हें सो जाणइ, सो विज्जइ, सो पुच्छइ आदि की तरह भी बनाएं।

स्त्रीलिंग प्रयोग

सा णच्चति/णच्चइ = वह नाचती है। सा लिहति/लिहइ = वह लिखती है। सा पढति/पढइ = वह पढ़ती है। सा हसइ/हसति = वह हंसती है। सा णवति/णवइ = वह नमन करती है। सा सोधति/सोहइ = वह साफ करती है। सा पचइ/पचति = वह पकाती है। सा गुंफति/गुंफइ = वह गूंथती है।

निम्न क्रियाओं का स्त्रीलिंग 'सा' सर्वनाम के साथ प्रयोग कीजिए।

णच्च (नृत् = नाचना), लिह (लिख् = लिखना), पढ (पट् = पढ़ना), हस

(हस् - हंसना), सोध (सोधना), णव (नमन करना), गुंफ (गूंथना), चिट्ठ (स्था - रुकना/ठहरना), पिव (पा - पीना), जिग्घ (घ्रा - सूंघना), जय (जी - जीतना), सीद (सद् - बैठना), गच्छ (गम् - जाना)।

प्राकृत कीजिए।

वह जीतती है। वह बैठती है। वह जाती है। वह सूंघता है। वह बैठती है। वह रुकती है। वह सोधती है। वह गूंथती है। वह पकाती है। वह नाचती है। वह सोचती है। वह आंसू बहाती है।

प्राकृत से हिन्दी कीजिए

सा पडिसुणेति। सा छोल्लेति (छोल्ल - छोलना)। सा गेण्हति (गेण्ह - ग्रह् - ग्रहण करना)। सा दलयति (दलय - देना)। सा गेण्हइ। सा सद्दहति (सद्दह - श्रद्धान करना)। सा झियाति (झिय - ध्यान करना)। सा सद्दहइ। सा सयति (सय - स्वप् - सोना)। सा तुयहति (तुयह - तोड़ना)। भरति (भर - भरना) सा सय/सयति।

नियम-अर्धमागधी प्राकृत में 'से' (पु.) 'सा' (स्त्री) के अतिरिक्त सो, स (पुं) का प्रयोग भी होता है। यथा - स पुज्जसत्थे (उत्तराध्ययन 1/47) से पुव्वमेव ण लभेइ (उत्त. 4/9), सो एवं पडिसिद्धो (उत्त. 25/9)।

मागधी में 'से' (पु.) का ही प्रयोग है।

शौरसेनी, महाराष्ट्री में 'सो' का प्रयोग है।

मागधी/शौरसेनी में णमति के स्थान पर णमदि। अर्धमागधी में 'णमति' के अतिरिक्त भी 'णमइ' भी होता है। जाणइ (आ. 15/169)

कर्ता (प्रथमा बहुवचन) ते- वे, वे दोनों, वे सब। (पुं०)
ताओ - वे, वे दोनों, वे सब। (स्त्री०)

वाक्य प्रयोग

ते जयंति - वे जीतते हैं।	ते भवंति - वे होते हैं।
ते जीवंति - वे जीते हैं।	ते हसंति - वे हंसते हैं।
ते भासंति - वे कहते हैं।	ते पचंति - वे पकाते हैं।
ते णयंति - वे ले जाते हैं।	ते चयंति - वे छोड़ते हैं।
ते णमंति - वे नमन करते हैं।	ते धावंति - वे दौड़ते हैं।

प्राकृत कीजिए

वे स्मरण करते हैं। वे जानते हैं। वे इच्छा करते हैं। वे रक्षा करते हैं। वे चलते हैं। वे बोध करते हैं। वे चढ़ते हैं। वे रहते हैं। वे प्रशंसा करते हैं। वे दोनों गिरते हैं। वे सब भजते हैं।

क्रिया प्रयोग

चर (चर् - चरता है), खाद (खाद् - खाना), भव (भू - होना), यच्छ (यम् - चाहना), गूह (गुह् - छिपाना), दस (दंश् - काटना), धम (ध्मा - नीचे जाना), पस्स (दृश् - देखना), दिव्व (दिव् - प्रकाशित होना), सम्म (शम् - शमन करना), सम (शम् - शमन करना), सम (श्रम् - परिश्रम करना), भिंस (भ्रंश - गिरना)।

निम्न प्रत्यय युक्त क्रियाओं का अर्थ कीजिए।

चरंति, खादंति, भवंति, यच्छंति, गूहंति, दसंति, हिंसंति (हिंस् - मारना), वधेंति (वध् - वध करना), संपतंति (सं + पत - गिरना), उद्दापंति (उत् + ताप् - जकड़ना), रमंति (रम् - रमण करना), भयंति (भय् - डरना), समंति (सम्मेंति), दिव्वंति, भिंसेंति, करेंति, तवंति (तप् - तप करना), सोहेंति (शोभ् - शोभित होना)।

निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

ते भासेंति। ते पण्णवेंति। ते परुवेंति। ते धावंति। ते समंति। ते रमंति। ते वधेंति। ते णच्चेंति। ते तवंति। ते सोहेंति। ते भयंति। ते संपतंति।

स्त्रीलिंग प्रयोग

ताओ पस्संति। ताओ लिहंति। ताओ पालंति। ताओ रमंति। ताओ भासेंति। ताओ भयंति। ताओ चिंतेंति। ताओ मुंचेंति। ताओ पचंति।

निम्न क्रियाओं को स्त्रीलिंग 'ताओ' सर्वनाम के साथ प्रयोग कीजिए।

जाण (जानना), पवेद (प्र + विद् - कहना), फुस (स्पर्श - छूना), सेव (सेवा करना), हो (होना), मुज्झ (मुग्ध् - आसक्त होना), गच्छ (जाना), जय, लभ, मुण (जानना)।

प्राकृत कीजिए

वे जानती हैं। वे नाचती हैं। वे दोनों सेवा करती हैं। वे सब आसक्त होती हैं। वे दोनों कहती हैं। वे सब रोती हैं। वे सब शमन करती हैं।

हिन्दी कीजिए

ताओ विउंजंति (वि + उंज = प्रयोग करना), ताओ भासंति। ते वदेंति। ते विहरंति (विहार = विचरण करना), ते जाणेंति। ताओ णच्चेंति। ताओ अवलंबेंति। (अव + लंब = सहारा लेना) जएज्जेंति (जएज्ज = प्रयत्नशील होना)।

अर्धमागधी प्राकृत में प्रथम पुरुष बहुवचन में 'ते' (पुं.) 'ताओ' (स्त्री.) में प्रयोग होता है। अन्य प्राकृतों में यही 'ते' एवं 'ताओ' सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है।

त (तत्) का स, प्रथमा एकवचन में तथा एत (एतत्) का एस होता है। यथा - सो पस्सेति, स पहसेति। एस गंथे, एस मोहे (आ. 1/5/44)

'त' सर्वनाम शब्द के प्रथमा एकवचन में 'तं' होता है तं णो करिस्सामि (आ 1/4/0) तं जे णो करते। (आ 1/5/40)

इम (इदम्) का प्रथमा एकवचन में 'इमो' नपुंसकलिंग में 'इमं' एत (एतत) एतं, एयं का प्रयोग होता है। इमं पि जातिधम्मयं, एयं पि जाधिम्मयं। (आ 1/5/45)

हिन्दी में अनुवाद कीजिए

से सोयति जूरति तिप्पति पिड्डति परिततति। (आ. 2/5/90) सो गच्छइ, ते पिवंति। अहं लिहामि। तुम्हें भणह। अम्हे णमामो।

संस्कृत प्रयोग

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः गच्छति	तौ गच्छतः	ते गच्छन्ति।
	सा गच्छति (श्री)	ते गच्छतः	ताः गच्छन्ति।
मध्यम पुरुष	त्वम् गच्छसि	युवाम गच्छथः	यूयम् गच्छथ।
	अहम् गच्छामि	आवाम् गच्छावः	वयम् गच्छामः।

पहचानिए और लिखिए

से सो गच्छति/गच्छइ। ते गच्छंति। इमो गच्छति/गच्छइ। इमे गच्छंति। ताओ णच्चंति। ताओ बालाओ पढंति। सा बालिगा सुणति/सुणइ। इमं पोत्थअं अत्थि। इमाणि फलाणि अत्थि।

कर्ता (प्रथमा एकवचन) मध्यम पुरुष प्रयोग (तुमं - तू)

वाक्य प्रयोग

तुमं जयसि - तू जीतता है। तुमं भवसि - तू होता है।
तुमं जीवसि - तू जीता है। तुमं हससि - तू हसता है।
तुमं भणसि - तू कहता है। तुमं पचसि - तू पकाता है।
तुमं णयसि - तू ले जाता है। तुमं चयसि - तू छोड़ता है।
तुमं णमसि - तू नमन करता है। तुमं धवसि - तू दौड़ता है।

प्राकृत कीजिए

तू स्मरण करता है। तू जानता है।
तू इच्छा करता है। तू रक्षा करता है।
तू चलता है। तू बोध करता है।
तू चढ़ता है। तू रहता है।
तू प्रशंसा करता है। तू पालन करता है।
तू गिरता है। तू भजता है।

क्रिया प्रयोग

णिरत (णि + रत), विहिंस (वि + हिंस), लिप्प (आसक्त होना), जागर (जागृ - जागना), पमुच्च (प्र + मुंच् - छोड़ना), गच्छ, कह, मुण।

निम्न प्रत्यय प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ कीजिए

गच्छसि, पण्णवेसि, दिस्ससि, गिज्झसि (गिज्झ - आसक्त होना), संवेदयसि (सं + वेदय - अनुभव करना), संधेसि (संध - धारण करना), चिट्ठसि, जूरसि, अच्छसि (अच्छ - रहना), खवसि, करेसि।

निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

तुमं मण्णसि। तुमं चिंतसि। तुमं वंदसि। तुमं णमसि। तुमं पढसि। तुमं जाणसि। तुमं इच्छसि। तुमं पमोक्खसि। तुमं समारंभेसि। तुमं पस्ससि। तुमं पोसेसि (पोस - पोषण करना)। तुमं अच्चेसि (अर्च् - पूजना), तुमं सुणसि। तुमं लिहसि। आदि वाक्य पुलिंग, नपुसंकलिंग और स्त्रीलिंग में समान रूप से बनते हैं। तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि। (ज्ञाता. 2/41)

'तुम' एवं तुम्हे सर्वनाम शब्द के प्रयोग होने पर तीनों लिंगों में समान ही वाक्य रचना होती है।

कर्ता (प्रथमा बहुवचन) मध्यम पुरुष (तुम्हे - तुम, तुम दोनों, तुम सब)

वाक्य प्रयोग

तुम्हे जयह - तुम जीतते हो।	तुम्हे भवह - तुम होते हो।
तुम्हे जीवह - तुम जीते हो।	तुम्हे हसह - तुम हसते हो।
तुम्हे भणह - तुम कहते हो।	तुम्हे पचह - तुम पकाते हो।
तुम्हे णयह - तुम ले जाते हो।	तुम्हे चयह - तुम छोड़ते हो।
तुम्हे णमह - तुम नमन करते हो।	तुम्हे धावह - तुम दोड़ते हो।

महाराष्ट्री प्राकृत में 'इत्था' प्रत्यय लगाकर उक्त क्रियाओं के रूप बनाएं। यथा– तुम्हे जइत्था। तुम्हे भवित्था।

तुम्हे भणित्था। तुम्हे उवित्था।

प्राकृत कीजिए

तुम स्मरण करते हो। तुम जानते हो। तुम इच्छा करते हो। तुम रक्षा करते हो। तुम चलते हो। तुम बोध करते हो। तुम चढ़ते हो। तुम रहते हो। तुम प्रशंसा करते हो। तुम पालन करते हो। तुम गिरते हो। तुम भजते हो।

क्रिया प्रयोग

बुच्च (कहना), समोसर (समाविष्ट होना), पविह (प + विश् - घुसना), सद्दाम (बुलाना), उवागच्छ (पहुंचना), संमाण (सम्मान देना), अणुवूह (अनुमोदन करना), पडिबुज्झ (जागृत करना)

निम्न प्रत्यय प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ कीजिए

पडिबुज्झेह, पडिविसज्जेह, सक्कारेह, संचिट्ठह, विणेह (विण - पूर्ण करना), पयच्छह (प्र + यच्छ् - प्रदान करना), उवागच्छह (उप + आ + गम् - पास आना), अणुगच्छइ (अनु + गम् - अनुगमन करना), णिग्गच्छह (निर् + गम् - जाना), ठवेह (स्था - ठहरना), कप्पेह (कप्प - काटना), पसारेह (फैलाना)

निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

तुम्हे विहरेह। विहरित्था।	तुम्हे पयच्छह। पयच्छित्था।
तुम्हे संचिट्ठह। संचिहित्था।	तुम्हे पसारेह। पसारित्था।
तुम्हे उवागच्छह। उवागच्छित्था।	तुम्हे अणुजाणह। अणुजाणित्था।
तुम्हे गेण्हह। गेण्हित्था।	तुम्हे इच्छह। इच्छित्था।
तुम्हे करेह। करित्था।	तुम्हे णमेह। णमित्था।

कर्ता (प्रथमा एकवचन) उत्तम पुरुष - अहं (मैं)

वाक्य प्रयोग

अहं जयामि - मैं जीतता हूं।	अहं भवामि - मैं होता हूं।
अहं जीवामि - मैं जीता हूं।	अहं हसामि - मैं हसता हूं।
अहं भणामि - मैं कहता हूं।	अहं पंचामि - मैं पकाता हूं।
अहं णयामि - मैं ले जाता हूं।	अहं चयामि - मैं छोड़ता हूं।
अहं णमामि - मैं नमन करता हूं।	अहं धावामि - मैं दोड़ता हूं।

प्राकृत कीजिए

मैं स्मरण करता हूं। मैं जानता हूं। मैं इच्छा करता हूं। मैं रक्षा करता हूं। मैं चलता हूं। मैं बोध करता हूं। मैं चढ़ता हूं। मैं रहता हूं। मैं प्रशंसा करता हूं। मैं पालन करता हूं। मैं गिरता हूं। मैं भजता हूं।

क्रिया प्रयोग

चिट्ठ, पिह (छिपाना), णिवेद (निवेदन करना), परिवेस (परोसना), छड्ड (छोड़ना), परिट्ठव (त्याग करना), विमोइ (छोड़ना), पुच्छ, आढ (आदर करना), छेद, सिक्खाव (सिखलाना), जाण, संवड्ढ (बढ़ाना),

निम्न प्रत्यय प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ कीजिए

सारक्खामि (रक्षा करना), जाएमि (जाना), छड्ढेमि, परिट्ठवामि, आढामि, संगोवामि, सिक्खावामि, विहरामि, जाणामि, उवागच्छामि, करेमि, पक्खवेमि (पक्खव - फैंकना), उत्तारेमि (उत्तार - उतारना), बंधामि, पडिसुणेमि, भुंजामि, णिंदामि (णिंद - निन्दा करना), अणुगच्छेमि।

निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

अहं करेमि। अहं पणिसुणेमि। अहं बंधामि। अहं ठवणेमि। (ठव + णे - ग्रहण करना)। अहं संघट्टामि (सं + घट्ट - स्पर्श करना)। अहं ठवेमि। अहं गच्छेमि। अहं अग्घेमि (अग्घ - अर्घ देना)। अहं विहरामि। अहं सोच्चामि। अहं पक्खेवेमि। अहं चिंतामि। अहं पढामि। अहं लिहामि।

नियम - अर्धमागधी प्राकृत में 'अहं' के स्थान पर 'हं' (उत्तम पुरुष एकवचन) का भी प्रयोग होता है। यथा - अकरिस्सं च हं, काराविस्सं च हं। (आचा 1/1/4)

कर्ता (प्रथमा बहुवचन) उत्तम पुरुष - अम्हे = हम, हम दोनों, हम सब।

वाक्य प्रयोग

अम्हे जयामि = हम जीतते हैं।	अम्हे भवामि = हम होते हैं।
अम्हे जिवामि = हम जीते हैं।	अम्हे हसामि = हम हसंते हैं।
अम्हे भणामि = हम कहते हैं।	अम्हे पचामि = हम पचाते हैं।
अम्हे णयामि = हम ले जाते हैं।	अम्हे चयामि = हम छोड़ते हैं।
अम्हे णमामि = हम नमन करते हैं।	अम्हे धावामि = हम दौड़ते हैं।

प्राकृत कीजिए

हम स्मरण करते हैं। हम जानते हैं। हम इच्छा करते हैं। हम रक्षा करते हैं। हम चलते हैं। हम बोध करते हैं। हम चढ़ते हैं। हम रहते हैं। हम सब प्रशंसा करते हैं। हम दोनों पालन करते हैं। हम गिरते हैं। हम भजते हैं।

क्रिया प्रयोग

सुव्व (सुनना), हो (होना), पच्चक्ख (प्रत्याख्यान करना), वोसर (त्यागना), फुस (स्पर्श करना), समोसढ (आना), समुप्पण्ण (होना), समागच्छ (आना)।

निम्न प्रत्यय प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ लिखिए

अभिसिंचामो (अभि + सिंच् = अभिषेक करना), संकमामो (सं + क्रम् = संक्रमण करना), परियाणामो (परि + याण = जानना), उववज्जामो (उप + व्रज् = उत्पन्न होना) पुज्जामो, अच्चामो, णिवारामो, समुप्पण्णामो, समागच्छामो, फुसामो, बोसिरामो, णमामो, पडिक्कमामो, सद्दामो, भासामो, इच्छामो।

निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

अम्हे अभिसिंचामो। अम्हे पज्जुवासामो (पज्जुवास = उपासना करना), अम्हे खामेमो। अम्हे उववज्जामो। अम्हे झियायामो। अम्हे खादामो। अम्हे मुंचामो। अम्हे परियाणामो। अम्हे एडामो (एड = फैंकना), अम्हे हसामो।

नियम - अर्धमागधी प्राकृत में 'अम्हे' सर्वनाम के अतिरिक्त 'वयं' (उत्तम पुरुष बहुवचन) का प्रयोग भी होता है यथा - वयं संपेहाए। (आचा 1/2/1/64)

वयं पुण एवमाचिक्खामो, एवं भासामो, एवं पण्णवेमो, एवं परुवेमो। (आचा 4/2/138)

वट्टमाण - कालो (वर्तमानकाल)

'भण' धातु

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमपुरिसो	भणति/भणइ	भणंति/भणंति
	भणते/भणए	
मज्झिमपुरिसो	भणसि/भणसे	भणह/भणित्था
उत्तमंपुरिसो	भणमि/भणानि	भणमो/भणामो

नियम निर्देश

(1) अर्धमागधी प्राकृत में 'ति' प्रत्यय के प्रयोग (प्रथम पुरुष एकवचन के प्रत्यय के प्रयोग) के अतिरिक्त 'ए' प्रत्यय ओर 'इ' प्रत्यय भी होता है। अन्य प्राकृतों में यही होते हैं। शौरसेनी, मागधी में 'दि' का प्रयोग होता है। यथा - भणए, भणइ (इत्यादिनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौ। हे प्रा. 3/139) (अत एवेच से 3/145) - भणदि (शौ., मागधी)

(2) वर्तमानकाल प्रथम पुरुष एकवचन के प्रत्य 'ति' या 'इ' से पूर्व धातु में 'ए' भी हो जाता है। (वर्तमान-पञ्चमी-शतृषु वा 3/158)

(3) वर्तमानकाल प्रथम पुरुष बहुवचन में 'न्ति' 'न्ते' प्रत्ययों का प्रयोग गाया जाता है। यथा - भणंति, भणंते भणिरे (बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे 3/142)

(4) वर्तमानकाल प्रथम पुरुष बहुवचन में 'न्ति' से पूर्व 'अ' का ए भी हो जाता है। यथा - भणेंति (3/158)

(5) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष एकवचन में 'सि' प्रत्यय के अतिरिक्त 'से' का भी प्रयोग होता है। यथा - भणसि, भणसे (द्वितीयस्य सि से 3/140)

(6) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष एकवचन में 'सि' से पूर्व 'अ' का 'ए' भी होता है। यथा - भणसि भणेसि (3/158) कहीं-कहीं पर दीर्घ भी होता है। यथा-जाणासि

(7) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष बहुवचन में 'ह' प्रत्यय होता है। यथा-भणह

(8) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष बहुवचन में 'ह' प्रत्यय से पूर्व 'अ' का 'ए' भी होता है। यथा भणह-भणेह (मध्यमस्येत्था हचौ 3/143)

(9) वर्तमान उत्तम पुरुष एकवचन में 'मि' प्रत्यय होता है। यथा-भणमि।

(10) वर्तमान काल उत्तम पुरुष एक वचन में 'मि' प्रत्यय से पूर्व 'अ' का 'ए',

'अ' का 'इ' तथा 'अ' का 'आ' भी होता है। यथा भणमि–भणेमि–भणामि (मौ वा 3/154)

(11) वर्तमान काल उत्तम पुरुष बहुवचन में 'मो', 'मु' और 'म' प्रत्यय होते हैं। यथा :– भणमो, भणमु, भणम (तृतीयस्य मो–मु–मा (3/144)

(12) वर्तमानकाल उत्तम पुरुष बहुवचन में 'मों', 'मु', 'म' से पूर्व 'अ' का 'इ' होता है। यथा भणिमो, भणिमु, भणिम।

(13) 'मो', 'मु', 'म' होने पर क्वचित् 'ए' भी होता है। यथा–भणेमो, भणेमु, भणेम

संस्कृत क्रिया रूप

प्रथम पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम पुरुष	नमसि	नमथः	नमथः
उत्तम पुरुष	नमामि	नमावः	नमामः

संस्कृत शब्द रूप

'जिन' पुलिंग अकारान्त

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जिनः	जिनौ	जिनाः
द्वितीय	जिनम्	जिनौ	जिनाः
तृतीय	जिनेन	जिनाभ्याम्	जिनैः
चतुर्थी	जिनाय	जिनाभ्याम्	जिनेभ्यः
पंचमी	जिनात्	जिनाभ्याम्	जिनेभ्यः
षष्ठी	जिनस्य	जिनयोः	जिनानाम्
सप्तमी	जिने	जिनयोः	जिनेषु
सम्बोधन	जिन!	जिनौ!	जिना!

संस्कृत के ज्ञान के लिए संस्कृत की रचना प्रक्रिया देखें। यहाँ मात्र संकेत के रूप में दिया गया है। अन्यत्र यह क्रम नहीं है।

छह—अव्यय विचार

अव्यय

जिन शब्दों के काल्, वचन, लिंगादि नहीं होते हैं तथा जिनके रूप नहीं बदलते अर्थात् सदैव एक समान होते हैं वे अव्यय कहलाते हैं।

सरिच्छुं तिसु लिंगेसु सव्वासु य विभत्तीसु।
वयणेसु स सव्वेसुं जं ण वयइ अव्वयं।।

क्रिया विशेषण

अंतो अंतो	= भीतर भीतर	-	अंतो अंतो पूतिदेहेतराणि पासति। (आ/ 2/5/92) चा
अग्गतो	= आगे	-	सिविगा अग्गतो गच्छति।
अग्गे	= आगे	-	अग्गे अग्गं धावति।
अचिरं	= शीघ्र	-	सो अचिरं लिहति।
अचिरत्तो	= शीघ्र	-	तुमं अचिरत्तो आगच्छसि।
अतो	= इसलिए	-	स पीडति अतो ण पढति।
अतीव	= बहुत	-	अतीव दुहेति।
अह	= अनन्तर	-	अहं अह गच्छेमि।
अत्थ	= यहां	-	तुम्हे अत्थ परिवदेह। परिवहित्था।
अज्ज	= आज	-	सो अज्ज चिंतति। चिंतइ।
अलं	= पर्याप्त	-	अलं ते एतेहि (आ/ 2/4/85)।
अवि	= भी	-	अहं अवि पडिक्कमामि।
अहुणा	= अब	-	अहुणा तुमं किं पढेसि।

अंतरेण	विना	चारित्तं अंतरेण मुणी ण।
अंतरा	बीच में	सो अंतरा वज्जति। वज्जइ।
अण्णच्च	और भी	अहं अण्णच्च चिंतामि।
अण्णत्थ	अन्यत्र	तुम्हे अण्णत्थ पच्चक्खेह। पच्चक्खित्था।
अभितो	चारों ओर	वीरं अभितो उवासगा।
अलं	पर्याप्त	एस अलं।
इच्चेव	पर्याप्त	इच्चेव समुट्ठिते। (आचा 2/1/65)
इतो ततो/इओ	इधर उधर	इति भासति। इति से गुणट्ठी (आचा 1/2/18)
इत्थं	इस प्रकार	ते इत्थं वोसिरेंति।
ईसि	किंचित्	ईसि चिंतेह।
इह/इध	यहां	इह चिट्ठेंति, जीविते इह जे पमत्ता। (आचा 2/166)
इदाणिं	इस समय	इदाणिं सो परिभमति।
उ	तु, किन्तु	जहां उ से (ज्ञाता 4/13)
उच्चं	ऊंचा	उच्चं वदति।
उण/उणे (पुनः)	फिर	सो उण भजइ
उभयतो	दोनों ओर	अम्हे उभयतो गच्छामो।
एगत्थ	एक जगह	एगत्थ आचिट्ठेंति।
एगगो/एगयो	एकाकी	एगगो परिवसति। परिवसइ
एगदा, एगया	एक बार	एगदा भुंजति, एगया मूढभावं जणयंति (आचा 1/2/1/64) ततो से एगदा (आ 2/3/79)चरं
एत्थ	यहां	तो इत्थ झायति। एत्थ वि जाणह (आ 4/2/138)
एव	ही	
एवं	इस प्रकार	एवं पण्णवेमो, एवं परूवेमो। (आचा 4/2/138)

कंचणं	= कुछ	– कंचण णत्थि।
णत्थिचि	= क्या	– कंचि स जाणति। जाणइ।
कहं/कध	= कैसे ?	– कहं सो पढति। पढइ
कदा/कया	= कब ?	– कदा पढति। पढइ।
कदाचि	= कभी	– कदाचि चिंतति। चिंतइ
किं	= क्या ?	– किमत्थिउवधी (आचा. 3/4/131)
कुतो/ओ	= कहां से ?	– सो कुतो आगच्छति। आगच्छइ।
केवलं	= केवलं	– सो केवलं झाति। झाइ।
खलु/सु/हु	= निश्चय	– अप्पं च खलु आउं इहमेगेहिं माणवाणं (आ 2/1/64)
जइ	= यदि	– जइ णं तुलभेहिं (ज्ञाता 9/46)
जह, जहा	= जैसे	– जहा अंतो तहा बाहि (आ 2/5/92)। चा
झटिति	= शीघ्र	– सो अत्थ झटिति आगच्छति।
झत्ति	= शीघ्र	– अहं झत्ति चिंतामि।
तओ	= तब/तदनन्तर	– तओ धावति। धावइ।
ततो	= तब	– ततो से एगदा विप्परिसिट्ठं। (आचा 2/3/79)
तत्थ	= वहां	– तत्थ णं दो ऊऊ साहीण। (उत्तराध्ययन 9/25)
तेण	= तब, तो	– तत्थ णं तुब्भे। (उत्त. 9/24) तेण णो सिया। (आ. 2/4/83)
तत्थ, तहेव	= तथा, वैसे ही	तत्थ वसइ तहेव।
ण, णो	= नहीं	– अज्झयणे ण चिट्ठति। चिठइ। (आ 2/3/79)
णालं	= पर्याप्त नहीं समर्थ नहीं	– णालं पास। अलं ते एतेहिं। (आ 2/4/85)

णं	= क्योंकि, चूंकि–	तए णं सा। (ज्ञाता 9/43)
		णस्स णं (ज्ञाता 9/3)
णणु/णु	= कृपया	– णणु। सो किं भासति। भासइ।
दिवा	= दिन में	– सो दिवा गच्छति। गच्छइ।
णाम	= नामक	– चंपा णामं णयरी (ज्ञाता 9/2)।
णिगसा	= नमक	– गामं णिगसा गच्छति। गच्छइ।
णिम्मं	= नीच	– णिम्मं वदति। वदइ।
णूणं	= निश्चय ही	– णूणं सो कहति। कहइ।
परितो/परिओ	= चारों ओर	– गामं परितो वणमत्थि।
पच्छा	= पश्चात्	– पच्छा अणुगच्छति। अणुगच्छइ।
		जेण पुण जहाइ (उत्त. 16/8)
पुण/पुणो/उण/उणो	= पुनः फिर	– पुणो जाणइ (ज्ञाता 4/13)
		पुणो तं करेमि (आ चा 2/5/93)
पुरतो/पुरओ	= आगे	– पुरतो सो गच्छति। गच्छइ।
पुरा	= प्राचीन	– पुरा णयरी वाराणसी अत्थि।
पुह/पुह	= पृथक् पृथक्	– पुह पुह आसति। आसइ।
पइदिणं	= प्रतिदिन	– सो पइदिणं पणिक्कमति।
पच्चुत	= उलटा	– पच्चुत भासति। भासइ।
पाग	= पहले	– पाग णच्चति। णच्चइ।
पातो	= प्रातः	– पातो जग्गति। जग्गइ।
पायो	= प्रायः	– पायो सो पुच्छति। बहिं अणुगच्छति।
भूयो	= बार बार	– भूयो णमति। णमइ।
मुहु	= बार बार	– मुहु चिंतति। चिंतइ।
मुसा	= झूठ	– मुसा वदति। वदइ।
विणा	= विना	– तं विणा सो ण णिवसति। णिवसइ।
सइ	= सदा	– सइ चिंतति।
सणियं सणियं	= धीरे-धीरे	– सणियं सणियं गच्छति।

सआ/सदा/सइ	= सदा	– सदा पुच्छति।
सव्वदा/सव्वआ	= सर्वदा, सब दिन–सव्वदा भुंजति।	
सद्धिं	= साथ	– सद्धिं गच्छति। सद्धिं रोयमाणे (ज्ञाता 2/31)
सह	= साथ	– सह भासति। भासइ।
सम्म	= भली भांति	– सम्मं सुणति। सुणइ।
सव्वत्थ	= सभी जगह	– सव्वत्थ पमरुस्सभयं। (आ 3/4/129)
सयं	= स्वयं	– सयं पढइ।

समुच्चयबोधक अव्यय

अह/अहरा		मित्तं अह अमित्तं। सुहं अह असुहं। अहरा तइयाए। (उत्त. 30/21)
तु	क्योंकि	गुणाणं तु सहस्साइं (उत्त. 19/25)
चेव	ही	तालणा तज्जणा चेव। (उत्त. 19/33)
हि	निश्चय	भाणुस्स तेओ हि।
हु	निश्चय	से किंचि हु णिसामिया। (उत्त. 17/10)

मनोविकार सूचक अव्यय

इन अव्ययों का वाक्य से सम्बन्ध नहीं रहता।

अहो	अहो! आसति!
धिग	धिग धिग तुमं।
हा	हा! कह दुहं।

प्राकृत से हिन्दी कीजिए

सो तत्थ गच्छति। किं पुच्छसि। अम्हे अज्ज पढामो। ते पइदिणं अच्चंति। सो सव्वत्थ अनुधावति। अहं सम्मं जाणामि। तुमं सणियं सणियं भाससि। सो पातो आगच्छति। ताओ किं बहिं गच्छंति। ताओ पुरतो पस्संति। ते हु भासंति।

स्मरण कीजिए

(1) प्राकृत में एकवचन और बहुवचन ये दो वचन होते हैं।

(2) अर्धमागधी एवं अन्य प्राकृत में तीन लिंग एवं तीन पुरुष हैं।

(3) स, सो, से (पु. एकवचन) ते (पु. बहुवचन) ताओ (स्त्री. बहुवचन) हैं। अर्थात् प्रथम पुरुष में तीनों लिंगों का प्रयोग होता है।

(4) मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के तीनों लिंगों में समान रूप हैं।

(5) प्रथम पुरुष एकवचन में ति, ते प्रत्ययों की बहुलता हैं। इ और ए प्रत्यय भी पाए जाते हैं। (त्यादिनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौ 3/139) यथा - पुणो तं करेति लोभं। (आ. 2/5/93) एत्थ सत्थोवरते। (आ 3/1/106) नमी नमेइ। (उत्त. 9/61), रमए पंडिए सासं। (उत्त. 1/37)

(6) 'ति' या इ प्रत्य से पूर्व 'अ' का ए भी हो जाता है। यथा सव्वं पावं कम्मं झोसेति। (आ चा. 3/2/117), ण करेति पावं (आ 3/2/112) जंसि एगे पमादेंति (आ 3/3/127)

(7) वर्तमानकाल प्रथम पुरुष बहुवचन में 'न्ति', न्ते प्रत्यय होते हैं। यथा गच्छंति अवसा तमं। (उत्त. 7/10) उवेंति माणं जोणिं। (उत्त. 7/20) (बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे 3/142)

(8) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष एकवचन में 'सि' और 'से' प्रत्यय होते हैं। (द्वितीयस्य सि से 3/140) भणसि, भणसे।

(9) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष एकवचन में 'ह' प्रत्यय होता है। (मध्यमस्येत्था - हचो 3/143) महाराष्ट्री में 'इत्था' होता है। यथा- भणित्था।

(10) वर्तमानकाल उत्तम पुरुष एकवचन में 'मि' प्रत्यय होता है। 'मि' प्रत्यय होने पर 'अ' का ए एवं 'अ' का 'आ' भी होता है। यथा - भणेमि, भणामि (तृतीयस्य मि 3/141)

(11) वर्तमानकाल उत्तम पुरुष बहुवचन में 'मो' प्रत्यय की बहुलता है। भणमो, भणामो, भणेमो (तृतीयस्य मो-मु-मा : 3/144)

सात–संज्ञा विचार

संज्ञा शब्द-अकारान्त पुलिंग 'जिण'

	एगवयण	बहुवयणं
पढमा	जिणे, जिणो	जिणा
बीआ	जिणं	जिणा, जिणे
तइया	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिं
चउत्थी	जिणस्स, जिणाए	जिणाण, जिणाणं
	जिणाते, जिणाय	
पंचमी	जिणत्तो, जिणातो	जिणत्तो, जिणातो
	जिणातु, जिणाओ	जिणातु, जिणाओ
	जिणाउ, जिणाहि	जिणाउ, जिणाहि
	जिणाहिंतो, जिणा	जिणाहिंतो, जिणासुंतो
छट्ठी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
सप्तमी	जिणंसि, जिणम्मि, जिणे	जिणेसु, जिणेसुं
संबोहण	जिण! जिणे! जिणो! जिणा!	जिणा!

'जिण' शब्द की तरह निम्न संज्ञा शब्दों के रूप बनाइए

वीर, तित्थयर, आइरिय, उवज्झाय, उवासग (श्रावक), समण (मुनि), विणय, णर, मणुज, किविण (कृपण-कंजूस), खत्तिय (क्षत्रिय), जिणदत्त, अरह, सुय (सुत - पुत्र), सेणिग (श्रेणिक राजा), कुमार, गाम, चेल, णिग्गंठ (निर्ग्रन्थ), उसह (ऋषभ/वृषभ - बैल), तस (त्रस), तित्थ (तीर्थ), तेल्ल, थावर, देव, धम्म, पउम (पद्म), पुरिस, पोग्गल, भाव।

- अर्धमागधी प्राकृत में 'भगवत्' शब्द का प्रथमा एकवचन में भगवं, मतिमंत = मतिमं, भगवंतो, मतिमंतो। यथा – वसुमंतो, मतिमंतो (आ 8/8/229) भगवं च। (9/1/268)
- तृतीया एकवचन में भगवता, भगवया। भगवता परिण्णा पवेदिता (आ. 1/3/24)
- षष्ठी एकवचन में भगवतो, भगवयो। भगवतो अणगाराणं (आ 1/3/25)
- मण, वय, काय आदि शब्दों के तृतीया एकवचन में मणसा, वयसा, कायसा, जोगसा।
- 'कम्म' एवं 'धम्म' के तृतीया एकवचन में कम्मुणा, धम्मुणा जैसे रूप प्रयुक्त हैं। कम्मुणा बंभणो होइ (उत्त. 25/33)
- शौरसेनी के पंचमी एकवचन एवं बहुवचन 'आदो', 'आदु' प्रत्यय होते हैं। जिणादो, जिणादु। जिणाउ एवं जिणाओ सभी प्राकृतों में होते हैं।
- शौरसेनी के सप्तमी एकवचन में 'म्हि' प्रत्यय भी होता है। यथा :–जिणम्हि।

कर्मकारक

कम्म-कारग (कर्मकारक) – कर्ता जिसको चाहता है वह कर्म है। या जिस वस्तु या पुरुष के ऊपर क्रिया पड़ता है, वह कर्म है। यथा अकामा जंति दोग्गइं। (उत्त. 9/53) (कर्तुरीप्सिततमं कर्म)

वाक्य प्रयोग

सो विज्जालयं गच्छति/गच्छइ = वह विद्यालय को जाता है। सो देवं णमति/णमइ = वह देव को नमन करता है। सो वीरं सरति/सरइ = वह वीर को स्मरण करता है। सो वसहं णमति/णमइ = वह बैल ले आता है। सो पत्तं पढति/पढइ = वह पत्र को पढ़ता है। सो जीवं रक्खति/रक्खइ = वह जीव को बचाता है। सो समणं अच्चति/अच्चइ = वह श्रमण को पूजता है। सो धम्मं सुणति/सुणइ = वह धर्म सुनता है। सो विणयं कुणेति/कुणइ = वह विनय करता है। सो लेहं लिखति/लिखइ = वह लेख लिखता है। सो/से चिंतइ = वह चिन्तन करता है।

प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

सो महावीरं णमति णमइ। तं अच्छति। तं धम्मं पालति/पालइ। णियमं गिण्हेति/गिण्हइ। सेणिगं कहेति/कहेइ। वीतरागं मुणेति/मुणइ। तेजं चिंतंति/चिंतइ। मह पस्सति पासइ। समणं सेवति/सेवइ। धम्मं पगडति। संतिसायरं पणमति। सो पुत्तं पस्सति।

निम्न शब्दों का द्वितीया एकवचन में प्रयोग कीजिए

णर (नर-मनुष्य), सुग (शुक - तोता), अस्स (अश्व - घोड़ा), खग्ग (खड्ग), छत्त (छत्र), खल (दुष्ट), गज (हाथी), हय (घोड़ा), वसह (बैल), पुत्त (पुत्र), सुज्ज (सूर्य), चंद, णड (नट), रुक्ख (वृक्ष), मूसग (चूहा), जणग (पिता), चाव (चाप), गह (ग्रह), णक्खवत्त (नक्षत्र), वग (वक), कूव (कूप), कुक्कुर (कुत्ता:), अणिल (हवा), अणल (अग्नि), मेहकुमार, सेणिक (श्रेणिक), देव, सुर, असुर, वड्ढमाण, अजित, संभव, पास, विमल।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

सो समणा पुच्छति/पुच्छइ। सो हए णेति/णेइ। सो गिहा पासति/पासइ। सो गजा अवलोगति। सो छत्ता/छत्ते सरति। सो पुत्ता सरति। सो मूसगा/मूसगे गुंजति। सो सुगा/सुगे पालति। सो णरा/णरे पदसति। सो अरिहंते णमति। सो सिद्धा/सिद्धे पणमति। सो आइरिया/आइरिए पुज्जति। सो उवज्झाए णमति णमइ। ते णमंति। ते समणे पेसंति। ते देवा/देवे णमंति। असुरा पणमंति।

शब्द रूप

इकारांत 'मुणि' शब्द

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	मुणी	मुणी, मुणिणो
बीया	मुणिं	मुणी, मुणिणो
तइया	मुणिणा	मुणीहि, मुणीहिं
चउत्थी	मुणिस्स, मुणिणो	मुणीण, मुणीणं
पंचमी	मुणित्तो, मुणीहि, मुणिणो	मुणित्तो, मुणीहिंतो, मुणीसुंतो
छट्ठी	मुणिस्स, मुणिणो	मुणीण, मुणीणं
सत्तमी	मुणंसि, मुणम्मि	मुणीसु, मुणीसुं
सम्बोहण	मुणि!	मुणि!

'मुणि' शब्द की तरह निम्न शब्दों के रूप भी बनेंगे

अरि (शत्रु), करि (हाथी), रवि (सूर्य), हरि (विष्णु), अग्नि (अग्नि), उदहि, वारिहि, जलहि, णीरहि, गिरि, कवि (कपि - बन्दर), असि (तलवार),

णरवइ (नृपति), णिहि (निधि - खजाना), अतिहि (अतिथि - मेहमान), पाणि, वाहि (व्याधि - रोग), विहि (विधि - भाग्य), जति (यति - योगी), पति, णेति, सारहि (सारथि)।

निम्न वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

मुणी गच्छति। करी समति/समइ। गिरी पहसति/पहसइ। सो हरी। (एकवचन कर्ता) मुणिं पुच्छति/पुच्छइ। रविं पस्सति/पस्सइ। करि पालति/पालइ। असिं णमति/णमइ। कसिं इच्छति/इच्छइ। (द्वि. ए.) मुणी णमंति। मुणिणो अवलोगति। करिणो णएंति। असिहिणो सम्मार्णेति। णिहिणो सुरक्खंति। णइवई/णइवइणो सरंति। (द्वि. बहु.)।

प्राकृत में अनुवाद कीजिए

ये दोनों मुनियों को देखते हैं। मैं राजाओं को बुलाता हूं। नेमि को लिखता हूं। अतिथियों को देते हैं। निधि को सुरक्षित करता है। कपि को मारता है। उदधि की ओर देखता है। करि की ओर आता है। असि चलाता है। तुम दोनों वारिधि देखते हो। हम सब व्याधि को नहीं चाहते हैं। समाधि को श्रमण चाहता है। क्षत्रिय तलवार को सजाता है। श्रेणिक राजा को कहां देखता है। वह चारों ओर शत्रुओं को देखता है। वह धीरे-धीरे पढ़ता है।

उकारांत पुलिंग 'भाणु' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	भाणू	भाणू, भणुणो
बीआ	भाणुं	भाणू, भाणुणो, भाणवो
तइया	भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं
चउत्थी	भाणुस्स, भाणुणो	भाणूण, भाणूणं
पंचमी	भाणुत्तो, भाणुहिंतो भाणुणो	भाणुत्तो, भाणुहिंतो, भाणुसुंतो
छट्ठी	भाणुस्स, भाणुणो	भाणूण, भाणूणं
सप्तमी	भाणुंसि, भाणुम्मि	भाणूसु, भाणूसुं
संबोहण	भाणु!	भाणु!

'भाणु' शब्द की तरह निम्न रूप बनेंगे।

गुरु, वाउ, इंदु, पसु (पशु), विण्हु (विष्णु), रिउ (रिपु - शत्रु), सिंधु, सत्तु (शत्रु), तरु (वृक्ष) पंसु (पांशु - धूलि), मिउ (मृदु), विधु - (चन्द्र), इसु (इषु - वाण), सूणु (सुनू - पुत्र) सिसु (शिशु - पुत्र), भाउ, पिउ।

वाक्य प्रयोग

गुरुं णमामि। भाणुं पस्सामि। ते विण्हुं सरंति। सिंधु पेरंतं गच्छामि। तरुं पस्सति/पंसुं णिक्खेवति। ताओ मिउं वयणं वदंति। सुणवो णिमंतति। रिउणो ललकारेति। तुमं सत्तुणो हणसि। तुम्हे इसुणो णयंति। विहुं पस्सति। इंदुं अवलोगति। वाउं पदूसति/पदूसइ।

निम्न हिन्दी वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए

हम दोनों गुरुओं को निमंत्रित करते हैं। वे शत्रु को देखते हैं। आज तू वृक्ष काटता है। वह पंशु को फैलाता है। वे दोनों बालिकाएं चंद्रमा देखती हैं। मैं शिशु को पढ़ाता हूं। (पाढेमि) तुम सब कब सिंधु की ओर जाते हो। देव वीर को णमन करता है।

पुलिंग ईकारांत 'केवली' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	केवली	केवली, केवलिणो
वीआ	केवलिं	केवली, केवलिणो
तइया	केवलिणा	केवलीहि, केवलीहिं
चउत्थी	केवलिस्स, केवलिणो	केवलीण, केवलीणं
पंचमी	केवलित्तो, केवलीहिंतो	केवलित्तो, केवलीहिंतो
	केवलिणो	केवलीसुंतो
छट्ठी	केवलिस्स, केवलिणो	केवलीण, केवलीणं
सप्तमी	केवलिंसि, केवलिम्मि	केवलीसु, केवलीसुं
संबोहण	केवलि!	केवली!

'केवली' शब्द की तरह 'णाणी' सामी एवं गामणी के रूप भी चलेंगे।

वाक्य प्रयोग

केवलिं णमामि। केवलिणो णमंति। ते णाणिं पुच्छंति। तुम्हे णाणिणो पुच्छइ। तुमं केवलिं णमसि। सो णाणिं पस्सति/पस्सइ। ते गामणिणो वदंति।

ऊकारांत पुलिंग 'जंबू' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	जंबू	जंबू, जंबुणो
बीआ	जंबुं	जंबू, जंबुणो
तइया	जंबुणा	जंबूहि, जंबूहिं
चउत्थी	जंबुस्स, जंबुणो	जंबूण, जंबूणं
पंचमी	जंबुत्तो, जंबूहिंतो, जंबुणो	जंबुत्तो, जंबूहिंतो, जंबूसुंतो
छट्ठी	जंबुस्स, जंबुणो	जंबूण, जंबूणं
सप्तमी	जंबुंसि, जंबुम्मि	जंबूसु, जंबूसुं
संबोहण	जंबु !	जंबू !

आकारांत पुलिंग 'आया' शब्द

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	आया	आया
बीआ	आयं	आया, आए
तइया	आएण, आएणं	आएहि, आएहिं
चउत्थी	आयस्स, आयाते, आयाए	आयाण, आयाणं
पंचमी	आयत्तो, आयातो, आयाहिंतो	आयत्तो, आयातो, आयाहिंतो
	आयाओ, आयाउ	आयासुंतो
छट्ठी	आयस्स	आयाण, आयाणं
सप्तमी	आयंसि, आयम्मि	आयासु, आयासुं
संबोहण	आया !	आया !

'आया' या आता, आदा, अप्पा आदि के रूप भी इसी तरह चलेंगे।

'राया' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	राया	राया, रायाणो, राइणो
बीआ	रायं	राया, रायाणो, राइणो

तइया	राएण, राएणं, राइणा, रण्णा	रायाहि, रायाहिं
चउत्थी	रायस्स, रायाते, राइणो रण्णो	रायाण, रायाणं
पंचमी	रायत्तो, रायातो, रायाहिंतो राइणो	रायत्तो, रायातो, रायाहिंतो रायासुंतो
छट्ठी	रायस्स, राइणो, रण्णो	रायाण, रायाणं
सप्तमी	रायंसि, रायम्मि	रायासु, रायासुं
संबोहण	राय! राया!	राया!

आकारांत स्त्रीलिंग 'चंदणा' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	चंदणा	चंदणा, चंदणाओ
बीआ	चंदणं	चंदणा, चंदणाओ
तइया	चंदणाए	चंदणाहि, चंदणाहिं
चउत्थी	चंदणाए	चंदणाण, चंदणाणं
पंचमी	चंदणाए	चंदणाहिंतो, चंदणासुंतो
छट्ठी	चंदणाए	चंदणाण, चंदणाणं
सप्तमी	चंदणाए	चंदणासु, चंदणासुं
संबोहरण	चंदणे! चंदणा!	चंदणा!

'चंदणा' के समान खमा, भद्दा, सुभद्दा, णंदा, सुणंदा, गंगा, चंचला, पदमा, केता, सिला (शिला-पत्थर), भज्जा/भारिया, भज्जा/भारिया, कहा, कण्णा, साला (शाला), बालिगा, रमा, माला, रामा, लता, सुता, विमला, अंजणा, रंजणा, अंबा, इच्छा, भिक्खा (भिक्षा), दिक्खा (दीक्षा), सिक्खा (शिक्षा) आदि के रूप भी चलेंगे।

इकारांत स्त्रीलिंग 'बुद्धि' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ
बीआ	बुद्धिं	बुद्धी, बुद्धीओ

तइया	बुद्धीए	बुद्धीहि, बुद्धीहिं
चउत्थी	बुद्धीए	बुद्धीण, बुद्धीणं
पंचमी	बुद्धीए, बुद्धीहिंतो	बुद्धित्तो, बुद्धीहिंतो, बुद्धीसुंतो
छट्ठी	बुद्धीए	बुद्धीण, बुद्धीणं
सप्तमी	बुद्धीए	बुद्धीसु, बुद्धीसुं
संबोहण	बुद्धि!	बुद्धी!

तृतीया एकवचन से लेकर सप्तमी एकवचन पर्यन्त अर्धमागधी शौरसेनी में प्राय: 'ए' प्रत्यय होता है, कहीं-कहीं पर 'इ' भी होता है। साहित्यिक प्राकृत में अ, आ, इ और ए प्रत्ययों का प्रयोग होता है। यथा :- चंदणाअ, चंदणाइ, बुद्धीइ।

अकारांत नपुंसकलिंग 'णाण' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	णाणं	णाणाइ, णाणाइं, णाणाणि णाणाणिं
बीआ	णाणं	णाणाइ, णाणाइं, णाणाणि णाणाणिं
तइया	णाणेण, णाणेणं	णाणेहि, णाणेहिं
चउत्थी	णाणस्स, णाणाते णाणाए	णाणाण, णाणाणं
पंचमी	णाणत्तो, णाणातो णाणातु, णाणाओ णाणाउ, णाणाहि णाणाहिंतो	णाणत्तो, णाणातो, णाणातु णाणाओ, णाणाउ, णाणाहि णाणाहिंतो, णाणासुंतो
छट्ठी	णाणस्स	णाणाण, णाणाणं
सप्तमी	णाणंसि, णाणे	णाणेसु, णासेसुं
संबोहरण	णाण! णाणे!	णाणाणि!

'णाण' शब्द की तरह निम्न रूप बनेंगे।

पवयण, वयण, णयण, वयण, धण, मण, वण, पोत्थअ, जल, सुह, दुह, सत्थ

(शास्त्र), वत्थ (वस्त्र), सवण (श्रवण-कान), उज्जाण (उद्यान), झाण (ध्यान), ठाण (स्थान), माण, रतण, रदण (रयण), णेत्त (नेत्र), दंसण (दर्शन), चारित्त (चारित्र), मित्त, विस (विष), जलज (कमल), णीरज, सरोज, कुसुम, कुमुद, पुंडरीग, सोगंधिग आदि के रूप चलेंगे।

इकारांत नपुंसकलिंग 'अक्खि' शब्द के रूप

पढमा	अक्खिं	अक्खीइ, अक्खीइं, अक्खीणि, अक्खीणिं
वीआ	अक्खिं	अक्खीइ, अक्खीइं, अक्खीणि, अक्खीणिं

शेष पुलिंग की तरह रूप बनेंगे। 'अक्खि' शब्द की तरह दहि, वारि, अट्ठि के भी रूप चलेंगे।

उकारांत नपुंसकलिंग 'वत्थु' शब्द के रूप

पढमा	वत्थुं	वत्थूइ, वत्थूइं, वत्थूणि, वत्थूणिं
वीआ	वत्थुं	वत्थूइ, वत्थूइं, वत्थूणि, वत्थूणिं

दारु, जाणु, महु, अंबु, वणु, अस्सु, जतु (लाख), समसु (श्मश्रु-दाढ़ी), साणु (चोटी), तिपु, तालु आदि के रूप 'वत्थु' की तरह चलेंगे।

नियम निर्देश 'कर्मकारक' (कत्तु-इट्ठतमं कम्मो)

(1) कर्ता अपने क्रिया व्यापार के द्वारा जिस वस्तु को सबसे अधिक प्राप्त करने की इच्छा करता है, वह कर्म है। (कम्मणि वीआ) वीरं णमामि। धीरं सरामि। पोत्थअं पढामि। गाहं लहामि। धाणं कुणेमि।

(2) दुह, याच, पच, दंड, रुध, पुच्छ, चि, वद, सास, जि, मह, मुस, क्रियाओं के योग में द्वितीया होती है। यथा - गावं दुहति। बलिं याचते। विणयं याचते। ओदणं पचति। सो छत्तं दंडति। कम्मं रुधति/रोधति। पण्हं पुच्छति। पुप्फाणिं चिणेति। धम्मं वदति, धम्मं सासति। दहिं महति। चोरं मुसेति/समणं णयति। धणं हरति। हलं कस्सति। भारं वहसि।

(3) देस, काल, भाव, गंतव्य आदि में 'कर्म' कारक होता है। यथा - राजपुरं समति। मासं असति। गोदोहणं करेति। कोसं चलति।

(4) गत्यर्थक, गम, रण, बुध्यर्थक-बुह, णा, विद/वेद, प्रत्यवसानार्थक-अक्ख, अद, मुंज, शब्दकर्मवाचक,-पढ, उच्चर आदि में कर्म का प्रयोग होता

है। यथा - सत्तुणो सग्गं गच्छति। णाणं णाति। वेदं वेदति। फलं भक्खति/अदति/भुंजति/पाठं पढति/उच्चरति/उच्चरइ।

(5) उव, अणु - अधि और 'आ' पूर्वक 'वस' धातु में द्वितीया होती है। यथा गामं उववसति। समणं अणुवसति/पुरं अधिवसति/गुरु वणं आविसति।

(6) अधि + सय, अधिचिट्ठ ओर अहि + आस में द्वितीया होती है। यथा - गामं अधिसमति। गामं अहिचिट्ठति। गामं अहिआसति।

(7) अधि + णिविस क्रिया में द्वितीया होती है। पव्वयं अहिणिविसति।

(8) समया, णिअसा, हा, धिग, अंतरा, अंतरेण, अति, जेण, विना, सव्वतो, उभयतो, परितो, अहितो आदि में भी द्वितीया होती है। यथा - समया पव्वयं णई। णिअसा पव्वयं वणं। हा! णरिंद वाही। इणं जम्मिगंधिग अंतरा णयइं णामो। अंतरेण धम्मं सुहं च। अइबुइं महाबलं कुणति। जेण जिणवरं सरति, तेण झाणं हवति। सव्वतो णयरं संती। उभयतो वणं। परितो जिणं दंसणं। जिणं बिना ण गइ।

(9) लक्खण, अभि, वीप्सा, इत्थंभूत, पडि, परि, अनु आदि के योग में द्वितीया होती है।

(10) क्रिया विशेषण शब्द में द्वितीया होती है। आसो सत्तरो धावति।

प्राकृत-वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

से/सो आण-बले, से/सा णाणबले, मित्तबले, से/सो पेच्चबले, से/सो देवबले से/सो रायबले, से चोरबले, से/सो अतिथिबले, से किवणबले, से समणबले, इच्चेतेहिं विरुवरुवेहिं कज्जेहि दंडसमादाणं सपेहाए भया कज्जति, पावमोक्खो त्ति मण्णमाणं अदुरा आसंसाए।

पिंडं वा लोयं वा खीरं वा दहिं वा णवणीतं वा धयं वा गुलं वा तेल्लं वा महुं मज्जं वा मंसं वा संकुलिं फाणितं पूपं वा सिहरिणिं वा लभिस्सामि।

निम्न वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए

महावीर नगर में प्रवेश करते हैं। वहां उद्यान में बैठते है। वे लोगों को समझते हैं। चारों ओर कर्म हैं। कर्मों को जो समझता है, वह मुक्त होता है। चंदणा जीवों के प्रति दया करती है वह माता को पूजती है। पिता को आदर देती है। वह बुद्धि को फैलाती है। वह महावीर के समीप आती है। चंदना का हृदय धर्म की ओर अग्रसर होता है। वह जीवन पर्यन्त धर्म तक रहती है। महावीर से शिक्षा मांगती है। दीक्षा को कहती है। वह उनसे धर्म पूछती है। धर्म से तत्त्व मथती है। ज्ञान के बिना सुख नहीं।

उत्तर दीजिए

(1) कर्म क्या है? वस्तु का व्यापार क्या है।

(2) कर्म में द्वितीया कब होती है?

(3) दुह, याच, पुच्छ में द्वितीया का प्रयोग कीजिए।

(4) अभितो, परितो, उभयतो के वाक्य प्रयोग कीजिए।

(5) अंतरा, अंतरेण, विणा के सरल वाक्य बनाइए।

(6) उसहमजिंय च वंदे, संभव-अहिणंदणं च सुमइं। वा क्या पूर्ण करें और। पद लिखकर विभक्ति का निर्देश कीजिए।

द्वितीया प्रयोग- (पुं) जिणं णमइ। जिणा णमंति

स्त्री - धारणिं देविं पणमइ। ताओ अंजणं सरंति।

(नपुं) इमं दहिं भुंजइ। इमाणिं आगमसुत्ताणिं पढंति।

क्रिया प्रयोग कीजिए-मालं, पुत्तं, सत्थं, णाणं, पवयणं, आयारं, सायरं। मालाओ, वयणाणिं, पयणाणिं, सुत्ताणिं, फलाइ, जलाइं। चरिताणि, बणाइं।

करण कारक

तइय-पण्णावणा पवेस

तदिया विहत्ती-करणकारग-(साधकतमं करणं) से, के द्वारा।

जो क्रिया की सिद्धि में सबसे अधिक सहायक होता है वह कारण कहलाता है। यथा-पवयणेणं अप्पसुद्धिं करेति। दंसणेण लाहं पत्तेति/पत्तेइ। सुहेण सुहो।

वाक्य प्रयोग

समणो सहावेण पवित्तो। सुहेण आता सुहो हवति। असुहेण अपवित्तो। णाणेणं, दंसणेण चरित्तेणं च आतं रक्खति। अज्झयणेणं वसति। धणेण किं पयोजणं। सो णाणेण हीणो। बालगो अज्झयणेणं सुहं पावति। आसवेण कम्माणि आगच्छंति। मासेण उववासं करेति। गुरुणा सह सिस्सो अज्झयणं कुणेति। तवेण सार्क/समं/सद्धिं झाणं झाति। णाणेण विणा ण चरित्तं दंसणेण विणा ण णाणं। दंसणेणं णाणेणं चरित्तेणं एगेणं विणा ण मोक्खो।

समणेणं भगवता महावीरेणं आइगरेणं सय-संबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिस-वर-पुंडरीएणं पुरिस-वर-गंध- हत्थिणा लोगुत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं

लोगपईवेणं लोग-पज्जोअगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं बोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मणायएणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टिणा अप्पडिहय-वर-णाण-दंसण-धरेणं वियट्ट-छउमेणं जिणेणं जावएणं तिण्णेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा। (समवायांग 1)

प्राकृत कीजिए

चारित्र से मनुष्य पवित्र होता है। शुभ से स्वर्ग पाता है। अशुभ से कुनर होता है। शुद्ध से परमात्म स्वरूप को प्राप्त करता है। श्रमण से धर्म चलता है। महावीर से पूछता है। तप से मन वश करता है। आश्रव से कर्म आते हैं। बन्ध से मुक्ति नहीं है। पर्यावरण से वातावरण शुद्ध होता है। प्रदूषण से मानसिक और शारीरिक कष्ट होता है। कलम से लिखता है। दण्डे से मारता है। पिता के साथ ठहरता है।

नियम निर्देश

1. कत्ति करणम्मि तदिया (कर्तृ करण में तृतीया होती है।) झाणेण तवेण कम्मं झएति।
2. प्रकृति अर्थ में तृतीया होती है। यथा-सहावेण सुंदरो लोओ।
3. फल प्राप्ति अर्थ में तृतीया होती हैं यथा-संवच्छरेणं झाणेणं मुत्ती।
4. सहत्थे तदिया-सह अर्थ में तृतीया होती है। पितुणा सह गच्छति।
5. कार्यसिद्धि अर्थ में तृतीया होती है। (सिद्धीइ तदिया) मासेण झाणं।
6. अंग विगारत्थ-लक्खणे 'जहां अंग विकार लक्षित होता है, वहां तृतीया होती है। णेत्तेण हीणो। पादेण खंजो। कण्णेण वहिरो। कटिणा कुब्जो।
7. इत्थं भूत-लक्खणे-इत्थंभूत अर्थ में तृतीया होती है। उवगरणेण साहू। मोणेण मुणी 'कमंडुलेणं साहगो। गंथ-रहिएणं निगंथो।
8. हेतुम्मि-हेतु अर्थ में तृतीया होती है। साहणाए परिवसति अत्थ। सवेण सुद्धी। झाणेण साहू। धणेण कुलं। दाणेण पत्तं। पुण्णेण दंसणं।
9. किं, कज्जं, अट्ठं (अर्थ), पयोजणं एवं अलं के योग में तृतीया होती है। धणेण किं? छत्तेण कज्जं। किमट्ठं णरिंदेण याचते। अलं समेण।
10. शपथ अर्थ में तृतीया होती है। (सपथेणं च) यथा- सच्चेण सवामि।
11. सत्तमीए दतिया-तेणं कालेण भगवता महावीरेणं। यथा :-

जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिं
णाणेण, णाणेणं	णाणेहि, णाणेहिं

उत्तर दीजिए

1. किसके योग में तृतीया होती हैं।
2. फलार्थ, इत्थभूतार्थ में तृतीया होती है, उदाहरण दीजिए।
3. हेतु अर्थ में कौन सी विभक्ति होती है?
4. कत्थ (कुत्र), ईसिं (ईषत्-थोड़ा), कल्लं (कल), तं जहा - (जैसा कि), सह, साकं, सद्धि, पुरा आदि अव्ययों के प्रयोग के साथ तृतीया के वाक्य बनाइए।
5. भुञ्ज (भुंज् - खाना), अस (होना), संगह (एकत्रित करना), भूस (सजाना), कुण, कर, चत्त, अच्छ, आढव (प्रारंभ करना), किण (क्रीण खरीदना), धुण, धर, गण, गज्ज आदि क्रियाओं का तृतीया के वाक्यों के साथ प्रयोग कीजिए।

सम्प्रदान कारक

चतुत्थी विहत्ती :– (चतुत्थी संपदाणम्मि) संप्रदान अर्थ में चतुर्थी होती है। यथा–समणाणं सत्थाणि। छत्ताणं पोत्थगणिं। बालाणं सिक्खा। णिंदाण दया। वणप्फदीणं च रक्खणं देंति।

वाक्य प्रयोग

अहं जिणस्स णमेमि। तुमं समणस्स सत्थं देसि। तुम्हे जिणस्स भत्ती। अरिहंताणं सिद्धाणं आइरियाणं उवज्झायाणं साहूणं णमो। अहं जलस्स गच्छामि। मुणी सज्जणाणं उवदेसति। गुरु णाणस्स पेसति/पेसइ।

गाथा का अर्थ कीजिए

अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो।
तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गाय - विराहणा।। (उत्त. 2/17)

प्राकृत कीजिए

वह ज्ञान के लिए विद्यालय जाता है। श्रमणोपासक श्रमणों को नमन करता है। श्रावक गुरु की प्रशंसा करता है। श्राविका श्रमणियों के लिए आहार देती है। बालक पुस्तक के लिए पैसे मांगता है। तुम सब अरिहंत प्रभु को नमन करते हो। उपाध्यायों

के लिए यह उपकरण है। बालिकाओं के लिए शिक्षा, श्रमणों के लिए भिक्षा, ज्ञानियों के शास्त्र, छात्रों को पुस्तक और निर्धनों के लिए दान देता हूं। मुनि तप के लिए वन में जाते हैं। साधु ज्ञान के लिए स्वाध्याय (सज्झायं) करते हैं।

नियम निर्देश

1. 'कम्मुणा अहिप्पेति स संपदाणं' जिसको भली भांति प्रदान किया जाए वह चतुर्थी होती है। यथा-समणाणं आहारं देति।
2. संपदाणे तु। सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। यथा-णाणिस्स सत्थं देति।
3. रुच्चत्थे चतुत्थी-रुच/रोच अर्थ में चतुर्थी होती है। समणस्स रोचते णाणं
4. तादत्थे वि। तादर्थ/के लिए अर्थ में चतुर्थी होती है। पढणत्थं विज्जालयस्स गच्छति।
5. कोह-दोह-ईरिस-असूयत्थे चतुत्थी। कोह (क्रोध) दोह (द्रुह्-द्रोह करना), ईरिस (ईर्ष्य्-ईर्ष्या करना), असूय अर्थ में चतुर्थी होती है। यथा-सुट्ठो सज्जणस्स कोहति/दोहति/ईरिसति/असूयति। असूयइ।
6. इच्छत्थे। इच्छा अर्थ में चतुर्थी होती है। सो णाणस्स इच्छति।
7. सलाह (श्लाघ्-प्रशंसा करना), गुह (हनु-छिपाना), चिट्ठ, सप (शप् - शपथ लेना) अर्थ में चतुर्थी होती है। (सलाह-गुह-चिट्ठ-सपत्थे चतुत्थी)। यथा णाणिस्स सलाहति। पावस्स णुहति। उज्जाणस्स चिट्ठति। सिरस्स सपति। सयइ।
8. गत्यत्थे-गति अर्थ में चतुर्थी होती है। यथा-आहारं गच्छति साहू।
9. हित-सुहत्थे चतुत्थी। हित और सुख अर्थ में चतुर्थी होती है। यथा-आइरियो हितस्स परिभमति। गच्छति। सव्वेसिं जीवाणं सुहं अत्थि।
10. भम-खेम-अत्थ-सक्क-णम-कल्लाण-इच्छ-कहत्थे चतुत्थी।
11. प्राकृत में चतुर्थी और षष्ठी में समानता है। अर्थात् चतुर्थी के स्थान पर षष्ठी के प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जीवस्स (एकवचन)जीवाण (बहुवचन)।
12. चतुर्थी की पहचान वाक्य रचना से होती है। जैसे।

    णमो अरिहंताणं = अरिहंतों को / अरिहंतों के लिए नमन। 'नम' के योग में चतुर्थी।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व-साहूणं।।

चतुर्थी-जीवस्स (पुं.)	जीवाण (पुं.)
वणस्स (नपुं.)	वणाण (नपुं.)
सव्वस्स (पुं.) नपुं. सर्वनाम।	सव्वाण, सव्वेसिं (पुं. नपुं.) सर्वनाम
मालाए, मालाइ (स्त्री.)	मालाण, मालाणं (स्त्री).

अपादान कारक

पंचमी-विहत्ती-(अपादान कारक) धुवमपाए अवादाणं। अवादाणे पंचमी। पदार्थ के विच्छेद होने अर्थ में पंचमी विभक्ति होती है। यथा-संजोगा/संजोगातो विप्पमुक्कस्स। संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो।

वाक्य प्रयोग

महावीर आज नगर से आते हैं। वे संजोग से मुक्त हैं। वे कहते हैं-जो धर्म से प्रमाद करता है वह नष्ट हो जाता है। प्रमाद से रहित शीघ्र मुक्त होता है। ध्यान से च्युत व्यक्ति नष्ट हो जाता है। ध्यान से शीघ्र कर्म क्षय कर लेता है।

प्राकृत वाक्यों का अनुवाद कीजिए

जो इमातो दिआतो वा अणुदिसातो वा अणुसंचरंति, सव्वातो दिसातो, सव्वातो अणुदिसातो सहेति, अणेग-रुवातो जोणीतो संधेति विरुव-रुवे फासे पडिसेवेदयति। (आ 1/1/6) तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरं पंचहत्थुत्तरे यानि होत्था हत्थुत्तराहिं चुते, चइत्ता गर्भ वक्कंते, हत्थुत्तराहिं गब्भातो गब्भं साहरितेस, हत्थुत्तराहिं जाते, हत्थुत्तराहिं सव्वतो सव्वताए मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वइते, इत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अव्वाघाते णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवल-वर-णाण-दंसणे समुप्पण्णे सातिणा भगवं परिणिव्वुते।

नियम निर्देश

1. अवादाणे पंचमी। यथा-पावातो विरमति। कम्मातो मुरुए।
2. जुगुच्छ-विराम-पमादत्थे पंचमी। पावातो जुगुच्छते। पावातो विरमति। धम्मातो पमादयते।
3. भयत्थे पंचमी। भय अर्थ में पंचमी होती है। यथा-पावातो भएति। कम्मातो विभेति। चोरातु विभेति। सप्पाठ विभए।

4. हेउत्थे वि। हेतु अर्थ में भी पंचमी होती है। णियमातो सम्मदिट्ठी।
5. वारणत्थे पंचमी-निवारण अर्थ में पंचमी होती है। पावातो णिवारयइ।
6. परा + जि अर्थ में पंचमी होती है। अज्झयणातो पराजयते।
7. ववधाणत्थे पंचमी। व्यवधान अर्थ में पंचमी होती है। वीरो णिलीयते कम्मातो
8. उप्पत्ति-जोगे पंचमी। उत्पत्ति के योग में पंचमी होती है। गंगा पहवेति हिमालयातो। णम्मादा अमरकंटकातो पहवेति।
9. लज्जि रत्थे पंचमी। लज्जा अर्थ में पंचमी होती है। ससुरातो बहू लज्जेति।
10. विणत्थे। विना के अर्थ में पंचमी होती है। सेवातो बिना ण फलं।
11. दिशा, विदिशा या अन्य किसी स्थान से आने या जाने में भी पंचमी का प्रयोग होता है। सो दाहिण दिसाओ आगच्छइ = वह दक्षिण दिशा से आता है। ते उवासगा पासाओ विरमंति = वे/वे दोनों/वे सब श्रावक पाप से दूर होते हैं।

	एक वचन	बहुवचन
पंचमी-	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ
(पुं.)	जिणाहि, जिणाहिंतो, जिणा	जिणाहि, जिणाहिंतो, जिणासुंतो
		जिणेहि, जिणेहिंतो, जिणेसुंतो

नपुसंकलिंग में उक्त प्रकार से ही रूप बनेंगे।

स्त्रीलिंग	मालाओ, मालाउ	मालाओ, मालाउ
	मालाए, मालाइ	मालाहि, मालाहिंतो, मालासुंतो
सर्वनाम (पुं.) (नपुं.)	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ
	सव्वाहि, सव्वाहिंतो	सव्वाहि, सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो
		सव्वेहि, सव्वेहिंतो, सव्वेसुंतो
स्त्री (सर्व.)	सव्वाओ, सव्वाउ	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि
	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो

सम्बन्ध कारक

संबंध कारक-का, की, के (संबंधत्थे छट्ठी) सम्बंध अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती हैं। यथा-वीरस्स मातु पिअकारिणी। आइरियस्स एस उवएसो अत्थि।

वाक्य प्रयोग

सत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा रायपेसियाण वा रायवंसट्ठियाणं वा अंतो वा बाहि वा गच्छंताणं वा संणिविट्ठाणं वा विमंतेमाणाणं वा अणिमंतेमाणाण वा असणं वा लाभे संते णो पडिगाहेज्जा। आ. द्वि. 1/3/346)

जस्स णं विक्खुस्स एवं भवति (आ चा 8/7/277) एगस्स अद्धमासस्स आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा णीससंति वा। तेसिं एणं देवाणं एगस्स वास-सहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति। (सम 2/8)

प्राकृत कीजिए

वैशाली गणराज्य का शासक चेटक, चेटक की पुत्री त्रिशला, त्रिशला का पुत्र महावीर, महावीर का शासन जिनशासन जो इस समय चल रहा है, वह अमर है। उस शासन के श्रावक-श्राविका हैं। श्रमण-श्रमणी उनके वचन पढ़ते हैं। जो सूत्र हैं, आगम हैं। आगम का सार आचार है। वे आचार का आचरण करते हैं। ज्ञान की शोभा आगम से है। चारित्र की पवित्रता आचरण से है। दर्शन का नाम श्रद्धा है, प्रबल विश्वास, उत्तम विश्वास का यही कारण है।

नियम-निर्देश

1. छट्ठी हेउप्पजोगे-हेतु प्रयोग में षष्ठी होती है। यथा-अज्झयणस्स वसति।
2. लक्खितत्थे छट्ठी-लक्षित अर्थ प्रगट करने में षष्ठी होती है। यथा-चंपा-णयरीए बहिं उज्जाणं राजपुरस्स पच्छिमो वणं।
3. अधि-इ-ज्ज-ईसत्थे छट्ठी। अधि + इ दय (दया) ईस (समर्थ होना) अर्थ में षष्ठी होती है। चंदणा णिय - कम्माण सरति। णेमी पसूण दयते। गुरु सिस्सस्स ईसते।
4. दूरंतिगत्थे छट्ठी। दूर और अन्तिक (पास) अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है। वणं गामस्स दूरं। महावीरस्स अंतिगं के वि णत्थि।
5. कत्ति-कम्मणो कित्ती। 'कृत्' प्रत्ययों के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है। वीरस्स झाणं। सेणिगस्स भत्ती।
6. आयुस्स-मद्द-भद्द-कुसल-सुह-अत्थ-हितत्थे छट्ठी। छत्तस्स भद्दं।
7. जोग्ग-उचितुवजुत्त-अणुरुव-सरिसत्थे छट्ठी।
8. कड-समक्खत्थे छट्ठी। कृत ओर समक्ष अर्थ में षष्ठी होती है। धम्मस्स कडे। रण्णो समक्खे।

9. हिंसत्थे वि। हिंसा अर्थ में षष्ठी होती है। खलो पसूण हणंति।

सोचिए और समझिए

(पुं.) महावीरस्स देसणा अत्थि	समणाण/समणाणं समूहो अत्थि।
(स्त्री.) समणीए अज्झयणं अत्थ अत्थि।	समणीण/समणीणं चाउमासो अत्थि।
(नपुं.) णाणस्स सारो इमो अत्थि।	सुत्ताण सारो आयारो अत्थि।

अधिकरण कारक

सत्तमी विहत्ती-अधिकरण कारक। आधारो अहिकरणं। आधार का नाम अधिकरण है। अहिकरणे सत्तमी। यथा-मोक्खे इच्छा। झाणे उवविसति। णाणम्मि रतो। तवम्मि पवीणो। चरित्ते ठियो। गुणेसु रत्ता। आहारे कुसला।

वाक्य प्रयोग

नगर में श्रमण हैं। श्रमण पर विश्वास है। हम सब प्रार्थना में जाते हैं। हम ध्यान में लीन होते हैं। पंच परमेष्ठि - पद में पढ़ते हैं। अरिहंत में रमते हैं। सिद्ध में सिद्धि देखते हैं। आचार्य में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप होते हैं। वे ज्ञान में रत, ध्यान में लीन, तप में प्रवीण और चारित्र में रुचि रखते हैं। तू पर्व में उपवास करता है। तुम दोनों अनगार में श्रद्धा रखते हो। मैं धर्म में प्रवीण होता हूं। वे दोनों सभा में जाते हैं।

नियम निर्देश

1. जिस समय कोई कार्य होता है। उस समय सप्तमी होती है यथा- चेत्तमासस्स तेरहम्मि जम्मो महावीरो।
2. साहु-असाहुप्पजोगे साधु और असाधु के प्रयोग में सप्तमी होती है। यथा-साहू अत्थि जिणालयम्मि। असाहू अत्थि विकालेगोचरम्मि।
3. णिमित्तातो कम्मजोगे-जहां निमित्त/प्रयोजन से कार्य किया जाता है, वहां सप्तमी होती है। कम्म खयम्मि तवे।
4. जस्स भावेण भावो। जिस भाव से दूसरी क्रिया का होना लक्षित हो वहां सप्तमी होती है। यथा-गोसु दुद्धासु गते। दिक्खासु गते सो गच्छति।
5. जहां किसी वस्तु में विशेषण द्वारा विशेषता निर्दिष्ट की जाती है, वहां सप्तमी होती है। णिद्धारणंसि सत्तमी। यथा-आइरिएसु भती।
6. णेह-आदर-अणुरागत्थे सत्तमी। स्नेह, आदर, अनुराग आदि में सप्तमी होती है। यथा-धम्मे अणुरागो, णाणंसि रुई। आगमेसु सद्धा। मुणीसुं समादरो।

7. कारणत्थे य सत्तमी। कारणवाची शब्दों के योग में सप्तमी होती है। यथा-देववसं वुड्ढिखए।
8. कुसल-णिउण-पडु-पवीण-सोण्ड-पंडित्थे सप्तमी। यथा-ववहारे कुसलो मेहकुमारो। गणहरो णाणे पंडिए। अभयकुमारा पडु कलाए।

सम्बोधन

जहां निमन्त्रण, आमन्त्रण आह्वान आदि किया जाता है, वहां सम्बोधन होता है। जैसे-सुयं मे आउसं। हे आयुष्मान्, मैंने सुना।

लज्जमाणा पुढो पास! लज्जित होता हुआ तू देख। जइणं भंते! हे भगवन् यदि ऐसा है। एवं खलु जंबु! हे जम्बू! निश्चय ही ऐसा हैं समणाउसो! हे आयुष्मान् श्रमणो! गोयमा! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति। हे गौतम! जीव लघुता को प्राप्त होते हैं। जइ णं देवाणुप्पिया। तुब्भे मए सद्धिं पव्वयह। -देवानुप्रिय! यदि तुम प्रव्रजित होते हो तो हमारे लिए अन्य कौन सा आधार है। वीर! उपदेश दें।

समणा! तव मग्गो कडिणो अत्थि - हे श्रमणों! आपका मार्ग कठिन है।

भंते! तुमं मित्तं! हे भाग्यशाली! तुम मित्र हो। सुबुद्धी! ससो सेयो अत्थि - हे सुबुद्धि! यह ठीक है।

देवि! गच्छ धम्मझाणं कुणसु। हे देवी! तुम जाओ। धर्म ध्यान करो।

भो तेयलिपुत्ता! पुरओ पवाए - हे तेतलिपुत्र! आगे प्रपात (गर्त) है।

सुवरियं खलु भो! दोवईए। अहो! द्रौपति से अच्छा वरण किया।

सम्बोधन में प्रथमा की तरह रूप बनते हैं। इसके एकवचन में दीर्घांत प्रयोगों का प्रायः ह्रस्वांत हो जाता है। कभी-कभी ह्रस्व का दीर्घ भी होता है।

आठ–क्रिया विचार

(क) वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भणइ, भणए	भणंति, भणेंति
	भणइ, भणति (अर्धमागधी)	
	भणदि (शौरसेनी)	
मध्यम पुरुष	भणसि, भणेसि	भणित्था
	भणसे	भणह भणेह (अर्धमागधी शौरसेनी),
उत्तम पुरुष	भणमि, भणेमि	भणमो, भणेमो
	भणामि	भणामो

वर्तमान काल में ज्ज, ज्जा प्रत्यय लगाकार तीनों पुरुषों के रूप बनाए जाते हैं। भणेज्ज, भणेज्जा यह प्रयोग आर्ष प्राकृतों में विशेष रूप से पाया जाता है।

अस्–है–अत्थि

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सो अत्थि	ते अत्थि, ताओ अत्थि, ते सन्ति, ताओ सन्ति।
मध्यम पुरुष	तुमं अत्थि, तुमं सि	तुम्हे अत्थि, तुम्हे त्था
उत्तम पुरुष	अहं अत्थि	अम्हे अत्थि, वयं अत्थि
	अहं अत्थिम्हि	अम्हे म्ह, वयं म्ह

-झा-

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	झाइ	झांति
मध्यम पुरुष	झासि	झाइत्था
उत्तम पुरुष	झामि	झामो

दा, णी, णे आदि के रूप इसी तरह बनेंगे।

इनके प्रयोग कारक में दिए गए हैं।

सो हसइ - वह हसता है। (अकर्मक)

सो पढइ - वह पढ़ता है। (सकर्मक)

सो हसइ के बीच कर्म नहीं प्रयुक्त हो सकता।

सो पढइ के बीच कर्म 'सुत्तं' हो सकता है।

सो सुत्तं पढइ - वह सूत्र पढ़ता है। यहां सूत्र को पढ़ना कर्म है। इसलिए सकर्मक प्रयोग है। कर्म-सकर्मक क्रिया हो तो को अवश्य निकलेगा।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्जा, भणेज्जा
	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा
	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा

सो भणेज्ज - वह कहता है, ते भणेज्जा - वे कहते हैं। तुम भणेज्ज, तुम्हे भणेज्जा, अहं भणेज्ज - मैं कहता हूं। अम्हे भणेज्जा - हम/हम दोनों/हम सब कहते हैं। सो हसेज्ज/हसइ। ते/ताओ हंसति। तुमं हसेज्जा/हससि।

भवि-काल-भविष्यत् काल - गा, गी, गे

	एगवयणं	बहुवयणं
पढम पुरिस	भणिस्सति, भणेस्सति, भणिस्सते	भणिस्संति, भणेस्संति
	भणिस्सइ, भणेस्सइ, भणिस्सए	भणिस्संते, भणेस्संते
	भणिहिति, भणेहिति, भणिहिति	भणिहिंति, भणेहिंति
	भणिहिइ, भणेहिइ, भणिहिए	भणिहिंते, भणेहिंते

मध्यम पुरुष	भणिस्ससि, भणेस्ससि, भणिस्ससे	भणिस्सह, भणेस्सह, भीणस्सित्था।
	भणिहिसि, भणेहिसि, भणिहिसे	भणिहिह, भणेहिह, भणिहित्था
उत्तम पुरुष	भणिस्समि, भणेस्समि	भणिस्समो, भणेस्समो
	भणिस्सामि, भणेस्सामि	भणिस्सामो, भणेस्सामो
	भणिहिमि, भणेहिमि	भणिस्समु, भणेस्समु
	भणिहामि, भणेहामि	भणिस्सामु, भणेस्सामु
	भणिस्सा, भणेस्सा	भणिस्सम, भणेस्सम
	भणिस्स, भणिस्सं	भणिहिमो, भणेहिमो
		भणिहिमु, भणेहिमो
		भणिहामु, भणेहामु
		भणिहिम, भणेहिम
		भणिहाम, भणेहाम

वाक्य प्रयोग

महावीर चंपा नगरी में आएंगे, वहां ध्यान करेंगे। लोगों को तत्त्व उपदेश देंगे। वे कहेंगे – जो/ तत्त्व ज्ञान करेगा, तत्त्व श्रद्धान करेगा, वह सम्यक्त्व प्राप्त करेगा। ज्ञान से आत्म विशुद्धि को प्राप्त होगा और उसकी विशुद्धि मुक्तिपथ को प्राप्त कराएगी।

निम्न धातुओं का भविष्यत् काल में प्रयोग कीजिए

अच्च, असूय, आस, अधीय (अधि + आ - पढ़ना), इच्छ, इक्ख (ईक्ष - देखना), कंप (कम्प् - कांपना), कोव (कुप् - क्रोध करना), कस्स (कर्ष् - खींचना), कुद्द (कूर्द् - कूदना), कप्प (कृप् - समर्थ होना), किर (कृ - बिखेरना), कंद (क्रन्द), कम (क्रम - चलना), कीण (क्री - खरीदना), किलिम (क्लम् - थकना), खम, छाल (क्षत् - धोना), खिव (क्षिप् - फैंकना), खुह (क्षुभ् - क्षुभित होना), खण, गज्ज, गवेस, जुगुच्छ (गुप् - निन्दा करना), घोस (घुष् - घोषणा करना), चिण (चि - चुनना), चोर (चुर् - चुराना), छिण्ण (छिद् - काटना), जण, जिण्ण (जृ - जीर्ण होना), जल (जलना), डीय (डी - उड़ना), तड - पीटना, तण (तव् - फैलाना), तव (तर्क), तज्ज (तर्ज् - डांटना), तोल (तुल - तोलना), तस (तुष् - तुष्ट होना), तिप्प (तृप् - तृप्त करना), तप (त्रप् - लजाना), धार (धारण करना), पेरय (प्रे + ईर् प्रेरणा देना), बाध (पीड़ा देना), भक्ख (भक्ष् -

खाना), भाज (भ्राज् - चमकना), मथ (मथना), सिव (सीना), सिज (सृज् - रचना)। विहर (विचरण करना), जाण (समझना) खम (क्षमा करना)।

प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठा वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति। (समवायांग पृ. 82)

निम्न क्रियाओं से पूर्व कर्ता एवं कर्म का प्रयोग कीजिए

आणवखेक्खामि, सातिण्जिस्सामि, दलियिस्सामि, लिहिहिइ, चिंतिहिंति, जाणिस्संति, मुणेहिसि, मुणिस्सह, गच्छेहिह, रोचिस्सइ, वइस्संति।

नियम

(1) भविष्यत् काल में ज्ज, ज्जा प्रत्यय लगाकार तीनों पुरुषों के रूप बनाए जाते हैं।

(2) भविष्यत् काल में कुछ क्रियाओं के आदेश होते हैं, जिनके कारण 'हिं या स्स' का प्रयोग नहीं करना पड़ता है। (1) सोच्छ (श्रु), सोच्छामि - सुनुंगा (2) गच्छ (गम्) गच्छामि - जाऊंगा (3) रोच्छ (रुदि) रोच्छामि - रोऊंगा (4) वोच्छ (वद्) वोच्छामि - कहूंगा (5) दच्छ (दृश्) दच्छामि - देखूंगा (6) मोच्छ (मुच्) मोच्छामि - छोड़ूंगा (7) वेच्छ (विद्) वेच्छामि जानूंगा (छेच्छ - छिद्) छेच्छामि - छेदूंगा (8) भेच्छ (भिद्) भेच्छामि - भेदूंगा भोच्छ (भुज्) भोच्छामि - खाऊंगा।

(3) उक्त क्रियाओं में वर्तमानकाल सम्बन्धी प्रत्यय लगाकार सभी रूप बनाए जाते हैं।

विधि/आज्ञा प्रयोग

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भणतु, भणेतु, भणउ, भणेउ	भणंतु, भणेंतु
मध्यम पुरुष	भणसु, भणेसु, भणहि, भणेहि भण, भणि	भणह, भणेह
उत्तम पुरुष	भणमु, भणेमु, भणिम	भणमो, भणेमो, भणिमो

वाक्य प्रयोग

तुम्हे वेरग्गपुव्वं चिंतेह। अच्छेरियं दिक्खा ण होतु। णाणिस्स दिक्खं हेतु। ते

पवयणं सुणेंतु। आयारंग-आगमे चारित्तस्स वण्णसु तुमं अज्ज चिंतेहि। तुम्हे वीयरागस्य वयणं सुणेह। मा बाधयेसि। अहं भाजमो। अम्हे पेरयमु। मे खमहु। अहं हिंडामि।

प्राकृत में अनुवाद कीजिए

संयोगों से रहित अनगार या भिक्षु विनय का आचरण करे। विनय के विचारों को सुने। जो तू इष्ट समझे, उसे तू पालन कर। तुम आचरण करो, उस पर ध्यान दो। वीतराग वाणी को समझो। गुरु की आज्ञा, निर्देश, उपकार आदि को पहचान। श्वान, शूकर और मनुष्य के दृष्टांत को समझो। प्रमत्त जन, हिंसक और अविरत जन इस तरह विचारें। मोक्ष है, कृत कर्मों के लिए मोक्ष नहीं है। इस संसार में वित्त से त्राण कैसे? विचारो, उठो। तुम सब मोह को छोड़ो, परिग्रह त्यागो, विषय-प्रवृत्ति से हटो, जागृत होओ तथा आत्मज्ञानी बनो। मुझसे सुनो-सब भिक्षुओं, सभी अनगारों एवं साधकों में ऐसी रूचि बने, कि वे विषय-लीला से मुक्त हो जाएं।

नियम-विधि काल में ज्ज, ज्जा प्रत्यय लगाकार प्रथम मध्यम उत्तम पुरुष के सभी रूप बनाए जाते हैं।

प्रथम पुरुष	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा
मध्यम पुरुष	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा
उत्तम पुरुष	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा

भूतकाल-	इंसु, एंसु (अर्धमागधी)	
	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भणिंसु, भणेंसु	भणिंसु, भणेंसु
मध्यम पुरुष	भणिंसु, भणेंसु	भणिंसु, भणेंसु
उत्तम पुरुष	भणिंसु, भणेंसु	भणिंसु, भणेंसु

भूतकाल में भणेज्ज, भणेज्जा जैसे प्रयोग तीनों पुरुषें एवं दोनों वचनों में समान रूप से होते हैं। साहित्यिक प्राकृत में 'ईअ' प्रत्यय होता है। यथा-भणीअ।

वाक्य प्रयोग

से/सो भणिंसु - उसने कहा। ते भणिंसु - उन्होंने कहा। तुमं भणेसु - तूने कहा। तुम्हे भणिंसु - तुम सबने कहा। अहं भणिंसु - मैंने कहा। अम्हे भणिंसु - मैंने कहा।

प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

ते हंता हंता बहवे कंदिंसु। पुट्ठो वि णाभिभासिंसु। अभिरुज्झ कायं विहरिंसु।

आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु। संबुज्झमाणे पुणरवि आसिंसु भगवं।

जाणवया लूसिंसु। समणा तत्थ एव विहरिंसु। परिस्सहाइं लुंचिंसु।

पंसुणा अवकरिंसु। आसणाओ खलइंसु। उच्चातइयं णिहणिंसु।

नियम

(1) प्राकृतों में भूतकाल के लिए पृथक् रूप नहीं, अपितु वचन, लिंग एवं पुरुष के अनुसार क्रियाओं में विभक्ति सूचक प्रथमांत प्रत्यय लगा लिए जाते हैं। यथा – सो गओ, महावीरेण पण्णत्तो। चंदणा समगया। अंजणा दुही जाया। आसिंसु = खड़े, लूसिंसु = कष्ट दिया, लुंचिंसु = लोचा, अवकरिंसु = ढका।

(2) महाराष्ट्री प्राकृत में 'ईअ' प्रत्यय लगाकर तीनों पुरुषों में समान रूप बनाए जाते हैं।

प्रथम पुरुष	भणीअ	भणीअ
मध्यम पुरुष	भणीअ	भणीअ
उत्तम पुरुष	भणीअ	भणीअ

प्राकृत में अनुवाद कीजिए

वे महावीर चंपा नगरी में आए। उन्होंने जनपद के लोगों को प्रवचन दिया। उन्होंने कहा, समझाया, बोध कराया, ज्ञान दिया, तत्त्वचिंतन प्रस्तुत किया। तृतस्पर्श, शीतस्पर्श, तेजस्पर्श और दंक्षमशक भी परिषह हैं। जो इनको सहन करता है। वह मोक्ख की साधना में सफल होता है। जो वीर हैं, उन्होंने ही नाना प्रकार की वज्रभूमि, शुभ्रभूमि के प्रान्तों की शय्याओं का सेवन किया। उन्होंने दंडों, मुष्टि, कपालों एवं मिट्टि के ढेलों को सहन किया। जिन्हें आसन से गिराया, वे ही ऊंचे हुए उत्कृष्ट मार्ग की ओर गए। सिद्धि गति को प्राप्त हुए।

नौ–कृदन्त विचार

किर्यंत-पजोग-(कृदंत प्रयोग)

धातुओं के अन्त में जोड़कर जिस प्रत्यय द्वारा संज्ञा, विशेषण और अव्यय के वाचक शब्दों को बनाया जाता है, उन्हें कृत् कहते हैं तथा उनके योग से बने शब्दों को कृदन्त कहते हैं। यथा–भण + न्त = भणंत = भणंतो। भणंतो बालो अत्थ आगच्छति। आगच्छइ। पढंता बाला चिंतइ।

कृदन्त

(1)	वर्तमानकालिक कृदंत – न्त, माण – हुआ	(शतृ, शानच्)
(2)	भूतकालिक कृदन्त – त/य –	(क्त)
(3)	भविष्यत्कालिक कृदन्त – न्त, माण से पूर्व 'हि' या 'स्स' का प्रयोग	
(4)	पूर्वकालिक कृदन्त (सम्बन्ध कृदंत) तूण, तूणं, ऊण, ऊण, दूण, दूणं	(क्त्वा)
(5)	निमित्तार्थक कृदंत (हेत्वर्थ कृदन्त) तुं, उं, दुं	(तुमुन्)
(6)	विध्यर्थ कृदंत (विधि – अर्थक कृदन्त) तव्व, दव्व, यव्व	(तव्यत्)

(क) वर्तमानकालिक कृदन्त

(1) वर्तमान काल का बोध कराने के लिए 'न्त' और 'माण' इन दो प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

	पुलिंग	स्त्रीलिंग	नपुसंकलिंग
लघ/लव	लघंतो	लघंता/लघंती	लघंतं
लिह	लिहंतो	लिहंता/लिहंती	लिहंतं

वस	वसंतो	वसंता/वसंती	वसंतं
सक्क	सक्कंतो	सक्कंता/सक्कंती	सक्कंतं
सास	सासंतो	सांसता/सांसती	सासंतं
सिज	सिजंतो	सिजंता/सिजंती	सिजंतं
चिट्ठ	चिट्ठंतो	चिट्ठंता/चिट्ठंती	चिट्ठंतं
फास	फासंतो	फासंता/फासंती	फासंतं
सय	सयंतो	सयंता/सयंती	सयंतं
सर (स्मद्)	सरंतो	सरंता/सरंती	सरंतं
हर (हृ)	हरंतो	हरंता/हरंती	हरंतं

क्वचित् 'न्त' एवं 'माण' प्रत्ययों से पूर्व प्राकृत में 'अ' का 'ए' या 'अ' का 'इ' भी होता है।

आत्मनेपदी धातुओं में 'माण' प्रत्यय

धातु	पुलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
इक्ख (ईक्षु)	इक्खमाणो	इक्खमाणा/इक्खमाणी	इक्खमाणं
कंप	कंपमाणो	कंपमाणा/कंपमाणी	कंपमाणं
कर	करमाणो	करमाणा/करमाणी	करमाणं
जण	जणमाणो	जणमाणा/जणमाणी	जणमाणं
तुर (त्वर)	तुरमाणो	तुरमाणा/तुरमाणी	तुरमाणं
ताय (त्रै)	तायमाणो	तायमाणा/तायमाणी	तायमाणं
दय	दयमाणो	दयमाणा/दयमाणी	दयमाणं
दिप्प	दिप्पमाणो	दिप्पमाणा/दिप्पमाणी	दिप्पमाणं
णय	णयमाणो	णयमाणा/णयमाणी	णयमाणं
(मन)	मण्णमाणो	मण्णमाणा/मण्णमाणी	मण्णमाणं
जत (यत्)	जतमाणो	जतमाणा/जतमाणी	जतमाणं
जुज्झ (युध्)	जुज्झमाणो	जुज्झमाणा/जुज्झमाणी	जुज्झमाणं
लह	लहमाणो	लहमाणा/लहमाणी	लहमाणं

वंद	वंदमाणो	वंदमाणा/वंदमाणी	वंदमाणं
वत्त/वह	वत्तमाणो	वत्तमाणा/वत्तमाणी	वत्तमाणं
वड्ढ	वड्ढमाणो	वड्ढमाणा/वड्ढमाणी	वड्ढमाणं
विथ	विथमाणो	विथमाणा/विथमाणी	विथमाणं
सय (शी)	सयमाणो	सयमाणा/सयमाणी	सयमाणं
सेव	सेवमाणो	सेवमाणा/सेवमाणी	सेवमाणं
सह	सहमाणो	सहमाणा/सहमाणी	सहमाणं

उभयपदी पुलिंग धातुओं में न्त, माण प्रत्यय

कर	करंतो	करमाणो
छिंद	छिंदंतो	छिंदमाणो
जाण	जाणंतो	जाणमाणो
धाव	धावंतो	धावमाणो
णय	णयंतो	णयमाणो
पच	पचंतो	पचमाणो
लिह	लिहंतो	लिहमाणो
वह	वहंतो	वहमाणो
दुह	दुहंतो	दुहमाणो
तण	तणंतो	तणमाणो
दह	दहंतो	दहमाणो

वाक्य प्रयोग

एगे पवयमाणा - कोई कहते हुए। लज्जमाणा पुढो पास - लज्जित होते हुए देख। सत्थं समारंभमाणे - शस्त्र समारम्भ करते हुए। सत्थ समारंभमाणे समणुजाणति - शस्त्र समारम्भ करते हुए अनुमोदन करता है। आरंभमाणा विणयं वदंति - आरंभ करते हुए विनय का उपदेश करते हैं। से अबुज्झमाणे हतो - वह अबुद्ध होता हुआ दुःखी है। एगं विगिंचमाणे पुढो विगिंचति पुढो विगिंचमाणे एगं विगिंचति - एक को जीतने वाला दूसरे को जीताता है, जो दूसरे को जीतने वाला है, वह एक को जीतता है। संसार पडिवण्णाणं संबुज्झमाणाणं - संसार प्रतिपन्न/स्थित सम्यक् बोध वालों के लिए। इंदिएहिं गिलायंतो समियं साहरे मुणी - इन्द्रियों से ग्लान करते हुए मुनि समत्व

को धारण करते हैं। परिक्कमे परिकिलंते - अदुवा चिट्ठे अहायते - बैठे हुए थक जाने पर अथवा थक जाने पर बैठ जाए

प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

रुदंती चंदणा अत्थ चिट्ठइ। सा वीरं झायमाणा हवति। पंथपेही चरे चरमाणे। एस विधि अणुक्कंतो। अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा लुब्भे णं कुप्पह। पाणाइं अकुव्वमाणो सोयति। सं कमसो अणुणंतं णिमंतयंतं च। परितप्पमाणं लालप्पमाणं सततं। ओसज्झमाणा परिरक्खियंता तं णेव भुज्जो वि समायरामो। फासा फुसंती असमंजसं।

(ख) भूतकालिक कृदंत - 'त', 'य'

(1) भूतकाल कृदंत में 'त' (क्त) प्रत्यय लगता है। 'स' प्रत्यय सकर्मक धातुओं में कर्मवाच्य के लिए होता है। मए कज्जाणि किते/कडे। कए/किए।

(2) अकर्मक धातुणों में 'त' प्रत्यय जुड़ने पर विशेषण नहीं होता उससे बना हुआ शब्द नपुंसकलिंग में ह होता है। यथा - जयणामो जिणक्खातं पत्तो - जय ने जिनोक्त दीक्षा धारण की।

(3) अकर्मक धातुओं में भाववाच्य होता है। भाववाच्य में कर्ताकारक में तृतीया विभक्ति होती है और कर्म का अभाव होता है। यथा-तुमं भूतो - तू हुआ (कर्तृवाच्य) तुए भूतो - तेरे द्वारा हुआ।।

धातु	त	व
अधि + इ	अधीतो	अधीतवं/अधीतवंतो
अणविस	अणविसिते	अणुविसितवं, अणविसंतो
अच्च	अच्चिते	अच्चितवं
अस	भूते	भूतवं
आकण्ण	आकण्णिते	आकिण्णंत
आप	अत्ते	अत्तवं
आरंभ	आंरभे/आरद्धे	आरंभवं/आरद्धवं
आरुढ	आरुढे	आरूढवं
आ + लंब	आलंबिते	आलंबितवं
इक्ख	इक्खिते	इक्खितवं

'तं' प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल या समाप्ति अर्थ में किया जाता है।

वाक्य प्रयोग

अहं पढिते - मैंने पढ़ा। केवली वूया - केवली ने कहा। अकडं नो कडे - अकृत/कुकृत्य को नहीं करे। अप्पा हु खलु दुद्दमो - आत्मा ही दुर्दम है। आउक्खए चुया - आयुक्षय से च्युत हुए। हत्थगया इमे कामा - ये काम हस्तगत हैं। महावीरेण देसितं - महावीर के द्वारा कहा गया। जीमजीवं तेण णिछिट्ठो।

भूत कृदन्त के भेद

(1) सामान्यभूत कृदन्त - गते, हसिते, चलिते, हसिते आदि।

– गए/गओ, हसिओ, चलिओ, पण्णतो।

(2) प्रेरणार्थक कृदंत - क्रिया में आवि, आवे आदि प्रेरणासूचक प्रत्यय से प्रेरणार्थक कृदंत बनते हैं। यथा- पुढविसत्थं समारंभावेति - समारंभ - सम + आरंभ + आवे + ति - समारंभवेति - समारंभ करवाता है।

भण	भणावि/भणावेतं	कारिविर्ति/कारिवेतं	मुणावितं/मुणावेतं
हस	हसावि/हसावेतं	हसावितं/हसिवेतं	मुणावितं/सुणावेतं

(3) अनियमितभूत कृदन्त-जिन कृदन्तों में नियम न लगकर सहज रूप में प्रयुक्त हो जाते हैं। वे अनियमित कृदंत हैं। यथा-

सुयं/सुतं मे आउसं। आयुष्मन् मैंने सुना। णो णातं भवति - ज्ञात नहीं है। सव्वातो अणुदिसातो जो आगतो - जो सभी दिशाओं से आया है। भगवता परिण्णा पवेदिता - भगवन ने परिज्ञा कही। तिविधा इढडी पण्णत्ता - तीन प्रकार की ऋद्धियां प्रज्ञप्त हैं। सरट्ठाणा विद्यायिता - स्वर स्थान कहे गए।

निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

भगवता महावीरेणं कासवेणं पवेदिता। समणो किह जाओ।

सव्वं विलवियं गीयं सव्वं णट्टं विछवियं।

सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा।। उत्त. 13/16।।

कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय! विचिंतिया।

तेसिं फलविवागेण विप्पओगमुवागआ।। उत्त. 13/8।।

सच्च-सोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा।

ते अज्ज परिभुंजामो, किं तु चित्ते वि से तहा।। उत्त. 13/9।।

गलेहिं मगरजालेहिं मच्छो वा अवसो अहं।

उल्लिओ फालिओ गहिओ मारिओ अ अणंतसो।। उत्त. 19/15।।

कुहाड-फरसुमाईहिं वड्ढईहिं दुमो विव।

कुट्टिओ फालिओ छिन्नो तच्छिओ य अणंतसो।। 9/67।।

याद कीजिए

गया - गए, कडं - किया, पणट्ठं - नष्ट हुआ, ठितं - स्थित हुआ, हतं - मारा गया। अक्खातं - कहा गया। छिण्णो - तोड़ा, जिए - जीना। रिए - विचरण किया।

(ग) भविष्यत् कृदंत

चर + इस्स + न्त - चरिस्संतो, चर + इस्स + माण - चरिस्समाणो (पुं.)

भण + इस्स + न्त - भणिस्संते, भण + इस्स + माण - भणिस्समाणे। (पुं.)

चिंत + इस्स + न्त - चिंतिस्संतो, चिंत + इस्स + माण - चिंतिस्समाणी (स्त्री)

(घ) पूर्वकालिक कृदन्त (सम्बन्ध कृदन्त)

तूण/तूणं (क्त्वा)

पूर्वकालिक कृदन्त (कर या करके) का अर्थ व्यक्त करने के लिए तूण/तूणं, दूण, दूणं, ण/ऊणं तुं/उं आदि प्रत्यय लगाए जाते हैं।

तूण - इस प्रत्यय से पूर्व क्रिया में 'अ' का 'इ' या 'अ' का 'ए' भी हो जाता है।

भण + तूण - भणितूण/भणेतूण, भणितूणं/भणेतूणं, भणिऊण/भणेऊण भणिऊणं/भणेऊणं - कहकर। सोभणिऊण गच्छइ।

अन्य प्रत्यय ट्टु :– कट्टु। इय – चिंतिय।

म्म – णिसम्म (उ. सू. 75)

च्च आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा।

सोच्चा मेआउयं मग्गं वहवे परिभस्सइ।। (उत्त. 3/9)

च्चा किच्चा, सोच्चा अहं गच्छामि। ते सोच्चा उवएसंति।

त्ता – गेण्हित्ता, करित्ता, जयित्ता, मुणेत्ता।

त्तु – गेण्हित्तु करित्तु, जयत्तु, मुणेत्तु।

आय – धम्ममादाय, गेहिं परिण्णाय (आ चा 6/2/184) उट्ठाय

आत- धम्मात, परिण्णात (उ. सू. प. 75)

(च) निमित्तार्थक कृदन्त (हेत्वर्थ कृदन्त) - उं तुं (अर्धमागधी) दुं (शौरसेनी) प्रत्यय का अध्ययन के लिए होते हैं।

तुमं गहिउं पढसि - तुम ग्रहण करने के लिए पढ़ते हो। तुम्हे मुणेउं गच्छह - तुम सब समझने के लिए जाते हो।

अहं सुणिउं आगच्छामि - मैं सुनने के लिए आता हूं। अम्हे णच्चिउं गच्छामो - हम सब नाचने के लिए जाते हैं। ते चिंतिउं चिट्ठति - वे सोचने के लिए ठहरते हैं।

(ज) विध्यर्थ कृदन्त - (तव्व, अव्व, यव्व) तव्व (अर्धमागधी) दव्व (शौरसेनी) प्रत्यय का प्रयोग होता है।

गंतव्वं चिट्ठियव्वं णिसीयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं संजमियव्वं पमाएयव्वं। (उत्तराध्ययन पृ. 74)

हिन्दी कीजिए

सो गच्छंतो हसइ। ते पदमाणा छत्ता अत्थ णिवसंति।

ताओ णच्चंताओ बालाओ तत्थ गच्छंति। तुमं चिंतिउं गइ। तुम्हे आराहिउं देवालयं बजंति। अहं णमिऊण गच्छामि। ते सोच्चा लिहंति।

प्राकृत कीजिए

यह बालक खेलता हुआ गिरता है। गिरकर उठता है। चलने के लिए हाथ पकड़ता है। हाथों में हाथ लेता हुआ हंसता है। वे देखते हुए कहते हैं। तुम वीर हो। सर्प बगीचे से निकलता है, जिसे पकड़कर उद्यान से बाहर फेंक देता है। रोते हुए बालक हंसते हैं। वे वहां आने के लिए कहते हैं। महावीर सोचकर कहते। ठहरो। तुम सब वहाँ बैठो ऐसा निर्देश किया। धर्म कहा। लोगों ने व्रत लिए। स्वाध्याय किया। वचन सुने, आराधना की, उपासना की, फिर नियम धारण किए। वे जहाँ से आए थे, वहाँ चले गए।

दश–सर्वनाम विचार

सर्वनाम - जो संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त किए जाते हैं। जैसे सो गच्छइ। ते गच्छंति। सो समणो उवएसइ। सर्वनाम में पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुसंकलिंग तीनों ही लिंग होते हैं।

सर्वनाम के भेद

(1) पुरुषवाचक

(क) उत्तम पुरुष (first Person) - अहं गच्छामि, अम्हे गच्छाओ।

(ख) मध्यम पुरुष (Second Person) - तुम गच्छसि, तुम्हे गच्छित्था / गच्छह।

(ग) अन्य पुरुष (Third Person) - सो गच्छइ, ते गच्छंति।

(2) निश्चयवाचक (Demonstrative Pronoun) एसो गच्छइ - ये जाते हैं। एए गच्छंति - ये जाते हैं। सो लिहइ - वह लिखता है। ते लिहंति - वे लिखते हैं। इमो भणइ - यह कहता है। इमे भणंति - ये कहते हैं।

(3) अनिश्चयवाचक (Indefinite Pronoun) किंचि अत्थि - कोई है। सव्वे वाला - सभी बालक। सव्वेहि - सभी के द्वारा।

(4) सम्बन्ध वाचक (Relative Pronoun) जो गच्छइ, जे गच्छंति।

(5) प्रश्नवाचक (Interrogative Pronoun) को गच्छइ? के गच्छन्ति?

पुलिंग सर्वनाम 'सव्व'

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वो	सव्वे
द्वितीया	सव्वं	सव्वे, सव्वा

तृतीया	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिं
चतुर्थी	सव्वस्स	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वाओ	सव्वत्तो, सव्वेहि, सव्वेहिंतो
षष्ठी	सव्वस्स	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं
सप्तमी	सव्वम्मि, सव्वस्सिं, सव्वे	सव्वेसु, सव्वेसुं।

नियम- 'सव्व' पुलिंग सर्वनाम की तरह क, ज, त, उहय, इम, आदि के रूप भी बनते हैं।

नपुसंकलिंग सर्वनाम 'सव्व'

प्रथमा	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाणिं, सव्वाइं
द्वितीया	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाणिं, सव्वाइं

नियम- शेष तृतीया से सप्तमी तक पुलिंग की तरह रूप बनेंगे।

स्त्रीलिंग 'सव्वा'

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा	सव्वाओ
द्वितीया	सव्वं	सव्वाओ, सव्वाउ
तृतीया	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाहि, सव्वाहिं
चतुर्थी	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाण, सव्वाणं
पंचमी	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाहि, सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो
षष्ठी	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाण, सव्वाणं
सप्तमी	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वासु, सव्वासुं।

'अम्ह' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहं, हं	अम्हे
द्वितीया	मं, ममं	अम्हे
तृतीया	मए, मया	अम्हेहि, अम्हेहिं
चतुर्थी	मम, मम्ह, अम्ह, मे, महं	अम्हाण, अम्हाणं

पंचमी	ममत्तो, ममाओ	ममत्तो, ममाओ
षष्ठी	मम, मह, मम्ह, मे, महं	अम्हाण, अम्हाणं
सप्तमी	ममंहि मम्हि	अम्हेसु, अम्हेसुं।

'तुम्ह' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुमं	तुम्हे
द्वितीया	तुम, तुमं, तुं	तुम्हे
तृतीया	तए, तया	तुम्हेहि, तुम्हेहिं
चतुर्थी	तुमं, तुहं, तुम्म, तुम्ह	तुम्हाण, तुम्हाणं
पंचमी	तुमत्तो, तुमाओ	तुमाहि, तुम्हाहिंतो।
षष्ठी	तुमं, तुहं, तुम्ह, तुम्ह	तुम्हाण, तुम्हाणं
सप्तमी	तुमंहि, तुम्हिं	तुम्हेसु, तुम्हेसुं।

हिन्दी कीजिए

सा पहावई देवी, तीसे पभावईए देवीए पुत्तो आसि। ते साली णवएसु घडएसु पक्खिवंति। ते साली ववंति। तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स चउत्था पुत्ता, सुण्हाओ होत्था। चउण्हं सुण्हाणं आमंतेइ सो। तुमं रमे पंच सालिअक्खइ जाएज्जा। सा उज्झिया एममट्ठं पडिसुणेइ। मम हत्थाओ गेण्हइ। ताओ सुण्हाओ संतुट्ठा। एए पंच सालिअक्खइ गेण्हह। अम्हं समणो समणी वा भवंति। अम्हाणं चिंतेज्जयव्वं जो उत्तमो धम्मो सा अम्हाणं अत्थि। अम्हत्ते आगाराओ रहिओ महव्वई जाया। जे महव्वई हवंति, ते सव्वओ समभावं धारेंति।

प्राकृत कीजिए

उस समय वाराणसी नगरी थी। उसके बाहर एक सुन्दर तालाब था, जिसमें निर्मल जल और सुगंधित पुण्डरीक खिले थे। वे रमणीय थे। उन्हें देखकर मन प्रसन्न होता था। वे सहस्त्र केसर युक्त थे। वहां मच्छ, मगर, गाह जाति के जलचर जीव थे। वे उस सरोवर में सुखपूर्वक विचरण करते थे। उसमें रहते हैं। उसके समीप मालुकाकच्छ था। उसमें दो पापी सियाल रहते थे। वे पापाचरण करते थे। वे मांस चाहते थे। वे दोनों मांस की गवेषण करते हुए वहां घूमते थे। अन्य किसी दिन सन्ध्या हो जाने पर वे दोनों वहां आए जहां दो कूर्मक थे। वे दोंनो वहां बैठ जाते हैं। कूर्मक किनारे आते

हैं। वे आहार की खोज करते हैं। तथा आहार की खोज करते हुए मालुकाकच्छ से बाहर निकलते हैं। वे उस किनारे के चारों और घूमते हैं।

पापी सियाल वहां पर स्थित थे। वे दोनों उन्हें देखते हैं। वे शीघ्र भागते हैं। कूर्मक/कछुआ डर जाते हैं। उसके भय से कांपते हैं। फिर वे दोनों हाथ-पैर ओर ग्रीवा को शरीर में छिपा लेते हैं। तथा वहां ही मौन स्थित हो जाते हैं। सियाल उन्हें चलाते हैं। घुमाते हैं, स्पर्श करते हैं, घसीटते हैं, क्षुभित करते हैं, नखों से फाड़ते हैं। तीक्ष्ण दांतों से चीथते हैं। उन कूर्मकों के शरीर को बाधा पहुंचाते है, फिर भी निश्चल स्थित रहते हैं।

क्रियाओं के अर्थ

आसी - थी, फुल्लिआ - खिले, दंसिऊण - देखकर, विहरंति - विचरण करते हैं। णिवसंति - रहते हैं। इच्छंति - चाहते हैं। गवेसंति - खोजते हैं। भएंति - डरते हैं। वेवंति - कांपते हैं। उव्वत्तेंति - घुमाते हैं, आसारेंति - हटाते हैं। घट्टेंति - घसीटते हैं। खोभेंति - क्षुभित करते हैं। अक्खोडेंति - फाड़ते हैं। आलुपंति - चींथते हैं। फंसेंति - स्पर्श करते हैं।

अर्थ कीजिए

सुणेमि पूयावयणं, हिय-भासणं, मिउ-महुर-भासणं च।
सुत्तागम-वयणं हं, परिचत्त-विड्ढरं च वयणं।।
सोम्म-परिमाण-वयणं, पिय-हिय-उवयार-पुण्णं वयणं च।
गुरुविणयो होइ जगे, आणा-णिद्देस-चरिमाए।।
आयार-पुण्णो गुणो दीवो दीवेज्जए अप्प-सदभावं।
खम-अज्जव-मद्दवं च, सच्च-सोच-संजम-बंह गंथं।।

ग्यारह–विशेषण

जो संज्ञा शब्दों की विशेषता व्यक्त करते हैं, वे विशेषण है। 'विसेसयणं विसेएणं' उत्तमो बालो, तिरयणं।

विशेषण के भेद

(1) संख्यावाचक (Numeral Adjective) – संख्यावाचक विशेषण से विशेष्य की संख्या का बोध होता है। एगो अप्पा, दुवे जीवा।

(क) निश्चय संख्यावाचक (Definite numeral Adjective) – जिससे निश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे – एगो धम्मो, दुवे बाला, ति–रयणं। इस निश्चित संख्यावाचक के भी निम्न भेद हैं।

(v) गणनावाचक – एक से संख्यात, असंख्यात तक। एगो सीलो, दो अणुजा, ति–णिंदगो, चउतित्थो, पंचसमिई, छव्वाणि दव्वाणि, सत्त–पयत्था, अट्ठाणि कम्माणि, नावा पयत्था, दहधम्मो, एगारहपडिमा, बारहाणुवेक्खा आई। चोद्दह गुणट्ठाणं, पंदरह–कम्मादाणं, सोलह भावणा।

(आ)क्रमवाचक – पढमा विहत्ती, वीआ कक्खा, तइया सेणी, चउत्थी गई, पंचमंठाणं छट्ठंसो, सत्तम–सत्ता, अट्ठम–परिणामो। णव बंहचेरो, दसम अपरिग्गहो।

(इ) आवृत्तिवाचक – तावसा दुगुणं झाणं कुव्वंति। अस्सिं समए चउगुणी संखा।

(ई) समुदायवाचक – दो वि मासा अत्थि – दो ही मास हैं। तिण्णि बाला – तीनों बालिकाएं।

(उ) विभाग वाचक – सव्वे जीवा वि इच्छंति। अस्स संघस्स सव्वे समणा गुणी अत्थि। पइदिणं पडिक्कमणं कुव्वेंति समणा। गेही पइदिणं वावारं करेंति।

(ख) अनिश्चय संख्यावाचक - जिससे किसी संख्या का ज्ञान न हो। यथा - अप्प बाला अत्थि-थोड़े बालक हैं। किंचणा खणं तिट्ठंति समणा - कुछ क्षण श्रमण ठहरते हैं।

किंचि - कुछ - किंचि समणा, किंचि समणी।

केई - केई भासंति फुडं - कुछ स्पष्ट कहते हैं।

परोप्परं/अण्णुण्णं - जीवाणं परोप्परं उवयारं - एक दूसरे जीवों का उपकार

बहू - बहूणि कम्माणि अत्थि - बहुत कर्म हैं।

अणेग - अणेग गुणा अत्थि - अनेक गुण हैं।

कइवय - कइवया गेही वयाणं पालेंति - कितने ही गृहस्थ व्रतों का पालन करते हैं।

(2) परिणाम वाचक (Adjective of Quantity) जिससे माप, तोल, प्रमाण आदि का बोध होता है।

(v) तोल

(1) दस ग्राम-सुवण्ण-कंगणाणि - दस ग्राम के सुवर्ण कंगन।

(2) एगकिलोगामस्स मिट्ठण्णं - एक किलोग्राम की मिठाई।

(3) छट्ठंको धण्णं - छटांक धान्य।

(4) गुंजा रत्तिगाए तुलेंति - वे रत्ती गुंजा से तोलते हैं।

(आ) माप - तिण्णिहस्थपमाणं दंडं - तीन हाथ प्रमाण दण्ड।

पण्णास मिलिगाओ तेलो - पचास मिलिग्राम तैल।

एग लीटर पमाणं दुद्धं - एक लीटर दूध।

(इ) मुल्ल - (मूल्यवाचक) एगमालाए मुल्लो पणविंस रुप्पो - एक माला का मूल्य पच्चीस रुपया।

पंच-पण्ण किंचि णत्थि - पांच पैसे का कुछ नहीं।

सत्त सत्तर-पण्णस्स पोत्थगं - सात रुपये 70 पैसे की पुस्तक है।

अट्ठाणगा - अठन्नी, चउण्णी - चार आना, आण - आना।

दिण्णासे - दीनार सुवर्ण मुद्रा, वराडिगा - कौड़ी, रुप्पगो - रुपया।

पण्णो - पैसा।

(ई) समय वाचक - (1) अहोरत्तो - रात-दिन, कला कलेंति - मिनट तक कल शब्द करते हैं। खणो णो संजाइ - क्षण / छिन नहीं व्यतीत होता है। पक्खो हवेज्जा वासो ण जाएज्जा एक पक्ष / पखवाड़ा हो गया, पर वर्षा नहीं हुई। पलं सेजाइ - पल बीत रहा है। एगो पहरो जाओ सो ण आगओ - एक प्रहर हो गया, पर वह नहीं आया।

विकला विकला जाए - सेकंड भी समाप्त हो गए। मास खमणं किच्चा अप्पं धण्णं कुव्वइ - मास खमण करके आत्मा को धन्य करता है। घंटाए वाइत्तेणं छत्ता कक्खाए आगच्छंति - घंटा बजने से छात्र कक्षा में आते हैं। वस्सं पंचं वालो जाओ - बालक पांच वर्ष का हो गया। बालिगाणं अट्ठारहं वरसं पच्छा परिणया जाया। बालिकाओं का अठारह वर्ष बाद परिणय हो।

(3) गुण वाचक (Adjective of Quality) जिससे किसी व्यक्ति के गुण-दोषादि का ज्ञान कराया जाता है, वहां गुणवाचक विशेषण होता है। इससे जाति, क्रिया, व्यक्ति या वस्तु की विशेषता का ज्ञान होता है।

जं लिंगं जं वयणं या अ विहत्ति-विसेसस्स।

तं लिंगं तं वयणं सेव विहत्ति-विसेणस्सावि।।

(v) गुण - उत्तमो वालो - उत्तम बालक। सुसीला बालिगा - सुशील बालिका, सोहणं रुवं - शोभन रूप। सेट्ठो जणो। - उत्तम मनुष्य, सुही पाणी - सुखी प्राणी।

(आ)दोष - दुट्ठो जणो - दुष्ट मनुष्य, कुरूवा इत्थी - कुरूप स्त्री, अधमो पुरिसो - अधम पुरुष।

(इ) रंग - संखो धवलो होइ - शंख धवल होता है। किण्हाणि केसाणि - कृष्ण बाल हैं। सुवण्णो पीय-वणस्स होइ - सुवर्ण पीले वर्ण का है। आगासो णीलो - आकाश नीला है। हरिय-वणप्फई - हरित वनस्पति। रत्तो अरुणो - अरुण लाल है।

(उ) देश - भरहखेत्ते वाराणसी णयरी - भरतक्षेत्र में वाराणसी नगरी।

अमेरिगाए देसम्मि डालर पासिद्धो - अमेरिका देश में डालर प्रसिद्ध है।

वइसालीए खत्तिग-कुण्डगामे तिसलाए एगं पुत्तं दिण्णा - वैशाली क्षत्रिय कुंडग्राम में त्रिशला ने एक पुत्र को जन्म दिया।

(ऊ) दिशा - पच्छिम भागम्मि मेहा गज्जंति - पश्चिम भाग में मेघ गर्ज रहे हैं।

दाहिण–खेत्तम्मि बाहुबलिस्स विसालपडिमा – दक्षिण क्षेत्र में बाहुबली की विशाल प्रतिमका है।

(ए) आकार – वित्थिण्ण–वक्खत्थल–जुत्तो वीरो – चौड़े वक्षस्थल युक्त वीर हैं।

तिहुवणस्स आयारो मणुजवं अत्थि – त्रिभुवन का आकार मनुष्य की तरह है।

(ऐ) दशा – सो दुव्वलो णरो चिट्ठो – वह दुर्बल नर बैठा।

जो पज्जावरणं रक्खइ सो णिरोगी होइ – जो पर्यावरण की रक्षा करता है, वह निरोगी होता है।

जो सच्छो होइ हिट्ठ–पुट्ठो वि – जो स्वस्थ होता है, वह हृष्ट–पुष्ट भी होता है।

(ओ) स्थान – मंच–उच्च ठाणम्मि समणा चिट्ठंति – मंच के ऊपरी स्थान पर श्रमण बैठते हैं।

कूडा उण्णयस्स गिरिस्स राजंति – उन्नत पर्वत के कूट सुशोभित होते हैं। बहिठाणे सीयो – बाहिरी स्थान पर शीत है। अब्भिंतर – तवा छच्चेव – आभ्यन्तर तप छह हैं। बहिर–तवेण कायथिरो – बाह्य तप से काय स्थिर होता है।

(4) तुलनात्मक विशेषण (Degress of Comparison)

वस्तुओं के गुण–दोष का पारस्परिक मिलान का नाम तुलना है। जैसे – सो महत्तरो अत्थि – वह महत्तर है। वीरेण वीरमतो महावीरो – वीर से वीरतम महावीर हैं। गजिंदो थूलतमो अत्थि – गजेन्द्र स्थूलतम है। सो पेयसो अत्थि – वह अधिक प्रिय है।

साहू	साहुत्तरो/साहुयरो	साहुतमो
महं	महत्तरो	महतमो
चउरो	चउरत्तरो/चउरयरो	चउरतमो
सुक्को	सुक्कत्तरो/सुक्कयरो	सुक्कतमो
लहु	लहुयरो	लहुतमो
पडु	पडुयसो	पडिट्ठो
बहू	भूयसो	भूइट्ठो

तुलनात्मक अवस्थाएं

(v) मूलावस्था (Positivse Degree) देवो लहू अत्थि।

(आ) उत्तरावस्था (Comparative Degree) देवो इंदेण लहू अत्थि।

(इ) उत्तमावस्था (Supuralative Degree) सव्वेसिं पियो लहू बालो।

प्राकृत कीजिए

श्रमण पंच महाव्रत धारण करते हैं, वे तीन गुप्तियों से गुप्त होते हैं। वे मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय ओर योग से रहित विचरण करते हैं। वे गुणस्थान में प्रवेश करते हैं। वे व्रतियों से अधिक श्रेष्ठ हैं। वे निर्ग्रन्थ धर्म का पालन करते हैं। वे उत्तम धर्म मार्ग पर चलते हैं। उन्होंने काय क्लेश का विचार न करते हुए तप किया। उन्हें मोक्षमार्ग प्रिय है। समितियां उनकी चर्या है। उनकी अनुप्रेक्षात्मक दृष्टि है। वे शून्य स्थान पर रहते हैं।

निम्न विशेषण शब्दों का प्रयोग कीजिए

अंधो (अन्धः), अरिहा (अर्हा-योग्य), इट्ठो (इष्ट-प्रिय), उच्छण्णो (उत्सन्न-नष्ट), संपण्णो (सम्पन्न-समाप्त), उज्जु (ऋजु - सरल), एत्तिअ/इत्तिअ (इयत्-इतना), एरिसी (ईदृशी - इस तरह की), कसिणो (कृष्ण-काला, पूर्ण), खर (खर-कठोर), खीण (क्षीण-नाश), णिच्चल (निश्चल), णिल्लज्जो (निर्लज्य-लज्जा रहित), दुक्करो (दुष्कर), मुक्खो (मूर्ख), जेट्ठो (ज्येष्ठ-बड़ा)

संज्ञा शब्द या सर्वनाम के लिंगानुसार विशेषण का प्रयोग किया जाता है। यथा-(पुं.) धवलो मेहो (स्त्री.) धवला साटी (नपुं.) धवलं दुद्धं।

बारह–वाच्य विचार

वाच्य सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं के कारण तीन है।

(1) कर्तृवाच्य (Active Voice) – कर्तानुसार प्रयोग – सो महावीरो होइ, सा लेहं लिहइ।

(2) कर्मवाच्य (Passive Voice) – जिसमें कर्म की प्रधानता होती है। यथा – तेणं पढिज्जइ।

(3) भाववाच्य (Impersonal Voice) – भाव की प्रधानता। यथा – तेणं हसिज्जइ।

सामान्य कर्तृवाच्य (सकर्मक क्रिया)	कर्मवाच्य
सो पोत्थअं पढइ – वह पुस्तक पढ़ता है।	तेण पोत्थअं पढिज्जइ – उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
तुमं सत्थं पढइ – तू शास्त्र पढ़ता है।	तुए सत्थं पढिज्जसि – तुम्हारे द्वारा शास्त्र पढ़ा जाता है।
अहं पवयणं देमि – मैं प्रवचन देता हूं।	मए पवयणं दाइज्ज – मेरे द्वारा प्रवचन दिया जाता है।

सामान्य कर्तृवाच्य (अकर्मक क्रिया)	भाववाच्य
सो जुज्झइ – वह युद्ध करता है।	तेण जुज्झिज्जइ – उसके द्वारा युद्ध किया जाता है।

तुमं हससि – तू हंसता है। तुए हसिज्जइ – तेरे द्वारा हंसा जाता है।

अहं सयामि – मैं सोता हूं। मए सइज्जइ – मेरे द्वारा सोया जाता है।

कर्मणि रूप

'मुण' - समझना

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुणीअइ, मुणीअए	मुणीअंति, मुणीअंते
	मुणिज्जइ, मुणिज्जए	मुणिज्जंति, मुणिज्जंते
मध्यम पुरुष	मुणीअसि, मुणीअसे	मुणीअह, मुणीइत्था
	मुणिज्जसि, मुणिज्जसे	मुणिज्जह, मुणिज्जित्था
उत्तम पुरुष	मुणीआमि, मुणिज्जामि	मुणीआमो, मुणिज्जामि

भविष्यत् काल

प्रथम पुरुष	मुणीहिइ	मुणीहिंति
मध्यम पुरुष	मुणिज्जिहिसि	मुणिज्जिहिह, मुणिज्जिहित्था
उत्तम पुरुष	मुणिज्जिहिमि	मुणिज्जिहिमो

विधि/आज्ञार्थक

प्रथम पुरुष	मुणीअउ, मुणिज्जउ	मुणीअंतु, मुणिज्जंतु
मध्यम पुरुष	मुणीअहि, मुणिज्जहि	मुणीअह, मुणिज्जह
उत्तम पुरुष	मुणीआमु, मुणिज्जामु	मुणीआमो, मुणिज्जामो

वाच्य– कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

कर्तृवाच्य-- इसमें कर्ता के पुरुष एवं वचन के अनुसार ही क्रिया, पुरुष तथा वचन का प्रयोग होता है। यथा :– वीरो गच्छइ। जनं उवदेसइ। सो पइदिणं चिंतइ।

कर्मवाच्य--सकर्मक धातुओं में कर्म होता है। क्रिया, पुरुष और वचन कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार होते हैं। कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार होती है। यथा :– तुम पोत्थअं पढसि-इस वाक्य का तेण पोत्थअं पाढेविइ।

भाववाच्य :– जिसमें कर्म का अभाव रहता है यथा :–

सो हसइ तेण हासेविइ।

तेरह–पर्यायवाची शब्द

पज्जववाइ – सद्दा	पर्यायवाची शब्द (अनेकार्थी शब्द)
अंग (अङ्ग)	सरीर, देह, भाग, हिस्सा।
अग्गि (अग्नि)	असाल, पावग, वण्हि, सिही, जाला, किसाणु।
अक्ख (अक्ष)	इन्द्रिय, अप्पा, धुरी, आधार, आसय।
अक्खि (अक्षि)	चक्खु, णयण, णेत्त, दिट्ठी, लोयण।
अंधयार (अन्धकार)	तम, तिमिर, तमिस्स।
असुर	दइच्च, दाणव, णिसायर, रयणीयर, रक्खस।
अप्पा (आत्मा)	णाण, जीव, चेयण।
आगम	वचण, पवयण, णिरुवण, परुवणा, सुत्त, गंथ।
आगास (आकाश)	णह, गगण, अंबर, अंतरिक्ख, खे, ठाण, अवगास।
इच्छा	अभिलाषा, कामणा, वंछा, मणोरह, आसा।
इंद	सक्क, पुरंदर, सुरवइस, सुरिंद, देविंद, महवा।
इत्थी (स्त्री.)	ललणा, कामिणी, णारी, महिला, अबला।
कमल	जलज, पंकज, पउम, अरविंद, उप्पल, सरोज, इंदीवर, पुण्डरीग, णीरज, राजीव।
किरण	कर, मयूह, मरीई, जोइ, पहा, कंती।
कोयल	कोइल, पिग, सारिगा, कुहुकिणी, वणप्पिया।
गणेस	गजायाण, गणहर, गणवइ, लंबुदर, विणायग।
गंगा	देवणई, सुरणई, भागीरथी, मंदागिणी, तिपहगा।
उण्ह	ताव, आतव, गिम्ह, तेअ।

गिह (गृह)	भवण, आलय, णिवास, धाम, कुंज, आवास।
चंद	इंदु, सुहायर, ससि, तारावई, हिमांशु, सोम।
जल	णीर, उदग, तोय, अंबु, अमिय (अमृत), वारि, खीर। क (जल)
णई	सरिआ, तरंगिणी, तडिणी, जल लोलणी, जलमाला, खीरवाहिणी, णीरधरी।
धणु	चाव, कोयंड, सरासण।
पवण	वाउ, समीर, वाय, अणिल।
भज्जा (भार्या)	वामा, सहधम्मिणी, अद्धग्गिणी।
पव्वय (पर्वत)	गिरि, सेल, जग, धरणीहर, धराहर, महीधर, भूधर।
पक्खी (पक्षी)	खेचर, णहचर, विहंगम, खग।
पुप्फ (पुष्प)	सुमण, कुसुम, पसूण।
पुत्त (पुत्र)	सुय, तणय, अप्पज, कुमार।
पुत्ती (पुत्री)	सुया, तणया, अप्पजा, कुमारी, कण्णा, दुहिया।
बाण	सर, सिलीमुर, विसिह।
माया (माता)	जणणी, अम्मा, पसूइणी।
मेह (मेघ)	जलहर, पयोहर, पयोद, जलद णीरद।
रुक्ख (वृक्ष)	दुम, विडव, तरु, महीरुह, साही।
समुद्द (समुद्र)	सिंधु, रयणायर, उयहि, खीरहि, जलहि, पयोहि, सायर, णीरहि।
समूह	दह, ओह, गुण, पुंज।
सत्तू (शत्रु)	अरि, रिउ, बइरी, विवक्खी, अराई।
सज्ज (सूर्य)	दिणयर, रवि, भाणु, आइच्च, पहायर, दिणेस, दिवायर, मत्तंड।
हत्त	कर, पाणि।
हत्थि (हस्ति)	करि, गज, कुंजर, णाग, वारण, मातंग।
सिंह	केसरी, मिगराय, णगिंद, हरि, मिगवइ, सीह।

चौदह–संधि-विचार

संधि - दो वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।

संधि के भेद - (क) स्वर-संधि (ख) व्यञ्जन-संधि (ग) अव्यय संधि।

(क) स्वर-संधि - स्वर संधि के निम्न भेद हैं।

(1) दीर्घ संधि (2) गुण संधि (3) ह्रस्व-दीर्घ संधि (4) संधि-निषेध और (5) स्वर लोप संधि।

(1) दीर्घ संधि - समान स्वर होने पर दीर्घ संधि होती है। समानानां तन दीर्घः (1/2/1)

यथा - अ + आ = अ = उण्ह + अभितत्तो = उण्हाभितत्तो

अ + आ = आ = विसम + आयवो + विसमायवो

आ + अ = आ = रमा + अहीणो = रमाहीणो

आ + आ = आ = विज्जा + आलयं = विज्जालयं

इ + इ = ई = मुणि + इणो = मुणीणो

इ + इ = ई = मुणि + ईसरो = मुणीसरो

ई + ई = ई = लच्छी + इन्दो = लच्छीन्दो

ई + ई = ई = लच्छी + ईसरो = लच्छीसरो

उ + उ = ऊ = साहु + उदयं = साहूदयं

उ + ऊ = ऊ = धेणु + ऊसवो = धेणूसवो

ऊ + उ = ऊ = बहू + ऊअरं = बहूअरं

ऊ + उ = ऊ = बहू + ऊसवो = बहूसवो

निम्न संधि युक्त वाक्यों का विग्रह करिये

जहाइण्णसमारुढे, जीवाजीवा, रमाहारो, णिनरामिसा, णिराणंदा, देवीड्ढी, रयणपुराहिवई, णदीन्दो, बहूढा, महूदयं, विरहाणलतवियडी, परीसरो।

(2) गुण संधि—अ या आ से पर इ या उ वर्ण हो तो अ + इ, ई = ए, आ + उ, ऊ = ओ गुण हो जाता है। (अ - वर्णस्ये - वर्णादिनैदोदरत् 1/2/6)

यथा- अ + इ = ए = वास + इसी = वासेसी

आ + इ = ए = रामा + इअरो = रामेअरो

अ + ई + ए = वासर + ईसरो = वासरेसरो

आ + ई = ए = तहा + ईव = तहेव, जहा+इव = जहेव

अ + उ = ओ = तव + उअरं = तवोअरं, झाण+उदयो = झाणोदयो।

आ + उ = ओ = रमा + उवचिअं = रमोवचिअं

आ + ऊ = ओ = विज्जुला + ऊसासा = विज्जुलोसासा

अ + ऊ = ओ = सास + ऊसासा = सासोसासा

निम्न संधियों का विग्रह कीजिए

दिसेस, पाअड्ढेरू, महेसि, राएणि, णरेस, सुरेस, सुज्जोदय, पुव्वोदय, णाणोदय, णाणेस, जहेव, समणोवासग, अणासवा, जिणिंदोवदेस, जस्सेह, कहेह, पुण्णोदर, रसाकेक्ख, जुत्ताहार, णिरावेक्ख, सुहोवजुत्त, असुहोवओग, साणुकंपा, पज्जाओत्तीह, अहोज्जमाण, दव्वाभावं, तित्थयसयरिय, णेव।

(3) ह्रस्व-दीर्घ संधि—समासागत शब्दों में रहे हुए स्वर परस्पर ह्रस्व से दीर्घ, दीर्घ से ह्रस्व हो जाते हैं। (दीर्घ-ह्रस्वो मिथो वृत्तौ 1/4) यथा

(क) ह्रस्व का दीर्घ

अन्त + वेई = अन्तावेई, सम्मदिट्ठी-सम्मादिट्ठी।

सत्त + वीसा = सत्तावीसा, एगवीसा-एगावीसा।

पइ + हरं = पईहरं, पइहरं, हरिदिट्ठी-हरीदिट्ठी।

वारि + मई = वारीमई, वारिमई

भुअ + यंत = भुआयंत, भुअयंत

वेणु + वणं = वेणूवणं, वेणुवणं

(ख) दीर्घ का ह्रस्व

जुबू + दीव = जंबुदीव

नई + सोत्तं = नइसोत्तं, नईसोत्तं

मणा + सिला = मणसिल, मणासिला

गोरी + हरं = गोरिहरं, गोरीहरं

लच्छी + पई = सीयमुह, सीयामुह

सीया + मुह = सीयमुह, सीयामुह

पुहई + यल = पुहइयल, पुहईयल

बहू + मुह = बहुमुह, बहूमुह

निम्न संधियों का विग्रह कीजिए

जणणिसुय, णरवईउलं, जुबईहरं, महणयरं, सम्मादिट्ठी, दिणरयणिकरी, मालिनरिन्दस्स, अउच्छदरे, बहूउलं, वीवीहूसवो, सुयकेवलीभणिय, सुयकेवलिमिसिणो, केवलिगुणं, मिच्छादिट्ठी।

(4) संधि निषेध

(1) 'इ' और 'उ' के बाद विजातीय स्वर होने पर संधि नहीं होती (न युवर्णस्यास्वे 1/6) यथा – दणु + इंद = दणुइंद, पहावलि + अरुणो = पह्वावली अरुणो न वेर – वग्गे वि अवयासो, बहु + अवऊढो = बहुअवऊढो

वि + अ = विअ, महु + ईं = महुईं, माला + ए = मालाइ, माला + इ = मालाइ कयाइ अन्नया, फलाइ + एंति, हु एव, होइ आणंदो, महुअरि, वेसं होइ अमाहुणो, तिज्जाइ उद णं व थलाओ, वट्टइ आउसु, वंत इच्छति आवेउं, सो करिस्सइ उज्जोयं, जो न सज्जइ एएहिं।

(2) 'ए' और 'ओ' के बाद विजातीय स्वर होने पर संधि नहीं होती है। (एदोतोः स्वरेः 1/7)

यथा– वणे + अइइ = वणे अइइ, लच्छीए + आणंदो = लच्छीए आणंदो

देवीए + एत्थ = देवीए एत्थ, एओ + एत्थ = एओ एत्थ

अहो + अच्छरियं = अहो अच्छरियं

पडिणीए असंबुद्धे, एगो एगत्थिए सद्धिं, आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चे

अकुए, न कोवए आयरियं, जो एवं पडिसंचिक्खे, अप्पडिरूवे अहाउयं, इमंमि लोए अदुवा परत्थ, उइ दुप्पूरए इमे आया, इत्थी विप्पजहे अणगारे, जे के इमे, सावए आसि वाणिए, जुईए, उत्तिमाए, गोयमो इणमव्वती, छिन्नो मे संसुओ इमो, संसारो अण्णवो वुत्तो

(3) उद्वृत्त स्वर का किसी स्वर के साथ संधि नहीं होती है।

(स्वरस्योद्वृत्ते 1/8)

० उद्वृत्त स्वर से तात्पर्य है, व्यञ्जन के लोप होने पर अवशिष्ट बचे हुए स्वर।

(4) क्रिया पद के प्रत्यय इ, अंति आदि के बाद स्वर आने पर भी संधि नहीं होती है। (त्यादेः 1/9)

होइ + इह, पेच्च + इह = पेच्चइह, होइअसहुणो, करिस्सइ + उज्जोयं = करिस्सइ उज्जोयं

(5) स्वर लोप संधि—स्वर से परे स्वर हो तो शब्द के स्वर का प्रायः लोप हो जाता है। (लुक् 1/10)

यथा- तिअस + ईसो = तिअसीसो, णीसास + ऊसास = णीसासूसास।

णर + इंदो = णरिंदो, महा + इंदो = महिंदो।

दीह + आउया = दीहाउया, धम्म + इट्ठे = धम्मिट्ठे।

पवणुद्धयपल्लवकरग्गो, जहिच्छियं, मणाभिरामं, कुलगरवंसुप्पत्ती, पुरिग्गिमच्छी, परिओसुब्भिन्नरोगञ्चा, तस्सुत्तमे, आउ-वलुच्छेह, अत्थेत्थ, णत्थेत्थ संदेहो, परवयणुल्लावी, तस्सुवरिं, इक्खागुकुलुब्भवो, भवणंतरणिलुक्को, निखयक्खा, तहेव, जोगुवओगा, दव्वगुणुप्पादग, विणिच्छओ, तेणिह।

(ख) व्यञ्जन संधि—इस संधि का प्रयोग प्राकृत में नहीं है। परन्तु व्यञ्जनों का अनुनासिक आदि होने से कुछ प्रयोग देखे जा सकते हैं।

(1) 'अ' के बाद आए हुए संस्कृत विसर्ग के स्थान पर प्रायः 'ओ' हो जाता है। (अतो डो विसर्गस्स 1/37)

यथा- सर्वतः = सव्वओ, पुरतः = पुरओ, अन्तः = अन्तो, गणः = गणो, मार्गतः = मग्गओ, भवतः = भवओ, सन्तः = संतो, पुणः = पुणो, कुतः = कुदो, अतः = अओ, नभः-णभो, कुतः-कयो।

(2) पद के अंत में होने वाले 'म्' का अनुस्वार होता है। (मोनुस्वारः 1/23)
वयणं, वणं, गिरिं

(3) 'म्' से परे स्वर रहने पर विकल्प से, अनुस्वार होता है। उसभं + अजियं = उसभमजियं, धणमेव, एवमेव, सयमेव, जीवमजीवं।

(4) ङ, ञ, ण, न का अनुस्वार होता है। (1/25) मूल सूत्र दिया जाए
कंचुओ, लंछणं, छंमुहो, उक्कंठा, संण्णा, विंझो। अंजली।

(ग) अव्यय संधि

(1) पद से परे अपि के 'अ' लोप होता है।
यथा – केण + अवि = केणवि, कहं वि, तं वि, किं वि, रामं वि, धणं वि।

(2) पद से परे इति होने पर 'इति' के 'इ' का लोप हो जाता है और स्वर से परे 'सि' का द्वित्व 'सि' हो जाता है। (इतेः स्वरात् तश्च द्विः 1/42)
यथा – किं + इति = किं त्ति, जंति, जुत्तं त्ति।
रामो + इति = रामो त्ति, पुत्तो त्ति, पुरिसोत्ति, माला त्ति इत्यादि।

(3) 'एतत्' आदि सर्वनामों से परे अव्ययों तथा अव्ययों से परे 'त्यद' आदि होने पर आदि स्वर का विकल्प से लोप होता है। (त्यदाद्यव्ययात् तत्स्वरस्य लुक् 1/40)
यथा – एस + इमो = एसमो, अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ
जइ + एत्थ = जइत्थ, जइ + अहं = जइहं
जइ + इमा = जइमा, अम्हे + एव्व = अम्हेव्व

अभ्यास कीजिए

अप्पाणं पि, अप्पाणं अवि, दो वि, णवि, सव्वे पि, अबंधो त्ति, एगो त्ति, केणवि, फलत्ति, किरियत्ति, कम्मत्ति, अप्पत्ति, सो वि समयत्ति, तिट्ठं त्ति, गुरु त्ति।

पन्द्रह–समास विचार

समास–संक्षिप्तिकरण को समास कहते हैं। अर्थात् दो या दो से अधिक शब्दों को एक साथ रखना तथा जिससे एक अर्थ प्रकट हो जाये और सामर्थ्य विशेष के होने पर प्रायः समास होता है। (नाम नाम्नैकार्थ्ये समासो बहुलम् 3/1/18)

समास के भेद (1) बहुव्रीहि (2) अव्ययीभाव (3) तत्पुरुष और (4) द्वन्द्व

(1) बहुव्रीहि–जिस पद से किसी विशेष अर्थ का ज्ञान हो, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

यथा– पीअं अंबर जस्स सो = पीअंबरो (पीताम्बर)

आरूढो वाणरो जं रूक्ख सो आरूढवाणरो रुक्खो, जेण सो जिआणि इंदियाणि = जिइंदियो मुणी

जिआ परीसहा जेण सो = जिअपरीसहो गोयमो, महावीरो

णरो मोहो जाओ सो – नरमोहो साहू

घोरं बंभचेरं जस्स सो = घोरबंभचेरो जंतू

आसा अंबरं जेसिं ते = आसंबरा

सेयं अंबरं जेसिं ते = सेयंबरा पीअं अंबरं जेसिं ते = पीअंबर।

बहुव्रीहि के भेद–मूल भेद–

(v) समानाधिकरण (एकार्थं चाऽनेकं च 3/9/22)

(आ) व्याधिकरण (उष्ट्र–मुखादयः 3/9/23)

व्याधिकरण के भेद–(क) द्विपद (ख) बहुपद (ग) सहपूर्वपद (घ) संख्योत्तरपद (च) संख्योभयपद (छ) व्यतिहारलक्षण (ज) दिगंतराण–लक्षण

(क) द्विपद–	चक्कं पाणिम्मि जस्स सो चक्कपाणी (चक्रपाणिः)
	चक्कं हत्थे जस्स सो चक्क हत्थो भरहो (चक्रहस्तो भरतः)
(ख) बहुपद–	धुओ सव्वो किलेसो जस्स सो = धुव सव्वकिलेसो जिणो।
(ग) सहपूर्वपद–	सीसेस सह = ससीसो आयरिओ।
	पासेण सह = सपासो रक्खसो।
	लक्खणेण सह = सलक्खणो रामो।
(घ) संख्योत्तरपद–	पंच वत्ताणि जस्स सो = पंचवत्तो सीहो।
	चयारि मुहाणि जस्स सो = चउम्मुहो।
	एगो दंतो जस्स सो = एगदंतो।
(च) संख्योभयपद–	तिण्णि णेत्ताणि जस्स सो तिणेत्तो।
(छ) व्यतिहारलक्षण–	रणं चेअ धणं जाणं = रणधणा सहावो।
(ज) दिगंतराललक्षण–	दाहिणं पुव्वं चेअ दिसो जस्स सो।
(i) विशेषणपूर्वपद–	णीलो कंठो जस्स सो णीलकंठो मोरो।
	महंतो बाहुणो जस्स सो महाबाहू।
(फ) उपमानपर्वपद–	चंदो इव मुंह जाए चंदमुही कण्णा।
	गजाणणं इव आणणो जस्स सो गजाणणो।
(ब) तत् बहुव्रीहि–	ण अत्थि णाहो जस्स सो अणाहो।
	ण अत्थि विणयो जस्स सो अविणयो।
(भ) प्रादि बहुव्रीहि–	प–पगिट्टं पुण्णं जस्स सो पपुण्णो जणो।
	णि–णिग्गया लज्जा जस्स सो = णिलज्जो।
	वि–विगओ हवो जाए सा = विहवा।
	अव–अवगतं रूवं जस्स सा = अवरूवो।
	अइ–इअक्कंतो मग्गो जेण सो = अइमग्गो रहो।
	परि–परिअअं जल जाए सा = परिजला, परिहा।
	णिर–णिग्गया दया जस्स सो = णिद्दयो जणो।

समास कीजिए– उड्ढ-मुहा, वसहसंधा, सपुत्तो, स-कम्मो, सफलं, अणवज्जो, अण्णाणं, णिस्सहाओ, पत्तणाणो, दिण्णवओ, णियागट्ठी, अणगारो, अजिओ, महावीरो, संमई, वड्ढमाणो, णट्ठदंसणो, सत्थ-पारगामी, जिइंदियो, जियकसायो। अहिणंदजो सुदंसणो, विज्जत्थी।

(2) अव्ययीभाव–अव्यय की प्रधानता जिसमें हो, वह अव्ययीभाव समास है।
(अव्ययम् 3/1/21)

अव्ययीभाव के प्रयोग–

(1) विभक्ति अर्थ– अप्पंसि अंपंतो = अज्झप्पं।
हरिम्मि इइ = अहिहरि।
(2) समीप– दिसाए समीवं = उवदिसा।
गुरुणो समीवं = उवगुरु।
(3) पश्चात्– भोयणस्स पच्छा = अणुभोयणं।
जोगस्स पच्छा = अणुजोगं।
जिणस्स पच्छा = अणुजिणं।
(4) समृद्धि– मद्दाणं सामिद्दी = सुमद्दं।
(5) अभाव– मच्छिकाणं अभाओ= णिम्मच्छिगो।
मोहस्स अभावो = णिम्मोहो।
(6) अव्यय नाश– हिमस्स अच्चओ= अइहिमं।
पावस्स णट्ठो = अपावं।
(7) असम्प्रति– णिद्दा संपइ ण जुज्जइ = अइणिद्दं।
(8) अणु– रूवस्स जोग्गं = अणुरूवं।
(9) पइ– नयरं नयरं ति = पइणयरं।
पइ– दिणं दिणंति = पइदिणं।
पइ– घरे घरे ति = पइघरं।
(10) अनतिक्रम– सत्तिं अणइक्कमिअ = जहासत्ति।
सत्तिं अणइक्कमिअ = जहाविहि।
(11) योग– चक्केण जुगवं = सचक्कं।
(12) संप्रति– छत्ताणं संपइ = सछत्ते।

अभ्यास–जहासत्ति, णिविग्धं, सहरी, उवगिरं, उवगंगं, सचक्कं, अणुजोगं, अणुभावं, पइखलं, पइफलं, अणुभवं पत्तेगं, अणासवा, णिराणंदा, णीसासा। जहाणुरूवं, उवहिई।

(3) **तत्पुरुष**–जिसमें उत्तर पद की प्रधानता हो, उसे तत्पुरुष कहते हैं।

(गति–क्वयन्तत्पुरुषः 3/1/42)

तत्पुरुष के भेद–(1) प्रथमा तत्पुरुष (2) द्वितीया तत्पुरुष (3) तृतीया तत्पुरुष (4) चतुर्थी तत्पुरुष (5) पंचमी तत्पुरुष (6) षष्ठी तत्पुरुष (7) सप्तमी तत्पुरुष (8) उपपद तत्पुरुष (9) नञ् तत्पुरुष (10) अलुक् तत्पुरुष।

(1) **प्रथमा तत्पुरुष**– इसमें पुव्व, अवर, अहर और उत्तर पद की प्रधानता होती है। यथा–

पुव्वं कायस्स = पुव्वकायो, अवरं कायस्य = अवरकायो

उत्तर गामस्स = उत्तर गामो, अहरं भागस्स = अहरभागो

(2) **द्वितीया तत्पुरुष**– इसमें सिअ, अतीत, पडिअ, गअ, अइअत्थ, अस्सिअ, पत्त और आवण्ण पद की प्रधानता होती है। यथा–

किसणं सिओ = किसणसिओ, इंदिया अतीतो = इंदियातीतो, विसया अतीतो = विसयातीतो।

अग्गिं पडिओ = अग्गिपडिओ, सिवं गओ = सिवगओ

सुहं पत्तो = सहुपत्तो, मेहं अइअत्थो = मेहाइअत्थो

वीरं अस्सिओ = वीरस्सिओ, कट्ठं आवण्णो = कट्ठावण्णो

(3) **तृतीया तत्पुरुष**– इसमें पहला पद तृतीयांत होता है। यथा–

जिणेण सरिसो = जिणसरिसो, णहेहिं भिण्णो = णहभिण्णो

आयरेण णिउणा = आयारणिउणा, रसेण पुण्णं = रसपुण्णं

दयाए जुत्तो, मायाए सरिसो = मायासरिसो।

(4) **चतुर्थी तत्पुरुष**– इसमें पहला पद चतुर्थी विभक्ति का होता है। यथा–

णाणस्स अज्झयणं = णाणज्झयणं, दंसणस्स इच्छा–दंसणिच्छा।

मोक्खस्स णाणं = मोक्खणाणं, देहस्स जोगो = देहजोगो।

कुण्डलस्स सुवण्णं = कुंडलसुवण्णं,

कुम्भस्स मट्टिआ = कुम्भमट्टिआ,

धणस्स लोहो = धणलोहो, जणस्स पीई = जणपीई

(5) पंचमी तत्पुरुष– इसमें पहला पद पंचमी विभक्ति का होता है। यथा– संसाराओ भीओ = संसार भीओ, दंसणाओ भट्ठो = दंसणभट्ठो

चोराहिं, अण्णाणाओ दुहं = अण्णाणदुहं

(6) षष्ठी तत्पुरुष– इसमें पहला पद षष्ठी विभक्ति का होता है। यथा–

रायस्स पुत्तो = रायपुत्तो, देवस्स आलयं = देवालयं,

विज्जाए आलयं = विज्जालयं, रुक्खाणं साहा = रुक्खसाहा णरस्स इंदो = णरिंदो, णायस्स पुत्तो = णायपुत्तो।

(7) सप्तमी तत्पुरुष– इसमें पहला पद सप्तमी विभक्ति का होता है। निम्न प्रयोगों के होने पर सप्तमी होती है। यथा–चण्ड, धुरु, पवीण, अंतर, अहि, पटु, पण्डिअ, कुसल, चवल, णिउण, सिद्ध, सुक्क और बंध।

यथा–कलासु कुसली = कलाकुसलो, सभासु पण्डिओ = सभापण्डिओ, विज्जाए दक्खो = विज्जादक्खो, कसायेसु बंधो = कयासबंधो। देहे सुक्को देहसुक्को।

(8) उपपद तत्पुरुष– जब तत्पुरुष समास में उत्तर पद किसी क्रिया का होता है, तब उपपद तत्पुरुष समास होता है। यथा–कुम्भं कुणेइ ति = कुम्भकारो, धणं देइ = धणओ, सव्वं जाणइ = सव्वण्णु, धम्मं जाणइ = धम्मण्णु।

(9) नय तत्पुरुष– ण सच्चं = असच्चं, ण गओ = अगओ। ण मंदो–अमंदो।

(10) अलुक् तत्पुरुष– जिसमें विभत्ति प्रत्ययों का लोप नहीं होता है, वहाँ अलुक् समास होता है। यथा–अंतेवासी, देवानंपियो, जुहिट्ठिरो।

नोट–प्र आदि उपसर्ग, अरि, अव, परि, निर के बाद गत्, कंत, कुट्ठ, गिलाण आदि धातुओं का प्रयोग होने पर भी तत्पुरुष समास होता है।

(प्रातयव – परि – निरादयो गत-क्रांत-क्रुष्ट-ग्लान-क्रान्ताद्यर्था: प्रथमाद्यैः 2/1/47) यथा–पगओ आयरिओ = पायरियो (प्राचार्यः)

उग्गओ बेलं = उव्वेलो (उद्वेतः)

अइक्कंतो पल्लंकं = अइपल्लंको (अतिपल्यङ्क)

समासांत पदों का विग्रह कीजिए

विज्जारहिओ, रक्खपुरिसो, तवोणं, अमुल्लं, गणोविआरो, जिणमंदिरं, रायभिट्ठो, मयसुण्णो, रायउलो, अजसो, तवोहणं, रुसण्णो, हंसगामणी, गयगामणी, समचउरससंठाणो, जिअपरिसहो, गणिआज्झावओ, धम्मपुत्तो, लेहसाला, समाहिठाणं, देवत्थुई, जिणिंदो, लोयहिओ, रुवसमाणा, चक्खुकाणा, पादंखंजा, मोक्खगओ, कल्लाणपत्तो, राप्पभीओ, हिमालयागओ, रिणमुत्तो, अण्णाणभयं आदि।

(4) द्वन्द्व समास–जब दो या दो से अधिक संज्ञाएं एक साथ आती हैं, तब द्वन्द्व समास होता है। (चार्थे द्वन्द्व सहोक्तो 3/1/117)

द्वन्द्व समास के भेद–(1) एक-शेष समास (2) इतरेतर (3) समाहार द्वन्द्व।

(1) एक-शेष समास– उदाहरण–जिणो अ जिणो = जिणा (जिनेन्द्र)

नेत्तं ये नेत्तं त्ति = नेत्ताइं (नेत्रे)

माआ य पिआ य त्ति = पिअरा (पितरो)

सासू अ ससूरो अ त्ति = ससुरा (श्वशुरो)

इंदो य अग्गी य त्ति = इंदग्गी (इंद्राग्नी)

मयूरो य मयूरी य त्ति = मयूरा (मयूरो)

(2) इतरेतर द्वन्द्व समास–

पुण्णं य पावं य त्ति = पुण्णपावाइं

जीवा य अजीव। य = जीवाजीवा

सासू य बहू य = सासू बहूओ

सुहं य दुहं य = सुहदुहाइं

हत्था य पाया य = हत्थपाया

(3) समाहार द्वन्द्व समास–

असणं य पाणं य एएसिं समाहारो = असणपाणं।

तवो अ संजमो य एएसिं समाहारो = तवसंजमं।

णाणं य दंसणं च चरियं य एएसिं समाहारो = णाण-दंसण चरियं।

राओ य दोसो य भयं य मोहो य एएसिं समाहारो = राअदोसभयमोहं।

अभ्यास

सुरासुरा, संसारासारं, पत्तपुप्फणि, भक्खाभक्खाणि उसहवीरा, वाणरमोरहंसा, लक्खण-रामा, सीया-रामा, बहूणणंदा, सुक्काणि, हिमा, लाहालाहा, अहरोतरा, हंस-चक्क-वाका, वदरामलकं, गंगासोणं, कुरूखेत्तं, गंगा ज उणे, दहि-पयत्ती, पाणिपाया, चरियासणाइं, सयणासणाइं, आवेसण-सभा-पवासु, आरामागारे, आधाय-णइ-गीयाइं, सुब्भि-दुब्भि-गंधाइं। ओयण-मंथु-कुमारसेणं, जाती-मरण-मोयणाए, साहिट्ठ-जहिट्ठ-दंसणं, मण-वयण-कायगुत्ते, सुसमासुसमासु, आहार-पाण-चंदण-सयणासण-मज्जणाइविणिओगं।

अन्य समास–

(क) कर्मधारय (ख) द्विगु समास

(क) कर्मधारय समास–जब प्रधान पद विशेषण हो और दूसरा पद विशेष्य हो, तब कर्मधारय समास होता है। (विशेषण विशेष्यणैकार्य कर्मधारयश्च 3/1/66)

यथा–णीसं य तं उप्पलं = णीलुप्पलं

कर्मधारय के भेद–

(1) विशेषणपूर्वपद (2) विशेष्यपूर्वपद (3) विशेषणोभयपद

(4) उपमानपूर्वपद (5) उपमानोतरपूर्वपद (6) सम्भावनापूर्वपद

(7) अवधारणापूर्वपद

(v) **विशेषणपूर्वपद**–रसो अ एसो घडो = रसघडो, उत्तिमे य पुरिसो = उत्तमपुरिसे, सेट्ठो अ तं धणं = सेट्ठधणं, महंतो सो वीरो = महावीरो। महंतो य सो राया = महाराया, वीरो य सो जिणिंदो = वीरजिणिंदो।
रत्तो अ एसो सो आसो = रत्तसेओ आसो, सीअं य उण्हं य तं जलं = सीयुण्हजलं, रत्तं य पीअं य वत्थं सं = रत्तपीअवस्थं।

(4) चंदो इव मुहं = चंदमुह, घणो इव सामो = घणसामो, वज्जो इव देहो = वज्जदेहो

(5) मुंह चारोव्व = मुहचारो जिणो चंदोव्व = जिणचंदो,

(6) संजमो एवं धणं = संजमधणं, तवो चिअ धणं = तवोधणं, पुण्णं चेअ पाहेज्जं = पुण्णपाहेज्ज

(7) णाणं चेअ धणं = णाणधणं, पयमेव पउमं = पयपउमं

नोट (1)–एक, सव्व, जर, पुराण, नव, केवल के अर्थ में कर्मधारय समास होता है। (पूर्वकालैक-सर्व-जरत-पुराण-नव-'केवलम् 3/1/67)

एग च एसो वासो = एगवासो, सव्वं य अण्णं तं सव्वण्णं

जरं य एसो णरो = जरणरो, पुराणे य एसो कवि = पुराणकवी, नवा य एसा उत्ती = नवोत्ती,

केवलं य तं णाणं = केवलणाणं।

नोट (2)–दिशावाची, तद्दित और अधिक के योग में कर्मधारय समास होता है। (दिगधिकं संज्ञा-तद्दितोतरपदे 3/1/68)

दाहिणाउ कोसला = दाहिणकोसला, दाहिणाए सालाए = दाहिणसाला

अभ्यास–

णीलगगणं, रत्तपत्तं, सेअघडो, महाजोई, कमलणयणं, उत्तमकुलं।

(ख) द्विगु समास–

संख्यावाची शब्द का पूर्व में प्रयोग होने पर द्विगु समास होता है। (संख्या समाहारे च द्विगुश्चानाल्ययम् 3/1/66) यथा–तिगुत्ती, चउक्कसाया।

द्विगु समास के भेद

(1) एकवद्भावी (2) अनेकवदभावी

(1) एकवद्भावी– नवण्हं तच्चाणं समाहारो = णवतच्चं।
चउण्हं कसायाणं समूहो = चउक्कसायं।
तिण्हं लोगाणं समूहो = तिलोयं।

(2) अनेकवदभावी– तिण्णिलोया = तिलोय।
चउरो दिसाओ = चउदिसा

समासांत पदों का विग्रह कीजिए

णातिवेलं, णायपुत्तो, धम्म-पारगा, अणासवा, णालियो, णापुट्ठो पियमप्पियं, अट्ठपुत्ताणि, सीओदगो, जिणसासण, उण्हातिते, जलोवणीयस्स, विण्जाणुसासणं, इत्थीविसयगिद्धे, पाणवहं, जाई जरा-मच्चुभयाभिमुया, विमोक्खणट्ठा, पंचकुसीलसंवुडे, जहारूवेण, अम्मापियरो, एगभूओ, महारण्णं, विगयमोहो, जिण-भयहारो, सव्वलोगप्पभंकरो, णत्थि, घोरपरक्कमे, पंचमहव्वयधम्मं, सुहावहे, सव्वसुतमहोयही,

भवोहन्तकरा, सच्चामोसा, उल्लंघ-पलुंघणे, सरंम्भ-समारम्भं, गामाणुगामं, दिव्व-माणुस-तेरिच्छं, रागदोसो, रागाउरे, वीयरागो, णिद्दाणिद्दा, पयल-पयला, णोकसायजं, पंचविहधणं, तिरिय-णराणं, कुलघरवग्गस्स, णिग्गंथी, महव्वयाइ, महव्वयो, देवाणुप्पिया सुहंसुहेणं, वयोकम्मं, चोद्दसमं, अहोरत्तेहिं, देवराया, अमयफलाइं, जियसत्तू, उदगरयणं, जेट्ठपुरं, केवलवरणाणदंसणं, समणोवासा, सावगधम्मं आदि।

सोलह–तद्धित विचार

तद्धित प्रत्यय–संज्ञा शब्दों में लगने वाले प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं। तद्धित के तीन भेद कहे गये हैं। (1) सामान्य वृत्ति (2) भाववाचक और (3) अव्ययवाचक।

(1) केर–इदम–इम अर्थ (इससे सम्बन्धित) के लिए केर आदेश होता है। (इदमर्थस्य केरः 2/147)

(2) इक्क, क्क, केर–'पर' और 'राज' शब्द में 'इक्क, क्क और केर' प्रत्यय होते हैं। (पर राजक्यां कू–डिक्कौ च 2/148) यथा–परक्क, परकेरं, रायक्कं, राइक्कं, रायकेरं।

(3) एच्चय–युस्मद–तुम्ह, अस्मद्–अम्ह में 'अञ्' के स्थान पर 'एच्चयं' प्रत्यय होता है। (युष्मदस्मदोऽञ–एच्चयः 2/149) यथा–तुम्हेच्चयं, अम्हेच्चयं

(4) 'व्व'–'वत्' के स्थान पर 'व्व' प्रत्यय होता है। (वतेर्व्वः 2/150) यथा–महुरव्व। पउम व्व, चंद व्व, झाण व्व।

(5) 'इक'–इअ–'ईन' के स्थान पर इक प्रत्यय होता है। (सर्वांगादानस्येकः 2/15) यथा :- सव्वंगिअ।

(6) इक–इअ–पहिओ (पथो णस्येकट् 2/152)

(7) णय–अप्पणयं (आत्मीयम्) (ईयस्यात्मनो णयः 2/153)

(8) डिम, त्तण (त्वस्य डिमा-त्तणो वा 2/154) पीडिमा (पीतत्वं). पुप्फिमा (पुष्पत्वम्), पीडिमा (पीतत्वं)

नोट–पाणत्तं, पुप्फत्तं

(9) एल्ल–'तैल' प्रत्यय के स्थान पर 'एल्ल' प्रत्यय होता है। अङ्कोठ शब्द को छोड़कर। (2/155) यथा–सुरहि जलेण कडुएल्लं (सुरभि-जलेन-कटु-तैलम्)

(10) इत्तिअ–यावत्–'ज', तावत्–'त' में इत्तिअ' प्रत्यय होता है। एतावत् का मात्र इत्तिरः आदेश होता है। (यत्तदेतदोरित्तिअ एतल्लुक् च 2/156)
यथा–ज + इत्तिअ = जित्तिअ, तत + इत्तिअ = तित्तिअ, एतावत्–इत्तिअं।

(11) एत्तिह, एत्तिल, एद्दह–इदम्–इम, किं–क, यत्–जा, तत्–त, एतत–एत में एत्तिह, एत्तिल, इद्दह प्रत्यय होते हैं (इदं किमश्च डेत्तिअ-डेत्तिअ-डेद्दहा : 3/157)
यथा–इम–एत्तिहं, एत्तिलं, एद्दहं, जेत्तिहं, जेत्तिलं, जेद्दह।
क–केत्तिहं, केत्तिलं, केद्दिहं, तेत्तिहं, तेत्तिलं, तेद्दहं।

(12) हुत्तं (वार अर्थ में)–(कुत्वसो हुत्तं 2/158) यथा–सयहुत्तं, सहस्सहुत्तं, पियहुत्तं।

(13) आलु, (आल्विल्लोल्लाल वंत मंतेंत्तेरं-मणामतो : 2/159)
यथा–णेहालू, दयालू, ईसालू।
इल्ल–लज्जिल्लो, सोहिल्लो, छाइल्लो, जामइल्लो।
उल्ल–विभाउल्लो, मंसुल्लो, दप्पुल्लो।
आल–सद्दालो, जडालो, फडालो, रसालो, जोण्हालो।
वंत–धणवंतो, गुणवंतो, भतिवंतो।
मंत–हणुमंतो, महमंतो, सिरिमंतो, पुण्णमंतो।
इत्त–कव्वइत्तो, माणइत्तो।
इर–गव्विरो, रेहिरो।
मण–धणमणो।

(14) त्तो, दो–'तस्' प्रत्ययात के त्तो, दो आदेश होते हैं। (तो दो तसो वा 2/190)
यथा–सव्वत्तो, सव्वदो, त्तो, तदो, एकत्तो, एकदो, अण्णत्तो, अण्णदो, कत्तो, कदो, जत्तो, जदो।

(15) हि, ह, त्थ–'अप्' प्रत्यायांत के –हिं, 'ह' और 'त्थ' आदेश होते हैं। (त्रपो हि, ह-त्थाः 2/161)
यथा–जहि, जह, जत्थ
तहि, तहं, तत्थ, कहि, कह, कत्थ।
अण्णहि, अण्णह, अण्णत्थ।

(16) सि, सिअं, इआ–एक के बाद रहे हुए 'दा' प्रत्यय के स्थान पर 'सि', 'सिअं', 'इआ' प्रत्यय होते हैं। (वैकाद् : सि सि अं इआ 2/162)

यथा–एक्कसि, एक्कसिअं, एक्कइआ (एकदा)

(17) इल्ल, उल्ल–भव अर्थ में 'इल्लं, उल्लं प्रत्यक्ष होते हैं। (डिल्ल–डुल्लौ भवे 2/163)

यथा–पुरिल्लं, हेट्ठिल्लं, उवरिल्लं, अप्पुल्लं।

(18) इल्ल, उल्ल इत–स्वार्थ में ('क' से सम्बन्धित प्रत्यय में) इल्ल, उल्ल और इत प्रत्यय होते हैं। (स्वार्थे कश्च वा 2/164)

यथा–चंविल्लो, चंदुल्लो, चंदिओ। पक्ष में– चंद, उवरि, मुह।

(19) ल्ल–'नव' और एक में 'ल्ल' प्रत्यय होता है। (ल्लो नवैकाद्वा 2/164)

यथा–णवल्लो, एकल्लो।

(20) ल्ल–'ऊपर का कपड़ा' इस अर्थ में 'ल्ल' प्रत्यय होता है। (उपरे : संव्याने 2/166)

यथा–उवरिल्लो–अवरिल्लो।

(21) मया, डमया–अमया–'भ्रू' शब्द का इस अर्थ में 'मया' और 'अमया' प्रत्यय होते हैं। (भ्रूवो मया डमया 2/167)

यथा–भुमया, भुअमया, भमया।

(22) डिअम–इअम–शनैः में डिअम्–इअम् प्रत्यय होता है। (शनै सो डिअम् 2/168)

यथा–सणिअं।

(23) डयंर–अयं, डिय–इयं–मनाक् शब्द से परे स्व अर्थ में 'अयं' और 'इयं' प्रत्यय होते हैं। (मनाको न ता डयं च 2/169)

यथा–मणयं, मणियं। मणा।

(24) डालिअ–आलिअं–मिश्र–शीस में 'आलिअ' प्रत्यय होता है। (मिश्राड्डालिअ : 2/170)

(25) र–दीर्घ–दीह में 'र' प्रत्यय होता है। (रो दीर्घात् 2/171)

यथा–दीहर।

(26) ल–विद्युत–विज्जु, पत्र–पत्त, पीत–पीव, अन्ध में 'ल' प्रत्यय होता है। (विद्युत–पत्र–पीतान्धाल्ल : 2/173) विज्जुला, पत्तल, पीवल, अंधल।

(27) तर–अर, तम–अम प्रत्यय

सिक्खअर, सिक्खअम, थोवअर, थोवअम, अप्पअर, अप्पअम, पिअअर, पिअअम, अहिअअर, अहिअअम।

(28) कुछ अन्य तद्धित शब्द :

धणी, अत्थिओ, तवस्सीस, पीणया, रायण्णो, आरिस, जेया, कया, सव्वसा, तया, सव्वहा आदि।

ध्यान दें

जो फासओ वण्णओ णेहियो हालिद्दो सुक्किलो, गंधओ, रसओ।

चित्तगा, चित्तलगा, सुणगा, ससगा, कंदलगा, घोडगा।

अस्सतरा, गद्दभ, बाहल्लेण।

सत्तरह–स्वर विचार

स्वर-परिवर्तन

(1) ह्रस्व–स्वर का दीर्घ–य, र, व, श, स, षं के पूर्व या पश्चात् लोप होने पर श, ष, स के आदि स्वर का दीर्घ हो जाता है। (लुप्त–य–र–व–श–ष–सां दीर्घः 1/43)

यथा– शस्य लोपे–पासइ (पश्यति), कासवो (कश्यपः)

र लोपे –बीसमइ (विश्राम्यति), मीसं (मिश्रम्)

व लोपे–आसो (अश्वः), वीसासो (विश्वासः)

श लोपे–दूसासणो (दुश्शासनः, मणासिला)

ष लोपे–सीसो (शिष्य), मणूसो (मनुष्यः)

इसके अतिरिक्त–कासओ (काश्यपः), वासा (वर्षाः), वासो (वर्षः), वीसाणो (विष्वाणः), वीसुं (विष्यक्), नीसित्तो (निष्षिक्तः), सासं (शाशत्), ऊसो (उस्त्रः), वीसम्भो (विश्रम्भः), विकासरो (विकस्वरः), नीसो (निःस्वः), नीसहो (निस्सहः)

(2) ह्रस्व–स्वर का विकल्प से दीर्घ (अतः समृद्ध्यादो वा 1/44)

यथा–सामिद्धी (समिद्धिः), पासिद्धी, पसिद्धी (प्रसिद्धिः), पायडं, पयडं (प्रकटं), पाडिवआ, पडिवआ (प्रतिपदा), पासुत्तो, पसुत्तो (प्रसुप्तः), पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी (प्रतिसिद्धिः), पावासू, पवासू, (प्रवासित्), सारिच्छो, सरिच्छो (सदृशः), माणंसी, मणंसी (मनस्विन्), माणंसिणी, मणंसिणी (मनस्विनी), आहिआई, अहिआई (अभियातिः), पारोहो, परोहो, (प्ररोहः), पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी (प्रतिस्पर्द्धिन्)

(3) ह से परे दीर्घ होता है (दक्षिणे हे 1/45) दाहिणो (दक्षिणः) दक्खिणो (वि.)

(4) आदि के 'अ' को 'इ' (इः स्वप्नादौ 1/46)

यथा–सिविणो सिमिणो (स्वप्नः), ईसि (ईषत्), विलिअं (व्यलीकम्), विअणं (व्यजनम्), मुइंगो (मृदङ्गः), किविणो (कृपणः), उत्तिमो (उत्तमः), मिरिअं (मरिचम्), दिण्णं (दत्तम्)

(5) अ को इ–इंगालो (अङ्गारः), णिडालं (ललाटम्) (1/47)

(6) मध्यम 'अ' को इ (मध्यम-कतमे द्वितीयस्य 1/48), (सप्तपर्णे वा 1/49)

यथा– मज्झिमो (मध्यमः), कइयो (कतमः) छत्तिवणो (सप्तपर्णः)

(7) मयट् प्रत्ययांत के 'क' आदि 'अ' का 'इ' (मयटय इर्वा 1/50) मयट्–मय

यथा–विसमइओ (विषमयः)

यथा–विसमओ (विषमयः)

(8) आदि 'अ' को ई–(ई हरे वा 1/51)

यथा–हीरो (हरः)

(9) 'अ' को उ–(ध्वनि–विष्वचोरुः 1/52)

यथा– झुणी (ध्वनिः), वीसुं (विष्वक्)

खुडिओ (खण्डितः) (1/53)

गउओ (गवयः), गउआ (गवया) (1/54)

पढुमं (प्रथमं), पुढुमं (प्रथमम्) (1/55)

अहिण्णू (अभिज्ञः), सव्वण्णू (सर्वज्ञः) (1/56)

कयण्णू (कृतज्ञः), आगमण्णू (आगमज्ञः) (1/56)

(10) अ को ए–(एच्छय्यादौ 1/57)

यथा– सेज्जा (शय्या), सुन्देरं (सौन्दर्यम्)

गेन्दुअं (कन्दुकं)

उक्केरो (उत्करः), वेल्ली (वल्ली) (1/58)

पेरंतो (पर्यन्तः), अच्छेरं (आश्चर्यम्) (1/58)

(11) अ को ओ–(ओतपद्मे 1/61) पोम्मं (पद्म)

नमोक्कारो (नमस्कारः), परोप्परं (परस्परं 1/62)

ओप्पेइ (अर्पयति), ओप्पियं (अर्पितम्) (1/63)

सोवइ (स्वपिति)

(12) अ को आ, एवं आइ-(नात्पुनर्यादाई वा 1/65)

यथा-ण उणा (न पुनः), ण उणाइ (न पुनः)

(13) 'अ' का लोप-(वालाब्वरण्ये लुक् 1/66)

यथा-अलाऊ-लाऊ (अलाबू), अरण्णं-रण्णं (अरण्यं)

(14) आ का अ-(वाव्ययोत्खातादावदातः 1/67)

जहा-जह (यथा), तहा-तह (तथा)

अहवा-अहव (अथवा), उक्खायं-उक्खयं (उत्खातं)

चामरो-चमरो (चमरः), कालओ-कलओ (कालकः)

ठविओ-ठविओ (स्थापितः), पाययं-पययं (प्राकृतं)

कुमारो-कुमरो (कुमारः), बाम्हणो-बम्हणो (ब्राह्मणः)

पुव्वाण्हो-पुव्वण्हो (पूर्वाह्न), दावग्गी-दवग्गी (दावाग्निः)

चाडू-चडू (चाटुः), खाइरं-खइरं (खादिरं)

(15) आ का अ (घञ् वृद्धेर्वा 1/68)

पवाहो-पवहो (प्रवहः), पहारो-पहरो (प्रहरः)

पयारो-पयरो (प्रकारः), पत्थावो-पत्थवो (प्रस्तावः)

मरहट्ठो-महाराष्ट्रः (महाराष्ट्रः 1/69), आअरिओ (आचार्यः) (1/69)

(16) अनुस्वार सहित 'आ' का अ-(मांसादिष्वनुस्वारे 1/70)

यथा-मंसं (मांसं), पंसु (पांसु)

कंसं (कांस्यं), कंसिओ (कांसिकः)

वंसिओ (वांशिकः), पंडवो (पाण्डवः)

संसिद्धिओ (सांसिद्धिकः), संजत्तिओ (सांयात्रिकः)

सामओ (श्यामाकः) (श्यामाके मः 1/71)

(17) आ का इ-(इः सदादौ वा 1/72)

यथा- सया-सइ (सदा), निसा-अरो-निसि-अरो (निशाचरः)

कुप्पासो-कुप्पिसो (कूर्पासः)

आइरिओ (आचार्यः) (आचार्ये चोच्च 1/73)

(18) आ का ई-(ईः स्त्यान-खल्वाटे 1/74)

यथा-ठीणं, थीणं, (स्त्यानम्), खल्लीडो (खल्वाटः)

(19) आ का उ-(उः सास्ना-स्तावके 1/75)

यथा-सुण्हा (सास्ना), थुवओ (स्तावकः)

(20) आ का ऊ-(ऊद्धासारे 1/76)

यथा- आसारो-ऊसारो (आसारः)

अज्जू (आर्या- 1/77)

(21) आ का ए-(एद् ग्राह्ये 1/78)

यथा- गेज्झं (ग्राह्यं) दारं-वारं-देरं (द्वारम्) (द्वारे वा 1/79)

पारावओ-पारेवओ (परापतः) (पारापते रो वा 1/80)

मेत्तं (मात्रं) (मात्रटि वा 1/81)

(22) आ का उ और ओ-(उदोद्वार्द्रे 1/82)

यथा- उल्लं, ओल्लं (आर्द्रम्)

ओली (आली) (औदाल्यां पंक्तौ 1/83)

(23) दीर्घ का ह्रस्व-दीर्घ स्वर से आगे संयुक्त अक्षर पर दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है। (ह्रस्वः संयोगे 1/84)

यथा- अम्बं (आम्रम्), तम्बं (ताम्रम्), विरहग्गी (विरहाग्निः), अस्सं (आस्यम्), मुणिंदो (मुनीन्द्रः), तित्थं (तीर्थम्), गुरुल्लावा (गुरूल्लापाः), चुण्णो (चूर्णः), णरिंदो (नरेन्द्रः), मिलिच्छो (म्लेच्छः), अहरुट्ठं (अधरोष्ठं, णीलुप्पलं)

(24) इ का ए-(इत एद्वा 1/85)

यथा- पिण्डं-पेण्डं (पिण्डम्), धम्मिल्लं-धम्मेल्लं (धम्मिल्लम्), सिन्दूरं-सेन्दूरं (सिन्दूरम्), विण्हू-वेण्हू (विष्णुः), पिट्ठं-पेट्ठं (पिष्टम्), बिल्लं-बेल्लं (बिल्वम्), किंसुअं-केंसुअं (किंशुकं), (किंशुके वा 1/86), मिरा-मेरा (मिरा) (मिरायाम् 1/87)

(25) इ का अ (पथि–पृथिवी–प्रतिश्रुन्मूषिक–हरिद्रा-विभीतकेष्वत् 1/88)

यथा– पहो (पथिक्), पुहइ, पुढवी (पृथिवी), पडंसुआ (प्रतिश्रत्), मसूओ (मूषिकः), हलद्दा (हरिद्रा), बहेडओ (विभीतकः), सिढिलं–सढिलं (शिथिलं), इंगअं, अंगुअं (इंगुदम् 1/89), तित्तिरि–तित्तिरो (तित्तिरिः) (तित्तिरौ रः 1/90) इअ (विअसिअ-कुसुम-सरो (इति विकसित-कुसुम) (इतौ तौ वाक्यादौ 1/91)

(26) इ का ई–(ईजिह्वा–सिंह–त्रिंशत् विंशती त्या 1/92)

यथा– जीहा (जिह्वा), सीहो (सिंहः), तीसा (त्रिंशत्), वीसा (विंशत्), नीसरइ (निःसरति) नीसासो (निश्वासः)

(27) इ का उ–(द्विन्योरूत् 1/94)

यथा– दु (द्वि), दुमत्तो (द्विमात्रः), दुअई (द्विपतिः), दुविहो (द्विविधः), दुरेहो (द्विरेफः), दुवयणं (द्वि–वचनम्)

(28) इ का ओ–(प्रवासीक्षौ 1/95)

यथा– पावासुओ (प्रवासिकः), उच्छू (इक्षुः), जहुट्ठिलो (युधिष्ठरः) (युधिष्ठिरे वा 1/96) दुहा किज्जइ (द्विधा क्रियते), दुहा–इअं (द्विधा कृतम् 1/97)

(29) इ का ओ–(ओच्च द्विधाकृगः 1/98)

यथा– दोहा–किज्जइ (द्विधाक्रियते), दोहा–इअं (द्विधा–कृतम्),

णिज्झरो-ओज्झरो (निर्झरः) (वा निर्झरे ना 1/98)

(30) ई का अ–(हरीतक्यामीतोत् 1/99)

यथा– हरडई (हरीतकी)

(31) ई का आ–(आत् कश्मीरे 1/100)

यथा– कम्हारा (कश्मीराः)

(32) ई का इ–(पानीयादिष्वत् 1/101)

यथा– पाणिअं (पानीयम्), अलिअं (अलीकम्), जिअइ (जीवति), जिअउ (जीवतु), विलिअं (व्रीडितम्), करिसो (करीषः), सिरिसो (शिरीषः), दुइअं (द्वितीयम्), तइअं (तृतीयम्), गहिरं (गंभीरम्), उवणिअं (उपनीतम्), आणिअं (आनीतम्), पलिविअं

(प्रदीपितम्)(, ओसिअंतं (अवसीदतम्), पसिअं (प्रसीदम्), गहिअं (गृहीतम्), वम्मिओ (वल्मीकः), तयाणिं (तदानीम्)

(33) ई का उ-(उज्जीर्णे 1/102)

यथा- जुण्णो (जीर्णः)

(34) ई का ऊ-(ऊर्हीन-विहीने वा 1/03)

यथा- हीणो-हूणो (हीनः), विहीणो-विहूणो (विहीनः), तूहं (तीर्थ) (तीर्थे हे 1/104)

(35) ई का ए-(एत् पीयूषापीड-विभीतक कीदृशेदृशे 1/105)

यथा- पेऊसं (पीयूषं), आमेलो (आपीडः), वहेडओ (विभीतकः), केरिसो (कीदृशः), एरिसो (ईदृशः), णीडं-नेडं (नीडम्), पीढं-पेढं (पीठम्) (नीड-पीठे वा (1/106)

(36) उ को अ-(उतो मुकुलादिष्वत् 1/107)

यथा- मउलो (मुकुलः), मउरं (मुकुरं), मउडं (मुकुटम्), अगरुं (अगुरुम्), जहुट्ठिलो (युधिष्ठिरः), सोअमल्लं (सौकुमार्यम्), गलोई (गुडूची)

उवरिं-अवरिं-(उपरिं) (वोपरौ 1/108)

गुरुओ-गरुओ (गुरुकः) (गुरौ के वा 1/109)

(37) उ का इ-(इर्भ्रुकुटौ 1/110) भिउडी (भ्रुकुटिः)

पुरिसो (पुरुषः), पउरिसं (पोरुषम्) (पुरुषे रोः 1/111)

(38) उ का ई-(ईः क्षुते 1/112) छीअं (क्षुतम्)

(39) उ का ऊ-(ऊत्सुभग-मूसले वा 1/113)

यथा- सुहओ-सूहवो (सुभगः), मूसलं (मुसलम्), ऊसुओ (उच्छुकः) ऊससइ (उच्छवसति) (अनुत्साहोत्सन्नेत्सच्छे 1/114)

दुसहो-दूसहो (दुःसहः), दुहओ-दूहओ (दुर्भगः) (र्लुकि दुरो वा 1/115)

(40) उ का ओ-(ओत्संयोगे 1/116)

यथा- तोण्डं (तुण्डम्), मोण्डं (मुण्डम्), पोक्खरं (पुष्करम्), कोट्टिमं (कुट्टिमम्), पोत्थअं (पुस्तकम्), लोद्धओ (लुब्धकः), मोत्था (मुस्ता), मोग्गरो (मुद्गरः), पोग्गलं (पुग्गलम्), कोट्ठ (कुष्टः),

कोन्तो (कुन्तः), वोक्कतं (व्युत्क्रान्तम्), कुउहलं-कोऊहलं-कोउहल्लं (कुतूहलम्) (कुतूहले वा ह्रस्वश्च 1/117)

(41) ऊ का अ-(अदूतः सूक्ष्मे वा 1/118) सुण्हं-सण्हं (सूक्ष्मम्) आर्षे-सुहुमं (सूक्ष्मम्) दुऊलं-दुअल्लं (दूकूलम्) (दूकूले वा लश्च द्विः 1/119)

(42) ऊ का ई-(ईर्वोद्व्यूढे 1/120) उव्वूढं-उव्वीढं (उद्व्यूढम्)

(43) ऊ का उ-(उ र्भू-हनूमत्-कण्डूय-वातूले 1/121)

यथा- भुमया (भ्रूमया), हणुमंतो (हनूमत्), कण्डुअइ (कण्डूयति), वाउलो (वातूलः)

(44) ऊ का उ-(मधूके वा 1/222) महूअं-महुअं (मधूकम्)

(45) ऊ का इ और ए-(इदेतौ नुपूरे वा 1/123)

यथा-नुउरं-नेउरं-निउरं (नूपुरम्)

(46) ऊ का ओ-(ओत्कूष्माण्डी-तूणीर-कर्पूर-स्थूल-ताम्बूल-गुडूची-मूल्ये 1/124)

यथा- कोहण्डी, कोहली (कूष्माण्डी), तोणीरं (तूणीरम्), कोप्परं (कर्पूरं), थोरं (स्थूलं), तम्बोलं (ताम्बूलम्), गलोई (गुडूची), मोल्लं (मूल्यम्), थूणा-थोणा (स्थूणा), तूणं-तोणं (तूणम्) (स्थूणा-तूणे वा 1/125)

(47) ऋ का अ (ऋतोत् 1/126)

यथा-घयं (घृतम्), तणं (तृणम्), कयं (कृतम्), वसहो (वृषभः), मओ (मृगः), घट्ठो (घृष्टः), मउअं (मुदुकम् 1/127)

(48) ऋ का आ-(आत्-कृशा-मृदुक-मृदुत्वे वा 1/127)

यथा-कासा (कृशा), माउक्कं (मृदुकं) माउत्तं (मृदुत्वं)

(49) ऋ का इ-(इत्कृपादौ 1/128)

यथा- किवा (कृपा) किसा (कृशा), हिययं (हृदयम्), मिट्ठं (मृष्टम्), दिट्ठं (दृष्टम्), दिट्ठी (दृष्टिः), सिट्ठं (सृष्टम्) सिट्ठी (सृष्टिः), गिट्ठी (गृष्टिः), पिच्छी (पृथ्वी), भिऊ (भृगुः), भिङ्गो (भृङ्गः, भिङ्गारो (भृंगारः) सिङ्गारो (शृंगारः), सिआलो (शृंगालः), गिद्धी (गृद्धिः), किसो (कृशः), किसाणू (कृशानुः), किसरा (कृसरा),

किच्छं (कृच्छ्रम्), तिप्पं (तृप्तम्), किसिओ (कृषितः), णिवो (नृपः), किच्चा (कृत्या), किई (कृतिः), धिई (धृति), किवो (कृपः), किविणो (कृपणः), इसी (ऋषि), वित्तं (वृत्तम्)

(50) ऋ क इ-(पृष्ठे वानुत्तरपदे 1/129)

यथा- पिट्ठी (पृष्ठिः), मसिणं (मसृणं), मिअंको (मृगाङ्कः), मिच्चू (मृत्यु), सिंगं (शृंगं), धिट्ठो (धृष्टः) (मसृण-मृगाङ्क-मृत्यु-शृंग- धृष्टे वा 1/130)

(51) ऋ का उ-(उदृत्वादौ 1/131)

यथा- उऊ (ऋतु), परामुट्ठो (परामृष्टः), पुट्ठो (स्पृष्टः), पउट्ठो (प्रवृष्टः), पुहई (पृथिवी), पउत्ती (प्रवृत्तिः) पाउसो (प्रावृषः), पाउओ (प्रावृतः), भुई (भृतिः), पहुडि (प्रभृति), पाहुडं (प्राभृतम्), परहुओ (परभृतः), णिहुअं (निभृतम्), णिउअं (निवृतम्), विउअं (विवृतम्), संवुअं (संवृतम्), वुतंतो (वृत्तान्तः), णिव्वुअं (निर्वृतम्), णिव्वुई (निवृत्तिः), वुंदं (वृन्दम्), संवुअं (संवृतम्), वुतंतो (वृत्तान्तः), णिव्वुअं (निर्वृतम्), णिव्वुई (निवृत्तिः), वुंदं (वृन्दम्), वुन्दावणो (वृन्दावनः), वुड्ढो (वृद्धः), वुड्ढी (वृद्धि), उसहो (ऋषभः), मुणालं (मृणालम्), उज्जू (ऋजुः), जामाउओ (जामातृकः), माउओ (मातृकः) भाउओ (भ्रातृकः), पिउओ (पितृकः), पुहुवी (पृथ्वी), णिवुत्तं (निवृत्तम्) वुन्दारया (वृन्दारकाः) (निवृत्त-वृन्दारके वा 1/132), माउ-मण्डलं (मातृ-मंडलम्), माउ-हरं (मातृ-गृहम्), पिउ-हरं (पितृगृहम्), माउ-सिआ (मातृ-ष्वसा), पिउ-सिआ (पितृष्वसा), पिउ-वणं (पितृवनम्), पिउ-वई (पितृ-पतिः) (गौणान्त्यस्य 1/134), मुसा, मूसा, मोसा (मृषा) (उदूदोन्मृषि 1/136)

(52) रिद्धी (ऋद्धिः) रिच्छो (ऋच्छ), रिसहो (ऋषभः), रिऊ (ऋतुः), रिसी (ऋषि), रिणं (ऋणं), सरिच्छो सदृशः), (ऋणर्जृषभत्वृषौ वा 1/141, 1/142)

(53) ऋ का अरि-(अरिदृप्ते 1/144)

यथा-दरिओ (दृप्तः)

(54) ऋ का इलि-(लृत इलिः क्लृप्त-क्लृन्ने 1/145)

यथा-किलित्तो (क्लृप्तः), किलिन्नो (क्लृन्नः)

(55) ए का इ-(एतइद्वा वेदना-चपेटा-देवर केसरे 1/146)

यथा- वेअणा-विअणा (वेदना), चवेडा-चविडा (चपेटा), देअरो-दिअरो (देवरः) केसरो-किसरो (केसरः)

(56) ऐ का ए-(ऐत एत् 1/148)

यथा- सेला (शैलाः), एरावणो (ऐरावणः), केलासो (कैलाशः), वेज्जो (वैद्यः), केटवो (केटभः), वेहव्व (वैधव्यम्)

(57) ऐ का इ-(इत्सैन्धव शनैश्चरे 1/149)

यथा- सिंधवं (सैंधवम्), सणिच्छरो (शनैश्चरः), सेन्नं-सिन्नं (सैन्यम्) (सैन्ये वा 1/150)

(58) ऐ का अइ-(अइ-दैत्यादौ च 1/151)

यथा- सइण्णं (सैन्यम्), दइच्चो (दैत्यः), दइन्नं (दैन्यम्), अइसरियं (ऐश्वर्यम्), भइरवो (भैरवः), वइजवणो (वैजवनः), दइवअं (दैवतम्), कइअवं (कैतवम्), वइसाहो (वैशाखः), वइसालो (वैशालः), वइदब्भो (वैदर्भः), वइस्साणरो (वैश्वानरः), सइरं (स्वैरं), चइत्तं (चैत्यम्), वेरं-वइरं (वैरम्), केलासो-कइलासो (कैलाशः), केरवं-कइरवं (कैरवं), वेसवणो-(वइसवणो (वैश्रवणः), वेसम्पायणो-वइसम्पायणो (वैशम्पायनः), वेआलिओ-वइआलिओ (वैतालिकः), वेसिअं-वइसिअं (वैशिकम्), चेत्तो-चइत्तो (चैत्रः) (वैरादौ वा 1/152) देव्वं-दइव्वं-दइवं (दैवम्) (एच्च दैवे 1/153)

(59) ओ को अउ-(ओतोद्वान्योन्य-प्रकोष्ठातोद्य-शिरोवेदना-मनोहर-सरोरुहेत्कोश्च वः 1/156)

यथा- अन्नन्नं-अन्नुन्नं (अन्योन्यम्) पवट्ठो-पउट्ठो (प्रकोष्ठः), आवज्जं आउज्जं (आतोद्यं) सिर-वियणा-सिरो-विअणा (शिरो-वेदना), मणहरं-मणोहरं (मनोहरं), सररूहं-सरोरूहं (सरोरूहम्)

(60) ओ का ऊ-(ऊत्सोच्छ्वासे 1/157) सूसासो (सोच्छ्वासः)

(61) ओ का अउ एवं आअ–(गव्यउ–आअः 1/158) गउओ, गउआ, गाओ (गो)

(62) औ का ओ–औत ओत्) कोमुई–कौमुदी, जोव्वणं (यौवनम्)

(63) औ का उ–(उत्सौन्दर्यादौ 1/160), सुन्देरं सुंदरिअं (सौन्दर्यम्), कोच्छेअयं–कुच्छेअयं (कौक्षेयम्) (1/161)

(64) औ का अउ–(अउः पौरादौ च 1/162), पउरो (पौरः), चउरो (चौरः) कउरवो (कौरवः)

(65) औ का ए–(एत् त्रयोदशा दौ स्वरस्य सस्वर व्यञ्जनेन 1/165)

यथा– तेरह (त्रयोदशः), तेवीस (त्रयोविंशति), तेतीस (त्रयस्त्रिंशशत्), थेरो (स्थविरः), वेइल्लं (विचकिलम्), एक्कारो (अयस्कारः) (स्थविर-विचकिलायस्कारे 1/166)ए कयलं-केलं (कदलम्) (वा कदले 1/167), कण्णयारो–कण्णेरो (वेतः कर्णिकारे 1/168)

(66) स्वर-सहित व्यञ्जन का ओ–(ओत्-पूतर-बदर-नवमालिका-नव-फलिका-पूगफले 1/170)

यथा–पोरो (पूतरः), बोरं (बदरम्), णो–मालिका (नव–मालिका), णोहलिया (नवफलिका), पोष्फलं (पूगफलम्), मऊहो–मोहो (मसूखः), लवणं-लोणं (लवणम्), चउग्गुणो–चोग्गुणो (चतुर्गुणः), चउत्थी-चोत्थी (चतुर्थी), चउद्दहो–चोद्दहो (चतुर्दशः), चउव्वारो–चोवारा (चतुर्वारः), सुउमालो–सोमालो (सुकुमारः), कोउल्लहं–कोहलं (कुतूहलम्), उऊहलो–ओहलो (उदूखलः) उदूहलं–ओक्खलं (उलूखलम्) (1/174)

– अवयरइ–ओअरइ (अवतरति), अवयासो–ओयासो (अवकाशः), अवसरइ–ओसरइ (अपसरति), अवसारिअं–ओसारिअं (अपसारितम्)

– उवहरिअं–ओहरिअं–उहसिअं (उपहसितम्), उवज्झाजो–ओज्झाओ-उज्झाओ (उपाध्यायः), उववासो–आसोसो–ऊआसो (उपवासः)

अट्ठारह–व्यञ्जन विचार

व्यञ्जन परिवर्तन

(1) क का ख–खीलो (कीलः), खुब्जो (कुब्जः), खप्परं (कर्पूरम्)
(कुब्ज-कर्पर-कीले कः खोऽपुष्पे 1/18)

(2) क का ग–(मरकत-मदकले गः कंदुके त्वादेः 1/182)
यथा–मरगयं (मरकतम्), मयगलो (मदकलः), गेन्दुअं (कन्दुकम्), एगो (एकः)

(3) क का च–(किराते चः 1/813) चिलाओ (किरातः)

(4) क का भ एवं 'भ' का 'ह' ह–(शीकरे भ-हौ वा 1/184)
यथा–सीभरो सीहरो (शीकरः)

(5) क का म–(चंद्रिकायां मः 1/185)
चंदिमा (चंद्रिका)

(6) क का ह–(निकष-स्फटिक-चिकुरेहः 1/816)
यथा–णिहसो (निकषः), फलिहो (स्फटिकः), चिहुरो (चिकुरः)

(7) ख, घ, थ, ध, भ का ह–(ख-घ-थ-ध-भाम् 1/187)

ख–यथा – साहा (शाखा, मुह (मुखं), लिह (लिख्)

घ–यथा – मेहो (मेघः), माहो (माघः), जहणं (जघनम्)

थ–यथा – णाहो (नाथः), कह (कथ), मिहुणं (मिथुनम्), जहा (यथा)

ध–यथा – साहू (साधुः), बधिरो (बहिरः), इंद-हणू (इंद्र-धनुः)।

भ–यथा – सहा (सभा), णहं (नभम्), सहावो (स्वभावः)

(8) थ का ध या ह–(पृथकि धो वा 1/188)

पिधं-पुधं-पुहं (पृथक्), अध-अह (अथ)

(9) ख का क–(शृंखले खः कः 1/189)

सङ्कलं (शृंखलम्)

(10) ट का ड–(टो डः 1/195)

यथा–घडो (घटः), पडो (पटः), णडो (नटः), भडो (भटः), चविडा (चपेटा), फाडेइ (फाटयति)

(11) ट का ढ–(सटा-शटक-कैटभे ढः 1/196)

यथा–सढा (सटा), सढगो (शटकः), केढवो (कैटभः)

(12) ट का ल–(स्फटिके लः 1/197)

यथा–फलिहो (स्फटिकः), चविला (चपेटा), पाल (पाट) (चपेटा-पाटौ वा 1/98)

(13) ठ का ढ–(ठो ढः 1/199)

यथा–मढो (मठः), कमढो (कमठः), कुढारो (कुठारः), पढ (पठ्)

(14) ड का ल–(डो लः 1/202)

यथा–वलयामुंह (वडयामुहम्), गरुलो (गरुडः), तलायं (तडागम्), दालिम (दाडिम/णल (नड), कील (क्रीड)

(15) ण का ल–(वेणौ णो वा 1/203)

यथा–वेणू-वेलू

(16) च का छ–(तुच्छे तश्च–छौ वा 1/204)

यथा–तुच्छं-छुच्छं (तुच्छम्)

(17) त का ट–(तगर–त्रसर-तूवरे टः 1/205)

यथा–टगरो (तगरः), टसरो (त्रसरः), टूवरो (तूवरः)

(18) त का ड–(प्रत्यादौ डः 1/206)

यथा–पडिवण्णं (प्रतिपन्नं), पडिहासो (प्रतिभासः), पडिहारो (प्रतिहारः), पाडिप्फद्धी (प्रतिस्पर्द्धि), पडिसारो (प्रतिसारः), पडिणिअत्तं (प्रतिनिवृत्तम्), पडिमा (प्रतिमा), पडिवया (प्रतिपदा), वेडिसो (वेतसः), (इत्वे वेतसे 1/207)

(19) त का ण–(गर्भितातिमुक्तके णः 1/208)

यथा–गब्भिणो (गर्भितः), अणिउंतयं (अतिमुक्तम्),

रुण्णं (रुदितम्), दिण्णं (दितम्) (रुदिते दिनाण्णः 1/209)

(20) त का र–सप्ततौ रः 1/210)

यथा–सत्तरी (सप्ततिः)

(21) त का ल–(अतसी–सातवाहने लः 1/211)

यथा–अलसी (अतसी), सालवाहणे (सातवाहन),

पलिअ–पलिलं (पलितं) (पलिते वा 1/212)

(22) त का ह–(वितस्ति-वसति-भरत-कातर-मातुलिंगे हः 1/214)

यथा–विहत्थी (वितस्तिः), वसही (वसतिः), भरहो (भरतः), काहलो (काहरः) माहुलिङ्ग (मातुलिङ्गम्)

(23) थ का ढ–(मेढि-शिथिर-शिथिल-प्रथमे थस्य ढः 1/215)

यथा–मेढी (मेथिः) सिढिलो (शिथिरः), सिढिलो (शिथिलः) पढमो प्रथमः) णिसीढो (निशीथः), पुढवी (पृथिवी) (1/216)

(24) द का ड–(दशम्-दष्ट-दग्ध-दोला-दण्ड-दर- दाह-दहि-दम्भ-दर्भ-कदन- दोहदे दो वा डः 1/217)

यथा–डसणं (दशनम्), डट्ठा (दष्टः), डड्ढो (दग्ध), डोला (दोला), उण्डो (दण्डः) डरो (दरः), डाहो (दाहः), डम्भो (दम्भः), डब्भो (दर्भः) कडणं (कदनम्), डोहलो (दोहलः)

डस (दंश्), डह (दह्) (दंश–दहोः 1/218)

(25) द का र–(संख्या-गदगदे रः 1/219)

यथा–एआरह (एकादश), बारह (द्वादश), तेरह (त्रयोदश), गग्गरं (गद्गदं)

करली (कदली), (कदल्यामद्रुमे 1/220)

(26) द का ल–(प्रदीपि-दोहले लः 1/221)

पलीवेइ (प्रदीयति), पलित्तं (प्रदीप्तम्), दोहलो (दोहद),

कलम्बो (कदम्बे वा 1/222)

(27) ध का ढ–(निषधे धो ढः 1/226)

निसढो (निषधः)

ओसढं (औषधम्) (वौषधे 1/227)

(28) न का ण–(नो णः 1/228)

यथा–णाणं (ज्ञानम्) जाण (जान), णयणं (नयनम्),
नरो–णरो (नरः), नई–णई (नदी), नमो–णमो (नमः), नेइ–णेइ (नेमि), नाण–णाण (ज्ञान) (नादौ 1/229)

(29) प का व–(पो वः 1/231)

सवहो (शपथः), पदीवो (प्रदीपः), पाव (पाप), उवमा (उपमा), तवो (तपः), रूवं (रूपम्)

(30) प का फ–(पाटि-परुष-परिघ-परिखा-पनस-पारिभद्रे फः 1/232)

यथा–फाल (पाट), फरुसो (परुषः), फलिहो (परिघः), फलिहा (परिखा), फणसो (पनसः), फालिहद्दो (पारिभद्रः)

(31) फ का भ या ह–(फो भ-हौ 1/236)

यथा–रेभो–रेहो (रेफः), सिभा (शिफा), मुत्ताहलं (मुक्ताफलं), सभलं–सहलं (सफलम्), सेहालिआ (शेफालिका), गुह–गुभ (गुफ्)

(32) ल का ण–(लाहल-लांगत-लांगुले वादे र्णः 1/256)

यथा–लङ्गलं–णङ्गूलं (लांगूलम्), लाहलो–णाहलो (लाहलः), लङ्गूलं (लांगूलम्), णिडालं–णडाल (ललाटम्) (ललाटे च 1/257)

(33) श, ष का स–(श-षोः सः 1/260)

यथा–सद्दो (शब्दः), कुसो (कुशः), जसो (यशः), दस (दश), सुद्धं (शुद्धम्), सुहं (शुभम्), कसायो (कषायः), णिहसो (निकषः) घोस (घोष), सेसो (शेषः), विसेसो (विशेषः)

(34) श, ष का ह–(दश्–पाषाणे हः 1/262)

यथा–दह (दश), पाहाणो (पाषाणः)

(35) ह का घ–(हो घोनुस्वारात् 1/264)

यथा–सिंघो (सिंहः), संघारो (संहारः), दाघो (दाहो)

(36) आदि ष, श, स का छ–(षट्-शमी-शाव-सुधा-सप्तपर्णेष्वादेश्छः 1/265)

यथा–छट्ठो (षट्), छप्पओ (षट्पदः), छमी (शमी), छावो (शावः), छुहा (सुधा), छत्तिवण्णो (सप्तपर्णः),

सिरा–छिरा (शिरा) (शिरायां वा 1/266)

व्यञ्जन–लोप

(1) क, ग, च, ज, त, द, प, य, व व्यञ्जनों का प्रायः लोप होता है। यदि ये सभी व्यञ्जन मध्य और अंत में हों। (क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुक् 1/177)

क - यथा–तित्थअरो (तीर्थंकरः), लोओ (लोकः), एओ (एकः)

ग - णओ (नगः), णअरं (नगरं), कंअणं (कंगनम्)

च - कवअं (कवचम्), वयणं (वचनम्), सई (शची)

ज - रअअं (रजकम्), राआ (राजा), गओ (गजः)

त - गओ (गतः), सुगओ (सुगतः), रिऊ (ऋतु)

द - मअणो (मदनः), वयणं (वदनम्), आई (आदिः)

प - सुउरिसो (सुपुरुषः), रिऊ (रिपुः)

य - णिओओ (नियोगः), विओओ (वियोगः), विणअं (विनयम्)

व - लाअण्णं (लावण्य), विउहो (विबुधः), कइ (कवि)

स्वर-सहित व्यञ्जन लोप–

(1) (लुग भाजन-दनुज-राजकुले जः सस्वरस्य न वा 1/267)

ज–लोप–भायणं–भाणं (भाजनम्), दणु–वहो (दनुज–वधः)

राय–उलं–राउलं (राजकुलम्)

क/ग लोप–वायरणं–वारणं (व्याकरणम्) (1/268)

पायारो–पारो (प्रकारः)

आगओ–आओ (आगतः)

य लोप–(किसलय–कालायस–हृदये यः 1/269)

यथा– किसलयं-किसलं–कालायसं-कालासं

हिअयं–हिअं (हृदय)

द लोप–(दुर्गादेव्युदुम्बर-पाद-पतन-पादपीठन्तर्दः 1/270)

यथा– दुग्गा वी (दुर्गा देवी), उउम्बरो–उम्बरो (उदुम्बरः)

पाद–पा–वयणं (पाद–पतनम्), पाय–वीढं–पावीढं (पादपीठम्)

व का लोप–(यावत्तावज्जीविता वर्तमानावट-प्रावरक-देव-कुलैवमेवे वः 1/271)

यथा– जाव–जा, ताव–ता, जीविअं–जीअं

आवत्तमाणो–आत्तमाणो, आवडो–अडो

पावारओ–पारओ, देव–उलं–दे–उलं, एवमेवं–एमेवं

अन्त्य-व्यञ्जन-लोप

(1) (अन्त्य-व्यञ्जनस्य 1/11)

राज (राजन्), अप्प (आत्मन्), जाव (यावत्), ताव (तावत्), जसो यशस्)

नोट–मध्य-व्यञ्जन का लोप नहीं होता है।

व्यञ्जन परिर्वन बलताइए

अत्थिय-तेंदुय-वोर-कविट्ठ-अंबाडग-माडलुंग-बिल्ल-आमलक-फणस-दाडिम आसोट्ठ- उंबर-वड-णग्गोह-णंदिरुक्ख-पिप्पलि-सतर-पिलक्ख रुक्ख-काउंबरिय कुत्थुंभरिय देवदालि-तिलग-लउय-छत्तोह-सिरीस-सतिवण्ण-दधिवण्ण-लोद्ध-धव चंदण-अज्जुण-णीव-कुडवा-कलंबाणं। (भग. 7/10/1)

उन्नीस–संयुक्त व्यञ्जन विचार

संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन–

(1) क्क–(शक्त-मुक्त-दष्ट-रुग्ण-मृदुत्वे को वा 2/2)

यथा–(सक्को (शक्तः), मुक्को (मुक्तः), डक्को (दष्टः) लुक्को (रुग्णः), माउक्कं (मुदुत्वम्)

नोट–उक्त शब्दों के व्यञ्जन लोप होने पर उससे समान वयञ्जन का द्वित्व हो जोता है।

यथा–सत्तो (शक्तः), मुत्तो (मुक्तः), दट्ठो (दष्टः), लुग्गो (रूग्णः), माउत्तणं (मृदुत्वम्)

(2) आदि (शब्द के पहले) क्ष का ख–(क्षः खः क्वचित्तु छ-झौ 2/3)

यथा–खओ (क्षयः), खमा (क्षमा), खायओ (क्षायकः)

क्वचित्–छ, झ–छीण, झीण (क्षीणम्)

(3) मध्य या अंतिम क्ष का क्ख–

यथा–भिक्खा (भिक्षा), दिक्खा (दीक्षा), सिक्खा (शिक्षा), लक्खणं (लक्षणम्), अक्खयं (अक्षतम्), रुक्खो (वृक्षः)

(4) ष्क या स्क का क्ख–(स्क–स्कयोर्नाम्नि 2/4)

यथा–पोक्खरं (पुष्करम्), निक्खं (निष्कम्), खंधो (स्कंधो), (इव शब्द के पूर्व स्क का ख ही होता है।)

सुक्खं (शुष्कम्), खंदो (स्कंदः) (शुष्क-स्कंदे वा 2/5)

(5) आदि क्ष्, स्फ् का ख–(क्ष्वेटकादौ 2/6)

यथा–खोडओ (क्ष्वोटकः), खोडओ (स्फोटकः)

(6) स्त का ख–(स्तम्भे स्तो वा 2/8) खम्भो (स्तम्भः)

(7) स्त का थ–या ठ–(थ-ठावस्पंदे 2/9)

यथा–थम्भो (स्तम्भः), ठम्भो (स्तम्भः)

(8) क्त का ग्ग या त्त–(रक्ते गो वा 2/10) रग्गो, रत्तो (रक्तः)

(9) त्य का च्च–(त्यो ऽ चैत्ये 2/13)

सच्चं (सत्यम्), पच्चयं (प्रत्ययम्)

णच्चं (नृत्यम्), भिच्चं (भृत्यम्)

पच्चूहो (प्रत्यूषः) (प्रत्यूषे पश्च हो वा 2/14)

(10) त्व का च्च, थ्व का च्छ, द्व का ज्ज, ध्व का ज्झ

(त्थ-थ्व-द्व-ध्वां च-छ-ज-झाः क्वचित् 2/15)

यथा– त्व – भोच्चा (भुत्वा), ण

थ – पिच्छी (पृथ्वी)

द्व – विज्जो (विद्वान)

ध्व – बुज्झा (बुद्ध्वा)

(11) क्ष का च्छ–(छोऽक्ष्यादौ 2/17)

यथा–अच्छिं (अक्षिम्), उच्छू (इक्षुः), लच्छी लक्ष्मी), कच्छो (कक्षः), कुच्छी (कुक्षिः), मच्छिआ (मक्षिका), वच्छो (वृक्षः), कच्छा (कक्षा), छीअ-(सुत), छीर (क्षीर) छुण्ण (क्षुण्ण)

रिच्छो (ऋक्षः) (ऋक्षे वा 2/19)

(12) थ्य, श्च, त्स और प्स का च्छ (ह्रस्वात् थ्य-श्च-त्स-प्सामनिश्चले 2/21)

यथा– थ्य – पच्छं (पथ्यम्), मिच्छा (मिथ्या)

श्च – पच्छिमं (पश्चिमम्), पच्छा (पश्चात्)

त्स – उच्छाहो (उत्साहः), संवच्छलो (संवत्सरः), चिइच्छइ चिइच्छइ (चिकित्सति), मच्छरो (मत्सरः)

प्स – जुगुच्छ (जुगुप्सा), अच्छरा (अप्सरा)

(13) द्य, य्य, र्य का ज्ज (द्य-य्य-र्यां जः 2/24)

यथा- द्य - विज्जा (विद्या), मज्जं (मद्यम्), वेज्जो (वैद्यः)

य्य - सेज्जा (शय्या)

र्य - कज्जं कार्यम्), सुज्जो (सूर्यः), वज्जं (वर्यम्), पज्जयं (पर्यायम्) अज्जो (आर्यः)

(14) ध्य या ह्य का ज्झ - (साध्ववस-ध्य-ह्यां झः 2/26)

यथा- ध्य - उज्झाओ (उपाध्यायः), सज्झाओ (स्वाध्यायः)

ह्य - मज्झं (मह्यम्), गुज्झं (गुह्यम्), सज्झं (सह्यम्)

(15) त्त का ट्ट-(वृत्त-प्रवृत्त-मृत्तिका-पत्तन-कदर्थिते टः 2/29)

यथा-वट्टो (वृत्तः), पवट्टो (प्रवृत्तः), मट्टिका (मृत्तिका) पट्टणं (पत्तनम्)

(16) र्त का ट्ट (र्तस्याधूर्तादौ 2/30)

यथा-केवट्टो (केवर्तः), वट्टुलं वर्तुलम्, णट्टं (नर्तम्)

नोट-र्त का त्त (सूत्र यदि हो तो देय अपेक्षित है।)

यथा-मुत्तो (मूर्तः), मुहुत्तो (मुहूर्तः), मुत्ती (मूर्तिः), कित्ती (कीर्ति), कत्तरी (कर्तरी), भत्तहरी (भर्तृहरी), धुत्तो (धूर्तः), कत्तिओ (कार्तिकः)

(17) स्थ, ष्ट का ट्ठ-(ठो-स्थि विसंथुले 2/32)

यथा-अट्ठी (अस्थि), उवट्ठिई (उपस्थिति) विसंट्ठुल-(विसंस्थुल)

कट्ठं (कष्टम्), दुट्ठं (दुष्टम्), इट्ठं (इष्टम्), दिट्ठी (दृष्टिः), सिट्ठी (सृष्टि), लट्ठी (लष्टि), मुट्ठी (मुष्टिः), पुट्ठी (पुष्टिः)

(18) र्द का ठड्ड-(संमर्द-वितर्दि-विच्छर्द च्छर्दि-कपर्द-मर्दिते र्डः : 2/36)

यथा-संमड्डो (संमर्दः), विअड्डी (वितर्दिः), विच्छड्डओ (विच्छर्दः, छड्डई (छर्दिः), कवड्डो (कपर्दः), मड्डिओ (मर्दितः), गड्डहो (गर्दभः) (गर्दभे वा 2/37)

(19) न्द का ण्ड-(कंदरिका-भिन्दिपाले ण्डः 2/38)

यथा-कण्डलिआ (कंदरिका), भिण्डीवालो (भिन्दिपालः)

(20) ग्ध, ध्द का ड्ढ-(दग्ध-विदग्ध-वृद्धि वृद्धे ढः 2/40)

यथा-दड्ढो (दग्धः), विदड्ढो (विदग्धः), वुड्ढी (वृद्धिः), वुड्ढो (वृद्धः)

सड्ढा (श्रद्धा) इड्ढी (ऋद्धि), अद्धं-अड्ढं (अर्द्धम् 2/41)

(21) म्न या ज्ञ का ण्ण–शब्द के प्रारंभ में ण और मध्य एवं अंत में ण्ण–(म्नज्ञो र्णः 2/42)

यथा–म्न–निण्णं (निम्नम्), पज्जुण्णो (प्रद्युम्नः)

ज्ञ–णाणं (ज्ञानम्), णाया (ज्ञाता)

(22) स्त का त्थ–(स्तस्य थोऽसमस्तः स्तम्बे 2/45)

यथा–थुई (स्तुतिः), हत्थी (हस्तिः), अत्थि (अस्ति), पत्थरो (प्रस्तरः)

(23) ष्प या स्प का प्फ–(ष्प-स्पयोः फः 2/53)

यथा–पुप्फं (पुष्पम्) सप्फं (शष्पम्), बुहप्फई (बृहस्पतिः), णिप्फेसो (निष्प्रेसः), फंदणं (स्पदंनम्)

(24) र्य का र–(ब्रह्मचर्य–तूर्य–सौन्दर्य-शौण्डीर्ये र्यो रः 2/63)

यथा–बम्हचेरं (ब्रह्मचर्यम्), तूरं (तूर्यम), सुंदेरं (सौन्दर्यम्), सोण्डीरं (सौण्डीर्यम्), धीरं (धैर्यम्) (धैर्ये वा 2/64) पेरंतो (पर्यन्तम्) (2/65), अच्छेरं (आश्चर्यम्) (2/66)

(25) क्ष्म, श्म ष्म, स्म, ह्म का म्ह–(पक्ष्म-श्म-ष्म-स्म-ह्मां-म्हः 2/74)

यथा– क्ष्म - पम्हाइं (पक्ष्मन्)

श्म - कुम्हाण (कुश्मान) कम्हार

ष्म - गिम्हो (ग्रीष्मः), उम्हा (ऊष्मा)

स्म - विम्हओ (विस्मयः)

ह्म - बम्हा (ब्रह्मा), सुम्हा (सुह्माः), बम्हणो (ब्राह्मणः)

(26) क्ष्म, श्न, ष्ण स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण, का ण्ह–सूक्ष्म–श्न–ष्ण–स्न–ह्न ह्ण–क्ष्णां ण्हः (2/75)

यथा– क्ष्म - सण्हं (सूक्ष्मम्)

श्न - पण्हो (प्रश्नः)

ष्ण - विण्हू (विष्णुः), जिण्हू (जिष्णुः), कण्हो (कृष्णः)

स्न - जोण्हा (ज्योत्स्ना), पण्हुओ (प्रस्नुतः)

ह्न - पुव्वण्हो (पूर्वाह्न), अवरण्हो (अपराह्न)

क्ष्ण - तिण्हं (तीक्ष्णम्), सण्ह (श्लक्ष्णम्)

व्यञ्जन-आगम–

(1) समासांत में विकल्प से व्यञ्जन का आगम हो जाता है। (समासे वा 2/97)

यथा– नई-गामो-(णइग्गामो) (नदी–ग्रामः)

कुसुम-पयरो-कुसुमप्पयारा (कुसुम-प्रकारः)

देव-थुई-देवत्थुई (देवस्तुतिः)

बद्ध-फलं-बद्धप्फलं (बद्धफलम्)

- तेल्लं (तैलम्), वेइल्लं (विचकिलम्) -(तैलाद्यौ 2/98)

उज्जू (ऋजुः), पेम्मं (प्रेमम्), जोव्वणं (यौवनम्)

- सेवा-सेव्वा (सेवा), नीडं-नेड्डं (नीडम्)

नहा-नक्खा (नखाः), निहिओ-निहित्तो (निहितः)

खाणू-खण्णू (स्थाणुः), थीणं-थिण्णं (स्त्यानम्)

स्वर आगम-

यथा-छमा (क्ष्मा), सलाहा (श्लाघा), रयणं (रत्नम्) क्ष्मा-श्लाघा रत्नेन्त्यं-व्यञ्जनात् 2/101)

सणेहो (स्नेहः), *अग्गी-अगणी (अग्निः)*(स्नेहाग्न्योर्वा 2/102)

पलक्खो (प्लक्षः)

अरिह (अर्हति), सिरी (श्री), हिरी (ह्री), कसिणो (कृत्स्नः)

किरिया (क्रिया), दिट्ठिआ (दिष्टया) (र्ह-श्री-ह्री-कृत्स्न क्रिया-दिष्टयास्वित् (2/104)

आयरिसो (आदर्शः), दरिसणं (दर्शनम्)

वरिसं (वर्षम्), हरिसो (हर्षम्)

तविओ (तप्तः (र्श-र्ष-तप्त-वज्रे वा। 2/105)

किलिन्नं (क्लिन्नम्), किलिट्ठं (क्लिष्टम्)

किलेसो (क्लेषः), सिलिओ (श्लोकः), सिलिट्ठं (श्लिष्टम्)

सुइलं (शुक्लम्) (लात् 2/106)

सिआ (स्यात्), भविओ (भव्यः), चेइअं (चैत्यम्), चोरिअं (चौर्यम्),

भरिआ (भार्या), वीरिअं (वीर्य), सूरिओ (सूर्यः), धीरिअं (धैर्यम्)

सोरिअं (शौर्यम्) (स्याद्-भव्य-चैत्य-चौर्य-समेषु यात् 2/107)

सिविणो-सिसिणो (स्वप्नः) (स्वप्ने नात् 2/108)

सणिद्धं-सिणिद्धं (स्निग्धम्) (स्निग्धे वादितौ 2/109)

कसणो-कसिणो (कृष्णः) (कृष्णे वर्णे वा 2/10)

अरूहो-अरहो-अरिहो (अर्हन्) (उच्चार्हति 2/211)

पउमं-पोम्मं (पद्मं), छउमं-छम्मं (छद्मम्)

मुरक्खो (मूर्खः), दुवार (द्वारम्) (2/112) मूलसूत्र (पद्म-छद्म मूर्ख-द्वारेवा 2/112)

तणुवी (तन्वी), लहुवी (लघ्वी), गरुवी (गुर्वी)

पहुवी (पृथ्वी), बहुवी (बह्वी), मउवी (मृद्वी) (तन्वी-तुल्येषु 2/113)

सुवे-जणा (स्वे जनाः), सुवे कयं (श्वः कयम्) (एक स्वरे श्वःश्वे 2/114)

जीआ (ज्या) (ज्यायामीत् 2/215)

वर्ण-विपर्यय–

कणेरू (करेणू), वाणारसी (वाराणसी), (करेणु-वाराणस्यो रणोर्व्यत्ययः 2/116)

आणालो (आलातः) (आलाने लनो 2/117)

अलचपुरं (अचलपुरं) (अचल पुरे चलौ 2/118)

मरहट्ठो (महाराष्ट्रः) (महाराष्ट्रे ह रोः 2/119)

दहो (ह्रदः) (2/120), हलिआरो (हरितातः) 2/121)

लहुअं-हलुअं (लघुके ल-होः 2/122)

णडालं-(ललाटम्) (ललाटे ल-डो 2/123)

बीस–प्राकृत निबन्ध

1. असंखयं जीवियं मा पमायए

अस्सिं संसारम्मि सव्वे पाणा सव्वे सत्ता सव्वे भूया सव्वे सत्ता सुहमिच्छंति, दुहं अप्पियं। पुरिसत्थेणं च सुहं अधिगच्छंति। णराण मित्तं पुरिसत्थो उज्जमो परिस्समो य। तेणं विणा कज्जाणि ण सिद्धंति। सव्वाणि कज्जाणि उज्जमेणं एव सिज्झंति।

अलं कुसलस्स पमाएणं–पण्णासील–जणस्स साहगस्स य पमाएणं किंचि पयोजणं अत्थि। ते णु चिंतंति–दुम–पत्तए पुडुयए जहा, णिवडइ राइगणाण अच्चए। एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम.। मा पमायए।। जह रुक्खम्मि पत्ताणि पतंति पंडुयए तहेव मणुजाणं जीवणं अत्थि, अवस्समेव एगाउ एगदिणम्मि णिवडइ। अओ चिंतेज्ज असंखयं जीवियं–सुत्त व्व जीवणं, छिंण्णंतं ण पुणो एगमेव होइ। जे साहगा समणा य समणी सावगा य साविगा णिय–कत्तव्वं पडि उट्ठिए/जग्गिरे अत्थि, ते 'भारंडपक्खी व चरप्पमत्तो' अहवा जह भारंड–पक्खी अपमत्तो होऊण उज्जम–सीलवंते एव चरइ तहेव साहगा विचरंति। जइ एरिसं णत्थि तह "सव्वओ पमत्तस्य णेयं। अओ अपमत्त–पुव्वगं चरेज्ज।"

अप्पाण–रक्खी चरमप्पमत्तो (उत्त. 4/10) जे जणा सम्मदिट्ठी अत्थि, अणण्णपरमं णाणी अत्थि, चारित्तपहम्मि चरेंति ते सया खिप्पमुवेइ मोक्खं। मुत्तिपहं/णिव्वाणमग्गं/रयणत्तयं मग्गं पत्तेंति। तम्हा उट्ठिए नो पमायए (आ. 1/5/2) जग्गियवंता हवेज्जा, उज्जमसीला हवेज्जा। जहा सुत्तस्स सिंहस्स मुहे मिगा ण पविसंति तहा णाणा मणोरहेहिं ण कज्जाणि सिज्झंति। सव्वे उज्जमा करणिज्जा। अपमत्तेण उज्जमो साहसं धीरत्तणं बुद्धि–सत्ति–परक्कमा वि आगच्छंति।

पमाओ पंचविहो–

मज्जं विसय–कसाया णिद्दा विगहा य पंचमी भणिया।
इस पंचविहो एसा होई पमाओ या अप्पमाओ।। (उत्त.)

पमादाओ विरत्ती अप्पमादो। 'जे छेय से विप्पमायं ण कुज्जा' जे रयस्स गई जाणेंति ते धीरा अत्थि। धीरे मुहुत्तमवि णो पमादए।'

2. माया मित्ताणि णासइ

'माया' किं अत्थि? इणं पण्हं समाहाणं अत्थि, माया छलकपड-रूवो अत्थि एसा बहिरंग-रूवो बहुसुंदरो अइलुहावत्तणं च। विणीयो आकस्सगो य माणस-माणसं। जहेट्ठम्मि सा माया अइदुक्खदाई, किलेसप्पदायगा, हिदय-घायगा मण सोग-संकुलत्तणं कुव्वंती य।

चउ-कसाएसु इमाए तइय-ठाणं अत्थि। इमाए भासा-भासंता जीहा णत्थि, सा असिधारा अत्थि, महु संसिलिट्ठा अत्थि। सा जीवणं परिपुट्ठं ण कुणइ, अवि तु मित्ताणि णासइ। एसा माया होइ अणत्थाय। जस्सिं अंतरम्मि मायाए अंसो हवइ तो णाणारूवं पत्तेइ, माया जुत्तो सरलप्पा णत्थि। भगवईए उत्तो–

माया विउव्वइ, तो अमायी विउव्वइ।

माया मिच्छादिट्ठी–जो जणो अस्सिं लोगंसि मायावी अत्थि सो "माई मिच्छादिट्ठी" इणं वयणमवि भगवईए अत्थि। अओ जो मिच्छादिट्ठी अत्थि "सो माई पमाई पुण एइ गब्भं" अहवा मायाए पुणो पुणो जम्मं मरणं च होइ। ठाणम्मि भासितो–

वंसीमूल-केतण-समाणं मायं अणसुपविट्ठे।
जीवे कालं करेइ णेरइसु उववज्जंति।। स्था. 4/2।।

वंसस्स जडसमा माया अत्थि, जो अप्पं णइरियम्मि णयइ।

मायमज्जवभावेण–माया अज्जव-भावेण णस्सइ। उत्तरज्झयणे वि उत्तं–माया विजएणं अज्जवं जणयइ। मायं जो जयइ सो अज्जवभावं पत्तेइ। जइ एरिस-भावो णत्थि–तं तु

जइ वि य अगिणे किसे चटे, जइ वि य भुंजित-मासमंतसो।
जे इह मायाहि मिज्जई, आगंता गब्भाय णंतसो।। (सूत्र 1/2/1/91)

3. आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं

तज्जातिज्ज-विजातिज्ज-ठोस-वत्थुणो एगसमूहं 'पिंडं' अत्थि। तं आहारं वि भासए आहारस्स चउविहो–"असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।" तं आहारं एसणा आहारेसणा/पिंडेसणा अत्थि। तं आहारं च एसणिज्जं। दसवेयालयम्मि भासिओ–

जह्य दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं।
ण य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं।। (दस. 1/2)

आहारस्स गवेसणा विहिपुव्वगं अवितव्वं। भमरसमवित्तिं पालेयव्वं। जे समणा मुत्ता अत्थि, साहगा अत्थि ते दायए पदत्त-आहारं गिण्हेंति। जहोत्तं-

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाण-भत्तेसणे रया।। (दस. 1/3)

भिक्खाडणं-विहि-णिसेह-पुव्वगं भिक्खत्थं चरेज्ज। समभावं धारिऊण समणा या समणी आसत्ति-लालसा-आसा-इच्छा-गिद्धिं परिचत्तिऊण भिक्खाडणं समाचरेज्ज। तं जहा-

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ।
इमेण कमजोगेण, भत्तपाणं गवेसए।। (दस. 5/83)

आयारम्मि पिंडेसणाए अज्झयणम्मि (1) गवेसणा (2) गहणेसणा तह (3) गासेसणा इमा तिविह-एसणाए विवेयणं अत्थि। तम्मि सचित्त-विहीण-आहारं एसणिज्ज भासिओ।

भिक्खापरीए दोसा-जिणसुत्तेसुं आगमेसुं च आहाकम्मे, उद्देसिये, पूइकम्मे, मीसजाए, ठवणे, पाहुडियाए, पाओअरे, कीए, पामिच्चे इच्चाइ-वियालीस-दोसाणं विवेयणं अत्थि। तेसिं दोसाणं णिवारणं किच्चा मियमेसणिज्जं इच्छे। एसणासमिईए पिण्डवायं गवेसए। तं जहा-

एसणा समिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिंडवाये गवेसए।।

भिक्खाचरियाए विवेगो-विवेक-सील-समणा, पण्णवंता साहू या साहगा भिक्खाचरियाए खमं धारेज्ज, मज्जयं णिक्खवेज्ल, अज्जयं चरेज्ज मणसा वयसा कायसा सदेव संजम-तव-चाग-पुव्वगं समणत्तणं पालेज्ज। समणत्तणम्मि णिम्मवित्ती ण हवेज्ज-

अदीणे वित्तिमेसेज्जा, ण विसीएज्ज पंडिए।
अमुच्छिओ मोयणम्मि मायण्णे एसणारए।। (दस 5/239)

भारस्स जाआ मुणी भुंजएज्जा-आहारस्स एसणा वि संजमभारं हेउं करेज्जा। जे भिक्खू या भिक्खुणी संतुट्ठी य संजमी हुंति ते संतोसओ वित्तिं करेंति। ते "पक्खी

पत्तं समादाय, णिरवेक्खो परिव्वए"। संजमी साहगा णाणी मुणी णिरवेक्खा हुंति, ते पक्खि व्व चरेंति। णीरसं आहारं संजए भुंजिज्ज।

अलाभुत्ति न सोएज्जा—आहारस्स एसणा वि संजमभारं हेउं करेज्जा जे भिक्खू या भिक्खुणी संतुट्ठी य संजमी हुंति ते संतोसओ वित्तिं करेंति। ते "पक्खी सततं समादाय, णिरवेक्खो परिववए"।

अलाभुत्ति ण सोएज्जा—भिक्खू वा भिक्खुणी सया हि मज्जाणुसारं णिद्दोस-आहार अलाभे त्ति ण सोएज्जा ण सोगं करेंति। ते तवो त्ति अहियाए' मुणिऊण णिच्चं अलोलुवी अगिद्धी वि हुंति। तं जहा—

अलोले ण रसे गिद्धे, जिब्भादंते समुच्छिए।
ण रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी।। (उत्त. 34/15)

अओ साधगमुणी अवगुणाणं चइयत्ता आहारं इच्छे। तं जहा।

सिक्खिऊण भिक्खेसणेहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे।

तत्थ भिक्खु सुप्पणिहि-इंदिए तिव्व-लज्ज-गुणवं विहरेज्जासि।।

4. खामेमि सव्व जीवा

जत्थेव सया संती, सहिस्सणुरंतं, णेहो, कारुण्णं मित्तिभावं च तत्थेव खमा हवइ। खमा परोप्परं समभावं उप्पज्जेइ। संती जाइ। इमत्तो अण्णेसिं मणस्स जएज्जा, अण्णेसिं कुवियाराणं विरोहण्ण-जीवणं स समेज्जइ।। कडुत्तं, वइरं, विरोहं पडिसोहं च सम्मएज्जा।

महाजणा णाणीजणा खमा सीला हुंति। ते अण्णेसिं दोसाणं दिट्ठी कया वि ण देंति। ते सव्वे जीवाणं सव्वे सत्ताणं, सव्वे पाणाणं सव्वे भूताणं च णियसरिच्छमेव मण्णंते। ते कोहाओ विप्पमुत्ता हुंति। ते पियं अप्पियं संतीए सहेंति। जहोत्त-

पियमप्पियं सव्वतितिक्खएज्जा। (उत्त० 21/15)

जे खमा सीला जणा हुंति ते धम्मे-थिर-चित्तं समभाव-पुव्वगं चिंतेति।

खामेमि सव्व जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं ण केणइ। (पंच प्रति)

एरिसा एव तेसिं पउत्ती णत्थि, अवि तु ते चिंतेति—जे जणा अण्णेसिं अवराहं, दोसाणं कोहभावाणं च ण खमेंति, ण तेसिं दोसाणं बहिगुणं मण्णिऊण ण खएंति ते

मित्तत्तणं सेउं तुट्टेंति। जम्हा तेसिं विगासपहो वि अविरुज्झो होइ। जणाणं च आवस्सगं अत्थि अण्णेसिं दोसाणं, अण्णेसिं अवराहाणं विमुंचिऊण गुणाणं हि सरेज्ज। सज्जणा भाणुसमा हुंति। ते तेजं देंति, अंधयारं हणेंति। दोसाणं अच्छादएंति, गुणाणं पगडएंति। कहेज्जइ।

जसं संचिणु खंतिए—खमाभावेण जसं संचिणु। जे मुणी या णाणी होंति ते पुढविसमा अत्थि। जहा पुढवी सव्वं सहजरुवेण सहेइ तहा मुणी साहगा सज्जणा वि 'पुढविसमा' हवेज्जा।

खंतिएणं जीवे परिसहे जिणइ—जे जणा खंतिं धारेंति, तेणं खंतिएणं परिसहाणं वि जिणेंति। पासविग-सत्तीणं उवसमेंति। मणं समभावे कुणंति। सव्वेसिं जीवरासीणं पडि धम्मणिहिअ-चित्तेण सव्वे खमावइत्ता सव्वेसिं खमामि एरिस-भावणाजुत्ता ते 'वेरं मज्झं ण केणइ' इस्स भावस्स धारेंति।

5. समियाए धम्मे

आयारंग–सुत्तस्स देसणाए इणं वयणं अत्थि "समियाए धम्मे आरिएहि पवेइए" आरिय-पुरिसेहिं, समण-भगवंतेहि आइरिएहिं समत्तं, समभावं, समित्तं, मिअं, समं च धम्मो भासिआ/पण्णत्ता। जत्थेव समिया होइ तत्थेव सव्वेसिं किरियाणं हियस्स भावणा होइ।

धम्म-देसणम्मि धम्मस्स अणेगाणि लक्खणाणि कियाणि। दयाविसुद्धो धम्मो, रयणत्तयं च धम्मो, दंसणमूलो धम्मो, अहिंसा धम्मो, संजमो धम्मो, तवो धम्मो य। चारित्तं खलु धम्मो वि पण्णत्तो। जत्थेव दंसणणाण-पहाणाओ चारित्तं हवइ तत्थेव समो हवइ। समो समभावो समत्तो सम्मो य मोहक्खोहविहीण-अप्पम्मि हवइ। अण्णम्मि-खमा-अज्जव-मज्जव- सच्च-सोच-तव-चाग-अकिंचण-बंहचेर दसविहो धम्मो पण्णत्तो।

मूलत्तो धम्मो दुविहो—सुयधम्मे चेव चारित्तधम्मे चेव। (स्थानां 2/1) तिविहो-सम्मदंसण-णाण-चरित्ताणि। चउविहो-खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे। (स्था० 4/4) वि अत्थि। किण्णु जो धम्मो समभावं–पदेइ सो धम्मो समियाए धम्मो। दसवेयालयम्मि धम्मस्स एस सरुवो–धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।

धम्मो दीवो—जरा मरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणीणं।
धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं।। (उत्त. 23/68)

धम्मस्स समायरणेणं उत्तमा गई, उत्तमं सरणं उत्तमो तवो संजमो य अहिंसा वि उत्तमा। जे जणा धम्मं कुणेंति तस्स रयणीओ सफला जंति। जे जणा अधम्मं कुणेंति तस्स रयणीओ विफला जंति। अओ जं सेयं समाचरेंति। तं सोच्चा अहिंसा संजमं तवं खंतिं च आराहएंति। तं जहा–

जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंतिमहिंसयं। (उत्त 3/81)

दिव्वं च गइं गच्छंति चारित्ताइ धम्मारियं–जे आरिया, साहगा य सम्मं धम्मं आचरेंति, ते दिव्वं गई च पत्तेंति।

धम्मस्स विणओ मूलो–पण्हवागरणम्मि पण्णत्तं–विणओ वि तवो तवो पि धम्मो। जत्थ विणओ मूलम्मि होइ तत्थ तवो हवइ। तवेण उज्जुभावो हवइ। जहोत्तं–

"सोही उज्जुअभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।" (उत्त. 3/12)

सरलप्पणम्मि सोही हवइ, सुद्धी हवइ। सुद्धप्पणम्मि एव धम्मो थिरो जाइ। तम्हा धम्मं चर! सुदुच्चरं। जो धम्मो आचरणम्मि दुच्चरो अत्थि सो समियाए आचरणेणं च सुदुच्चरो वि जाइ।

मेहावी जाणिज्ज धम्मं–जे णाणी, मइमंता, पण्णावंता या साहगा अत्थि ते 'समियाए धम्मो' मुणिऊण माणुसत्तणं मूलं धम्मं आराहए। पवित्तचित्तम्मि ठियम्मि सो धम्मो णिव्वाणमभिगच्छइ। अओ जो धम्मो जीवाणं समियं भावं उपज्जेइ तं धम्मं आचरेज्ज।

6. कोहो पीइं पणासइ

कोहो णियस्स परस्स घातस्स अणुवगारस्स वियारेण उप्पज्जइ। जो कूरत्तणं परिणामं जम्मेइ। कोहो अप्पीई परिणामो अत्थि, जो पीइं पणस्सए। सच्चं सीलं विणयं चवि हणेज्ज। पण्हवागरणम्मि उत्तं-कुद्धो चंडिक्किओ मणूसो आलियं भणेज्ज, पिसुणं भणेज्ज, फरुसं भणेज्ज, अलियं-पिसुणं-फरुसं-भणेज्ज, कलहं करेज्जा, वेरं करिज्जा, विकहं करेज्जा इच्चाई। सो सच्चं सीलं विणयं हणेज्जा।

कोहो पीइं पणासए–कोहो अग्गी समा अत्थि, तत्तो वि भीसणो। जहा अग्गी जणं जालेज्जइ। जो तस्स जलणम्मि आगच्छइ सो अवसं च अच्छेज्जइ। कोहस्स दावाणलम्मि कोवंतो/रोसंतो जलेइ/डहेइ। सो जइ खमाओ भाविओ अत्थि। खंतीइ भाविओ भवइ अंतरप्पा संजय–कर–चरण–णयण–वयणो सूरो सच्चज्जवसंपण्णो।

उवसमेण हणे कोहं–कोहेण माणसिग–दुक्खं जाएज्ज। तं कोहं उवसमेण

हणेज्ज। कोहणिग्गहेणं च खमासीलत्तणं च उप्पज्जइ। खमाए मित्ती। जीवाणं पडि सम्मभावणा जाएज्जा। जणेसुं एसा भावणा उवएज्जए-

सव्वे पाणा पिआउया सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवहा।
पियजीविणो जीविउ कामा, सव्वेसिं जीवियं पियं।। (आ. 2/2/3)

कोहस्स कारणाणि—चउहिं ठणेहिं कोहुप्पति सिया-तं जहा-(1) खेत्तं पडुच्च (2) वत्थुं पडुच्च (3) सरीरं पडुच्च (4) उवहिं पडुच्च।

चउपइट्ठिए कोहे पण्णत्तो-(1) आय-पइट्ठिए (2) परपइट्ठिए (3) तदुभयपरट्ठिए (3) तदुभयपरट्ठिए (4) अप्पइट्ठिए। जे कोहदंसी से माणदंसी-अप्प-साहगो रोसविहीणो होइ सो णिरंतरं जणं पडि णेहं करेइ। किण्णू जे कोह दंसी से माणदंसी अहंकारी वि होइ।

कोहो अप्प-विकारो-कोहो अप्पस्स अंतरिग-परिणमो वि अत्थि जेणं च जाएज्ज सत्तिहीणत्तण दुव्वलत्तणं च। अओ हम्ममाणो ण कुप्पेज्जा वुच्चमाणो ण संजले। णिच्चं तु खंतिं सेविज्ज पंडिए। साहगो मुणी सावग-साविगा कोहं णासिउं सव्वेसिं जीवाणं मित्ति-भावं कुणेज्ज।

7. ण या वि मुक्खो गुरुहीलणाए

धम्मस्स मूलो विणओ अत्थि। विणओ जीवण-विगासस्स पढमो सोवाणं अत्थि। जो विणय-सीलो होइ सो तेणं विणएणं सव्वत्थ समादरं च पत्तेइ। णिय-पहम्मि अग्गतरो होऊण परिवारं, समाजं, गामं, देसं रट्ठं च वि उण्णय-मग्गे णेइज्जा। अओ 'विणए ठविज्ज अप्पाणं, इच्छंतो हियमप्पणो।' अप्प-हिएसी साहगो जइ अप्पहिअं इच्छइ तु णियप्पाणं हियम्मि ‿ वेज्ज।

धम्मस्स विणओ-धम्म-रुक्खस्स मूलो विणओ अत्थि सो गुरु-आणाए, गुरु णिद्देसे, गुरु-णिगडे इंगियागारसंपण्णे जायम्मि एव होइ। जो गुरुं समीवं गुरुस्स सगासे विणयं ण सिक्खेइ विणयं ण पालेइ तस्स फलस्स विणासस्स कारणं होइ। जहोत्तं-

थंभा व कोहा व अभप्पमाया, गुरुस्सगासे विणयं ण सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो, फलं व कीअस्स वहाय होइ।। (दस. 99/1)

विणयं विणा अणत्थो वि होइ। गुरुस्स आणा-णिद्देसेणं च विणा जे णिय-कज्जाणि कुर्णेति, ते सव्वसा णिक्किस्सज्जइ। गुरुं फलं विणा हि चरेंति लोए। गुरुहीलणाए मुत्ती वि ण। तं जहा-

सिहा हु से पावय णो डहिज्जा, आसीविसो वा कुविओ ण सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो, फलं व कीअस्स वहाय होइ।।
(दस. 99/1)

जेत्तिय पावगो/अग्गी जणाणं ण डहेज्जा, कुविओ विसहरो/सप्पो वि ण डसेज्जा, हलाहलविसं वि ण मारेज्जा किण्णू जे जणा साहगा समणा समणी उत्तमगुरुस्स वयणाणं उवेक्खं कुव्वेंति तेसिं ण मोक्खो।

रायणिएसु विणयं पउंजे—जे गुरू अत्थि वए गुरू अत्थि तं पडि विणयं पउंजेउ। गुरुमाता गुरुजणणो गुरु-अज्झावय-वग्गा आइरियो गुरू, उवज्झाओ गुरू, साहू वि गुरू, सिक्खगो विं गुरू जे वि सम्मपहम्मि णेंति ते सव्वे गुरू। अओ णियहियं मण्णिऊण तेणं अणुसासिओ ण कुपिज्जा।" पण्णाजणा तेसिं सिक्खाणसं हियंकरा मण्णेंति। विणयाहिंतो वेयावच्चं, वेय्यावच्चेणं तित्थयर-णामगोयं कम्मं निबंधेइ। जो विणओ धम्मो अत्थि, परमो से मोक्खो। इमेण कित्तिं सुयं णिस्सेसं च अहिगच्छाए।

8. चरे पयाइं परिसंकमाणो

असंखयं जीवियं। जम्मं जीवणं, बालत्तणं च जीवणं, जोवणं वि जीवणं बुड्ढत्तणं जीवणं मिच्चू वि जीवणमत्थि। रोगो सोगो चिंताई वि जीवणं असंखयं जीवणं। धम्माचरेणं विणा उज्जमेणं विणा य जीवणं असंखयं च। तत्तो णिवारिउं के वि ण समत्था। अंतिम-समयम्मि मिच्चुं मुहं आगच्छंति जणाणं के वि ताण भूया णत्थि। ण हु मंगलो, कोउगो, जोगो, विज्जामंतो मणितंतो ओस वि ण असंखयं जीवणं णिवारेइ। किण्णु जो दोसाणं दंसिऊण पयाइं च साहधाणं पुव्वगं चलेइ अप्पमत्तो हवेइ सो असंखयं जीवणं परिमुंचइ।

"सएण विप्पभाएण पुढो वयं पकुव्वह"--आयारम्मि इणं विवेयणं च अत्थि। पमत्तजणा सयमेव पमादेणं च असंखयं जीवणं जणेइ। अओ मा पमायए। उत्तरंज्झयणम्मि एरिसं विसए उत्तं—

कुसग्गे जह ओसविंदुए, चिट्ठइ लंबमाणए।
एवं मणुमाण जीवियं समयं गोयम। मा पमायए।। (उत्त. 10/2)

अप्पाण-रक्खी चरमप्पमतो—जो अप्पाण-रक्खी अत्थि सो भारंडपक्खिव्व समाचरेइ। जह भारंडपक्खी सया हि जग्गिअभूओ समचरे इहेव साहगो अप्पमत्तभूओ सया हि संखयं हवइ। सो धीरो होइ। जो धीरो होइ जो अप्पमत्तो पच्चक्खाण-परिण्णा-पुव्वगं चागं च कुणंतो मलावधंसी—कम्माणं मलाणं झएज्जा। वुत्तं च—

छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं आसे जहा सिक्खिय-वम्मधारी।
पुव्वाइं वासाइ चरे-पमत्तो तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं।।

जह सिक्खिओ आसो जुज्झम्मि छंदेण णिरोहेणं च विजयं च उवेइ। तह अप्पमत्तेणं मुणी पुव्वाइं कम्माइं खिप्पमुवेइ। सो मोक्खं वि उवेइ।

मज्जं विसयं कसायं णिद्दं विग्गहं च पमादो। तेणं विरत्ती अप्पमत्तो। जो सव्वओ पमत्तो होइ सो एवं भयं भवेइ। जत्थेव णत्थि पमादो सो अप्पमत्तो भयमुत्तो होइ। अओ जे सेय से विप्पमायं ण कुज्जा। मणुसस्स जीवणं महत्तपुण्ण-अंगो संखयं परिसंकमणं अत्थि।

9. णाहं रमे पक्खिणी पंजरे वा

णाहं रमे पक्खिणी पंजरे वा, संताणछिण्णा चरिस्सामि मोणं।
अकिंचणा उज्जुकडा णिरामिसा परिग्गहारंभ-णियत्तदोसा।।

(उत्त. 14/41)

जहा पक्खिणी पंजरम्मि बद्धो, आबद्धो या रमेज्जा सुहं आणंदं च ण अणुहवेइ तहा जीवो संसारसागरम्मि आबद्धोकिंचणं ण पत्तेइ, ण किंचणं सुहं। सुहं अत्थि अकिंचणत्ते, संसारछिण्णत्ते, उज्जुकडे, णिरामिसे वियसाहिंसासे मुत्तो अपरिग्गहत्ते अणारंभरुवचरिए एव सुहं होइ।

धीरे य सीला तवसा उदारा--जे अस्सिं संसारम्मि धीरा सीला तवस्सी अत्थि ते उदारा हवेंति। जे उदारा पडिबुद्धा होंति ते कोंचपक्खिव्व हंस-समो जासं दलिसु छंदेण अप्प सहावेण रआ अणंतआगासम्मि विहरंति। इसुगारस्स माऊ पुत्तं परियं पस्सिऊणं चिंतइ इमे मे पुत्ता मे पिऊ/पियतमा गेहं मुंचिउण समण चरियं चरेज्जा। अहं वि चरेज्जा।

तं जहा- जहेव कुंचा समइक्कमंता तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा।
पलत्ति पुत्ता य पई मज्झं ते हं कहं नाणु गमिस्समेक्का।।

(उत्त. 14/36)

णिखेक्खो परिव्वए--जे पण्णा साहगा अत्थि ते णिरवेक्खए समाचरेंति। ते होंति महव्वई, तिगुत्तगुत्ता, संजया समिइ-समिया उज्जुदंसिणो।

तं जहा- पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया।
पंचणिग्गहणा धीरा, णिग्गंथा उज्जुदंसिणो।। (दस. 3/11)

जे णिरवेक्खा होंति ते दंता संता वि अत्थि।

जहुत्तं- समणं संजयं दंतं हणेज्जा को वि कत्थइ।
णत्थि जीवस्स णासो त्ति एवं पेहेज्ज संजए।। (उत्त. 2/7)

जे समणा अत्थि संजता दंता हुंति। ते दसविह धम्मं पालेंति। आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं-आहारस्स एसणा परिमिअं सुद्धं आहारं च अणवेसयंता सया हि झाणं सज्झायं तवं च आचरेंति। जहुत्तं-

पढमं पोरसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई।
तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीए सज्झायं।। (उत्त. 26/12)

एवं जे सासणे विगयमोहाणं पुव्विं भावणभाविया। ते एव अचिरेणं कालेणं दुक्खस्संतमुवगया।

10. पण्णा समिक्खए धम्मं

जे पण्णावंता बुद्धिमंता य होंति ते धम्मस्स समिक्खए। जे पण्णावंता होंति ते 'सव्वेसिं जीवियं पियं' भावणाए कुणेंति। पण्णावंता ते एव होंति जे सयस्स/अप्पस्स दोसाणं, अप्पाणं च हीणत्तणं च पस्सइ। तेसुं च संसोहणं करेउं अण्णसीला हवेंति।

एवं खु णाणिणो सारं-णाणिणो सारो णाणिणो गुणो सव्वेसिं जीवाणं रक्खणं च। णाणस्स पण्णावंतस्स लक्खणो 'पढमं णाणं तओ दया' (दस. 4/10) अत्थि। जहा उत्तमम्मि आसम्मि समारुढो अस्सवाहगो सूरो णंदिघोसेणं च परक्कमी होइ तहा पण्णा सीलो णाणेण समागओ सूरो होइ। सो णिय-णाणेणं जो पमाणं कुणेइ सो इह जम्मम्मि य परजम्मम्मि य पगासए।

णाणेण विणा ण हुंति चरमगुणा-णाणी णाणेण हि राजए। तेणं णाणेणं विणा सेट्ठगुणा ण राजए। णाणिस्स णाणं उवओगो अत्थि णियं च परं च पगासए। णाणी/पण्णावंतो दीवसमो होंति। तो तमसो मा जोइगमो' भावं उप्पज्जइ।

णाणी तो पमायए कया वि-जे णाणी हुंति ते पमायं णि कुणेंति। तस्स दंसणं सत्ती, आणयं णिरक्खणं च अपुव्वसत्ती होइ।

पण्णा हवेंति धीरा-जे पण्णा हवेंति ते धीरा वि। अपण्णा धीरा ण। ते ण कम्मुणा कम्मं खवेंति बाला। तेसिं अप्पलीला ण हवेंति, ण ते कम्माणं खवेंति। णाणी कम्माणं खवेंति उवसमेंति।

सव्वेसिं णाणं णाणीहिं देसियं–पंचविह–णाणं णाणीहिं भासियं। दव्वाणं गुणाणं च पज्जवाणं च देसियं। धम्मं अधम्मं गइं अगइं च वि देसियं।

सोच्चा जाणइ कल्लाणं–णाणी धम्मं धम्ममग्गं धम्म–कल्याणकारी–गुणं च सोच्चा। जाणइ। सो चिंतइ णिच्चं–

एक्को हु धम्मो णरदेव! ताणं ण विज्जइ अण्णमिहेइ किंचि।

संजमो तवो अहिंसा परमो धम्मो' अणुचिंतइ सया सम्मणाणं सम्मदंसणं सम्मचारित्तं च समिक्खए। सो समिक्खए दयाविसुद्धं धम्मं च।

अणुसासणं

अज्ज परम-आवस्सगाणुसासणं– अणुसासणं अज्ज आवस्सगं, परमावस्सगं च (i) माणवीय-पयडि-विसेस-संलेहणं च (ii) माणसिग-रोग-णिदाण-अणुसासणं (iii) सारीरिग-अणुसासणं, (iv) वाचिग-अणुसासणं (v) बोद्धिग-अणुसासणं (vi) भावणप्पगं अणुसासणं च।

अणुसासणं विणा ण धम्मो– अणुसासण-धम्म-मग्गो मावण-पुणीय परमोत्थि। धम्मगो णत्थि अणुसासणं विणा। जह लवणं विणा रसवई, वार्णि विणा सरस्सई, दहिं विणा ओदणं घियं विणा भोयणं सक्करं विणा मोदगो पत्तं विणा गंधोदगो मदं विणा एरावणो वेदं विणा बंहणो परिवारं विणा णायगो सत्थं विणा सेण्ण-समूहो फलं विणा रुक्खो, तवं विणा भिक्खू अलंकारं विणा कण्णो सिंगारं विणा णारी ण सोहए जगे तहेव तित्थ-अणुसासणं विणा ण धम्मो।

अणुसासिओ ण कुप्पिज्जा– अणुसासणम्मि अत्थि विणओ सोत्थि धम्मस्स मूलो। आइरिओ णिय-सासणं कुणेइ पच्छा अणुसासणं सिक्खेइ। सिस्सो गुरुस्सगासे अणुसासणं च सिक्खेज्ज। सो अणुसासणाउगे कोहं लोहं माणं मायं च ण कुणेइ। सो मण्णेइ गुरूणमुवायं च।

आणा-णिद्देसयरे, गुरुणमुववाय-कारए।
इंगियागार-संपण्णे, से विणीए त्ति वुच्चए।।

विणए। अणुसासणे अत्थि- (i) आणा - गुरू आणा।
(ii) गुरु-णिद्देसो।
(iii) गुरूणं च उववायं
(iv) गुरूणं च इंगिय-भावो।
(v) गुरूणं च अत्थि आगारो।

हिय-इच्छंतं जणा पुव्वे अप्पाणं विणए ठविज्जं।
विणओ ठवेज्ज अप्पाणं, इच्छंतो हियमप्पगो।।

णिय-सासणं अणुसासणं-सद्धा-संकप्प-वय-पुण्ण-जणा णियसासणं कुव्वेंति, ते पच्छा अणुसासणं च पवुज्जेंति। मणुज-समाज-संगठणम्मि अत्थि अस्सिं च समए विसमिया, अणेइगाराणं पर-वत्थु-संगहणं राग-द्दोस-भावणा सोसण अणायार-अच्चायार-विवेग-सुण्णतणं अणुव्वए अत्थि अणुसासणं (i) अहिंसाणुव्वओ (ii) सच्चाणुव्वओ (iii) अत्थेयाणुव्वओ (iv) बंहचेराणुव्वओ (v) परिग्गाह परिमाणाणुव्वओ वि।

अस्सिं वय-साहणाए त्थि अप्पाणुसासणं णिय-सासणं च अणुसासणं च। चउव्विह-संजमो वि-

मण-संजमे वइ-संजमे काय-संजमे उवगरण-संजमे।

सव्व-मण्ण-अणुसासणं- (i) गेहे अणुसासणं, (ii) भिक्खाए अणुसासणं, (iii) गेहे अणुसासणं (iv) देसे अणुसासणं (v) पवोहे अणुसासणं (vi) णाणे वा तवे वा चरित्ते वा दंसणे वा अणुसासणं।

समए अणुसासणं। अणुसासणं च होउ सव्वत्थ सव्व-काले अहिंसा-सच्चाइ गुणे वि।

अणुसासणेत्थि समत्त-दिट्ठी- समयो समभावो समियाए दंसणं अत्थि। अणुसासण-गय-णरो कस्स वि पियं अप्पियं ण करेइ। सो हवेज्जा सव्वं जंग तु समयाणुपेही

पियमप्पियं कस्स विणो करेज्जा।

सो णिस्संकियो णिक्कंखियो णिव्वितिगिच्छ-गुणो अमूढदिट्ठी उवगूहण-रओ वच्छल्ल-जुओ पहावण-सीलो वि। सो दिट्ठीए दिट्ठि-संपण्णे धम्मे चरेइ।

गुण-संपण्णो गुरू

गुण-संपण्णो गुरू :- विकोवो विलोहो विमोहो तत्तत्थ-णिहो परमट्ठ-परिणिट्ठिओ गुरू। सो वीरो धीरो परीसहो बंहचेर-परम-गुण-णिही सव्व-जण-जणाणं उवयारगो वि गुरू। सो गुण-संपण्णो गुणाहारो गुणपहू अण्णे तारइ सम-सुह-दुह-जुत्तो सव्व-हिएसी वि।

सण्णाणी गुरूझाणी--णाण-तच्चं विणा किरिया णत्थि, णत्थि माणं च सम्माणं जगे किंचि। सो गुरू णाणेणं च सण्णाणी, गुरूत्त-झाणेणं च गुरूझाणी भव्व-जणाण उवयारी।

को गुरू? रिसी गुरू, मुणि-गुरू, अणगारो गुरू, साहु गुरू, जइ त्ति गुरू समणो साहगो वि गुरूत्थि। गुरू तु पढमो जणणी गुरू जम्मदायिणी गुरू, पिउ-सव्व-लोगस्स गुरू। जणग-जणणिं च पच्छा गुरू मह-पुज्जा विजणा। विज्जा गुरू बुद्धि दायगो पसारगो अम्हाणं च पुण्ण-परिसोहणो।

सव्व-जीव-हिओ गुरू, सव्व-कल्लाण-कारगो।
धम्मुवदेस-पीऊसं, पाणं कुव्वेइ सव्वदा।।

जणणी-जणग-भाउ त्ति पिय सहचरी पुत्त-पावण-सुत्तगो, साही मित्तो सुहड्डो सव्वे हि सहभागी गुरू वि।

णाण-दंसण-णायगो-गुरूबंधू गुरूमित्तो गुरूचाग-संसारओ विगय-कल-दोसाओ भविग-भव्व-चिताणं च। गुरूत्थि णाण-दंसण-णायगो चारित्तेणं च गहीरो त्थि मोक्ख-मग्गुवदेसणो।

तो अप्प-सहाव-रओ णिरवेक्खो णिरारंभो जोगी मूलोत्तर-गुण-परिपुण्णो वि।

जग-तारग-पारगो गुरू-- जणणी-जणगो भाउ-सहचरो किंचि समए सहायगो हुंति, किण्णु गुरू सव्व-समय सहायगो, सो जणाणं जग-तारगो भव-पारगो वि।

णएंति गारवं पडिं– गुरू गारवं पडि णएंति। सो णिव्वाणंद–परमत्थ सरुव–सण्णायगो। धम्मणहू धम्म–कदा णाणाराहणा–संपण्णे दंसण–विणय–जुत्तो झाण–रह चिट्ठो आसा–तिण्हाए मुत्तो।

पेहा/अणुपेहा–सुत्त–दाणं दाएज्जा–

जं मे बुद्धाणुसासंति सीएण फरुसेण वा।
मम लाभो ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे।।

गुरू पेहा अणुपेहा तु सुत्त–दाणं दाएज्जा। सो गुरू सीएण/कोमल–कंत–संत णिम्मल–सद्देणं चं सिक्खेंति अम्हाणं च फरुसेण/अच्चंत–कढिण–सद्देणं च अणुसासेंति।

सोत्थु गुरू स–पुरिसाणं–अस्सिं जगे णिरीहो णिम्मुत्तो राग–द्दोस–परिहीणो सम्मदिट्ठी सम्मुवएसी संडा–विरहिओ दयावंतो गुरू दुल्लहो। सोत्थु गुरू स–पुरिसाणं च जो अत्थि सुयणाण–संपण्णे। णिद्दोस–आयरण–जुत्तो परि–पडिबोहणरओ सम–सम्म–मग्ग–उज्जमी बुहजणाणं विणओ अहंकार–सुण्णो णाणज्झाण–तवो रत्तो।

सव्व–गणाहारो गणी सव्व–संघ–णायगो आइरियो मोक्ख–मग्ग–पवत्तगो सूर–सम वह–पुण्ण–संपण्णे सूरी वि। सो भव्वाणंद–सुए रओ।

सो जयइ गुरू लोए जत्तोपवहए भागो।
णस्सेइ तम–संसारं सम्म–बोह–सुणाण–धी।।

होली

आणंद-उच्छवो अम्हाणं पत्तेग-समाज-जण-जणे विज्जमाणो। मणुजो साहाविग-सहज-भावो वि। सो सव्वेहिं सह परोप्परं मिलिऊण उत्छवं मण्णेइ। तं पडि समप्पिय-भावेण संयोजिओ सो। उच्छवो मणुज-जीवणं तरलो, आणंद-पुण्णो उल्लासमयो कुव्वेइ। समय-समए समागओ इच्छवो जीवणं धण्णं कुणेइ। सव्वे जणा, सव्वे जाइगणा बाल-बुड्ढ-जणा वि आणंदेंति।

अम्हाणं भरह-खेत्ते णाणाविह-उच्छवा हुंति। तस्सिं अत्थि

(i) धम्मिग-उच्छवा (ii) सामाजिग-उच्छवा (iii) रट्ठिय-उच्छवा (iv) सक्किइसूचगा य।

तेसुं उच्छवेसुं अत्थि होली पवित्त-णेह-पुण्ण-उच्छवो। एग-बीए परोप्परं णेह-मिलण-पुण्ण-उच्छवो।

पवित्त-भावणा-रिठ-परिवहणेण सहेव पयडिप्पहावो अत्थि। होली-उच्छेव पयडि-सुउमाल-भावणा अत्थि। अस्स उच्छवस्स जणा मण्णेंति सब्भाव-सोहद्द पुण्ण-पीइं च। सव्वे मिलेंति परोप्परं च।

होली-समयो-एस उच्छवो पवित्त-उच्छवो। मण्णेंति जणा अस्स फग्गुण-सुक्क-पुण्णिमाए। अस्सिं समए जणा आणंद-भावेण वसंत-सागयत्थं सम्मिलेंति, सीय-काल-समत्ति-पुव्वाओ जणा आणंदेंति। अस्सिं समए खेत्तेसुं च गोधूमाणं जवाणं सरिसवाणं अलसीणं चणगाणं च पुप्फाणि हिययं णदेंति। किसगा पसण्णा हुंति। अण्णे जणा वि सामिहि-इच्छमाणा चिट्ठेंति। वसंत-सोहा जण-जणाणं हियए पेम्मं उल्लासं उप्पाणेंति।

होलिगुच्छवस्स पोराणिग अक्खाणं-होलिगुच्छव-संबंधम्मि विविह-पोराणिग-अक्खाणं च लोग-पचलिय भावणा वि। एस णव-संवच्छर आगमणाठ

केइ त्ति वसंत-आगमणाउ केइत्ति अग्गि-पूयणाउ केइत्ति पूयणा-सहइओ अण्णं च काम-देव दहणाउ संबंधेंति।

भतप्पहलाद-अग्गि-परिक्खा–भत्तप्पहलादस्स होलिगा-रक्खसीए कहा वि। दइच्चराज-हिरण्ण-कस्सवस्स भगिणी होलिगा पहलादं णियंके णेऊणं अग्गीए समाहिया। सा होलिगा अग्गि-सत्ति-जुत्ता वि अग्गीए जलए विण्हु पहलादो ताए अग्गीए ण जलए। पहलाद-पाण-रक्खण-कारणत्थं च जणा आमोद प्पमोदं कुणेंति णच्च-गीयं च गाएंति जणा।

होलिगा-पूयणं–अस्सिं उच्छवे जणा जणी होलिगापूयणं कुव्वेंति।

चउद्दसीए होलिगादहणं च पूयणं च कुव्वेंति। पच्छा अवरे ते सव्वे भेद-भाव-विहीणाओ पारोप्परं मिलेति। णेहाओ ते सव्वे रंग अबीर-गुलाल-पुव्वेहिं होलिगा कीलेंति। ते सव्वे उच्च-णीचं भावं, रंक-राया-धणी-णिद्धणा भेद-बंधणाणं तुट्टेंति।

होली अत्थि अम्हाणं पवित्त-उच्छवो, एसोत्थि उच्छाह-उमंग-उच्छवो वि। अस्सिं णत्थि किंचि वि अप्पिय-ववहारो। णत्थि अस्सिं कल-कलह- भावणा।

चिंतेज्ज रक्खणं–सुह भावणा-कारणेणं होली रक्खणं सिक्खं दाएज्ज। अव-विर्य अग्गीए कट्ठ-जलणं ण सोहग्गे कज्जो। जइ त्ति जण-जणे भावणा जाए वण-रक्खणं ततो ते वणाओ पत्त-कट्ठ-इंधणं च णो जलेज्जा। तेसिं संवड्ढणेहिं रट्ठ-हिओ अत्थि।

सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं पाणाणं च रक्खणं अम्हाणं रक्खणं अत्थि।

सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं ण मरिज्जिउ एसा भावणा णेऊण जणा होली-उच्छवं मण्णेज्ज तत्तो अप्प-कल्याणं पर-कल्याणं च। अणट्ठाओ विरमेज्ज जणा परमट्ठाए रमेज्ज।

दीवाली

अम्हाण भारहिज्ज-पुरा-सक्किईए अणेग उच्छवा, पव्वा, महुच्छवा विज्जमाणा। ते देंति अम्हाणं जीवण-दाणं पगासं पीइ-भावं परोप्परं च मणोविणोयं वि। उच्छवा हुंति संति-मिति-परिचायगा वि। मणुजा समाजे णिवसेंति, समाजे हि आमोद-पमोदं कुणंति। अओ जीवणे वि उच्छवाणं च मह-जोगदाणं अत्थि।

दीव-पव्व-दीवाली-पगास-पव्वो, दीव-पव्वो दीवाली अत्थि। एस पव्वो पाउस-काल-समति-पच्छा सीय-समारंभ-काले पगास-पव्वरूवे जणेहि मणेज्जा। दीवा दीवेंति जणा पसण्णा जाया। ते णव-पगास-दीव-दिव्वंता ववसाए भमणे परियट्ठणे णिय-णिय-कम्मे रया आणंदेंति।

एस पव्वो अत्थि णव-जीवण-जग्गईए णव किरिया-सीलतणं दीवो पव्वो उल्लास-पव्वो, जोइ-पव्वो आणंद-पव्वो पगइ-पव्वो वि।

दीव-पव्वस्स एइज्जो-पुरिसोत्तम रामो चोद्दस-वास-वणोवासं पच्छा लंकाविजय पुव्वगो अउज्झाए समागओ। ततो कारणाओ जणेहि अउज्झाए दीवुच्छवं किएज्ज। तस्स अहिणंदणत्थं सरईए य दीवुच्छवं किएज्ज रज्ज-सुह-सामिद्धं हेदुं पवित्तं भावणा।

जिणस्स दीव-पव्वो-जिण-परंपराए चउवीस-तित्थयरा संति। अस्सिं परंपराए अंतिम-तित्थयरो भगवं महावीरो अत्थि। जो वड्ढमाणो वीरो सम्मई अइवीरो वि। तस्स णिव्वाणस्स दिवसे जणा दीव-पगासं कुणेंति। अस्सिं समए गुणाणुवादं कुणेंति सरेंति उल्लास-पुव्वगा तह आणंद-भावेणं च णिय-गिहे, अप्पिणिगे पूयणं करिऊण दीवाणं पज्जलेंति।

महरिसीदयाणंद-णिव्वाण-दिवसो वि अत्थि।

दीवा दीवेंति कथा-कत्तिग-किण्ह-अमावस्साए दिवसे दीवा दीवेंति। ते तमसो मा जोइग्गमय-भावणा जुत्ता सुक्क-पक्खे सच्छ-पुण्णा हुंति। दीवाली-पुव्वे जणा

लोगिग दिट्ठिणा सव्वत्थ-णिय-गेहं सच्छं कुणेंति। धणतिरसम्मि दिवसे धण्णं कुणेंति अप्पाणं। धम्म-कज्ज-पुव्वं च दीव-मालं उल्लसेंति। चउद्दसीए वि जणा अस्स पवित्त-पव्वस्स दीवा दीवेंति।

दीव-माला-पव्वो दीवाली-एग-दीवाउ सहस्स-दीवा दीवेंति। जणा जीवणं दिव्व-दीव-सरिच्छं कुणेंति। आणंदेणं उल्लसेणं जग-मग-दीव-दिव्वंलेण जणा सयमेव पगासव्व दिस्सेंति।

के धणी के णिद्धणी के गेही के णिग्गेही जे जत्थ वासेंति तत्थ दीवाओ दिप्पेंति।

लच्छी-पूयणं-गेहे गिह-लच्छी हवइ सा गिह लच्छी गिहम्मि जह आमोद पमोदेण सह णिय-परिजणाणं णंदेइ तह धण-संपत्ति-वइहव-अहिठति-देवी-लच्छी महा-लच्छी पतेग-जणाण धणं संपत्तिं दाएज्ज। एसा भावणा जुत्ता सव्वे लच्छीए पूयणं कुव्वेंति। वणिग-ववसायी-गेही-जणा विहि-पुव्वंग तं सागयं कुणेंति।

दीवावलीए पच्छा गोवड्ढणं पूया हवइ, पच्छा होइ मंगल-कामणा भगिणीहिं भाउणो पढिं।

दीवावली-पव्वो सव्वत्थ महणिज्जो पासिद्धो सव्वमण्णे वि। अस्सिं अत्थि सव्व मंगल-दीव-कामणा पारिवारिग-सुह-सामिद्धि-कामणा।

सव्वे जगे वि दीवगा पगासगा पभावगा।
अणंत-तेय-दायगा, दिप्पेंति दीव-दीवगा।।

स-तंतता-दिवसो

'सव्वे पाणा पिआ उया सुहसाया दुक्ख-पडिकूला'

अप्पिय-वहा, पिय-जीविणो

जीविउं कामा सव्वेसिं जीवियं पियं।।

एसा भावणा सव्वेसिं जीवाणं अत्थि। जणा सतंता जम्मेइ सतंता वसेइ सतंता इच्छेइ तस्स बंधणं परतंतणं णो पियो। मणुजो स-सहावाओ स-तंततेणं पियो। सो विचारसीलो पराहीण-जीवणं णो इच्छेइ। सो णो इच्छेइ बंधणं वहं अणायारं अच्चायारं च।

जीवणं परम-सुहो-जीवणं सुहो परम-सुहो परमाणंदो अत्थि। किण्णु देसेणं रज्जेणं रट्ठेणं च अण्णं देस-रज्ज-रट्ठं पीड आहीणतणं पराहीणतणं जणाण विगासम्मि जत्थ परम-वाहगा तत्थेव होइ पर-तंतराणाओ देसस्स रज्जस्स रहस्स पुण्ण-विगास-खयो।

जणाण इच्छा-भावणा-आकंखा-उद्देसम्मि वाहा। आगमण-गमण विचार-पगडण-लेहणम्मि बंधणं बंधणं अत्थि। ततो तस्स स-हियो-अप्प-गारवो अप्प-विस्सासो णस्सेइ। एत्तो जाएज्ज पडणं अहोपडणं पुण पुणरेव पडणं। सिमिणे वि किंचि संती णत्थि, ण हु सुहमेव किंचि।

भरह-स-तंतता-दिवसो-भरह खेत्तों पुव्वे मुगल-सासगाणं अहीणो, पच्छा जाओ अंगिल-सासगाणं। अंगिल-सासगेहि भरह-सक्किई आयार-वियारं वेस-भूसं ववहारं च णासणत्थं णो केवलो सासणं किएज्ज। अवितु तेहिं जण-जणाणं अच्चाभारं सरीर-छेदणं भेदणं तोहणं मोहणं कस-पहारणं च किएज्ज। जणाण वंदीगिहे बंधेज्ज, अण्ण-पाणं णिरोहेज्ज। कइ वि जणाण सिरच्छेदणं किएज्ज सूलीए लड्ढएज्ज।

स-तंततणं कंसी-भरहस्स १८५७ असहलस्स कंती पच्छा १९४२ समए' भरह

चत्त' 'भरहचत्त' अंदोलण-परिणामेणं च एस भरहो १५ अगस्त १९४७ दिवसे स-तंततणं पत्तं। अस्सिं संपुण्ण-जणाणं पुण्ण-सहजोगा।

महप्पा मोहणदास-कम्मचंदगंधी महाभागो महप्पा गंधी बापू णाम धेएज्ज अहिंसा-पुण्ण-भावणाए रहो स-तंतो जाओ। पुव्वे सुभासचंद्र वोस महाभागेण उच्च-पादेण जणाणं उग्घोसएज्ज-

'अम्हे दाएज्ज रत्तदाणं तुम्हे दाएज्ज सातंतं।

लोकमण्ण-तिलग-महाभागो जणाण अहिगारं पडिवोहेज्ज-भो महाभागा!'अम्हाणं अत्थि जम्म-सिद्ध-अहिगारो स-तंतो।

सा तंत-जीवणं--१५ अगस्त १९४७ अम्हाण देसस्स स-तंत-भावणा देसो। सच्चमेव जयए अस्सिं च। अहिंसा णिउणं दिट्ठी वि। अत्थिं वास-वास-पेरंतस्स साहणा। सामिद्ध-देसो जाएज्ज जीवणे सिक्खा जीवण-यावणं विहिं किसी-खेत्ते किसग-जीवणे जोई णव-णिम्माणस्स उच्च-भावणा।

अत्थिग-सामिद्धी--जइत्तु ण जाएज्ज अत्थिग-सामिद्धी तइत्तु ण अम्हाणं विगासो। सामाजिग-खेत्ते राजणइग-खेत्ते साहल्लतणं च सामिद्धी परभावसगो।

अंतर-रद्ठिय-जगे भरह-वासस्स मह-जोगदरणं अत्थि। अस्स अहिंसा-सच्च-अत्थेय-बंहचेर-अपरिग्गह सिद्धंतेण संम्पुण्ण-देसस्स विगासो, रज्जस्स विगासो रहस्स विगासो। अस्स उवजोगेणं तु अत्थि विस्ससंति-मिति-भावणा पारोप्परोसदववहारो वि।

सिमिणेणत्थिं सातंतं, विणु विगास-देसस्स।
बलिदाणाण मण्णेज्ज, स-तंत भरहस्स जे।।

मे विज्जालयो

विज्जाए सिक्खण-केंद्रा विज्जालया संति। तस्सिं च पढेंति बालग-बालिगाओ णाणाविह-विज्जं। ते णिय-कल्लाणं कुव्वेंति, णाणं लहेंति, विण्णाणं सिक्खेंति भू-विण्णाणं जाणेंति, किसि-विण्णाणं सिक्खणं पतेंति अणुसासणं च अणुलहेंति।

विज्जालयस्स परिसरो :– अम्हाणं विज्जालयो रम्म-सुरम्म-सच्छ-खेत्ते विज्जमाणो अत्थि। मे विज्जालयो णामो त्थि वड्ढमाण-विज्जालयो। सो उण्णओ अइ-समुण्णओ राइछाण-रज्जे पासिद्धो। अस्सिं च विज्जालए णिम्म-विसयाणि संति–

(i) वाणिज्ज-विसयो।

(ii) विण्णाण-विसयो।

(iii) कला-विण्णाण-सिक्खणं।

(iv) कंप्यूटर-विण्णाण-सिक्खणं।

(v) पाइग-विण्णाण-सिक्खणं।

(vi) पज्जावरण-विण्णाण सिक्खणं।

(vii) जोग-विज्जा-विण्णाण-सिक्खणं।

विज्जालय-भवणं–अस्सिं च परिसरे च ऊणविंस-कक्खा संति। ते उच्च-सच्छ-सुसज्जिय-विज्जुय-उवकर णालंकिया संति। पत्तेग-कक्ख समयातर-भागे खुल्ल-अंगणं अत्थि। जेणं कारणेणं वाउप्पवेसो पगासप्पवेसो वि होइ। विज्जालयस्स एग-कक्खो कंप्यूटर-कक्खो एग कक्खो आइरिय महाभागस्स एग-कक्खो त्थि अज्झावग-अज्झाविगाणं च।

पत्तेग-कक्खे त्थि उग्घोसण-जंतो। विण्णाण-छत्त-छत्तिगाणं च विण्णाया सोह-कक्खो।

विज्जालय-छत्त-छत्ताणं संखा—अस्सिं च विज्जालए दो-सहस्स-छत्त-छत्तिगा विज्जज्झयणं कुव्वेंति। ते विज्जं लहिऊणं मह-विज्जालए वि उच्च-णामं कुव्वेंति। ते सामाजस्स रहस्स देसस्स य सेवं कुव्वेंति। केई त्ति छत्त-छत्तिगा अभियंतिगी जाया, केई त्ति विण्णाणे केई त्ति आइ ई एस पसासाणिग-पदे केईत्ति अज्झावगा हुंति। अण्णे वि णिय-णिय-ववसाए रआ विज्जालयं णामं च उदिगे अलंकरेंति।

विज्जालयस्स परिक्खा-परिणाम-फलमवि णगरस्स सव्वेसुं सिक्खा-णियस्सु उत्तमं। छत्त-छत्तिगा समए समए पुरस्सारं लहेंति।

विज्जालयस्स पमुह-उद्देसो—सिक्खालयस्स मूलुद्देसो त्थि उच्च-सिक्खण-पुव्वगं जीवण-णिम्माणं च। अस्सिं च विज्जालए विज्जत्थिणो सव्वंग-विगासो। तेसुं च

(i) सारीरिग-विगासो-

(ii) माणसिग-विगासो-

(iii) पाइग-णिम्माणं-

सेय-सुरम्म-विज्जालयस्स दिट्ठी—सेय-समुण्णय-सिक्खालएसुं च विज्जत्थिणो अत्थि धम्म-णीई सम्माचरणं सम्म-ववहारं ससक्किय-सोम्मं-सिक्खणं च।

(i) अस्सिं च अत्थि सच्छ-सिक्खा।

(ii) सम्म-पाढमिग-चेइच्छ-दंसणं।

(iii) सारीरिग-परिस्समए हाकी-क्रिकेट-वालीवाल-तरणं च।

(iv) माणसिग-बोद्धिग-विगासे वि मह-पोत्थालयो।

(v) मह कीलण-सिक्खण-सहेव अत्थि पेक्खज्झाण-णिलयो।

(vi) अभिणय-वाद-विवाद-भासण-चित्तकला-संगीय-लेहण विण्णाण अणुसंधाण-टिट्ठी वि।

उज्जम-परिपुण्णा हि, छत्त-छत्तिग-कम्मगा।
उज्जमं साहसं धीरं, बुद्धि सत्ति-समागया।।
कम्मजं बुद्धि-संपण्णा सिक्खा-णिलय-साहगा।
विज्जा-लाहं च पतेंति, देस-देसे विचारगा।।

पयडि-चित्तणं

पयडि-चित्तणं कव्वस्स पहाण-तच्चो अत्थि। सव्वेहिं कव्व-कलापवीण-जणेहिं अस्स मणुहारि-रम्म-सुरम्म-चित्तणं किएज्ज। कालिदास-माघ-हरिस-वीरसेण जिणसेण-वाइराज-पहुडि-जणेहिं पुव्वे णिय-णिय-कव्वेसुं किएज्ज। पागिद-कवित्त-कलाविण्ण-पवरसेण-सयंभू-कोउहल-अणंत-हंस उदएणं च पयडि-सुउमाल-चित्तणं समए संमए किएज्ज।

पयडीए कारणं-पयडि-चित्तणे चंदोदयो सुज्जोदयो पहावकालो, मज्झिण्ह-कालो संझ-रयणी चमुख-चित्तणं जाएज्ज। सव्व-रिदूण वण्णणं पयडीए अत्थि।

चंदोदयो-संझ-समए सोम्मचंद-किरणाणि जणाण मोहेंति। पुण्ण-चंद काले चंदो अइ मोहगो आणंदयरो मणिहारी-सेसणागमिव दिस्सए। चंदो सीयलो। तस्स सीयल-किरणाउ कमलिणी-समूहाणं विगासेज्ज।

सुज्जोदयो-अरूणिम-आभा-मंडल-परिपुण्ण-सुज्जोदयो होइ पुव्व-दिसाए। तस्स रजस्स पसरंतस्स सुज्जस्स पगासो दिव्वो होइ। तेणं अंधयारो णासेइ। दिस-दिसे पक्खीगणा कलरवं कुणेंति।

पउमालए पोम्माणि विगसेंति।

पहाव-कालो-पक्खी-कलरवेणं सह पहाव-कालो जाओ। जणा उट्ठेंति। जणा मोदेंति पहाव-काले हिंडेंति णिय-सच्छ-जीवणं च। जणा परोप्परं अहिवादणं च कुव्वेंति।

मज्झिण्ह-कालो-अरुणोदयं च पच्छा सुज्जो सणियं सणियं पच्छिम-दिसं पडि अणुगच्छेइ। सो मज्झिण्हे तिव्वो जाओ। सुज्ज-किरण-तावेणं च जत्थ वणे चरंता गावा पसु-पक्खी तरुणं छाए विस्समेंति तत्थ किसगा वि किसि-खेत्त-कज्जं च काऊण असण पाणं खाइमं साइमं च आहारं आहारेंति। णिय गांव च वि विस्समेंति ते।

संझ-कालो–पाडिल-वण्ण-जुय-दिणयरो अप्प-किरणाणं समाविच्च पव्वय-थण-आलिंगणं कुव्वेंति। पाडिल-वण्ण-कालो संझसमयो। संझ-काले गो-गोधणा णिय णिय आवासे आगच्छेंति। खगा-विहगा सव्व-विस्सामं करिउं णिय-णिय-संघेण सह पंख पसारवंता गहभागाउ गच्छेंति पंति-वज्झ।

पव्वया–उच्च-कुड-जुत्ता पव्वया सव्वोसही-संपण्णा हुंति। तस्सिं गब्भे अत्थि विसाल-खणण-संपदा। णाणाविह-रुक्ख-लया गुम्म-गुच्छ वि। ते अणेग-सिहर-जुत्ता अइ-उण्णया किं किं ण देंति। केसिं केसिं ण मोहेंति।

णई-णिज्झरा–पयडीए णई-णिज्झरा सर-पोक्खरा वि रम्मा हुंति। सव्वे पसण्ण-चंचल-तरंग-जल-पुण्णा लंबमाण-लड-जुत्ता हंस सम दिस्सएंति।

वणाणि अत्थि विविह-पारवेहि सामिद्धा। वणेसु विज्जए सुगंधि-रुक्खा चंदणाई सतच्छद-तमाल-साल-सीसमाई। उम्मत्तहत्थी-सिंह-चित्तल-भल्लू-मिग-तूगाई वणे चरेंति।

रिऊणा सव्वत्थ सोह्र-सड-रिऊए हेमंत-सिसिर-वसंत-गिम्ह-वरिखा-सरदा वि।

हेमंत-रिऊ– हेमंत काले आगास-मंडले हिम कणाणि। समयो कामजण्णजुतो।

सिसिरो–सिसिरम्मि सीयकंपा। महुग-तरूण सुगंधा।

वसंतो–कोकिल-कुंजण-गुंजण महुयरा पवणप्पवाहमंदो। सव्वेसिं जणाणं मणो वि महुं इच्छेंति। पुप्फाणि विगसेंति हस्सेंति जणा वि। चंपक वगुल-अंब- आणंदपुण्णा।

गिम्हो–सघण-तिव्व-दाह-जण्ण-दिणयरो। सव्वत्थ रज-धूल-कणा, जल-वावियासुं रमण-कत्तुं जणा उज्जगा हवंति। मलयाचलं पवणं च इच्छेंति सीय-ठाणं च।

पयडीए वण्णणं वरिखा-सरद-सहेव साहाविग-जलकीलणं वण-कीलणं वसंतुच्छवं इच्छेमाणा-जणा। पयडि-सव्व-सुंदेरो अत्थि।

अम्हाणं पियं-कई

सक्किई-कलप्पवीणा कई। ते कव्वं कुव्वेंति, परेसिं गुणाणं पस्सेंति। पयडि-सुउमाल-चिंतण-चिंतकया-सद्द-अत्थे णिउणा हुंति। परे तुस्सेंति सम्मग्गं उछेसेंति, सेए णिहेंति। पुराण-कवीणं च परिचया हवंति। तेसिं मई/बुद्धी समास-पुण्णा देस-काल-वातावरण्ण संपुण्णा वि।

अत्थ-विसेसा तेज्जेव्व सद्दा सेज्जेव्व परिणमंता वि।
उत्ति-विसेसो कव्वो भासा जा होइ सा होउ।।

कवीण कव्वस्स भासा जा होइ सा होउ, किण्णुत्थि तस्सिं उत्तिविसेसो। अत्थ णिवेसा किंचि-अत्थ-पुण्णा।

मिउ-बंध-जुत्ता कई-केई त्ति सद्द-सुंदरं इच्छेंति, केईत्ति अत्थसंपदं, केई त्ति समास-भूयं केईति पदावलिं च महुरतणं दाएंति। केई ति मिउ-बंध/पबंध-जुता फुड/विसद-बंधप्पवीणा वि।

कई को-पबंध-बंध-रयणायारा कई। अलंकार-गुण-रीइ-सद्द-अत्थ-सुंदरे णिउणा कई। ते पद-सोट्ठवेणं रचणं कुव्वेंति। वाए अलंकिय-भावा णेंति। ते सालंकार-णव-रस-सुंदेर-उक्किट्ठ-भावणं कुव्वेंति।

सुसिलिट्ठ-पद-विण्णासं :-कई कुव्वेंति फुडं विसदं रचणं सुसिलिट्ठ-पद-विण्णास-पुण्ण-पबंधं च। जस्सिं कव्वे रोई-रमणिज्ज,पदेसुं लालिच्चो रसेसुं पवाहो, कहणेसुं सव्वपिय-भावो अत्थ-पद-विण्णासो वि। ते कुव्वेंति पुव्वावर-संबंध-गुरू-पबंधं च। तस्सिं मूल-विसए हुंति चउ-छट्ठि-सलागा पुरिसा। तित्थयरा, चक्कवट्टी णारायण-पडि-णारायणा महाभागा। अण्णे वि उदत-चरित्त-जुत्त-महापुरिसा।

विस्समीयएज्ज महाकवि तरुच्छायं-जे कई हुंति ते सद्द-अत्थ-सम्मग्गे

परिभमंता इच्छंता सया महा-कवीणं कव्वाणं अणुसीलणं कुर्णेति, णो खिण्णा हवेंति। सद्द-अत्थ-महा-समुद्द-पारं इच्छम्पणा विस्समीयएज्ज महाकवि तरुच्छायं।

पबंधेसुं कव्वेसु पउमचरियं-पबंध-कव्वाणं रयणा बहुविहा। पबंधेसुं च महाकव्वाणि खंड-कव्वाणि, चरित-कव्वाणि कहा-कव्वाणि थुई-कव्वाणि सट्टगाई वि। छंद-अलंकार-रस-कव्वाणि वागरणाणिं च। पवरसेणस्स कइस्स रयणा सेउबंधो वागवइराजस्स गउडवहो कोउहलस्स लीलावई वि। अण्णे कई पागअम्मि अत्थि हरिभद्दो, जिणभद्दो, वीरभद्दो जगच्चंदो अणंत-हंसो वि।

अम्हाणं पिय-कइ-विमलसूरी-विमलसूरिणा रयणा पउमचिरयं च। सा रयणा पंचसईए। सा अइ-कव्व-रस-अलंकारपुण्णा। एस कई अत्थि पउमचरियस्स राचचरियस्स विविह-विवेयगो। अस्सिं अत्थि रामकहा। अस्सिं च एग-सय-अठारह-उद्देसा। एस रामयण कव्वो। पुराण तच्च पुण्णा।

कई कला-विमलसूरी एगो आइरियो। आयार-पुण्णो महव्वई मूलोत्तरगुण-धारी कई वि। सो अत्थि कव्व-कला पवीणो वि।

एसो धम्मिगो कई-आइरियो जिणाइरियो जिण-दंसणकला पवीणो वि। जीवाइ-तच्चविण्णो णाण-मीमंसं णाणं परिपुण्णो। चरित-मीमसं णाणं च जाणेइ। इमत्तो कारणत्तो अस्सिं पउमचरियम्मि अत्थि अणेग-विह-कहावणंतरो वि।

विमलसूरी णो केवलो कई त्ति, जीवण-मुल्लाणं णायगो वि। सो अस्सिं कव्वम्मि अहिंसा सिद्धंतस्स सारो, लोगववहारो सावगधम्मस्स परूवणो।

भूओ साहू परम्पराए सयल-लोए ठियं पायउं।
एत्ताहे विमलेण सुत्तसहियं गाहा णिबद्धं वयं।।

अस्सिं कइ-कप्पणाए संपुण्ण-जीवाणं उच्च-भावणा वि।